1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI.No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-8, अंक-2, अक्टूबर-नवम्बर 2024, ₹50/-

गौरवशाली यात्रा के
28 वर्ष का 131 अंक...

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

देवी अहिल्याबाई होल्कर
300वाँ जन्म जयंती वर्ष विशेषांक

अतिथि संपादक : पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

संपादक : भँवरलाल श्रीवास

महेश्वर में कला समय पत्रिका के आयुष्य संस्कृति विशेषांक का लोकार्पण

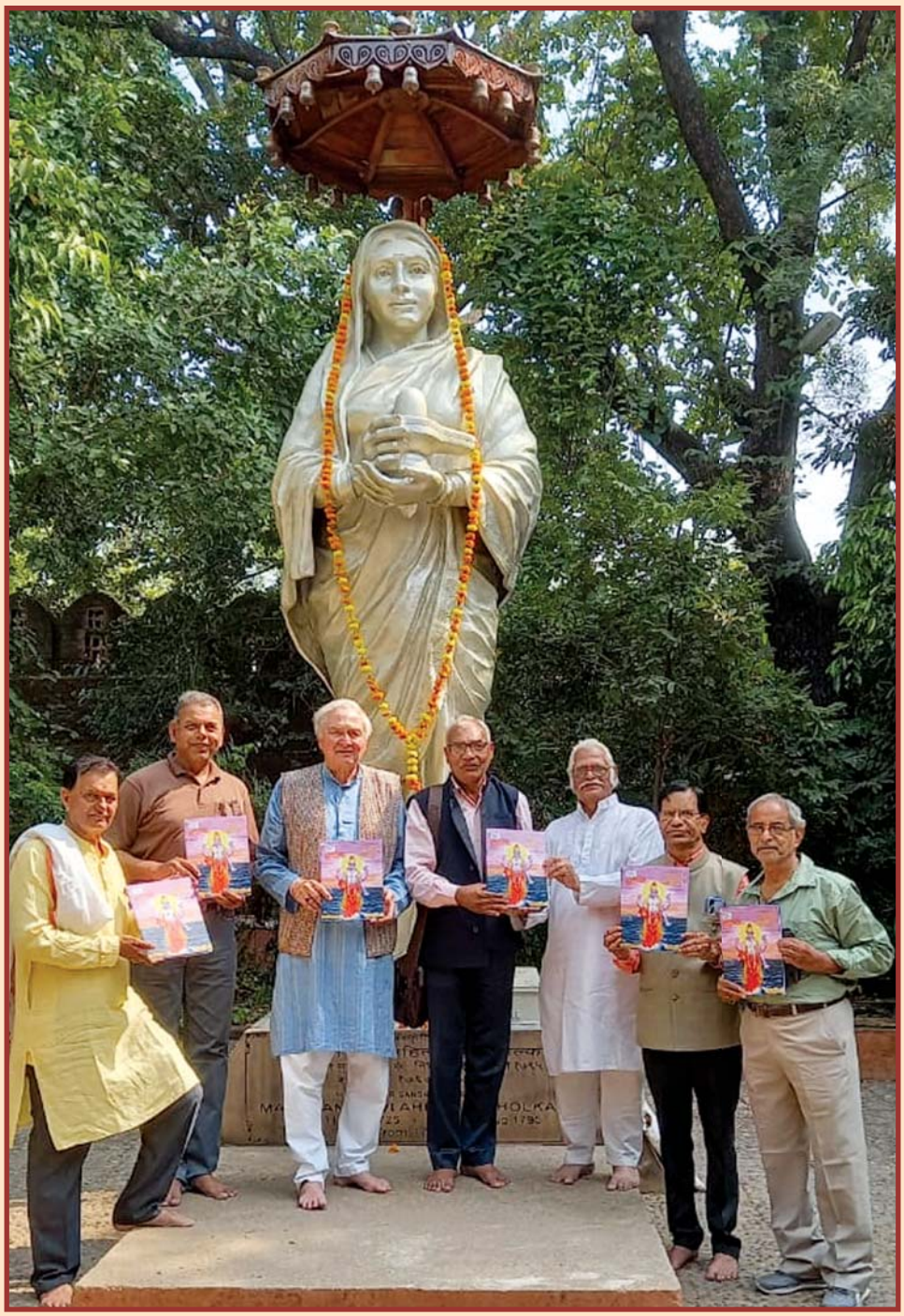

महेश्वर राजवाड़ा में स्थापित पुण्य श्लोका देवी अहिल्याबाई होल्कर की प्रतिमा के सान्निध्य में लगभग तीन दशक से भोपाल से प्रकाशित कला समय पत्रिका के आयुष्य संस्कृति विशेषांक का लोकार्पण किया गया। महेश्वर संस्कृति सहयोग समिति के अध्यक्ष प्रिंस रिचर्ड होलकर के मुख्यातिथ्य में कार्यक्रम हुआ। कला समय के प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास भोपाल, पुरातत्वविद् कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय मंदसौर, अखिल निमाड़ लोक परिषद अध्यक्ष हरीश दुबे, भारतीय सेना में पदस्थ धर्म शिक्षक, गुरु सूबेदार बद्रीनारायण जोशी, कवि सत्यदेव बंदुके व साहित्य अनुरागी मनोज व्यास भोपाल बतौर अतिथि उपस्थित थे। श्रीवास ने देवीश्री की जन्मोत्सव त्रिशती पर अगला अंक देवी अहिल्याबाई होलकर पर केंद्रित प्रकाशित करने की घोषणा की। इस पर सभी ने हर्ष जताया।

RNI NO. MPHIN/2017/73838

1998 से निरंतर प्रकाशित

देश की सर्वश्रेष्ठ एक मात्र सांस्कृतिक पत्रिका

कला समय पत्रिका वेबसाइट पर उपलब्ध

www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X

(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)

(वर्ष : 20+08=28) पूर्णांक-131,

वर्ष-8, अंक-2, अक्टूबर-नवम्बर 2024, मूल्य : ₹50/-

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरु सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत
इन्टरनेशनल ध्रुवपद-धाम ट्रस्ट, जयपुर (राज.) द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' सम्मान

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

❊ पत्रिका नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान ❊

संरक्षक
विजयदत्त श्रीधर
(पद्मश्री से विभूषित)
डॉ. महेन्द्र भानावत
श्यामसुंदर दुबे
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
महेश श्रीवास्तव

कानूनी सलाहकार
उमेश कुमार गुप्ता
(प्रिंसिपल जिला न्यायाधीश रिटा.)

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
डॉ. नारायण व्यास
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

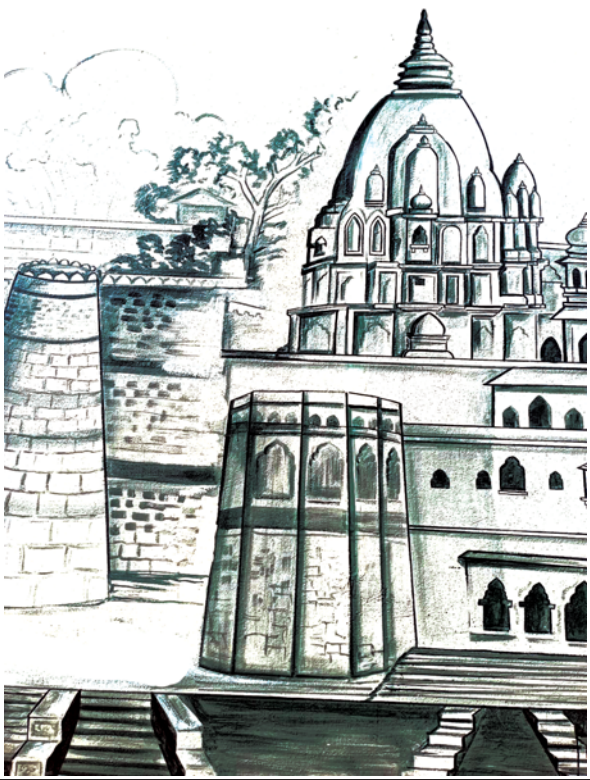

रेखाचित्र सौजन्य: डॉ. श्री कृष्ण 'जुगनू'

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

सलाहकार संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

उप संपादक
राहुल श्रीवास
सुन्दरलाल प्रजापति

नरिन्दर कौर
प्रबंध संपादक

संपादक मंडल
डॉ. बिनय षडंगी राजाराम
साहित्य

अरुण तिवारी
समसामयिक

हरीश श्रीवास
कला, संस्कृति

सदस्यता सहयोग राशिः
(साधारण डाक)

वार्षिक :	300 (व्यक्तिगत)	350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक :	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)
चार वर्ष :	1000 (व्यक्तिगत)	1200 (संस्थागत)
आजीवन :	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)

(15 वर्ष के लिए)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 150/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :
संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :
'कला समय' का बैंक खाता विवरण
पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों, अतिथि संपादकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हो। पत्रिका से सम्बंधित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे। सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक, अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - **भँवरलाल श्रीवास**

नीलकण्ठ औंकार लाल व्यास

रामभाऊ लांडे

डॉ. प्रभाकर गद्रे (डी.लिट्)

डॉ. जे.के ओझा

डॉ.एस.के.भट्ट

डॉ. सहदेव सिंह चौहान

डॉ. प्रवीण श्रीवास्तव

नेहा भांडारकर

डॉ. सरोज गुप्ता

डॉ. घनश्याम बटवाल

शंभु दयाल गुरु

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

डॉ. सुमन चौरे

हरीश दुबे

प्रो. डॉ. श्रीराम परिहार (डी.लिट्)

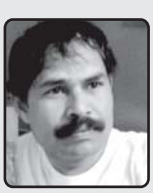
चेतन औदिच्य

रीना सोपम

सत्यदेव बंदूके

इस ऐतिहासिक विशेषांक के अतिथि संपादक

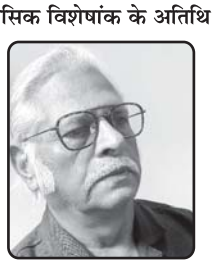

पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
(राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)
वरिष्ठ साहित्यकार, इतिहासकार एवं पुरातत्वविद्

- **अतिथि संपादक की कलम से**
  अहिल्याबाई के जन्म व मृत्यु की तारीखों को लेकर भ्रांतियाँ हैं 05
- **संपादकीय**
  सुशासन शिल्पी धन्य है ! लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर 08
- **आलेख**
  अहल्यबाई का प्राचीनतम विवरण/ पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय 10
  अहल्याबाई होलकर और राजपूताना/ पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय 16
  अहल्याबाई कालीन अस्तल मंदिर.../ पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय 18
- **कविता**
  मालव गौरव गान/नीलकण्ठ औंकार लाल व्यास 21
- **आलेख**
  अहिल्यादेवी के विवाह की हकीकत/रामभाऊ लांडे 23
  अहल्याबाई होलकर की सन 1789 ई .../ डॉ. प्रभाकर गद्रे (डी.लिट्) 25
  अहल्याबाई और महेश्वर/ रामेश्वर गौरीशंकर ओझा 27
  महाराणा ने अहिल्याबाई को बहिन बनाया/डॉ. जे.के ओझा 31
  अहिल्याबाई और रामपुरा के चंद्रावत/डॉ.एस.के.भट्ट 33
  आठले दफ्तर में अहिल्याबाई के पत्र/डॉ. सहदेव सिंह चौहान 36
  होलकर राजवंश की छत्रियों का रासायनिक उपचार/डॉ. प्रवीण श्रीवास्तव 37
  अहिल्याबाई होलकर : आदर्श नारी /नेहा भांडारकर 39
  लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर का अवदान/डॉ. सरोज गुप्ता 43
  अहिल्याबाई होलकर संग्रहालय, महेश्वर/डॉ. घनश्याम बटवाल 44
  अलौकिक शक्ति, धर्म, न्याय की जयोतिपुंज देवी.../शंभु दयाल गुरु 45
- **समय की धरोहर....**
  तीर्थो की तारक: उद्धारक/ डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' 48
- **आलेख**
  सगुणी मायऽ अहिल्या राणी/डॉ. सुमन चौरे 52
- **अद्वैत-विमर्श**
  कालड़ी से कैलाश तक/प्रो. डॉ. श्रीराम परिहार (डी.लिट्) 56
- **आलेख**
  इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है देवी अहिल्याबाई .../हरीश दुबे 60
  अहिल्याबाई का महेश्वर, जहां शिवजी राज करते हैं/सावित्री परमार 63
  ऐतिहासिक विरासत : महेश्वर की महिमा/भँवरलाल श्रीवास 65
- **कला-अक्ष**
  आर्ट कैंप का तिलिस्म अनोखा/चेतन औदिच्य 67
- **पुस्तक समीक्षा**
  कामना से काल हारा की समीक्षा/देवनाथ द्विवेदी 69
  इस सुबह की रात नहीं : कुछ सुनी कुछ अनसुनी/डॉ अरुण कुमार वर्मा 73
- **संस्करण**
  'उन बंद होंठों के पीछे एक महिला कलाकार.../रीना सोपम 75
- **आयोजन**
  जब आप नृत्य करते हैं तो नृत्य-नर्तक-दर्शक सब एक हो जाते हैं... 77
  देश का सर्वेश्रेष्ठ फिल्म अनुकूल राज्य है मध्यप्रदेश प्रमुख सचिव ... 80
- **समवेत** **82-86**

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888
मुख्य एवं अंतिम आवरण - भँवरलाल श्रीवास, प्रधान संपादक द्वारा की गई फोटोग्राफी
छायाचित्र -मनीष सराठे, सुनील सेन, गूगल से साभार
सहयोग- धन सिंह, लता श्रीवास | **रेखाचित्र** : डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' के सौजन्य से
आवरण सज्जा - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

अतिथि संपादक की कलम से...

अहिल्याबाई के जन्म व मृत्यु की तारीखों को लेकर भ्रांतियाँ हैं

मुद्दा अहिल्याबाई के जन्म व मृत्यु की सही तारीखों का

अहिल्याबाई के जन्म व मृत्यु की तारीखों को लेकर भ्रांतियाँ हैं और यह आलेख भी ऐसी ही एक भ्रांति का शिकार है। अहिल्याबाई किसी ख्यात वंश अथवा राजपरिवार में नहीं जन्मी थीं कि उनकी जन्म पत्रिका बनवाई जाती। वे कब जन्मी कितने वर्ष की उम्र में स्वर्गवासी हुईं, इसमें भारी मतभेद हैं। पारसनीस के अनुसार 1780 में अहिल्याबाई 55 वर्ष की थीं। इस प्रकार पारसनीस के अनुसार अहिल्याबाई का जन्म 1725 में हुआ था और वे अपनी मृत्यु के समय 70 वर्ष की थीं। इसके विपरीत सर जॉन मालकम के अनुसार अहिल्याबाई की मृत्यु 60 वर्ष की उम्र में हुई। मालकम के अनुसार अहिल्याबाई का जन्म 1735 में हुआ। पर, ये सब अनुमान के घोड़े हैं क्योंकि अहिल्याबाई की कोई प्रामाणिक जन्म-मृत्यु तारीख उपलब्ध नहीं है।

मेरे संस्थान (दशपुर प्राच्य शोध संस्थान, मन्दसौर) में **''होळकरों के खानदान का हाल''** नामक एक हस्तलिखित ग्रंथ की प्रति है जो पण्डित धरमनारायण द्वारा संवत् 1910 सन् 1853 ई. की 24 अगस्त, कों अंग्रेजी किताबों से बनाकर इन्दौर के छापाखाने में छपवायी (यद्यपि इस ग्रंथ की मुद्रित कोई भी प्रति आज तक उपलब्ध नहीं है) थी। **इस ग्रंथ की 1881 ई.में गोवींदराव सारंगपाणी द्वारा तैयार की गई नकल (143,वर्ष प्राचीन) मेरे संग्रह में है।** इस पुस्तक में अहिल्याबाई (पुस्तक में यही नाम है) का विवरण विस्तार से लिखा गया है। पर, इसमें अहिल्याबाई का जन्म कब हुआ ? यह नहीं बताया ('कला समय' के पाठकों के लिये मैंने इस हस्तलिखित पाण्डुलिपि का अंश जस का तस प्रस्तुत किया है।) गया है। यानें तुकोजीराव होलकर द्वितीय (1844-1886 ई.) के समय में जब होळकरों के खानदान का हाल लिखने का प्रथम प्रयास किया गया तब भी अहिल्याबाई की जन्म व मृत्यु की तिथि अज्ञात ही थी।

इस पुस्तक में उनकी मृत्यु की तारीख तो नहीं लिखी परन्तु यह लिखा है कि जब 1795 ई. में वैकुंठ वासी हुई तब वह 60 बरस की थी। यानें 171 वर्षों पूर्व उनका जन्म वर्ष 1735 ठहरता है। इस प्रकार 1735+60 = 1795 में अहिल्याबाई का स्वर्गवास होना1795 प्रमाणित होता है। लेकिन आज जब मैं यह संपादकीय लिख रहा हूँ तब इससे भी प्राचीन जानकारी प्राप्त हो गयी है। जहाँ तक मेरी जानकारी है इस जानकारी का अभी तक शायद ही किसी ने उपयोग किया हो ? इस जानकारी की विस्तार पूर्वक चर्चा इसी अंक में धनगर इतिहास के अभ्यासक श्री रामभाऊ लांडे ने अपने आलेख में की है।

अब अहिल्याबाई के विवाह की निमंत्रण पत्रिका तथा अन्य जानकारी का उल्लेख दो स्थानों पर प्राप्त हो जाने के कारण हमें मालकम, सखाराम शास्त्री भागवत, व अन्य विद्वानों की जानकारी पर अवलम्बित रहने की आवश्यकता नहीं है। अहिल्याबाई के विवाह की प्राचीनतम जानकारी दो स्थानों पर मिलती है -

1. पेशवा दफ्तर , खण्ड -30,पृ.381, पत्र क्र.367
2. होलकरशाहीच्या इतिहासाची साधने पृ. 24 पत्र क्र. 39 यह पत्र 31 मई,1738 ई. का है।

इन विवरणों के अनुसार विवाह के समय अहिल्याबाई के विवाह के समय उनकी उम्र आठ वर्ष बतायी गई है यानें उनका जन्म 1730 ठहरता है। अब इस जानकारी के अनुसार पूर्वानुमान गलत सिद्ध होता हैं। अब भावी इतिहास को इससे अच्छा प्रमाण मिलने वाला नहीं है।

इसके बावजूद भी महारानी के जन्म के नवीन प्रमाण प्रस्तुत करने का सिलसिला थमा नहीं है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मा. सरकार्यवाहक श्री दशात्रेय होसबाले ने अपनी लघु पुस्तिका में 31, मई, 2024 से देवी

अहिल्याबाई होलकर का 300 वाँ जयन्ती वर्ष प्रारंभ होने की जानकारी दी है। इसी के अनुसार **'कला समय' के इस अंक** का प्रकाशन भी किया जा रहा है। मा. सरकार्यवाहक नें लोकमाता अहिल्याबाई होलकर का जन्म दिन 31, मई, 1723 मानकर अपनी गणना की है। मैंने अपनी दुविधा के सम्बन्ध में मा. सरकार्यवाहक होसबाले महोदय को एक पत्र भी प्रेषित किया था क्योंकि आपने अहिल्याबाई का विवाह बारह वर्ष की उम्र में होना बताया है। यदि इस नवीन तिथि को स्वीकार करते हैं तो महारानी के जीवन चक्र की अनेक गतिविधियों सहित मृत्यु की तिथि में जो परिवर्तन होता है वो असंभव प्रतीत होता है क्योंकि 1723+60 = 1783 ई. आवेगा। यदि 70 जोड़ते हैं तो 1793 ई.आवेगा।

सवाल यह भी उठता है कि 31, मई, 1723 की यह नवीन तिथि आयी कहाँ से क्योंकि श्रीमंत हर हायनेस महारानी उषादेवी ऑफ इंदौर (अध्यक्ष- खासगी ट्रस्ट, इंदौर) के मार्गदर्शन में जिस **'अहिल्या स्मारिका' का प्रकाशन 1970 से 1985** तक किया गया उसमें अहिल्याबाई का जन्म-1725 व मृत्यु की तारीख गुरुवार 30, अगस्त, 1795 ई. प्रकाशित होती रही है। तो क्या होलकर वंश की वंशजा गलत जानकारी का प्रकाशन करा रही थी? मैं यह प्रश्न ''लोकमाता अहिल्याबाई होलकर त्रिशताब्दी समारोह समिति'' के किसी जिम्मेदार सदस्य से पूछना चाहता था पर इस समिति में शंकराचार्यजी, महंत, पूर्व लोकसभा सदस्य, विधायक, नृत्यांगना, कुलपति, समाजसेवी, सेनाधिकारी, शिक्षाविद्, लोकगायिका, कबीर भजन गायक, प्रेरक प्रवक्ता, उद्योगपति आदि कोई 47 भद्रपुरूषों की लम्बी-चौड़ी सूची में होलकर राजपरिवार कहीं नहीं दिखा।

इसी प्रकार अहिल्याबाई के जन्म की तरह उनकी मृत्यु के बारे में भी विद्वान अपनी-अपनी राय देते रहे हैं। 'वाकया-इ-होलकर' में अहिल्याबाई की मृत्यु 13 अगस्त 1795 को होना बताया गया है। दुर्भाग्य से इस महान व्यक्तित्व के जीवनकाल का एक भी पत्र ऐसा नहीं है जिससे इनकी मृत्यु की निश्चित तारीख की पुष्टि की जा सके। अहिल्याबाई की मृत्यु का समाचार पेशवा को पूना भेजा गया होगा, परंतु यह पत्र पेशवा दफ्तर में नहीं मिला है। लोक मान्यता के अनुसार इसे नष्ट कर दिया गया होगा। अलबत्ता पेशवा से जो शोक-संवेदना पत्र आया होगा वह अवश्य होलकरों के इन्दौर अभिलेखागार में सुरक्षित किया गया होगा। दुर्भाग्य से होलकरों के राजबाडे को सर्जेराव घाटगे ने पहलीबार लूटा-जलाया, 1984 ई. के सिख्ख विरोधी दंगें में फिर इसकी दुर्दशा हुई, वर्ष 2016 में इसका एक बड़ा हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। ऐसी स्थिति में होलकर अभिलेखागार कब विनष्ट हो गया इसका अनुमान लगाना कठिन है क्योंकि समाचार पत्र भी मूल्यवान सामग्री की जानकारी उगलते हैं, कागजों को कौन पूछता है ?

इन्दौर में प्रदेश के दिग्गज इतिहासकार निवास करते रहे हैं। होलकरों की इस महान राजधानी में मध्यप्रदेश पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, भोपाल के पश्चिमी क्षेत्र के उपसंचालक का कार्यालय भी है। जहाँ तक मेरी जानकारी है इस कार्यालय के द्वारा 14-15 अप्रैल, 2018 को ''देवी अहिल्याबाई होलकर एवं मालवा'' विषय पर शोध संगोष्ठी का आयोजन किया था। इस अवसर पर विभाग ने एक तहपत्रिका का प्रकाशन भी किया था। इसमें विभाग ने अहिल्याबाई का जो जन्मवर्ष दिया है इसके अनुसार त्रिशताब्दी समारोह के आयोजन में अभी आठ वर्ष शेष हैं। यद्यपि मेरे मतानुसार मध्यप्रदेश पुरातत्व विभाग भी स्थिरमति नहीं है क्योंकि लगभग चालीस वर्ष पूर्व इसी विभाग ने अपने द्वारा प्रकाशित एक फोल्डर में उनकी मृत्यु 24, सितंबर, 1795 ई. लिखी थी। इसी विभाग के ही पदाधिकारियों ने 17, जून, 98 को ''देवी अहिल्याबाई पुरातत्व संग्रहालय, महेश्वर'' के लोकार्पण पर प्रकाशित फ ोल्डर में उनकी मृत्यु 13 अगस्त 1795 ई. को होना बताया है। **कम से कम मध्यप्रदेश शासन के अधिकारियों को तो एकमत होना चाहिये।**

इस प्रकार हम देखते हैं कि अहिल्याबाई की जन्म व मृत्यु की तारीख-वर्ष प्रामाणिक रूप से ज्ञात न होने के कारण लोग अपनी-अपनी ढ़पली अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। निष्कर्ष यह है कि पण्डित सखाराम शास्त्री भागवत के अनुसार दी गई भारतीय तिथियों की अँगरेजी तारीख के अनुसार अहिल्याबाई का जन्म रविवार 23, मई, 1725 ई. को हुआ तथा मृत्यु बुधवार 15, जुलाई, 1795 ई.को हुई। इसके अनुसार वे 70 वर्ष 1 माह 22 दिन जीवित रहीं? पर, **नवीनतम जानकारियाँ इन तिथियों को झुठलाती हैं अत: पुण्यश्लोका, लोकमाता अहिल्याबाई का त्रिशताब्दी वर्ष मनाने के पूर्व उनकी जन्म व मृत्यु की तारीख का प्रामाणिक प्रकाशन होना चाहिए।**

इस वर्ष हिन्दुओं के सबसे बड़े त्यौहार दीपावली के आयोजन में मतैक्य हुआ। कुछ लोगों ने इसे 31, अक्टूम्बर को तो कुछ ने 1 नवम्बर को मनाया। मालवा में कहावत है कि- ''सदा दिवारी संत की बारहों मास बसन्त'' इसी धारणा को लेकर 'कला समय' के सम्पादक मान्यवर भँवरलाल श्रीवास ने विचार रखा कि- क्यों न हम पुण्यश्लोका अहिल्याबाई की स्मृति में 'कला समय' के आगामी अंक का प्रकाशन करें सुन्दर विचार पर, बहसबाजी कैसी? मा.सरकार्यवाहक **श्री दत्रात्रेय होसबाले** महोदय के वक्तव्य को शिरोधार्य कर इस अंक को अहिल्याबाई की

कीर्ति के विस्तार की कामना हेतु प्रकाशित किया जा रहा है।

'कला समय' के पाठकों को इस अंक में किसी-किसी लेख में 'अहल्याबाई' और किसी लेख में 'अहिल्याबाई' पढ़ने को मिल सकता है। वर्ष 1971 ई. में ''अहिल्या स्मारिका'' के द्वितीय अंक में वी.सी.सरवटे ने सर्वप्रथम यह सुझाव दिया था कि **'अहिल्याबाई' शुद्ध नाम नहीं है** इसके स्थान पर **'अहल्याबाई' होना चाहिये।** मैंने दोनों नामों का प्रयोग पाया है अत: परंपरागत व लोक प्रचलन दोनों को स्वीकार किया हैं।

हमारे आमंत्रण पर सर्वश्री **रामभाऊ लाण्डे** (होलकर इतिहास संशोधक,अंबड,महाराष्ट्र), मोड़ी विशेषज्ञ **डॉ. प्रभाकर गद्रे** (भौसले इतिहास संशोधक, आमगाँव **जिल्हा भण्डारा**, महाराष्ट्र), ने अति महत्वपूर्ण सामग्री भेजकर नवीन जानकारियाँ प्रदान की। म.प्र. गजेटियर के जनक एवं वरिष्ठ इतिहासकार **डॉ.एस.डी.गुरु** (भोपाल) ने कोई **95 वर्ष** की आयु में लेख भेजकर हमारे उत्साह की अभिवृद्धि की। मुद्राशास्त्र के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान **डॉ. शशिकान्त भट्ट** (निदेशक- मुद्रा अकादमी, इन्दौर) ने आजीवन मराठा इतिहास पर अति शोधपूर्ण लेखन कार्य किया है। डॉ. भट्ट के आंग्ल भाषा में पूर्वप्रकाशित लेख का हिन्दी रूपान्तरण कर हमने प्रसाद स्वरूप प्रयोग किया है। इसी श्रृंखला में मैं राजस्थान के ख्यात इतिहासकार **डॉ. जे.के.ओझा** व **डॉ.श्रीकृष्ण जुगनू, वरिष्ठ साहित्य कार, लोकविद् डॉ. सुमन चौरे** के शोधपूर्ण लेखों के लिये ऋण स्वीकार करता हूँ।

अप्रवासी इतिहासज्ञ एवं साहित्यकार **श्री गौरीशंकर दुबे** (सिएटल, अमेरिका) ने अपने संग्रह से **डॉ.रामेश्वर गौरीशंकर ओझा** (प्रथम क्यूरेटर, नवरत्न मंदिर संग्रहालय, इन्दौर) के 1930 ई. में प्रकाशित शोधलेख ''अहल्याबाई होलकर और महेश्वर'' की फोटो कापी उपलब्ध करवायी। कोई 95 वर्ष पूर्व प्रकाशित इस अति महत्वपूर्ण लेख का पुन: मुद्रण कर हमने अपने ज्ञान की अभिवृद्धि की है। श्रीनटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ (मालवा) के शोध अधिकारी एवं उदीयमान इतिहासकार **डॉ. सहदेवसिंह** ने अप्रकाशित आठले संग्रह में अहल्याबाई के चार दर्जन से भी अधिक पत्र-व्यवहार की जानकारी प्रदान कर हमारे प्रयास को मूल्यवान बना दिया है। रसायनविद् **डॉ. प्रवीण श्रीवास्तव** ने मध्य प्रदेश पुरातत्व विभाग में कार्यरत रहते हुए इन्दौर के पुरा स्मारकों के रासायनिक उपचार का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किया है और सेवानिवृश्रि के पश्चात भी आप इन्दौर ही नहीं पूरे प्रदेश में पुरा स्मारकों के संरक्षण में तन-मन- धन से समर्पित रहे हैं, आपके लेख से 'कला समय' के पाठकों कों नवीन वैज्ञानिक प्रयास की जानकारी होगी।

'कला समय' के आवाहन पर हमें लब्धप्रतिष्ठित पत्रकार **डॉ. घनश्याम बटवाल** (मन्दसौर) का अहल्याबाई होलकर संग्रहालय, महेश्वर पर आलेख प्राप्त हुआ। श्रीबटवाल ने इस संग्रहालय की कुछ कमियों की और हमारा घ्यान आकर्षित किया है। आशा है विभाग पुरातत्व विभाग अपने संग्रहालय को उन्नत करेगा। **नेहा भाण्डारकर** (नागपुर) एवं **प्रो. डॉ. सरोज गुप्ता** (सागर), **हरीश दुबे** (महेश्वर) ने लोकमाता पर अपने-अपने आलेख भेजे हैं, तदर्थ बहुत-बहुत साधुवाद।

इस अंक में प्रकाशित लेखों का दायित्व इनके लेखकों का है। इससे सम्पादक/अतिथि सम्पादक का कोई वास्ता नहीं है। हमारा उद्देश्य पुण्यश्लोका अहल्याबाई होलकर के काल की शोधपूर्ण एवं नवीन सामग्रियों के प्रकाशन का है। इसे घ्यान में रखकर विद्वानों से अपने लेख के साथ सन्दर्भ लिखें भी हैं पर, इस अंक में सन्दर्भ प्रकाशित नहीं किये जा रहे हैं क्यों कि इस पत्रिका की अपनी एक सीमा है। फिर हम पत्रिका पर अधिक आर्थिक बोझ नही थोप सकते है। इस प्रकाशन में कुछ कमियाँ, त्रुटियाँ रहना स्वाभाविक है। इस ओर 'कला समय' के पाठक पत्र भेजकर अपने विचार/जानकारियाँ भेज सकते है। हम पाठकों की प्रतिक्रियाओं का सदैव स्वागत करते हैं। आपकी खोजपूर्ण सूचनाएँ अगामी अंक की पृष्ठभूमि तैयार कर सकती है। हमारे पास अभी अहल्याबाई से सम्बन्धित प्रचुर सामग्री शेष है।

इस अंक के लिये हमने अनेक विद्वानों से आग्रह किया था जिन्होंने सहयोग किया वे 'कला समय' की अनुक्रमणिका में दर्ज हैं। केन्द्रिय संग्रहालय के श्री जे.पी.मणि को महाराणा अरिसिंह के ताम्रपत्र का छायाचित्र प्रदान करने,तथा चि. वैभव को इस अंक की सामग्री के व्यवस्थिकरण हेतु बहुत-बहुत आशीर्वावाद। सिद्धिरस्तु ।।

कार्तिक पूर्णिमा, वि. सं. 2082
तद्नुसार - शुक्रवार 15 नव्हम्बर, 2024

पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
श्री दशपुर प्राच्य शोध संस्थान, मंदसौर
2/67 नई आबादी, मन्दसौर, 458001 मोबा. 9424546019 ई. मेल - dasc.kcp@gmail.com

संपादकीय

अनुरोध: इस विशेषांक का उद्देश्य इतिहास से साक्षात्कार कराना है। किसी की मानहानि करना नहीं। - संपादक

सुशासन शिल्पी
धन्य है! लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर

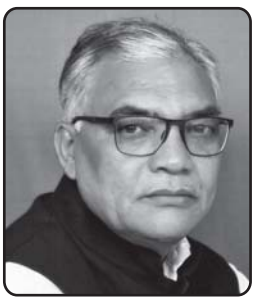

''सूरज से कह दो तुम बेशक अपने घर आराम करें
चाँद सितारे जी भर सोएँ नहीं किसी का काम करें
आँख मूँद लो दीपक तुम भी दिया सलाई जलो नहीं
अपना सोना, अपनी चाँदी गला-गला कर मलो नहीं
अगर अमावस से लड़ने की ज़िद कोई कर लेता है
एक जरा सा 'जुगनू' सारा अंधकार हर लेता है।''

इतिहास साक्षी है की गौरवगाथा के निर्माण में अकेले पुरुष वर्ग का ही हाथ नहीं रहा है, प्रत्युत महिलाओं ने भी समय-समय पर अपनी प्रतिभा, साधना और तपश्चर्या द्वारा उसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम देखते हैं कि युगों से नारी का कार्यक्षेत्र घर में ही सीमित रहा। उसके कर्तव्य के निर्धारित करने में उसकी स्वभावजात कोमलता, मातृत्व, सन्तान पालन आदि पर तो ध्यान रखा ही गया, साथ ही बाहर के कठोर संघर्षमय वातावरण और परिस्थितियों ने भी समाज ने ऐसा ही करने पर बाध्य किया जब उसे अपने देश या सम्मान की रक्षा के लिए तलवार के घाट उतारना या उतरना पड़ता था, भारतीय नारी शक्ति कहती है - **'अहं राष्ट्र संगमनी वसूनां तथा अहं रुद्राय धनुरातनोमि'** वह कहती है मैं राष्ट्र को बाँधने वाली शक्ति हूँ। मैं ही उसे ऐश्वर्यों से सम्पन्न करती हूँ आकाश और पृथ्वी में व्याप्त होकर मनुष्य के लिए संग्राम करती हूँ। स्पष्ट ही वाग्देवी के रूप में महा सरस्वती, महा लक्ष्मी, तथा महा चण्डी, की विविध शक्तियों का समाहार शक्ति स्वरूपा लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर का जीवन चरित्र आज की युवा पीढ़ी के लिए निश्चित ही प्रेरणादायक है। उन्होंने अपने संघर्ष पूर्ण जीवन और विपरीत परिस्थितियों में भी अहिल्याबाई होल्कर का पूरा जीवन अंतिम सांस तक आत्म अनुशासन जन सेवा और शिव भक्ति और नारी सम्मान और सामाजिक के लिए अर्पण किया वे सचमुच नारी रूप में किसी देवी का ही अवतार थीं।

वे माणकों जी शिंदे की पुत्री थीं इनके पति का नाम खण्डूजी था। जो मल्हारराव होल्कर के लड़के थे। इनको मालेराव नाम का एक लड़का तथा मुक्ताबाई नामक लड़की थी। इनके पति की मृत्यु तोप का गोला लग जाने के कारण हुई थी। पति की मृत्यु के बाद ये सती होना चाहती थीं किन्तु इनके ससुर ने इन्हें ऐसा नहीं करने दिया। क्षमा और दया इनके मूलमंत्र थी किन्तु ये कठोर अनुशासन करना भी जानती थी। मल्हारराव की मृत्यु के बाद चन्द्रावत राजपूतों ने इनके सेनापति तुकोजी की अनुपस्थिति में विद्रोह किया। इन्होंने सेना लेकर व्यक्तिगत रूपसे विद्रोह का दमन किया। इसी प्रकार एक बार सतपुड़ा के भीलों ने उपद्रव करना चाहा। इन्होंने उनके सरदार को पकड़वाकर फांसी दिलवा दी। मालेराव की मृत्यु के बार राधोबा पेशवा ने इनके राज्य को हस्तगत करना चाहा। इन्होंने स्त्रियों की एक सेना एकत्र कर राधोबा के पास संदेश भेज दिया कि इनके युद्ध में हारने पर कोई क्षति न होगी किन्तु राधोबा की पराजय उनके लिए अपमानजनक होगी। फलत: राधोबा ने आक्रमण का विचार त्याग दिया इनके स्मरणीय कार्यों में कलकत्ता से बनारस तक सड़क का निर्माण तथा सोमनाथ (सौराष्ट्र) विष्णु (गया), विश्वेश्वर (बनारस) के मंदिरों की स्थापना है।

उनके जीवन का भी उपर्युक्त कथन था ही एक उज्जवल उदाहरण है। वह एक विमल-चरित्र युक्त साधुहृदया धर्मपरायण स्त्री थी, जो आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व दक्षिण के एक छोटे से गाँव के एक मराठा परिवार में पैदा हुई थी। वे न तो विशेष रूपवती ही थी न पढ़ी-लिखी ही, किन्तु बचपन से ही धर्म के प्रति उनके मन में प्रगाढ़ श्रद्धा और दृढ़ता का एक अदम्य भाव जड़ जमाए हुआ था - यही उनकी सबसे महान संपदा थी। योगायोग की बात थी कि वे एक विशद स्वाधीन राज्यकी स्वामिनी बनी, जिसके शासन का भार परिस्थितवश स्वयं अपने ही हाथों में लेने को उन्हें विवश होना पड़ा भला उस जैसी निवृत्तिमार्गी स्त्री के लिए यह राज्य-शासन का जंजाल क्योंकर उपयुक्त और अनुकूल होता? यही नहीं, उस विकट युग में एक स्त्री के लिए इस भार को यथोचित रीति से निवाह लेना भी तो कोई आसान बात नहीं थी। फिर भी परिस्थितियों ने जब वह बोझ उनके कंधों पर रखा तो एक सच्ची भारतीय वीर नारी की भाँति उन्होंने उसे वहन किया - वह पीछे नहीं हटी! उन्होंने अपने चरित्र द्वारा यह साबित कर दिया कि भारतीय प्रतिभा केवल पुरुषों तक ही सीमित नहीं है, समय पड़ने पर हमारी महिलाएं भी चाहे जिस क्षेत्र में उतरकर देश और जाति की पतवार भली प्रकार संभाल सकती हैं।

वस्तुत: हमारे आज के नारी-जागरण की वह मानों 300 सौ वर्ष पूर्व ही पैदा हो जाने वाली एक अग्रदूत थी, जिसने हमें अपनी राष्ट्रीय शक्ति के एक भुलाए हुए महत्वपूर्ण अंग-नारी शक्ति का फिर से भान करा दिया। देवी अहिल्याबाई इंदौर के प्रख्यात होल्कर राज्य के संस्थापक वीर मल्हारराव की पुत्रवधु थी। दुर्भाग्य-वश विवाह के कुछ वर्ष बाद ही उनके पति

खंडेराव की रणभूमि में मृत्यु होने से तदुपरान्त उनके श्वसुर मल्हारराव होल्कर एवं एक मात्र पुत्र मालेराव भी जो मल्हाराव के निधन के बाद होल्कर राज्य की गद्दी पर बैठा था इस संसार से चल बसे। अब राज्य शासन की बागडोर संभालने वाला सिवा विधवा अहिल्याबाई के सारे राज-परिवार में कोई नहीं रहा था। यह सच है कि वह पति और पुत्र की मृत्यु के समय से ही संसार से एकदम विरक्त-सी हो गई थी, फिर भी एक सच्ची भारतीय वीर रमणी की भाँति ऐसे संकट के समय में उन्होंने राज्य की नौका को बिना किसी कर्णधार के छोड़ देना उचित नहीं समझा। उन्होंने साहस के साथ राज्य की पतवार अपने हाथों में ले ली और तीस वर्ष तक ऐसी मुस्तैदी के साथ राज्य-शासन का सारा कारबार चलाया कि भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय शासन संचालिका के रूप में उनका नाम अमर हो गया।

किन्तु हमारे लिए उनकी महानता केवल इस बात में ही नहीं है कि एक स्त्री होकर भी वह इतनी लंबी अवधि तथा योग्यतापूर्वक एक विशाल स्वतंत्र राज्य का संचालन करने में समर्थ हो सकी। इतिहास में एक से एक प्रतापी राजदण्ड धारण करने वालों की गाथाएं भरी पड़ी हैं, फिर भी उनमें से कितने हैं, जिनकी स्थायी रूप से लोकहितैषी महापुरुषों में गणना की जाती हो ? अहिल्याबाई की ऊँचाई के निर्धारक वस्तुत: उसके वे अनेक लोकहित मूलक धार्मिक सत्कार्य थे, जिन्होंने हजारों में से एक दो-ही कोई शासक कभी पूर्ण कर पाए गए हैं। ये सत्कार्य थे उस समय के वे देशव्यापी जनसेवा, लोकहित के विविध प्रयास जिनके कारण आज अहिल्याबाई होल्कर का नाम उत्तर में हिममंडित केदारेश्वर से लेकर दक्षिण में सेतुबंध रामेश्वर तक इस देश के धर्म-यात्रियों और साधु-संतों की ज़वान पर मानों सदा के लिए बस गया है। कहते हैं, जिस समय इस धर्मपरायण शासिका ने अपने हाथों में शासन-सूत्र ग्रहण किया था, उस दिन सर्वप्रथम राज्य के सारे कोष पर तुलसीदल रखकर उसे केवल धर्मार्थ ही व्यय करने का पुनित निश्चय उसने प्रकट किया था और अपने इस पुण्य-संकल्प का उसने आजीवन निर्वाह किया। उनके द्वारा भारत के प्राय: हर बड़े तीर्थ स्थान में निर्मित किए गए जो विशाल देवालय, धर्मशालाएं, घाट, तालाब, कुएं आदि आज भी पाए जाते हैं, वे इस बात के मूर्तिमान प्रमाण हैं। क्या यह कम महत्व की बात है कि अहिल्याबाई द्वारा निर्मित ये धर्मशालाएं, घाट और अन्न क्षेत्र आज 300 वर्ष बाद भी इस देश के धर्मयात्रियों को आश्रय देते हुए अशोक के स्मारकों की भाँति उस लोकहित-कारिणी देवी का यशोगान हमें सुना रहे है? कहते हैं, यात्रियों के हित के लिए इस लोकनैत्री ने कई सड़कें भी बनवाई थी। इस प्रकार देश-दर्शन और पर्यटन के लिए स्थान-स्थान में अमूल्य सुविधाएं प्रस्तुत कर उन्होंने उस प्राचीन हिन्दु आदर्श की ही फिर से पुनरावृत्ति करने का प्रयास किया, जिसके अनुसार राज शक्ति का कर्तव्य हर प्रकार से लोक की सेवा करना ही माना गया है। यह कोई कम गौरव की बात न थी विशेषकर एक स्त्री शासिका के लिए जिसने न कभी कोई शासन-संबंधी शिक्षा ही पाई न तरह-तरह की राज्य-संबंधी उलझनों को निपटने से ही जिसके हाथ कभी खाली रहे। प्राय: लोग अहिल्याबाई क जीवनवृत्त में अन्य शासकों की तड़क-भड़क, शान-शौकत और तलवार की चका-चौंध न पाकर उस देवी की महानता को आँखों में और भी ऊँचा चढ़ा देता है - उनका व्यक्तित्व धवल हिमगिरि की भाँति और भी अधिक शुभ्र तेजस्वी और महान, प्रतीत होने लगता है, निष्प्रभ नहीं! सचमुच ही अहिल्याबाई होल्कर एक देवी थीं - उनका चरित्र हमें सदैव सत्पथ की ओर अग्रसर करता रहेगा। राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त जी की रचना के साथ हे महा माननीय देवी! प्रात: स्मरणीय पुण्यश्लोक लोकमाता के रूप में पूजनीय बन गई हैं। प्रेरणादायक उनका जीवन समूची मानवता के लिए अमूल्य धरोहर बन गया है।

इस विशेषांक हेतु कला समय की टीम लोकमाता अहिल्याबाई की राजधानी महेश्वर में अतिथि सम्पादक पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय जी के नेतृत्व में गई जहां टीम ने स्थानीय साहित्यकारों की मदद से महेश्वर का अध्ययन किया इसके बाद टीम इंदौर भी गई।

'जितने कष्ट कंटकों में है उनका जीवन समुन खिला।
गौरव गंध उन्हें उतना ही यत्र-तत्र-सर्वत्र मिला।'

'कला समय' के इस ऐतिहासिक लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर 300 वाँ जन्म जयंती वर्ष विशेषांक' के अतिथि संपादक वरिष्ठ पुरातत्वविद, इतिहासकार पंडित कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय जी के हम हृदय से आभारी हैं कि लोकामाता अहिल्याबाई होल्कर पर इस दुर्लभ मौलिक सामग्री से यह विशेषांक अपने आप में संग्रहणीय अंक बन सका हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं हम उन सब रचनाकारों के प्रति भी आभारी है जिन्होंने अपनी रचनाएं, आलेख भेजकर इस अंक को महत्वपूर्ण बनाने में हमारा सहयोग किया।

हम आशा करते हैं कि यह अंक भी पाठकों को रुचिकर लगेगा। हमारा निवेदन है कि हमें अपनी प्रतिक्रिया और सुझावों से अवगत कराने की कृपा करें।

दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

।। शुभमस्तु ।।

- भँवरलाल श्रीवास

आलेख

मूल दस्तावेज की मौलिक्ता हेतु प्रस्तुत आलेख में सुधार नहीं किया गया है।

अहल्याबाई का प्राचीनतम विवरण

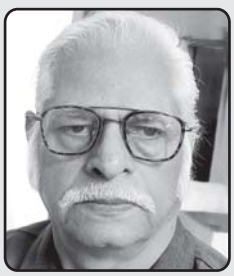

पं. कैलाशचन्द्र
घनश्याम पाण्डेय

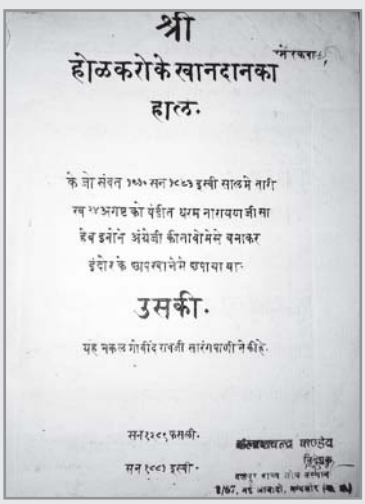
श्री
होळकरोके खानदानका
हाल.

उसकी.

होळकरों के बहुत कम दस्तावेज वर्तमान में उपलब्ध है। होळकर राज्यवंश के ग्यारहवें शासक तुकोजीराव द्वितीय ने अपने शासनकाल के दौरान पण्डित धरमनारायण को ''श्री होळकरों के खानदान का हाल'' नामक ग्रंथ के लेखन का दायित्व प्रदान किया था। लेखक ने इस ग्रंथ का निर्माण लेखक ने अपने जमाने में उपलब्ध सैन्य अधिकारियों, भद्र पुरुषों से साक्षात्कार करके, अपने समय में प्रकशित आंग्ल ग्रंथों का अध्ययन कर विक्रम सम्वत् 1910 सन् 1853 अगस्त, 24 को पूर्ण किया। इस ग्रंथ के बारे में कहा गया है कि इसे पं. धरमनारायण ने इन्दौर के छापाखाने में छपवाया था। परन्तु आज दिन तक इस ग्रंथ की कोई मुद्रित प्रति उपलब्ध नहीं हुई है। यदि किसी महानुभाव के पास होतो जानकारी प्रदान करें। मेरे पास मूल ग्रंथ की नकल जो गोविन्द राव सारंगपाणी के द्वारा फसली सन् 1289 तदनुसार ईसवी 1881 में की गई थी की मूल प्रति उपलब्ध है। यह प्रति डॉ. के.एल.श्रीवास्तव (इन्दौर) के संग्रह में उपलब्ध थी। वर्ष 1988 में जब मैंने डॉ. श्रीवास्तव की पुस्तकों का संग्रह क्रय किया तो यह हस्तलिखित पाण्डुलिपि मुझे प्राप्त हुई। वर्तमान में यह प्रति श्रीदशपुर प्राच्य शोध संस्थान में संग्रहित है। 171 साल पुरानी इस पाण्डुलिपि में लिखा प्रात: स्मरणीया पुण्यश्लोका अहल्याबाई का विवरण 'कला समय' के माध्यम से सुधी पाठकों की सेवा में पहली बार यथावत प्रस्तुत किया जा रहा है।

– अतिथि संपादक

मल्हारराव महाराज तो एक सीधे और दील के सच्चे सीपाही थे। और महादजी सींधीया में अच्छी और बड़ी खुबीयों के साथ सीयानपन भी था।

मल्हारराव होळकर को अेक ही बेटा था। और उसका नाम खंडेराव था और पानीपत की लडाई से कुछ दीन पहले कुंभीर के कीले के घेरने वक्त डीग के पास मारा गया था। उसकी शादी **अहल्याबाई** से हुई थी। जो सींधीया के खानदान की थी और ईसे एक बेटा और एक बेटी पैदा हुई थी। ईस बेटे का नाम मालीराय था। और ईसके वास्ते पेशवा के चचा राधोबा दादाने जो ईस वक्त मालवे में मरहठों की फौज का सरदार था। जल्द खीलत भेजा और उसके दादा मल्हारराव होळकर की जगह ईसको मालीक मुल्क और इखतीयार का बनाया। परंतु यह सरदार बुहत दीनों राज करने न पाया और नो महीने में मर गया। और ईसके मरने का बुहत दुख हुआ।

लोग हमेशे से ईसकी अक्ल को कम और बे ठीकाने जानते थे। परंतु सरदार होने से पहले कोई नीशानी दीवानगी की उनसे दीखाई नहीं दी थी। मगर सरदारी पाते ही वुह इनसे हर काम में जाहीर होने लगी। पहले – पहले तो वुह बेअकली के काम बुहुत करता था और ईस्से पाप इतना नहीं होता था। ईनकी माता का वक्त धर्म के कामों में कटता था। और वु ब्राह्मणों पर बहुत ही दया करती थी। मालीराव ईस कौम की आदर में बुहत कमी करने लगा।

इसका यह दस्तुर था की वुह जुतीयों और कपडों में बीच्छु रखकर उनको देता था। और बरतनों में रूपये भरकर उनमें यह डसने वाले कीडे धरकर भी कश्मसो(?) को देता। और जब वुह लालुच से इनको ले जाते तो यह कीडे इनको डसते और इस्से वुह बुहुत खुश होता। परंतु बाईसाहेब को बडा दुख होता था। वुहु अपने नसीब पर अफसोस करती थी। और कहती थी। की मुझे बेटा क्या। अेकदेव मीला है। वुह अकसर उनकी बेवकुफी का हाल कहा करती थी। और कहती थी की यह राज के लायक नहीं है। ईन बातों से
वाजे लोगों ने अैसा जाना की बाई साहेब ही उसके जल्द मरने का कारण हुई मगर यह बात सब झुठी है।

और जीतने आदमीयों से हाल ईसके मरने का पूछा गया। सबों ने उसके मरने का कुछ और ही सबब बताया। उसको यह यकीन हुआ की एक उसके खानदान की कीसी लौंडी से अेकजर दोज दोस्ती रखत है। और हसद के मारे उसने उसको मार डाला था
इसके पीछे ठीक पड गया। की बुह आदमी पाप से बीलकुल नीरमल है।

और इस बात के अफसोस और पछतावे से मालीराव को अैसी दीवानगी हो गई। की सबको उसके जीने का डर हो गया। यह बात मशहूर है की वुह कारीगर जादु जानता था। और उसने मालीराव से कहा था की तु मुझे नहीं मार। नहीं तो मैं तुस्से बडा बदला लुंगा। ईस बात से लोगों को यह यकीन हुआ की मालीराव की दीवानगी का वुही बाईस हुआ और उस पर जीन हो कर बढ गया।

अहल्याबाई को भी ईसका यकीन हुआ। और दीन रात अपने पुत्रके बीछो ने के पास बैठी रहती थी। और अपने जान में उस देव से जो उस पर चढा था। और उसके मुह से बोलता था बातें करती थीं। वुह बुहत रोती थी। और पहरों पुजा और दुआ में काढती थीं जीन के राजी करने की उन्होंनेकहा की मै मारे हुए। आदमी की छतरी बंधवा दुंगी। और उसके कुटुंब को जागीरी दुंगी। जो वुहु मेरे पुत्र को छोड देगा। परंतु इस्से कुछ फायद: नहीं हुआ और यही जवाब मीलता रहा। की इसने मुझे बे गुनाह मारा है और मैं भी इस

की जान लुंगा। उसके मरने का हाल लोगों ने अैसा बताया है। उसके मरने पर **होळ्करों का नाम बना रखने के लीए बाईसाहेब को रीयासत का काम करना। पडा और औरत होने पर भी इन्होंने ऐसी अक्ल और धर्म और चालाकी से काम कीया। की जीते जी तो अपनी प्रजा को बहुत फायद: पौंछाया और मरने पर मालवे में न्याव और ईनसाफके राज और हर तरह की तरक्की की तजवीजों की** याद छोड गई।

अहल्याबाई साहेब की बैटी कीसी और वंश में ब्याही गई थी। और हीनदुओं के दस्तुर के मुआफीक होळकरों की रीयासत के बंदोबस्त में उसको कुछ दावा न पौंछता था। ईसहाल में गंगाधर जसवंत ने जो कौम का पंडत और मल्हारराव महाराज का दीवान था। यह सलाह बताई की कीसी बच्चे को जो दुरका नाती हो गोद लेकर मालीराव की जगह बैठा ओ। यह सलाह उसने इसलीये दी थी की इसमें वुह दीवान बना रहता। उसने अहल्याबाई के वास्ते भी कुछ बड़ी तजबीज की थी। और यह कहा था की बाई साहेब में राज के बंदोबस्त करने की तो लीयाकत है। परंतु वुह औरत होने से इस काम पर मुकर्रर नहीं हो सकती। गंगाधर ने राधोबा से कहा था। की जो तुम ईस तजबीज को मंजुर करोगी। और मेरी मदद कर कर उसको जारी करा दोगे तो तुमको बुहत सा नजराना दुंगा। ईस लालुची सरदार ने वुह तजबीज झट मंजुर कर ली और उसकी मंजुरी को दी वान ने ऐसा पक्का जाना की वुह बाई साहेब के पास-आया और उसको खुब यकीन था की जो बाईसा हेब और तरह नहीं मानेंगी तौ यह जानकर तो कबुल कर लेंगी। की लडने और न मानने से कुछ हासील न होगा। मगर उसका मतलब बन न पड़ा। **इस बड़े दीलवाली औरत ने उस्से अेकदम कह दीया। की तेरी तजबीज में होलकरों के नाम की हलकाई और बेईज्जि ती है में इसे कभी न मानुंगी। जो कुछ नजराना राघोबा के वास्ते मुकरर कीया था- वुह उसने बुहत ही नामंजुर** की या और कहा की ईस आदमी को ईस काम में दखल देने का कुछ हक नहीं पौंछता उसने कहा की मेरे बैटे के महाराज का कोई वारीस नहीं रहा। और मैं दो पीछले सरदारों खानदान होळकर में से अेक की रानी और दुसरे की माता हुं- सो अब कीसी को सरदार बनाने का हक मेरा है और यह वाजबी दावा में नहीं छोडुंगी। ईसमें कुछ भी तकलीफ और कीतइना ही नुकसान हो अैसा मालुम होता है। की अहल्याबाई साहेबने अपने बडे बडे सरदारों और मरहटे सरदारों फौज से जो इस वक्त मालवे में थे इस मुकद्दमें में सलाह कर ली थी।

ईस मुशकील में बाईसाहेब ने बडी मजबुती बताई। उन्होंने सुना की राघोबा तैयारी करता है। की जबरदस्ती से तजबीज को बाई साहेब से मंजुर कर वा वे। ईस पर उन्होंने उसे कहला भेजा और समझाया की **तु अेक औरत से लडाई मतकर ईसमें तेरी बदनामी होगी। और कुछ ईज्जत नहीं मीलेगी** ईसके सीवाय बाईसाहेब ने लड़ाई की भी सब तैयारी की होळकरों की फौज उनके पक्ष पर रही। और बाई साहेब अपने दीलकी पक्काई बताने को आपही उनकी सरदार बनीं और हुकम दीया। की हमारी सवारी के हाती के हौदे के कोनों पर चार कमानें और तीरों के तरकश रक्खों पहले पहले तो राधोबा ने भी अैसी ही तैयारीयां लडाई की कीं परंतु उसके सब साथी खुशी से लडने को राजी न थे। और महादजी सींधीय: और जानोजी भौंसला ने भी उनका साथ नहीं दीया। और कहा की तु बडाना अहसान मंद दीवान है। हम तेरे साथ होकर होळकरो के राज को नही खोवेंगे। ईन सरदारों के अैसा कहने-और महाराज पेशवा के अैक खत के आने से जीं को बाईसाहेब ने ईसिमुकदमे में लीखा था **बाईसाहेब की जीत हो गयी महाराज पेशवाने राघोबा को लीष भेजा की महाराज खंडेराव की रानी से तुम कुछ फसाद नकरो।** और ईनके सामने रीयासत के बंदोबस्त करने का कीसी को दावा नहीं पौंछता राधेबा ने ईस हुकम को बीलकुल माना और बाईसाहेब ने पहले ही अैसा अेक काम समझका कीया। जीस्से उनके बंदोबस्त को आगे को बडी नामबरी हुई बाई साहेब औरत होने के सबब से फौज की सरदारी और बुहत से और कामों के योग नहीं थीं सो **ईन कामों के लीये इन्होंने तुकोजी होळकर को पसंद कीर्या। जो मल्हारराव महाराज की कौम में से था मगर ईन से कुछ रीशता नहीं रखता था महाराज मल्हारराव तुकोजी की सी पाहीगीरी की बुहत आदर करते थे।** और उनको पागाह की सरदारी पर मुकर्रर कीया था। अहल्याबाई साहेब ने जब ईनको फौज की सरदारी के लीये पसंद कीया ईस्से पहले इनकी चाल मरहटे सीपाही के मुआइीक सीधी और बेगरुर और बनावट के थी और अपनी सारी उमर भर वुह अैसे ही रहे जब यह बंदोबस्त हो गया तो धोया पुना के तरफ चला और बाईसाहेबने ईसे महेसर के रस्ते से बुलाकर ईसकी बडी खातेरदारी से जीयाफत की। और हुकुमदीयो की होळकरों की कंटंजंट की फौज ईसके साथ तुकोजी की सरदारी में पुने को जाय। और वहां ईस सरदार को सर्दारी फौज का सीलत मीले। और ईसकाम पर पक्का होने का हुकुम हो जावे। ईन की सब बातें मंजुर हुई और इन्होंने दीवान गंगाधर की पहली

नेकनामी और अच्छी खीदमतों पर ध्यान करके फीर उस पर दया और प्यार की आखें कर लीं

तुकोजी के ईखतीयार पाने के वक्त से होळकरों की रीयासत में दो हुकम हुए थे। और जमाने के दसतुर के मुआफीक अैसा मालुम होता था की यह बंदोबस्त अैक अठवरे भी नहीं चलेगा। परंतु 30 बरस तक ईसी बंदोबस्त से काम चला। और हसद और बडाई की चाहना से उसमें कुछ नुकसान नहीं आया। ईसका कारण यह था की दोनों सरदारों में धीरज और नेकी थी और वुहु दोनो। आपुस का आदर रखते थे। और ईनके हुकुम की हद्दें अलग अलग थीं।

जब बाई साहेब ने तुकोजी को फौज की सरदारी और रीयासत में बडा कहला ने को पसंद कीया। उस वक्त उसकी उमर इतनी थी। जीसमें आदमी का सुभाव और दील अैक हाल पर जमकर पक्का हो जाता है। बाई साहेब ने जो ईनको आप पसंद की या

था ईस कारण वुह ईन से बहुत प्यार करती थीं और तुकोजी भी कभी ईनके अहसान को नहीं भुलते थे। सीवाय ईसिके बाईसाहेब अपने धर्म और नेकीसे जगमें अैसी नेक नाम हो गई थी। की जो तुकोजी जरा भी अहसान मंदी में गफलत करते तो सारी दुनीयां ईनको बुरा कहती फीरभला अैसे हाल में वुह बाईसाहेब कामाल और उनके हक कीस तरह छीन सकते थे। तुकोजी के दील में कभी अैसे खयाल आते भी नहीं थे। उनको उनसे डातने की कब जरूरत पडती **रीयासत के बडे कारकुनों में से अक आदमी नारो गणेश नाम करके बा**

ईसाहेब की खैर खाही में न था। सो अगर्चे कुछ दीनों तक तुकोजी ईस आदमी के कहने में बुहत चलते थे। परंतु उन्होंने कभी वुह चाल नहीं छोडी। जो पहले से **वुह बाईसाहेब के तरफचले थे। वुह नौकरों के बराबर ताबेदारी ही नहीं करता था।** मगर औलाद के मुआफीक समादत मंद और सुपुत्र था। और सब कामों में खयाल राजी करने बाईसाहेब का जीन्होंने उसको इतिना बड़ा दीया था। रखता था। वुह हमेशे उनको अपनी माता कहा करता था। मगर वुह ईस्से जो बुहत छोटी थीं ईस्से यह रीशता सीक्के पर खोदा नहीं गया था।

बाई साहेब के हुकुम से उसकी मुहर पर ईसका नाम तुकोजीबेठा मल्हारराव का लीखा था। यह हाल उनके मीलापका अचरज दीखता है। मगर जब तुम हाल इनकी रीयासत करने का सुनोगे तो और भी जीयादा अचंबा होगा। जब तु**कोजी दखन में रहते थे और अेक दफे तो बुह बारह बरस तक रहे थे** तब सब ईलाके होळकरों के जो सातपुरा परबत के नीचे थे ईनके बंदोबस्त में रहते थे और उस हद से उपर के ईलाके बाईसाहेब के हुक म में रहते थेइ और सब टांका देने वाले ईनको ही हर बरस टांका देते थे। और जब तुकोजी हीनदुस्थान में रहते थे। मालवे में तो वुह कभी बुहत दीन नहीं रहे रत व हीनदुस्थान के ईलाकों और बुंदेलखंड और राज पुताने का टांका वुही ईखट्टा करते थे-**मालवे और नीमाड के महाल दस्तुरके मुआफीक बाईसाहेब के हुकम में होते थे। और ईन दोनों में दखन में भी उनोही का हुकुम** चलता था।

होळकरों का **खजाना जीसमें बीस लाख रुपए बताते हैं। बाईसाहेब के पास रहता था** सीवाय ईसके उनकी सास जात के वास्ते चार महाल मुकर्रर थे। जीन की चार लाख रूपये से जीयाद: साल की आमदनी थी और ईस रुपये को उपर के रूपये के साथ वुह जैसे चाहती थीं। वैसे खर्च करती थी। **बाकी और आमदनी सरकारी खर्च में आती थी। और इसका जमा खर्च बंता था। जमाखर्च का हीसाब बहुत सही बनाया जाता था। और बाद देने मुल्क और सीबंदी के खर्च के बाईसाहेब बाकी रूपया सरकारी खजाने में भेज देती थीं। की वुह उस फोज की जरूरतों में काम आवे।** जो बाहर नौकरी रक्खी जाती थी। यह सच है कि दुर रहने के सबब से तुकोजी लाचारी से अपनी अक्ल पर काम करता था। परंतु अैसा कहते है की सब मुकदमे रीयासत के बडे कामों के वुह बाईसाहेब के पास भेज दीया। करते थेइ और गेर मुल्कों से सुलह या लडाई करने के मुकदमों में सब छोटे और बड़े रईसों **हीनदुस्थान के बकील जो बाईसाहेब के दरबार में रहते थे। उनकी बडाई मानते थे और खास ईनके तरफ के वकील पुन और हैदराबाद और सुरंगा पटाम और नागपुर और लक्षनों और कलकत्ते में रहा। करते थे और छोटे-छोटे राजाओं केदरबारों में भी वकील मुकर्रर थे।** बुहत करके इन दरबारों में जीनसे टांका लीया जाता था।

जो बातें उपर लीखी गई हैं उनसे मालुम होता है। की हकीकत में **रीयासत की बडी अहल्याबाई साहेब थी। और जब तक वुह जीती रहीं तब तक तुकोजी ने जो बड़ा दरजा और इनके दील में पुरा भरोंसा पाया था।** ईस्से राजी होकर वुह फकत फौजकी सरदारी का काम करते रहे। और इन महालों रूपया वसुल करते रहे। जहां वुह पास होने के कारण बाईसाहेब के और कीसी कारकुनो से वुह अच्छी तरहवसुल कर सकते थे- - - - - - - - - - -

- - - - - इस वक्त तुकोजी की उमर सतर बरस की थी। और वुह जो मरहटे सरदारों में जो इस कौम की बडाई के दीनों में मौजूद थे सबसे जीयाद: बुढे थे। इस कारण महादजी सींधीय: के मरने के पीछे लोग इनका बुहत आदर करने लगे। - - - तुकोजी इसलीये तारीफके जीयाद: योग है की उन्होंने अहल्याबाई साहेब की बहुत तावेदारी और अहसान मंदी की जबसे उन्होंने बडाई पायी थी। उस वक्त से **बाईसाहेब के वैकुंटवाशी होने तक उनमें कभी कोई तकरार भी नहीं हुई फीर लडाई का तोक्या काम है ईस बात से दोनों की बडाई मालूम होती है** और बहुत करके बाई साहेब का अब हम हाल बंदाबेस्त का जो जिन्होंने होळकरों के ईलाकों का मालवे में कीया लीखते है। उनके राज में वैसी लडाई और फसाद की बातें बहुत कम हुई जो ईस वक्त सींधीया के खानदान में होती थी और अैसी बातों का नहो ना ही इनके राज की नामबरी का सबब है। **30 बरस तक इनके राज की खुबी से होळकरों की रीयासत में शान और तरकी रही** और अगर्चे आखीर को महादजी

सींधीय: की अकल और बडी फतहों के सामने ईनकी बडाई नहीं रही तो भी बाईसाहेब की सारी उमर तक होळकरों का षानदान मरहटो की रीयासत के बडे नामी हीस्सों में से शुमार कीया जाता था। हमने अभी उपर लीखाहे की तुकोजी और बाई साहेब मीलकर रीयासत का काम करते थे। और इख्तीयार दोनों में बटा हुआ था। जो मुल्क की मालवे में थे और नीमाड काबंदोबस्त खास बाईसाहेब करती थी। और उनकी यह तजबीज थी की नर्म और बाजबी जमाबंदी होवे जीस्से मुल्क की हालत में तरक्की हो और रेयत का चैन और आराम बढे। महालों की सीबंदी के सीवाय बुहत थोड़ी फोज रखती थीइ परंतु उनके इंसाफऔर न्याय के जोर से यह थोडी ही फौज मुल्क में अमन और बंदोबस्त रखने के लिए बहुत थी उनको इस बात का भरोसा था की उनकी नामवरी और उस फौज की मदद से जो हीनदुस्थान और दषन में लड़ती थी। उनकी रीयासत बाहर के दुशमनों से बची रहेगी ही नदुओं में औरतों के परदा करने का कुल दस्तुर नहीं है वुह मुसलमानों के देखादेखी कहीं-कहीं औरतों को बाहर नहीं नीकलने देते और परदा करते हैं। कुछ परदा करने का हुकम हीनदुओं के धर्मकी कीसी कीताब में नहीं है और बडे-बडे नामी मरहटों और दषनी पंडीतों ने ईस दस्तुर को बील कुल छोड दीया है। **सो जो बाई साहेब राजका काम आप करती थीं और हर रोज देर तक सबके सामने दरबार करती थी तो इसमें कुछ दस्तुर से उलटा नहीं था।** वुह महालों में बुहत नर्म जमाबंदी करती थी। और वतनदारों के हक्कों का बुहत ध्यान रखतीथी वुह सब नालीशें आप सुनती थीं और जो हमेशा मुकद्में पंचायत और आदालत में सुपुर्द करती थीं। तो भी हर कोई नाव चाहने वाला इनके पास अर्ज कर सकता था। न्याय के सब मुकदमों में इनको अपने धर्म का इतना ध्यान रहता था। की **जब अपील के मुकदमे उनके पास आते थे तो छोटी सी बात की भी सुब चौकसी करती थी।** और अपनी तकलीफ का ध्यान नहीं करती थी। इस वह्म से की जो कुछ हाल धर्म और अक्ल और खुबीयों अहल्याबाई साहेब का इनके घराने के लोगों या इनके नौकरों से मालूम हुआ है। शायद इसमें कुछ झुठ भी होवेगा और इन के अपने लोगों ने उनकी तरफदारी करके वाज वीसे जीयाद तारीफ इनकी की होगी हमने इनका हाल और तरफों और बेगाने लोगों से भी दरयाइ कीया। की जीसमें सच्ची बात खुल जावे परंतु कोई अैसी बात नहीं पाई जीस्से उनकी तारीफ और नामवरी में फरक आसके जीतना जीयाद: हाल की चौकसी करते हैं। उतनाही जीयाद: अचरज होता है। और इसबात पर बडा अचंबा आता है। की जोजो मुशकील काम वुह तीस बरस की उमर से साठ बरस की आयुष्य तक करती रही उनके लीये अक्ल-और बदन की ताकत उनको कहां से आई थी जोवक्त के मुल्क के कामों से बचता था इसको वुह धर्म और पुन्य की बातों में काटती थी और धर्म के तरफबुहत ध्यान करने से इनका दील दुनयां के कामों के करने को बडा पक्का हो गया था। **वुह कहती थी की मुज को हर अेक अपने काम का जबाव भगवान को देना है और जब कभी इनके कार बारी लोग उनसे कोई बडा सखती का काम कराते थे तो वुह कहा करती थी की हम मरने वाले आदमीयों को भगवान की सृष्टी के नाश करने में बहुत होशयार होना चाहीये बाईसाहेब का वक्त हर रोज यों गुजरता था- की वुह सुरज के उदय होने से अेक घंटा पहले नींद से उठती और सुबह की पुजा और मामूली काम करतीं इसके पीछे कुछ देर तक पुरान सुनती धर्म करती और अपने हात से कुछ ब्राम्हणों को खाना खीलाती इसके पीछे आप रसोई पाती जीस में फक्त नाज और तरकारीयां होती थी क्योंकि उन्होंने खाना छोड दीया था।** अगंर्चे उनकी कौम के दस्तुर के मुआफीक इस बात की कुछ जरूरत नहीं थी रसोई पाने के पीछे वुह फीर पुजा करती और तब **जरा सोतीं और यहां से उठकर और कपड़े पहन कर दो बजे के वक्त दरबार में जाती और वहां अकसर शाम तक रहती थी और इसके पीछे दो घंटे में पूजा और खाने से फरागत पाके फीर नो बजे वक्त रीयासत काम में मसरूफहोती और ग्यारह बजे तक उसमें रहती** और उस वक्त सोने को जाती इस तरह की चाल में जो पूजा और परहेज और मीहनतसे भरी थी कभी फर्क नहीं होता था, सीवाय इस वक्त के जब कोई बडा सरकारी काम जरूरत का या कोई बर्त या थेवार आ जाता था

अहल्याबाई साहेब ने जो बंदोबस्त अपने ईलाकों का कीया था वुह अैसा अच्छा था। की उसको देखने से अचंबा होता है। जीन दस्तुर के बमु जीब तहसील की जाती थी और न्याव होता था। उसका हाल आगे लीखेंगे इस जगह यही कहते है की उन्होंने दूसरे मुल्कों के सरदारों से अैसा खुब बंदोबस्त कीया था की **कभी कीसी ने उनके ईलाकों पर हमला नहीं कीया सीवाय अेक दफे के जब अलसीराना उदैपुर ने अपने कोम के किसी सरदार की मदद के वास्ते जीसने रामपुर ले लीया था बाईसाहेब के मुल्क पर हल्ला कीया मगर फतह** नहीं पाई।

बाई साहेब के मुल्क पर जो बाहर से कीसी नेहल्ला नहीं किया। यह बात तो अचंबे की है। परन्तु उस्मे भी जीयाद: **अचरच यह है की उनके वक्त में कभी मुल्क में आपुस में भी टंटा और फसाद नहीं मचा** ईसका कारण यह था की वुह सब लोगों से अच्छा सलुक करती थी। ईस तरह की गरीब आदमीओ पर दया करती थी और मुफसीद और लुटेरों पर सखती रखती थी। परन्तु उनका न्याय खुब समझ कर करती थी। हीनदुस्थानी सरकारों की भलाई या बुराई का हाल ईस्से खुब मालुम होता है। को दीवा न देरतक रहते हैं। या जलदी बदलती है। और उनके महालों के और-और कारकुन नेक नाम हैं। की बदनाम ईसी के मुआफीक हीनदुस्थानी लोग अपने सरदारों का अच्छा या बुरा होना पहचानते है-

बाई साहेब के सारे राज में अेक ही दीवान रहा था-

और उनके कारकुन भी बहुत कम बदले जाते थे-

बाई साहेबने इंदौर **को अेक गांव से बडा मालदार शहर बनाया था। और वुह इस पर हमेशा बुहेतु ख्याल रखती थीं** वुह वहां के बसने वालों का माताकी नजर से देषती थी। और ईसबात के वुहत से नमोने बयान कीये गये है। जीन दीनो में तुकोजी होलकर इस शहर के पास

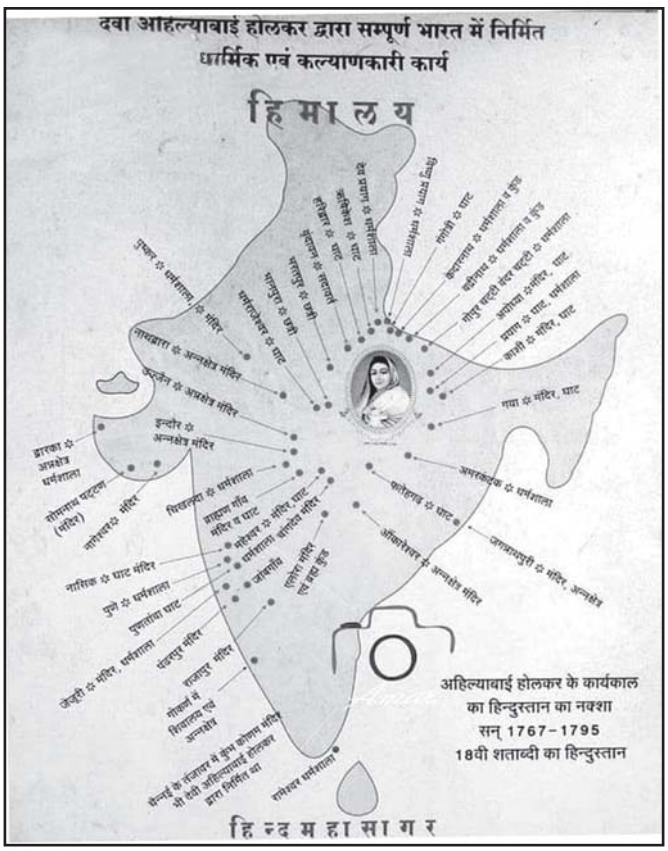

फौज लेकर पडे थे तो उन्होंने कुछ गरज वाले आदमीयों के कहने से चाहा की अेक साहुकार के माल मे से कुछ ले लें जो बेऔलाद मरगया था। उस साहुकार की जोरू जलदीसे महेसर को गई और वहां बाई साहेब से फरयाद की उसकी अर्ज बाई साहेब ने सुनी और इसको अपने खांवीद के माल और घर पर मालीक होने के कपडे दीये गये और **तुकोजी को अेक हुकम जल्दी भेजा की तुम ईदोर से दुर चले जाओ और शहर वालों से बे वाजबी रूपया नहीं** लो तुकोजी ने झट यह हुकम मान लीया और अपनी गलती का बदला कीया – और बाई साहेब को इस वास्ते उस शहर का और भी जीयाद: प्यार हो गया। अैसी बातों से वहां के लोग अब तक **बाई साहेब के नाम को पुजते हैं।** महादजी सींधीया की बडी नामवरी के कारण– जो इसके इलाके मालवे में थे वहां अमन अमान रहता था और इसी दबाव से बाई साहेब के मुल्कमें भी फसाद नहीं होने पाता था। बाई साहेब को उनके राज के शुरु में इस सरदार से बुहुत मदद मिली थी। और वुह उस्से सुलह और दोस्ती रखने के फायदे को खुब समझती थी। और इसी वास्ते सारी उमर भर उस्से मीलाप रखा। **महादजी सींधीया बडा मतलबी आदमी था सो यह ध्यान में नहीं आ सकता की वुह बाई साहेब की मदद अपनी कुछ गरज के बगैर करता होगा।** वुह खुब जानता था। की बाई साहेब का मीत्र कहलाने में इसकी मदद का बदला बाई साहेब ने कीस तरह कीया। परंतु पीछे से **बाई साहेब ने इसको तीस लाख रुपये करज दीये थे। और इसका उसने अेक कागज लीख दीया था। मगर रूपये के फीर देने का शायद ईरादा नहीं था।** शायद इसने यह ध्यान कीया था। की वुह जो इसकी मदद करता है उससे इसी रूपये का बदला हो गया। उसने अपने मुल्क के और फौज के अफसरों को हुकम दे रक्खा था की बाई साहेब की मदद करें और उनका राज जमावें बाई साहेब और महादजी सींधीया के इलाके अैसे मीले झुले थे की जैसी महादजी के मदद से उनकी रीयासत को मजबुती हुई वैसी और कीसी की मदद से नहीं होती।

होळकरों के टांकेदारों पर **बाई साहेब के वक्त में अैसी नरमी से सलुक होता था। की वुह कभी रूपये के देने में ढील और देर नहीं करते थे और जो कभी देर हो जाती तो वुह अैसी धमकी देती थीं की वुह डर जाते थे और झट रूपया दे देते थे** उन्हों ने रजपूत कोम के गीरासीयों से जीन्होंने लुट मार करके कुछ आमदनी तहसील पर अपने हक मुकर्रर कीये थे। बाजवी शरतें करके अमन कर लीया था– और वुह लोग वुहत राजी खुशी रहते थे बाईसाहेब को यह बड़ा शौक था की प्रजा का चैन और आराम बढे अैसा सुनते है की वुह साहुकारों और बैपारीयों और जमीदारों और कसानों के पास माल बढने से बहुत राजी और खुशी होती और ईस बात से इनको जीयाद: दया के योग जानती थी। जो कुछ बंदोबस्त **बाई साहेब ने नरमदा नदी के उपर रहने वाले गुंड कौम के लुटेरों और मालवे के पहाड़ों में रहने वाले भीलों** से कीया था। वुह ईनकी और तजवीजों के मुआफीक अच्छा था और उस्से जो अमन अमान नहीं हुआ और करार रह गई ईसका सबब कुछ और ही था, यह नहीं की इनकी चालाकीयां दानाई की कसर से हुआ हो **पहले तो इन्हों ने ईन लोगों से नरमी की और जब देखा की नरमी से नहीं मानते तो फीर सखती करनी शुरू की जिन्होंने बहुत से लोग ईनमें से जो बदी से नहीं रहते थे पकड कर मरवा डाले।** मगर अैसी सखती वुह बुहत कम दफे करती थी। और अगरचे ईनको जरूरत के वक्त पक्के से पक्के लुटेरे को डराना आता था। तो भी यूहू मीलाप से काम नीकालना अच्छा जानती थीं। उन्होंने चौकीयां बैठाई थी, की यह लोग लुटने से रूकें

मगर उनके दस्तुरों का बडा ध्यान रखती थी: **बाई साहेब ने इनका पुराना हक महसुल लेने का जारी रक्खा था। ईस महसुल को भील की कौडी कहते है और वुह मालपर पहाड़ों से गुजरने के वक्त लीया जाता था। सीवाय इसके बाई साहेब ने उनको बंजर जमीनें भी दी थीं मगर ईन सब बखशीशों के बदले में इनसे यह इक्तिार कराया था। की रास्तों की चौकसी करेंगे और जीस की हद में जो माल लुटेगा** उसकी कीमत वुह दीया करेगा। अपने मुल्के बंदोबस्त के वास्ते जो जो तजबीजें बाई सोहब ने की थीं उन सब के लीषने को यहां जगह नहीं है। सो इसलीये हम छोटा करके यह कह देते हैं। की सब लोग उसकी रीयासत को अेक नमूना अच्छी रीयासत का मालव में जानते हैं **तात्या जोग दीवान मल्हारराव महाराज के कहते थे। की में बाई साहेब की चाल पर चलने से सरकार ईगरेजी को भी राजी रखता हूं और अपनी सरकार**

को भी और मुझसे रेईयत भी खुश है। और उनके नाम का अेसा ईतबार है की जो कोई दसतुर कहते हैं। की उन्होंने जारी किया था। उस पर कोई वह्म और मना नहीं करता। बाई साहेब बड़ा धर्म करती थी जब हो ळकरों का खजाना उनके हात आया तो उन्होंने उसे धर्म के लिए संकल्प कर दिया इनोंने बहुत से कीले बनवाए और जामघाट पर अेक बड़ी **मीहनत और रूपया खर्च करके तैयार करवाई उन्होंने महेसर में धर्म के लीये बुहत से मकान बनाने में बडा रूपया खर्च कीया। और मालवें में होळकरों के इलाके में बुहत से शीवालये और धर्मशाले और कुएं बंवाए।**

यह धर्म के काम बाईसाहेब फकत अपनी ही रीयासत में नहीं करती थी। **सब जात्रा की जगहों में उत्तर से दखन तक और पुरब से पच्छम तक अथवा जगन्नाथ से दुवारकाजी तक और केदारनाथ से रामेसर तक उन्होंने धर्म के मकान बनवाये थे और खीदमत के लीये लोग नौकर रक्खे थे। और हरसाल धर्म करने के वास्ते रूपये भेजा करती थी। गयाजी में इन्होंने सबसे जीयादः इमारतें बनवाई है और वहां अेक मंदर में उनकी भी मुरत महादेवजी की पुजा करती हुई बनी हैं और उनकी अपनी कोमे के लोग इनको अवतार कहते है** और उनकी मुरत रामचंद्र और सीताजी के पास रकबी गई है।

इन हर साल के मामुली खरचों के सीवाय बाईसाहेब ने और धर्म की जगहों को रूपये भेजा करती थीं और **बुहत से मंदरों में मुरतों के नहलाने के लीये गंगाजल भीजवाती थी।** इनके धर्म के कामों में बडी अक्ल मालुम होती थी। वुह हर रोज भूकों को खाना देतीं और बाजे **तेहवारों के दीन नीचे से नीची कौम की जीयाफत करवाती गरमी के मौसमौ में रास्ते पर आदमी खडे कराती थीं की मुसाफरों को पानी पीलावे और जाडे के शुरु में वुह बुहत से अपने अधीनों और कम जोर लोगों को कपडे दीया करती थी। बहुत दफे उनकी दया के कामों से अचंबा होता था। वुह खेतों के चोपायों और हवा के जानवरों और नदी की मछलीयों पर भी दया करती थीं** और उनको खाना दीलवाती थीं। और यह बुहत दफे होता था। की महेसर के पास खेतों में धुपकाल में किसानों के बैलों बाई साहेब के नौकर हल जुतते हुये जाकर रोक देते थे और पानी पीलाकर दम देते थे और जो **क्रसान पंछियों को नाज खाने से मारकर हटा देते थे तो बाईसाहेब बहुत से खेत मोल लेकर उनके खाने को देती थीं और कहती थीं की क्रसानों का उनको मारना वाजबी है क्योंकी उनका जीना नाज पर ही है।** इस तरह के घर्म के देखने से हंसी आती है। और जो बाईसाहेब ब्राम्हणों पर सबसे सीवाय धर्म करती थीं और अपनी रीयासत के रुप्ये को दुर दुर के मुल्कों में मकान बंनवाने और उनका खर्च देने में उठा ती थीं **इस तजवीज को बुरा कह सकते हैं परंतु नका इस तरह रुप्या खर्च करना अकारत नहीं जाता था। और जीतनी नामवरी और आदर और मजबुती रीयासत की उनके इस धर्म से हासिल हुई थी।** अगर ईससे दुना रुप्या वुह फौज के रखने में खर्च करती तौ भी नहीं हासिल होती धर्म ही की मदद से वुह जग में मशहुर हुई थी। उनकी कौम के सरदार उनका शत्रु बन्ने और उनसे लडाई करने को पाप जानते थे। **सब लोग उनका आदर बराबर करते थे। दखन का नीजाम और टीपु सुलतान उसका उतना ही अदब करते थे जीतना महाराज पेशवा और हींदु और मुसलमान उनकी आयुष्या के बढाने और चैन से राज करने की दुआ मांगते थे।**

कला समय प्रकाशन

● सुरूचिपूर्ण फोर कलर प्रिंटिंग ●आकर्षक गेटअप
●नयनाभिराम पेपरबैक में...

- कला समय प्रकाशन द्वारा कला, साहित्य और संस्कृति पर केन्द्रित उत्कृष्ट पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। हम प्रकाशन के लिए अच्छी पुस्तकों की पांडुलिपियाँ आंमत्रित करते है। चयनित पांडुलिपियों का प्रकाशन लेखक और प्रकाशक की परस्पर सहमति से तय शर्तों के अनुसार किया जायेगा।
- जिन रचनाकारों को अपनी मौलिक अनुदित, संपादित रचनाओं को पुस्तक रूप में प्रकाशन करवाना है। वे कम्प्यूटर पर साफ- साफ अक्षरों में कागज की एक ओर टाइप की हुई पांडुलिपि की सॉफ्ट कॉपी के साथ कला समय प्रकाशन, भोपाल से संपर्क करें।
- पुस्तक के लोकार्पण और साहित्यिक मंच पर संवाद, चर्चा आदि की व्यवस्था है।
- प्रकाशित पुस्तक की समीक्षा सुविधा भी उपलब्ध है।

– भँवरलाल श्रीवास, निदेशक

आप स्वयं पधारे या सम्पर्क करें...

0755-2562294, 9425678058 kalasamayprakashan@gmail.com

कार्यालय: जे-191, मंगल भवन, ई-6 महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462016 (म.प्र.)

आलेख

अहल्याबाई होलकर और राजपूताना

– पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

अहल्याबाई होलकर यद्यपि मराठी भाषी थी लेकिन उनके पत्र मोड़ी लिपि व मराठी, राजस्थानी तथा हिन्दवी में लिखे मिलते है। उन्हें संस्कृत भाषा से भी प्रेम था अत: उनके अनेंक स्मारकों पर संस्कृत में पाषाण अभिलेख भी मिलते हैं। जहाँ तक मेंरी जानकारी है होलकरों में क्षेत्रिय भाषा में पत्रव्यवहार का प्रथम श्रेय अहल्याबाई को दिया जा सकता है।

हिन्दी में लिखे मराठों के पत्र सर्वप्रथम महामहोपाध्याय श्यमलदास दधवाड़िया ने ''वीरविनोद'' तथा डॉ. काशीनाथ शंकर केलकर ने अपने शोध प्रबन्ध ''18 वीं शती के हिन्दी पत्र'' में प्रकाशित किये हैं। मैं अपने लेख के इस भाग में राजपूताना की विभिन्न रियासतों में किये अहल्याबाई के किये पत्रव्यवहार के आधार पर यह बतलाने का प्रयास करूँगा कि महारानी ने अपने पत्र–व्यवहार में विविधवर्णी प्रयोग किये हैं।

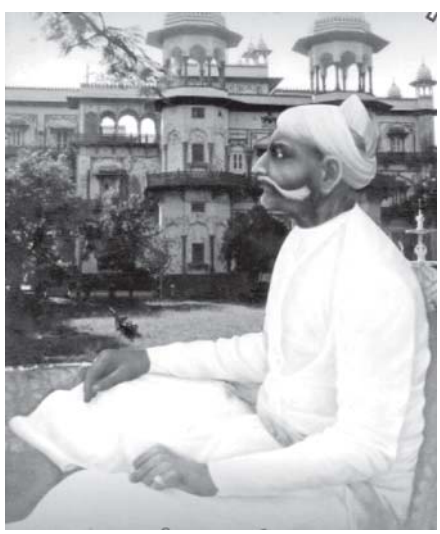

1. बीकानेर रियासत से सहृदयतापूर्ण सम्बन्ध रहे –

आपके चार पत्र **बीकानेर अभिलेखागार** में मिले हैं। ये पत्र क्रमश: बीकानेर के महारावत उम्मेदसिंह, सवाई पृथ्वीसिंह तथा सवाई प्रतापसिंह को लिखे गये हैं।

इन पत्रों की विशेषता यह है कि ये पत्र देवनागरी में राजस्थानी भाषा के पुट के साथ लिखे गये हैं। इन पत्रों का आरंभ 'श्रीरामजी' से हुआ है। 1771 से 1792 ई. के मध्य लिखे इन पत्रों पर किसी सील का प्रयोग नहीं किया गया है। इन पत्रों में केवल 'मोर्तब सुद' का उल्लेख मिलता है।

प्रथम पत्र – यह पत्र कार्तिक सुदी 5 संवत् 1828 यानें सोमवार 11 नवम्बर, 1771 ई. का है, इसमें तुकोजी राव होलकर के पास ऊटों पर कपड़े भेजे जाने की जानकारी मिलती है।

द्वितीय पत्र – यह 10 फरवरी 1776 ई. को लिखी चि. खण्डेराव के विवाह की पत्रिका है।

तृतीय पत्र – महारानी ने यह पत्र सवाई प्रतापसिंह को लिखा है। गुरूवार अगस्त 16, 1781 को लिखे इस पत्र में मल्हारराव के समय से चले आ रहे सम्बन्धों के परीपेक्ष में आग्रह किया है कि – ''सनातन ब्यौहार पर नजर राख के कागद समाचार हमेंशा लिखावते रहोगे।''

चतुर्थ पत्र – यह पत्र तीसरे पत्र के लगभग तीन वर्ष बाद लिखा गया है। **इस पत्र से ज्ञात होता है कि अहल्याबाई अधिक पढना नहीं जानती थी** (समाचार लीखे व मुजीब बचाय सुने) बुधवार 17, अक्टूम्बर, 1792 के इस पत्र में उन्होंने अपने को सुबेदार की सलाह में शामिल होना बताया है (म्ह यांकी सलाह में सामल छा)

2. झाला जालमसिंह, कोटा रियासत को धमकाया था अहल्याबाई ने –

कोटा राज्य का सेनापति, सलाहकार **झाला जालमसिंह अहल्याबाई से लगभग 15वर्ष छोटा था।** पर वह अपनी विलक्षण बुद्धि, साहस व वीरता के कारण महारावत कोटा को अपनी मुट्ठी में रखता था। वह कुछ वर्षो तक मेवाड़ महाराणा अरिसिंह का भी सलाहकार रहा महाराणा ने ही उसे ''राजराणा'' की पदवी प्रदान की थी।

महारानी के जीवनकाल के अतिंम समय में झाला ने कोई टन्टा मोल ले लिया। इस प्रकरण में **महारानी ने उसे छ: पत्र लिखे जो गुलगुले दफ्तर कोटा में संग्रहित हैं।** इन पत्रों की विशेषता यह है कि ये मराठी में लिखे गये हैं। महारानी इस समय 70 वर्ष की उम्र में चल रही थी पर उनके उत्साह में कोई कमी न थी। उन्होंने अपने 24, अप्रैल, 1795 ई. के पत्र में झाला को धमकाते हुए लिखा ''तर तुम्ही दिवसग न लाबिता मामलतीचे यैवजाचा निग्रय सत्वर करू देणे. लावणीवर टाकिल्यावर तुम्हासच भारी पडेल यांचा पुरता विचार करून लांबडीवर न टाकिता जलदी निकाल होय ते करणे **(जो प्रकरण है उसका शीघ्र निराकरण होना चाहिये, –– विलम्ब करना आपको मंहगा पड़ेगा । यह सोचकर प्रकरण का निकाल शीघ्र ही किया जाय)**

इस प्रकरण में झाला जालमसिंह ने शाणपत करी तो महारानी ने छब्बीस दिन बाद (20 मई, 1795 ई.) फिर एक पत्र लिखा कि– ''आजचे उद्यावर टाकून दिवस काढ़िता हे चांगले नाहीं **(आजकल करके आप जो समय निकाल रहे हो वह अच्छी बात नहीं है।)** इस प्रकार हम देखते हैं कि अत्यधिक धार्मिक व उदारमना अहल्याबाई साहसपूर्वक धमकाना भी जानती थी।

3. मेवाड़ महाराणा, भी भयभीत रहे महारानी से –

रतनसिंह फितूरी का लेकर महाराणा अरिसिंह द्वितीय (1761 –1773) का अपने सामन्तों से विरोध था। इसके सिवाय मेवाड़ पर सिंधिया के आक्रमण का भय भी निरन्तर बना रहता था अत: महाराणा अहल्याबाई का समर्थन चाहता था पर मेवाड़ के सामन्तों के भय से उसने अपना मन्तव्य प्रकट किये बिना उसने चुपचाप महारानी को अपनी बहन बना लिया तथा उसे अमर काचरी (जीवनभर वस्त्र खर्च हेतु दिया जाने वाला दान) के रूप में तीन गांव की जागीर दान कर उसका ताम्रपत्र महेश्वर भिजवा दिया। चूंकि यह कार्य महाराणा ने अति गोपनीय रूप से सम्पादित किया था इस कारण 19वीं शताब्दी में महामहोपाध्याय श्यामलदास दधवाड़िया (1886), गौ.ही. ओझा से लेकर डॉ. के. एस. गुप्त (1971 ई.) तक किसी मवाड़ी इतिहासकार ने अपने इतिहास लेखन में इस ताम्रपत्र का जिक्र नहीं किया। **महाराणा अरिसिंह का ताम्रपत्र महारानी ने भी अपने जवाहिरखाने में रखवा दिया जहाँ** यह 172 वर्षो तक पड़ा रहा। 03, मार्च, 1943 को जब जवाहिरखाने से इसे इन्दौर संग्रहालय को स्थानान्तरित किया गया तो संग्रहालय अधिकारी डी.बी. डिस्कलर ने इसका वाचन किया व इसकी जानकारी उदयपुर भेजी। वर्तमान में ये ग्राम चित्तौड जिले की निंबाहेड़ा तहसील में विद्यमान हैं। ताम्रपत्र का वाचन प्रस्तुत किया जा रहा है –

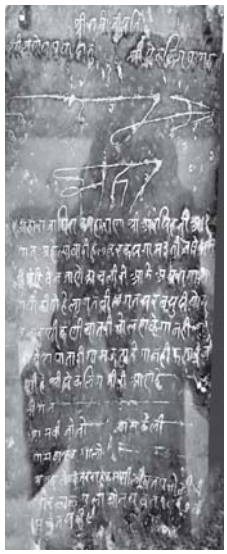

1. श्री रा मो जी य ति
2. श्रीगणेशप्रसादातु श्रीएकलिगप्रसादात

अंकुश व भाले का निशान

3. सही
4. महाराजधिराज महाराण श्रीअरसिहजी आदे–
5. सातु अहेल्याबाई हलकर कस गाम 3 षेमास्तु
6. दीये हि वेन जाणे काचलीरी आके अखरा तीन
7. मया कीदो हे लागत बीलगत सरब सुदी कोइ
8. बारथी कणी बातरी चोलण व्हेगा नही म्हा
9. रा बेटा पोता ई गाम ऊतारेगा नही ऊतारे ज
10. णी हे श्री एकलिग जीरी आण हे – –
11. वी ग त----------
12. गाम वी नो तो ----गाम के ली----
13. गाम टा ट र मा लो --------
14. प्रतदु वो श्रीहजुर रा होकम थी लीखत पचोली गी
15. रधरलाल गुलाबोत स व त 1 8 2 7 वी
16. र स चे त सु दी 9

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

'कला समय' के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम- ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755-2562294

लेखकों/कलाकारों से ❍ कला, संस्कृति साहित्य एवं समसामयिक विषयों के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेजे जा सकते है।

प्राथमिकता के साथ : Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ 150/- का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।

-संपादक

आलेख

अहल्याबाई कालीन अस्तल मंदिर, पिपलोदा

– पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

43 पंक्तियों का एक पत्र है जो ब्रिटिश राजचिन्ह युक्त एक कागज पर पेंसिल से लिखा है। कागज के सम्मुख भाग पर ब्रिटिश राजचिन्ह व रजिस्टर्ड न.स 3131 मुद्रित है। 46ङ्क17.5 से.मी. आकार वाले इस पत्र के सम्मुख भाग पर 22 पंक्तियों व पृष्ठ भाग पर 21 पंक्तियाँ पेंसिल से लिखी है। इस पत्र में दी गई जानकारियों को विद्वत जगत तक पहुँचाना ही इस जानकारी का प्रमुख उद्देश्य है क्योंकि इससे प्रमाणित होता है कि मध्यभारत की पिपलौदा रियासत कभी अहल्याबाई की जागीर रही है।

वर्तमान पश्चिमी मालवा के रतलाम जिले में पिपलौदा इसी नाम से तहसील मुख्यालय है। सेन्ट्रल इण्डिया में दक्षिणी राज्य व मालवा एजन्सी के अर्न्तगत 13 रियासतें थी इन्ही में एक रियासत पिपलौदा थी जहाँ डोडिया राजवंश के राजपूतों का राज्य था। यहाँ के अस्तल मंदिर से यह कागज प्राप्त हुआ है। **रतलाम जिले के ताल, मण्डावल, पिपलोदा व सूखेड़ा क्षेत्र में डोडिया राजपूतों का बाहुल्य है। महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद्र ओझा के अनुसार ये शार्दूलगढ़ (काठियावाड़) क्षेत्र के निवासी थे। श्री सत्यदेव विद्यालंकार के अनुसार ये जोधपुर की ओर से आये थे और इन्होंने कभी गिरनार व जूनागढ़** पर भी राज किया था।

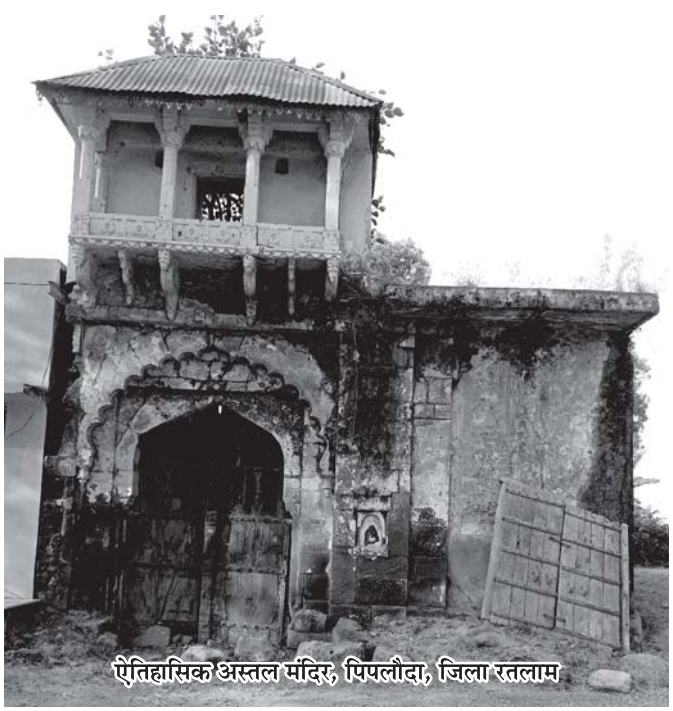

ऐतिहासिक अस्तल मंदिर, पिपलौदा, जिला रतलाम

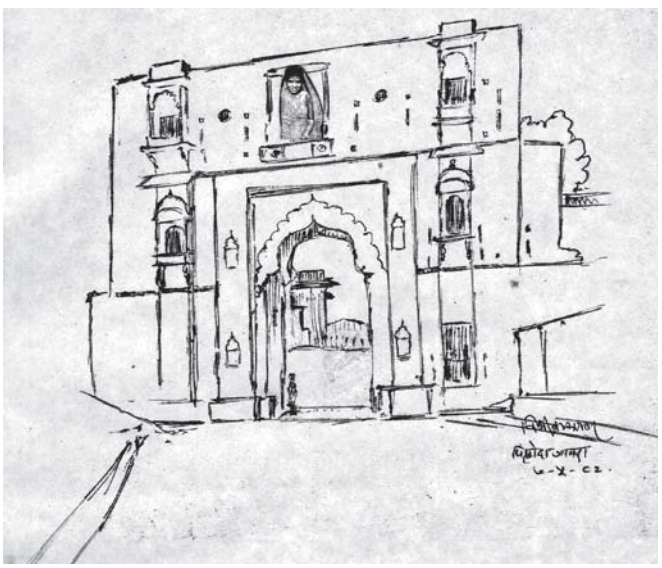

कुछ इतिहासकार मानते है कि इन्होंने लगभग 11 वीं शताब्दी में वर्तमान सबलगढ़ (रतलाम जिले में स्थित वर्तमान पिपलौदा से 7 मील दक्षिण पश्चिम) में गुजरात से आकर अपना शासन स्थापित किया। **यद्यपी इस वंश की इतनी प्राचीनता के प्रमाण नहीं है फिर भी सोलहवी शताब्दी में अखेभाण नामक शासक का उल्लेख ग्राम सूखेड़ा के सोमनाथ मंदिर में लगे ताम्रपत्र में मिलता है।** इसके अनुसार संवत 1648 की वैशाख मास कृष्ण पक्ष की अमावस्या मंगलवार के दिन अखेभाण की मृत्यु हुई। प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास के अनुसार महारावत प्रतापसिंह (1673–1708 ई.) के काल में **पिपलौदा ठिकाने के डोडियों ने एक ब्राह्मण को मार डाला व लूटपाट की। महारावत ने पिपलोदा के शासक रावत भगवतसिंह (1663–1703 ई.) को लूट का माल वापस करने को कहा जिसे उसने इन्कार कर दिया। महारावत ने भाई मोहकमसिंह ने पिपलौदा पर आक्रमण कर किले पर कब्जा कर लिया।** डोडिया के द्वारा माफी मांगने पर उन्हें माफकर उनका इलाका वापस कर दिया।

19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पिपलौदा के रावत पृथ्वीसिंह देवास बड़ी पॉती से छः ग्रामों का 138 रू. प्रतिवर्ष टॉका, छोटी पॉती देवास से 5 ग्रामों के 115 रू. तथा 1000 दामी ताल तथा मण्डावल से प्राप्त होते थे। **इस समय पिपलौदा यशवन्तराव होलकर के कब्जे में था। होलकर ने – अमीर खॉ पिण्डारी के प्रतिनिधि अब्दुल गफूर खाँ (साढू) को 20 हजार रू. वार्षिक के बदले जावरा, संजित,**

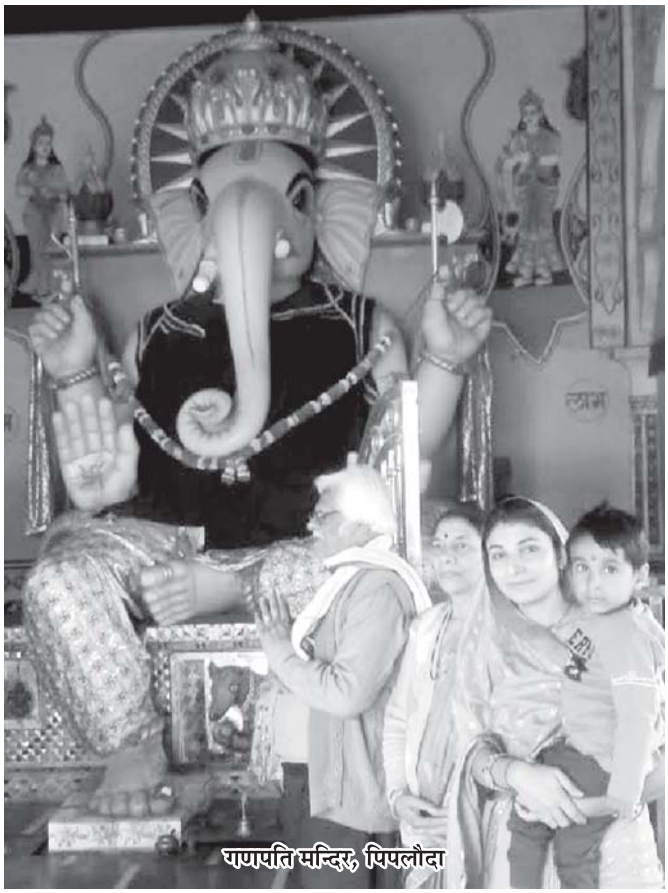
गणपति मन्दिर, पिपलौदा

मल्हारगढ़, ताल, मण्डावल, बडावदा और पिपलौदा के परगने जागीर में दे दिये। जनवरी 6. 1818 को होलकर दरबार और अंग्रेजों के मध्य मंदसौर की संधि हुई। इस संधि के 12 वें अनुच्छेद के द्वारा जावरा, संजीत, मल्हारगढ़, ताल, मण्डावल, बडावदा के परगने तथा पिपलौदा का टांका व सायर होलकर राज्य से छीनकर नवाब गफूर खाँ को वंश परम्परा के लिये दे दिये गये। इस प्रकार मंदसौर संधि के बाद होलकरों का सेनापति अब्दुल गफुर खाँ जावरा की स्वतंत्र रियासत का जागीरदार बन गया।

करद पिपलौदा के कर का निर्धारण सर जान मालकम के निर्देशानुसार केप्टन बोर्थविक ने 1820 में तय किया इसके अनुसार ठाकुर पृथ्वीसिंह को जावरा रियासत के खजाने में 28 हजार रू. प्रतिवर्ष जमा कराना निश्चित किये। इस समय पिपलौदा परगने में 20 गाँव थे। मई 1833 को ठाकुर ने अपनी जागीर में सायर समाप्त कर दिया इसके बदले उसने नवाब को 1500 रू. प्रतिवर्ष एक मुश्त देना तय किया था।

पिपलौदा पूर्व में स्वतंत्र राज्य था अत: यहाँ का ठाकुर जावरा नवाब से अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रयास करता रहा । 1924 में प्रयास सफ ल हुआ और पिपलौदा को जावरा से पृथक कर स्वतंत्र रियासत का दर्जा प्रदान कर उसे अपना ''रावत'' का खिताब प्रयोग करने की अनुमति प्रदान कर दी गई।

प्राप्त दस्तावेज का वाचन

(सम्मुख भाग)

1. REGISTERED NO.L-3131
2. मोनो 33335

1

03. माफीक सन्द के लीखा जो के पीप–
04. लोदा खास मे असतल मेहन्त माहाराज
05. सस्टे के गुरू दयाले का इस्तथान हे
06. ये ही स्थान जमाने सुलु मे उ
07. तपन हुवा हे इस की तायद मे श्री
08. फौज गनीम आलीम के पीपलोदा त –
09. बा हो गया था जब ईस्थायान अस –
10. तल मेहन तुलसीदासजी ने भागे
11. हुवे लोगों को लाकर बसाया ने
12. ये जागीर धरमादा के सात
13. सन्द तेहरीर मान जानीब
14. **अेहलीयाबाई** होलकर मोसुफ ठाको –
15. र समसीघजी पीपलोडा सन 1213
16.. इन्तजाम बदोवस्त वकी शनो–
17. जी माहोडीक सरदार होलकर को
18. लाना–मान जानिब मलारराव
19. होलकर ईस मी ठाकोर भगवत
20. सीघजी व कुवर चत्ररसीघ

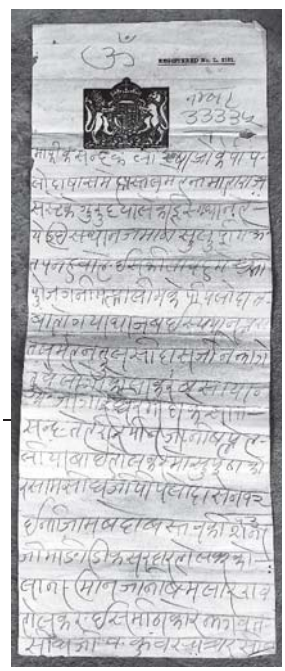

(पृष्ठ भाग)

21. सीघजी मेहन्त इसथान अस्तल
22. झुला ठाकोर जी का ठीकाने के झुले
23. से आगे रहेगा इस मे कोइ हकीका
24. बाकी ना रहा हे श्री ठाकोर पीरथी
25. सीघजी कुवर उमेदसीघजी ने
26. भी ईस ईसथाना को गुरूदयाला
27. मानो हे जावरा अस्तल श्री
28. **अेहलीयाबाई** से अतपन हुवा हे उस
29. बखत **जावरा खटकीयों** का था
30. पीपलोदा अस्तल ठाकोर मोसु
31. की गुरूदयाले गा इस मानते इ–
32. स जमीन को चाँन्द सुरज रहेगा
33. जागीरदारान अमलदारान खास
34. वो आयन्दा कीसी को भी जब त–
35. क चोथ मी का या मेह लेने का हक

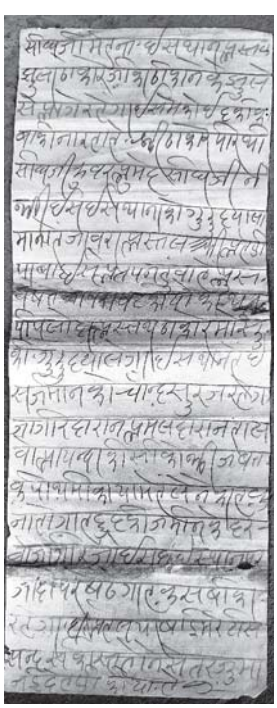

36. ना होगा हदुद को जमीन के हर
37. वो जागीर जो इस देपस्थान पर
38. गाढ़ी पर बेठेगा हक सबी का
39. रहेगा×अेहलियाबाई मरेटी स
40. सन्द सर्कीस्त होने से तरजुमा
41. नई देहली कीया हे

नवीन दस्तावेज से प्राप्त महत्वपूर्ण जानकारियाँ

01. वर्तमान पिपलोदा मराठाकाल में पिपलोदा खास के नाम से जाना जाता था। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि पिपलोदा पन्थ (जिला रतलाम) तथा पिपलोदा द्वारकाधीश (जिला उज्जैन) इसके बाद की बस्तियाँ है।

02. पिपलोदा में स्थापित अस्तल मंदिर अहेल्याबाई होलकर के समय में महाराष्ट्र के गुरूदयाल द्वारा स्थापित किया गया था। इसके बाद जावरा में भी अस्तल की स्थापना की गई थी।

03. पिपलोदा मराठा काल में लगभग बेचिराग हो गया था। इसे पुन: बसाने का श्रेय अस्तल के महन्त तुलसीदास को है।

04. पिपलोदा को पुन: आबाद करने का श्रेय महन्त तुलसीदास को है। इस समय पिपलोदे का ठाकुर शामसिंह मौजूद था।

05. यशवन्तराव होलकर प्रथम (1798–1811) के समय में पिपलोदा शाम महाडिक के मातहत था।

06. मल्हारराव होलकर द्वितीय (1811–1833) के कार्यकाल में पिपलोदा का ठाकुर भगवतसिंह तथा उसका पुत्र कुंवर चत्रसिंह विद्यमान था।

07. अस्तल मंदिर के महत्व को देखते हुए विवाद के समय ठा. भगवतसिंह ने स्वीकार किया कि अस्तल मंदिर के झूले ठाकुर के झूलों से आगे रहेंगे।

08. अस्थल की भूमि सभी करों से मुक्त थी।

दस्तावेज का काल निर्णय

इस दस्तावेज में कुछ पंक्तियों में ऐसे संकेत मिलते हैं जिनसे दस्तावेज का रजिस्ट्रेशन का निर्णय किया जा सकता है–

1. दस्तावेज के पंक्ति क्र. 15 में सन 1213 की तिथी दी है। यह फ सली सन् है जो होलकरों के शासनकाल में दस्तावेजों में प्रयोग किया जाता था। इस सन् में 599 जोड़ने पर ईसवी सन् आता है। इसके अनुसार 1213+599 = 1812 ई. आता है। परन्तु इससे दस्तावेज की प्राचीनता सिद्ध नहीं की जा सकती है क्योंकि यह मूल दस्तावेज नहीं है।

2. दस्तावेज के अन्त में कहा गया है कि **''अहिल्याबाई की मराठी की सनद शिकस्त होने तरजुमा, नई देहली किया गया है।''** इस दस्तावेज में ठाकुर पीरथीसिंह (पृथ्वीसिंह) व उसके पुत्र उमेदसिंह का उल्लेख है । ठाकुर पृथ्वीसिंह ने 1820 में सर जान मालकम के निर्देशानुसार अंग्रेजों से संधि की थी। सम्भवत इस समय अस्तल के महंत को अपने अधिकारों को सुरक्षित रखने का उचित अवसर जान पड़ा हो और उनके द्वारा दिल्ली में यह रजिस्टर्ड दस्तावेज तैयार करवाया गया हो। किये गये तरजुमे का अध्ययन करने से यह विवरण किसी एक सनद का लिप्यान्तरण नहीं लगता, हो सकता है सभवत: यह विवरण दो–तीन सनद–पत्रों के विवरणों को मिलाकर लिखवाया गया है। **ऐतिहासिक दृष्टि से यह दस्तावेज अहेल्याबाई होलकर के राज्य की नवीन झाँकी प्रस्तुत करता है । इस दस्तावेज से जावरा तथा पिपलौदा का क्षेत्र अहल्याबाई होलकर के राज्य में प्रमाणित होते हैं। यहाँ के 'अस्तल' को अहेल्याबाई होलकर ने जागीर प्रदान की थी**

'कला समय' पत्रिका के सदस्यता शुल्क की सूचना

प्रिय पाठकों,

सदस्यों से अनुरोध है कि अपना सदस्यता शुल्क निम्नानुसार भेजकर सहयोग करें। जिन आजीवन (15 वर्षीय) सदस्यों की सदस्यता अवधि के 15 वर्ष पूरे हो चुके हैं, उनसे अनुरोध है कि वे पुन: अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण कराने हेतु 'कला समय' के पक्ष में आजीवन सदस्यता शुल्क भेज कर अनुगृहीत करें।

सदस्यता शुल्क
(साधारण डाक)

वार्षिक	:	300 (व्यक्तिगत)	350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)
चार वर्ष	:	1000 (व्यक्तिगत)	1200 (संस्थागत)
आजीवन (15 वर्ष के लिए)	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12,000 (संस्थागत)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक–पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 150/– अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

–संपादक

कविता

मालव गौरव गान

नीलकण्ठ औंकार लाल व्यास

स्व.नीलकंठ व्यास मूलत:खाचरोद के समीप नरेड़ी पाता नामक ग्राम के निवासी थे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि होने के कारण गांव के प्रतिभावान छात्र के रूप में आपने अपना अध्ययन जारी रखा। अंत में आप अवन्तिका में अध्यापक हो गये थे। काव्य प्रतिभा संपन्न होने के कारण आपकी यह रचना 'जयाजी प्रताप' ग्वालियर में प्रकाशित हुई थी।

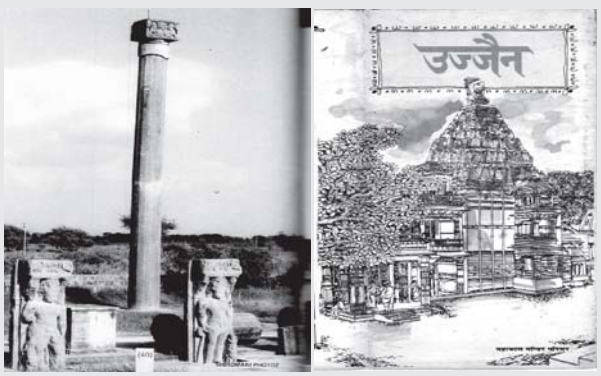

अखिल विश्व में चुनकर प्रभु ने भूतल हमको किया प्रदान।
उसमें भी फिर भारत माँ का मालव जैसा हृदय महान।।
सम जल पाये, उभरा भू है, मित वर्षा नियमित ऋतुमास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।1।।

पारवती, गम्भीरा, सिप्रा, शिवना, कालीसिंध कुडेल।
और कई सरितायें बहती शुचिता भरती हरती मैल।।
माही, चम्बल, वैत्रवती, का यहीं हुआ है प्रथम निकास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।2।।

स्थान स्थान भरे यहाँ के निज-निज गाथा से सविशेष।
उज्जयिनी, धारा, मांडव के तुम जा देखो टुक अवशेष।।
यहीं भूमि का मध्य, यहीं पर सब सुषमा का है आवास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।3।।

प्रकृति यहीं पे निखर रही है शोभा मोहक वचनातीत।
तपो-भूमि ऋषि-मुनि जन की ये जाग्रत करती स्मृति पुनीत।।
खग-मृग-विहरित वन-उपवन के दृश्य बुझाते लोचन प्यास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।4।।

सिप्रा तट के ज्ञानपीठ से निकला था वह स्नातक एक।
अवनि-मंच पर अभिनय जिसने कलापूर्ण थे किये अनेक।।
उसकी गीता की स्वर लहरी भरती जीवन में उल्लास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।5।।

हुआ यहीं तो विजय-हर्ष में संवत्-कारी वह दरबार।
जिसने भरदी भू-मंडल में विक्रम नृप की जयजयकार।।
फैली जिसकी शुभ्र-कीर्ति जग यहीं हुए कवि कालीदास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।6।।

भतृहरि से भोगी ने भी लिया यहीं योगीश्वर रूप।
बनी कहीं क्या कोई रचना सुन्दर शतक-त्रय अनुरूप।।
धारा के परमार भोज सा कहो कहाँ है काव्य विलास?।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव-भरा अमर इतिहास।।7।।

महाकाल ओकारेश्वर हे यहीं दीप्तिकर ज्योतिलिंग।
गोतम शंखोद्धार महेश्वर स्फुरणजी में स्फुरण स्फुलिंग।।
आगर बैजनाथ का मंदिर भरता उजड़े उर विश्वास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।8।।

सिंह गुरु में उज्जयिनी का सिप्रा पर वह पर्व महान।
धर्म प्राण हिन्दू जनता का होता जब हरहर का गान।।
इस प्रदेश की महिमा गा-गा नहीं अघावे ऋषिवर व्यास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।9।।

संस्कृत के साहित्य-भवन में मालव के ही तोरण स्तंभ।
विक्रम के उन नव-रत्नोंकी गरिमा गूंजी जन निषंम्भ।।
विद्वानों की, कलाविदो की, वीरों की कृति का आवास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।10।।

६ २२ अप्रैल १९९२

उज्जैन-दर्शन

वीर दुर्गादास छत्री

क्षिप्रातीर्थ श्मशान के नजदीक यह छत्री वीर दुर्गादास राठौर की स्मृति में महाराजा उदयपुर ने बनवाई। करीब २०० वर्ष पूर्व इसका निर्माण कराया गया था। कहा जाता है कि वीर दुर्गादास का अंतिम संस्कार इसी स्थान पर उनकी स्वयं की इच्छानुसार किया गया था।

कलापूर्ण हैं बाघ-गुहाएं वैभवशाली सांची-स्तूप।
विजयी वीर यशोधर्मन के गौरव सूचक दशपुर-यूप।।
अति प्रसिद्ध भूपाल ताल है, गिरिजा गिरि मन्दिर देवास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।11।।

माही तट पर गढ़ खखंई औ, मोरी की उजड़ी उच्चान।
बतलाते, हैं किसी समय में मौर्य वंश का राज्य महान।।
बाज बहादुर, रूपमति का वास देखने करौ प्रवास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।12।।

धरमतपुर की रंगस्थली में फूटी मुगलों की गृहफूट।
रतनसिंह स्मारक बतलाता रजपूतों की आन अटूट।।
चक्रतीर्थ पर चिर-निद्रा ले जाग्रति देते दुर्गादास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।13।।

ओज-भरे दक्षिण से आये शिन्दे, हुल्कर और पंवार।
मुगलाई को मेट किया फिर हिन्दू-शाही का विस्तार।।
महादजी के हाथ रही थी भारत-भर की शासन रास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।14।।

गायक गाते जसवन्त की झूम-झूमकर वह ललकार।
कायर जन के उर में भी हाँ, करती विद्युत का संचार।।
सुनें अहल्या-कृति करते जो नारी क्षमता का उपहास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।15।।

''हुकुम'' हमारा दानवीर है ''सज्जन'' महासमर का धीर।
उज्जयिनी का उदित ''सूर्य'' वह मालव-अभिमानी 'रघुबीर''।।
कितने ही हैं छिपे उजागर हीरे हम लोगों के पास।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।16।।

अभी अभी तो संमा बंधा था नाचा था ''मालव'' मयूर।
''वीणा'' लिये यहाँ पे वाणी करती जग की जड़ता दूर।।
''कल्पवृक्ष'' तक उतरा भरने शत-शत जीवन में आस।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।17।।

इन नयनों के आंगन झूले झूले नित नव मालव नाम।
लुट जावे सब सुख-वैभव पर बनी रहे मालव की शान।।
मिटकर भी हम मिंले इसीमें, उग आएं बन मनहर आस।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।18।।

शस्य-श्यामले! मलव-भूमि तेरे ही ये सब परिचय रूप।
वरदे! वरदे, हम में भरदे गुण तव सौरभ-अन्त अनूप।।
मलव तेरा नाम रहे, बस, पर - मिट मेटें भारत आस।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।19।।

मालव था तो यहीं दूसरा वह भी मालव का रूप।
मालव- मालव मिलकर गावें जय-जय 'प्रिय जीवाजी भूप।।
मालव के अरमान पूरे अब नृपति नये पर है सब आस।
मालव मेरा मानी, इसका गौरव गाता है इतिहास।।20।।

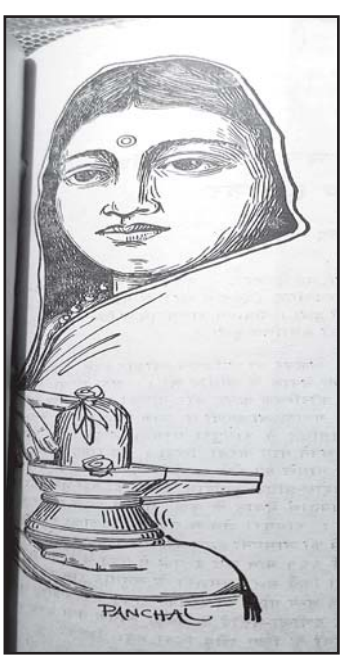

प्रस्तुतकर्ता: श्री भरत व्यास

सम्पर्क : नीलकण्ठ औंकार लाल व्यास 'माफीदार'
ठिकाना- नरेड़ी पाता जिला- उज्जैन

■

आलेख

अहिल्यादेवी के विवाह की हकीकत

रामभाऊ लांडे

इन्दौर रियासत के संस्थापक सूबेदार मल्हारराव होलकर के सुपूत्र खण्डेराव होलकरका विवाह बाजीराव पेशवा के माध्यम से महाराष्ट्र के ग्राम चौंड़ी के माणकोजी शिंदे की कन्या से निश्चित किया गया था। विवाह समारोह शनिवारवाड़ा इन्दौर में संपन्न हुआ था। बाजीराव पेशवा और काशीबाई द्वारा इस विवाह समारोह की व्यवस्था गई थी। मल्हारराव होलकर गौतमाबाई के समवेत जेजुरी के मल्हारगढ़ जाकर होलकर शासकों की कुलदेवताश्री मल्हारी मार्तंड़ को विवाह समारोह का निमंत्रण दिया गया था। छत्रपती शाहू महाराजकी प्रत्यक्ष भेंट लेकर उन्हें भी विवाह की निमंत्रण पत्रिका दी गई थी। इस विवाह की निमंत्रण पत्रिका मल्हारराव होलकर द्वारा अनेक शासकों को भी भेजी गई थी।

मालवा में बांसवाड़ा के कमाविसदार लक्ष्मण शंकर को सूबेदार मल्हारराव होलकर ने अपने सुपुत्र श्री खण्डेराव होलकर के विवाह का निमंत्रण पत्र भेजा गया था। यह विवाह चौंड़ी के पाटील माणकोजी शिंदे की कन्या अहिल्या के समवेत ज्येष्ठ शुद्ध 7 सुरजं को संपन्न होने बाबत पत्र में लिखा है। विवाह के समय खण्डेराव की उम्र 10 वर्ष एवं अहिल्या की 8 वर्ष थी।

निमंत्रण पत्र

।।श्री।।

राजश्री लक्ष्मण शंकर कमाविसदार परगना बांसवाड़ा गोसाई को –

अखंडित लक्ष्मी अलंकृत राजमान्य स्नेहांकित मल्हारजी होलकर का साष्टांग प्रणाम। विनति

उपरान्त यहाँ का कुशल जानकर अपनी ओर का लेखन करना। दूसरा, चिरजींव राजश्री

खण्डेराव के विवाह की तिथि ज्येष्ठ शुद्ध 7 सुरंज को निश्चित की गई है। अत: आप

विवाह समारोह में पधारकर पांडाल की शोभा बढ़ा वे। रवाना चन्द्र 21 मोहरम यही विनंति।

मोर्तब सुद।

विवाह समारोह –

स्वराज्य का मुख्यालय शनिवारवाड़ा में संपन्न होने वाले शिंदे–होलकर परिवार के विवाह में छत्रपति शाहू महाराज उपस्थित होने वाले थे। शनिवारवाड़ा की सजावट की गई थी। विवाह समारोह में पधारने वाले अतिथियों की व्यवस्था करने हेतु विभिन्न लोगों को जिम्मेदारियाँ सौंपी गई थी। बाजीराव पेशवा और काशीबाई ने अपने पुत्रों के समान विवाह की तैयारी की थी। विवाह के एक दिन पहले ही छत्रपति शाहू महाराज का आगमन पूना के शनिवारवाड़े में हुआ था। बाजीराव पेशवा, काशीबाई, चिमाजी आप्पा, मल्हारराव होलकर, गौतमाबाई, तुकोजीराव, उदाबाई, संताबाई, माणकोजी, सुशीलादवी पुत्र महादजी, येसूजी, बानाजी, माळुजी, सुभानजी, विठुजी आदि ने भरजरी का पोशाक परिधान किया था। सनई चौघड़े के स्वर ने वातावरण मंगलमय हुआ था। बाजीराव पेशवा ने अहिल्याबाई को दो सौ तोले सोने के आभूषण भेंट स्वरूप प्रदान किये थे। विवाह के मुहूर्त पर दुल्हा–दूल्हन को चौरंग के पाट पर खड़ा कर बीच में अन्तरपाट पकड़कर सप्तपदें श्रुत किये गये थे।

चिरजींव खण्डेराव आरै सौभाग्यवति अहिल्या का विवाह समारोह सम्पन्न होने पर तोपों से बार उड़ाकर आनदोत्सव साजरा किया गया था। इस शाही विवाह समारोह में पधारे अतिथियों को इत्तर गुलाब, पंचपक्वान्न का भोजन दिया गया था। यह विवाह छत्रपति शाहू महाराज के आशीर्वाद और श्रीमंत बाजीराव पेशवा के पुढाकार से संपन्न हुआ था। शिंदे और होलकर इन दोनों घरानों ने छत्रपति और पेशवा के गद्दी के प्रति नितान्त श्रद्धा रखकर गद्दी की ईमानदारी से सेवा कार्य किया। ईश्वर, देश और धर्म के लिए लोककल्याण कार्य करके इन्होंने नया इतिहास निर्माण किया।

अहिल्या–खण्डेराव विवाह संबंधी उल्लेख

अहिल्या–खण्डेराव के विवाह संबंधी **पहला उल्लेख** पेशवा दफ्तर के खण्ड 30 में पत्र क्रमांक 367, पृ. 381 पर मिलता है, जिसके अनुसार –

अहिल्यादेवी और खण्डेराव होलकर के विवाह समारोह के समय थोरले श्रीमंत

बाजीराव पेशवा ने वधू अहिल्याबाई को 200 तोला सोना 13।।= रुपये तोला के अनुसार
राशि रुपये 2725 प्रदान की। यह शुभविवाह शनिवारवाड़ा, पूना में छत्रपति शाहू महाराज
और छत्रपति फत्ते सिंह भोसले के उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस विवाह का उल्लेख पेशवा
दफ्तर में उपलब्ध है। यह ऐतिहासिक दस्तावेज अत्यंत महत्वपूर्ण है।
''रुपये 2725 मल्हारजी होलकर की बहु को आभूषण करने हेतु सोना तोले 200 दर 13।।=
मल्हारजी होलकर के पुत्र का विवाह होने पर दूल्हा-दूल्हन को बरात के समय सनगे
कीमत रुपये 402।।।= तारीख 20/5/1737.
अहिल्या-खण्डेराव के विवाह संबंधी दूसरा उल्लेख होलकरशाहीच्या इतिहासाची साधने पत्र क्रमांक 39, पृ. 24 पर मिलता है, जिसके अनुसार –

श्री

शके 1659, 31 मई, 1738 ई.

हिसाब इस प्रकार राजश्री मल्हारजी .होलकर के पुत्र के विवाह संबंधी खर्च गुजारत

राजश्री खासा सूबेदार सुहूर सन समान सलासेन मया व अलफ इस्तकबील 30 तागाईत छ 8 माह सफर मुकाम कुरवाई रुपये –

313-4-0 कड़ा सोने का वधु को, गगांजी सोनार गुजारत देवाजी यशवंत के लिए चिठी
रास 1 एकूण वजन मोहरा भार 23 मासा 76 रू 313-4-0
1060-0-0 मोहरा गुजारत संभू पगडा अफ्राद सूबेदार। रास 80 दर 12
569-12-0 रू. वधु की ओर आभूषण बनान` हेतु रू. देवाजी यशवंत के लिए
चिठी मोहरा.
33 छ. 2 सफर,
13 छ. 3 सफर,
---
46 दर रु. 13।। के अनुसार.
251-12-0 छ. 8 सफर मो विभिन्न व्यय हेतु चिठी 19 मोहरम.
9 वर दक्षणा, उपाध्ये और सुवर्णाभिषेक सखंभट
6 पत्रिका लेखन और प्रतिमा. कुशंभट
2 गणपति पूजन के लिए सखंभट
2 वधु की ओर के उपाध्ये
---
19 दर 13-6-9
238-8-0 एरे ण के पूजन वगैरह हेतु तथा गणपति पजू न मोहरा. दर 1 श

1060

1373-4-0

– लेखक: एम.ए. इतिहासकार होलकर राजपरिवार, अंबड़ (महाराष्ट्र) हैं।

कला समय संस्कृति, शिक्षा और समाज सेवा समिति, भोपाल (म.प्र.)
कलाकारों के उत्थान, प्रोत्साहन और सम्मान जनक मंच उपलब्ध कराने हेतु
कलाओं और कलाकारों को समर्पित संस्था 'कला समय'
गौरवशाली 12वाँ वर्ष
0755-2562294, 9425678058 kalasamay1@gmail.com
कार्यालय: जे-191, मंगल भवन, ई-6 महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462016 (म.प्र.)

आलेख

अहल्याबाई होलकर की सन् 1789 ई की सनद

– डॉ. प्रभाकर गद्रे (डी.लिट्)

डॉ. प्रभाकर गद्रे, डि. लिट्, नागपुर के भोंसले राजवंश के अधिकृत इतिहासकार हैं। आपकी कोई पचास से भी अधिक पुस्तकों का प्रकाशन मराठी, अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में हो चुका है। आपने एक लम्बे समय तक श्री नट नागर शोध संस्थान, सीतामऊ (मालवा) तथा इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडल, धुळे (महाराष्ट्र) में संशोधक चिटणीस के पद पर अपनी सेवायें प्रदान की हैं। मोड़ी विशेषज्ञ के रूप में आपने दो बार यू.के. का प्रवास भी किया है।

–अतिथि सम्पादक

इस आलेख का उद्देश्य अहल्याबाई होल्कर के काल की एक सनद की नकल का विवरण प्रस्तुत करना है। प्राप्त दस्तावेज मूल सनद न होकर मूल सनद की नकल है। इसके वाचन हेतु शामगढ़ (जिला मंदसौर के) बैरागी परिवार के श्री मोहनलाल वैष्णव ने मेरे मित्र श्री कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय (श्रीदशपुर प्राच्य शोध संस्थान, मन्दसौर) से आग्रह किया था तदर्थ मोड़ी लिपि में लिखी इस सनद का जो वाचन मैरे द्वारा किया गया है वह इस प्रकार है–

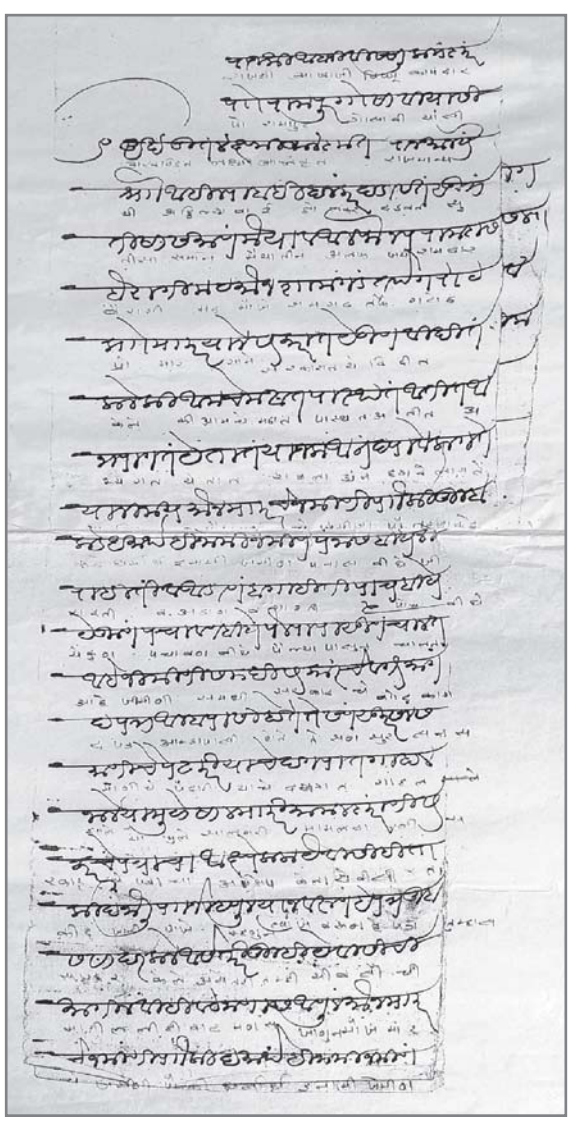

सम्मुख भाग

01. श्री
02. नकल
03. राजश्री आबाजी विष्णू कामदार
04. पो रामपुर गोसावी यांसी
05. अखण्डित लक्ष्मी आलंकृत राजमान्य
06. श्री अहिल्याबाई होलकर दण्डवत सु
07. तीसा समान मैयातीन व अल्फजयरामदार
08. बैरागी मठ मौजे शामगढ़ तर्फे गरोठ
09. प्रो मार याने सरकारात ये विदित
10. केले की आमचे मठात पास्थंत अतीत अ.
11. भ्यागत येतात याजला अंन ध्यावे लागते
12. या निमत्य मौजमारचे जामीणी पौ तुम्हा
13. कडे धर्मार्थ इनामी जमीण पनास बीघे जी
14. राइती व अडाण बगाइती पांच बीघे
15. 5
16. येकुण पचावण बीघे पैल्या पासुन चालत
17. आहे जमीणी समधी सरकार चे वगैर काग

18. द पत्र आम्हापासी होते ते सण सुर सन स
19. माणीचे पेढ़ारीयाचे दमयात गाहल
20. झाले या मुले सालमारी मामलदाराणी स
21. रकार चे पत्राचा आक्षेप केला येवीस ता
22. कीद जाली पाजे म्हणून त्याजवरून हे पत्र तुम्हा
23. स सादर केले असेसरी तुम्ही येवीसीची
24. मागील लीहीवाट मणास जाणुन मौजमार
25. चे जमीणी पौकी धर्मार्थ इनामी जमीण

पृष्ठ भाग

26. बैरागी याजकडे चालत आल्याचा भोग
27. वटा पाहूण सुदामत चालत आली असत्या
28. स तुम्ही लटकी दिकत न करीत जुणी व
29. हिवाटी प्रो चालवणे धर्मकार्यास दीक
30. त हरकत न करणे जाणिजे छ 2 साबान
31. बहुत काय लिहिण मोर्तब

यह सनद मूल दानपत्र की नकल है जिसमें 31 पंक्तियों में विवरण दिया गया है। दान प्राप्तकर्ता के मूल कागजात उपलब्ध नहीं थे इसलिए अहल्याबाई होल्कर से नकल प्राप्त करने हेतु निवेदन किया गया था, क्योंकि मठ में अनेंक अतिथि समय-समय पर आते रहते थे और मठ स्वामी को दानपत्र ना होने की वजह से राजकीय कर्मचारी तकादा करते रहते थे। अत: ऐसी अवस्था में राजकीय अभिलेखागार से रिकार्ड की

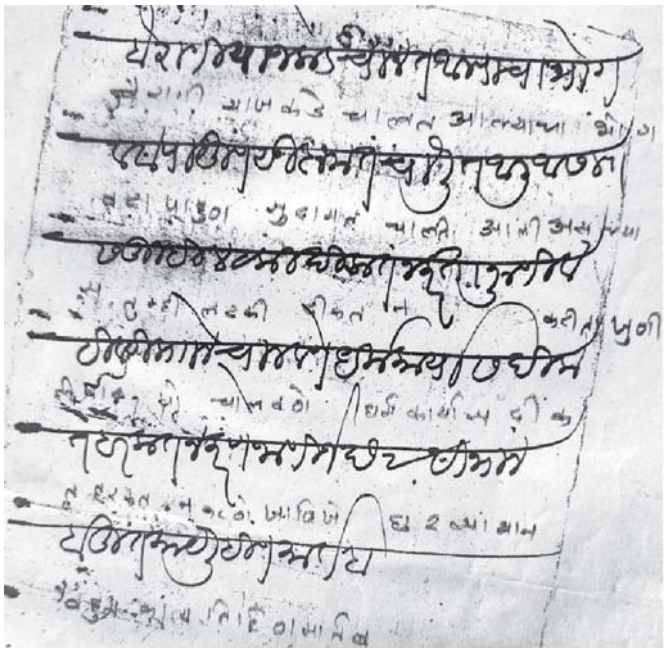

प्रतिलिपि जारी की गयी।

यह पत्र 8 मई 1789 का होकर लगभग 235 वर्ष प्राचीन है। अहल्याबाई की दानशीलता का परिचय प्रदान करने वाला यह पत्र होल्करों के इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

सम्पर्क : चिन्तामणि, गणेश वार्ड क्र.-2 आमगांव जिला-भण्डारा

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कलासमय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com

आलेख

अहल्याबाई और महेश्वर

- रामेश्वर गौरीशंकर ओझा

होलकर शासकों की संग्रह की प्रवृत्ति प्रारंभ से ही रही वे आगरा की लूट के दौरान मुमताज बेगम की अंगिया तथा एक रत्न जड़ित कंधा लाए थे। आगे चलकर इन्दौर में जिस संग्रहालय की स्थापना 01, अक्टूम्बर, 1929 को की गई थी इसके पहले संग्रहालयाध्यक्ष प्रख्यात इतिहासकार गौरीशंकर औझा के सुपुत्र रामेश्वर औझा थे। श्री औझा ने मार्च, 1930 में महेश्वर की यात्रा कर जो शोधलेख लिखा था वह श्रीमध्यभारत-हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर की मुख पत्रिका ''वीणा'' में 1930 में प्रकाशित हुआ था। 94 वर्ष पूर्व प्रकाशित इस लेख की क्षतिग्रस्त फोटोकापी मुझे अप्रवासी पंडित गौरीशंकर दुबे सिएटल (अमेरिका) ने सहर्ष उपलब्ध करवायी जिसे में कुछ संशोधनों के साथ 'कला समय' के प्रबुद्ध पाठकों के लिये प्रस्तुत कर रहा हूँ।

-अतिथि सम्पादक

भारतीय इतिहास के मरहटा काल में, अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, इन्दौर राज्य के शासन-कर्त्ती होलकर राजवंश में हमे एक ऐसी आदरणीय देवी के दर्शन होते हैं जिनका स्थान सती-साध्वी पतिव्रता नारियों की नामावली में बहुत ऊँचा है। उनका शुभ नाम है श्रीमती देवी अहल्याबाई होलकर।

अहल्याबाई इंदौर राज्य के ख्यातनामा वीरवर सूबेदार मल्हारावं होल्कर की पुत्रवधू थी। अपने आदरणीय ससुर महाराज मल्हारराव, प्राणपति खंडेराव तथा अपने इकलौते पुत्र मालेराव की शोचनीय मृत्यु का दु:सह दु:खसहन करते हुए देवी अहल्याबाई ने 28 वर्ष तक जिस नीति-निपुणता एवं उत्तमता के साथ इन्दौर राज्य का शासन किया,वह मालवे में ही नहीं किन्तु प्राय: सारे भारत में प्रसिद्ध है। बाल्यकाल से ही अहल्याबाई में धर्म पर बड़ी आसक्ति थी, इसलिये अपने राजत्वकाल में इन्होंने धर्म-राज्य के नाम को पूर्णरूप से चरितार्थ कर दिखाया। यह कहने में अत्युक्ति न होगी की इन्होंने अपने धर्मराज्य-द्वारा इस कलिकाल में भी रामराज्य का दृष्य उपस्थित किया। देवीजी अपने जीवन में चाणक्य के इस कथन को अर्हनिश अपना आदर्श बनाए रखती थीं कि -

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वत:।
नित्यं सन्निहितो मृत्यु: कर्तव्यो धर्मसंग्रह:।।

पुण्यश्लोका देवी अहल्याबाई ने धर्मराज्य स्थापित करके पुत्रवत् प्रजा का प्रेमपूर्वक जैसा पालन किया उसे इन्दौर राज्य ही नहीं वरन् सारे मालव-देश की प्रजा सदियों तक कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करती रहेगी। होलकर राज्य-संबंधी कई कार्यों का भार तुकोजीराव होलकर को सौंपकर आप धर्म करते हुए सदैव प्रजारंजन में लीन रहती थीं। इनकी दिनचर्या की ओर ध्यान देने से हमें जान पड़ता है कि वे प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व उठ-कर प्रात:काल के नित्यनियम में बैठतीं और पूजा के अनन्तर श्रेष्ठ एवं विद्वान् ब्राह्मणों से रामायण, महाभारत, पुराणादि धार्मिक ग्रथों का श्रवण करतीं। तत्पश्चात् राजमहलों के द्वार पर लगी हुई ब्राह्मण और भिखारियों की भीड़ को अपने कर-कमलों। से दान देती थीं। फिर निमंत्रित ब्राह्मणों को भोजन कराके स्वयं भोजन करतीं। भोजन के पश्चात् कुछ समय विश्राम कर सायंकाल तक राजकार्य सम्हालती थीं। संध्या से कुछ समय पूर्व अपना दरबार विसर्जित कर देतीं। फिर प्राय: तीन घंटे भजन-पूजन में व्यतीत होते थे। इससे यह सहज ही विदित हो जाता है कि अहल्याबाई का सारा समय राज्यकार्य, प्रजापालन और धर्माचरण में बीतता था, परन्तु अहल्याबाई की इस अपूर्व धर्मासक्ति से हमें यह न समझना चाहिये कि धर्मकर्म और परलोकचिन्ता के कारण उन्हें सांसारिक कार्यों के लिए अवकाश न मिलता होगा। राज्यकार्य तथा सार्वजनिक हित के कार्य में अहल्याबाई काफी दिलचस्पी रखती थीं, इसीलिये वे होलकर राज्यरूपी नौका की 28 वर्ष पर्यन्त सफल कर्णधार बनी रहीं। धर्माचरण एवं राज्यसंचालन दोनों का यथोचित रीति से सलफतापूर्वक संपादन कर अहल्याबाई ने यह सिद्ध कर दिखाया कि लोगों का यह मानना भ्रम है कि एकसाथ स्वार्थ और परमार्थ दोनों नहीं हो सकता। अस्तु।

होलकर राजवंश का कोष जिस समय बाई के हाथ में आया तभी से धार्मिक कार्यों में उसका प्रचुर व्यय होने लगा। इनका दान-पुण्य अपने राज्य की प्रजा तक ही परिमित नहीं था, किन्तु पूर्व से पश्चिम और उत्तर से

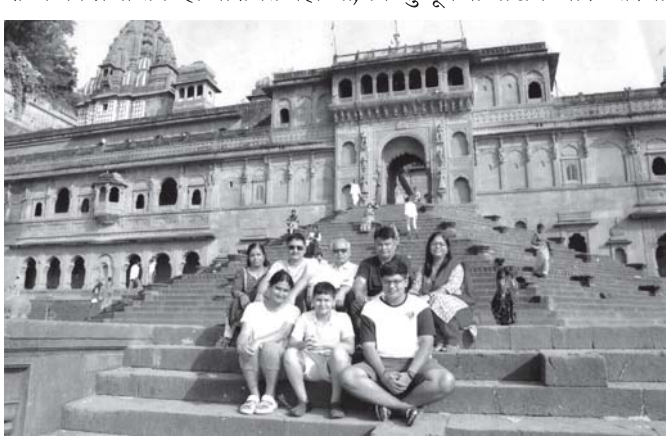

दक्षिण भारत के तीर्थ-स्थानों में इनके धन का सद्‌यय होता रहता था। आज हम भारत के प्राय: सभी तीर्थों में अहल्याबाई की बनवाई हुई धर्मशालाएँ पाते हैं। दक्षिण के कई मंदिरों में मूर्ति को नित्य गंगाजल से स्नान कराने के लिये गंगा और गंगोत्री के पवित्र जल की कावड़े भेजने का उत्तम प्रबन्ध बहुत धन व्यय करके किया गया था। ब्राह्मणों और कंगालों को प्रतिदिन भोजन कराया जाता था। वैसाख और जेठ की दुपहरी में धूप से आकुल पथिकों, खेत में काम करने वाले किसानों और पशुओं के लिए जगह जगह पौसाल बिठाकर जल का समुचित प्रबन्ध किया गया था। शीतकाल आरम्भ होते ही अनाथों, गरीबों, ब्राह्मणों तथा अपने आश्रितजनों को गरम वस्त्र बाँटे जाते थे। मनुष्य समाज ही नहीं, किन्तु वन के पशु तथा जलजीव भी अहल्याबाई के आश्रय से वंचित नहीं रहते थे। प्राय: देखते हैं कि लोग खेतों पर बैठनेवाले पक्षियों को उड़ा देते हैं, इसलिए देवीजी पके अन्न के खेत मोल लेकर उनके लिए छुड़वा दिया करती थीं। यदि इनके विविध प्रकार के दान-पुण्य का सविस्तार उल्लेख किया जाय, तो एक खासी पुस्तक तैयार हो सकती है, किन्तु उल्लिखित पंक्तियों में हमने विस्तार-भय से दो-चार उदाहरण मात्र दिये हैं, जिनसे अहल्याबाई की प्राणि-मात्र पर दया होने का सम्यक् परिचय मिलता है। अहल्याबाई के व्यक्तित्व के विषय में मराठी के सुप्रसिद्ध कवि मोरोपंत ने बड़े ही सारगर्भित शब्दों में लिखा है कि -

देवी अहल्याबाई! झालीस जगत्त्रयांत् तूं धान्या।
न न्याय धर्म निरता अन्या कलिमाजी एकिली कन्या।।

अर्थात् - हे देवी अहल्याबाई ! तुम तीनों लोकों में धन्य होय कलियुग में तुम्हारे जैसी न्यायी और धर्मपरायणा अन्य नारी नहीं सुनी गई।

लोगों में यह बात आम तौर से प्रसिद्ध है है कि धर्म की जड़ सदा हरी रहती है। अपनी अनुपम धर्मपरायणता के कारण ही अहल्या माता का सुयश दिगन्तव्यापी हो गया और आज सारे भारत में ओर से छोर तक इनका नाम बड़े आदर से ग्रहण किया जाता है।

अहल्याबाई के बनवाए हुए देवालयों, धर्म-शालाओं, कुओं, बावड़ियों तथा स्थापित किये हुए अन्नक्षेत्रों एवं सदावर्तों की संख्या बहुत बड़ी है। यह जानते हुए हम उनमें से कतिपय स्थानों का केवल नाम-निर्देश करते हैं: -

सोमनाथ या प्रभासपट्टन (काठियावाड़), त्र्यंबक (नासिक से 20 मील दूर), गया (विष्णु-पद का मंदिर), वृन्दावन, हरिद्वार, काशी, प्रयाग, केदारनाथ, गंगोत्री बदरीनाथ, देवप्रयाग (चारों हिमालय के प्रदेश में), तीर्थगुरु पुष्कर (राजस्थान), जेजुरी (दक्षिण में), सुलपेश्वर, चिखलदा, आलमपुर और महेश्वर।

इन सब स्थानों में माता अहल्या ने क्या क्या बनवाया, उसपर कितना द्रव्य व्यय हुआ, इत्यादि बातों पर स्थानाभाव वश प्रकाश न डालते हुए हम पाठकों को केवल महेश्वर का कुछ परिचय देकर लेख को समाप्त करेंगे। मार्च 1930 में इन पंक्तियों के लेखक को महेश्वर जाने का सुअवसर मिला था। वहां चार दिन ठहरना हुआ, किन्तु वहां के दर्शनीय स्थानों को देख देखकर मन नहीं अघाता था और यही इच्छा बनी रही कि कुछ दिन और ठहरा जाय।

नर्मदा की गणना भारत की अत्यन्त पवित्र नदियों में होती है। प्रतिदिन स्नान के समय हिंदू लोग ''गंगे च यमुने चौव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिंधु कुवेरी जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु'' इस श्लोक से भारत की सात पवित्र नदियों का भी स्मरण किया जाता है। मध्य भारत में इस नदी का सबसे अधिक मान है इसका उल्लेख अक्सर रामायण, महाभारत और पुराण में मिलता है। वायुपुराण के रेवाखंड में इस नदी के संबंध में कई कथाएँ दी गयी है।

इसी पवित्र सरिता के तट पर प्राचीन काल में माहिष्मती नामक एक विशाल नगरी बसी हुई थी। रामायण, महाभारत, पुराणादि ग्रंथों, बौद्धों की धार्मिक पुस्तकों तथा सुप्रसिद्ध चीनी यात्री हुएन्त्सांग के यात्रा-विवरण आदि में इस प्रसिद्ध नगरी का उल्लेख मिलता है। प्राचीन काल में यह पुराण-प्रसिद्ध राजा कार्तवीर्य या सहस्रार्जुन से शासित अनूपदेश की राजधानी थी। सहस्र बाहु के कारण सामान्यत: इसे 'सहस्रबाहु की बस्ती' कहते हैं। भागवत पुराण (9/19) में जमदग्नि- सुत परशुराम द्वारा सहस्रार्जुन का वध होने की कथा मिलत्ती है। हरिवंश पुराण(1/30) में इस नगरी की स्थापना महिष्मान् द्वारा बतलाई गई है। बौद्ध ग्रंथ 'दीधनिकाय' के महागोविन्दसुत्तान्त में इसका नाम महिस्सति (माहिष्मती का पाली रूप) मिलता है और इसे अवन्ति देश की राजधानी लिखा(19,36) हैं मंडन मिश्र और श्रीशंकराचार्य का लोकप्रसिद्ध शास्त्रार्थ,हुआ जिसमें मंडन मिश्र की पराजय हुई, माहिष्मती में ही हुआ था। कवि कुलगुरु: कालिदास ने भी अपने 'रघुवंश' महाकाव्य के छठे सर्ग में माहिष्मती और नर्मदा का उल्लेख किया है। हुएन्त्सांग ने इस नगर का नाम ''मो-हि-शि-फ-लो-पु-लो'' (महेश्वरपुर) लिखा है और नगर की परिधि 30 'ली' बतलाई है। वह लिखता है कि ''यहां के निवासियों का रहन-सहन और जमीन की पैदावार उज्जयिनी के राज्य जैसी ही है। यहाँ लोगों में बौद्ध धर्म के प्रति श्रद्धा नहीं देख पड़ती। इस नगर में अनेक देवालय बने हुए हैं, जिनमें विशेषत: पाशुपत संप्रदाय के लोग दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ का राजा ब्राह्मण है और बुद्ध के सिद्धान्तों में उसे बहुत कम श्रद्धा है।''

कार्तवीर्य या सहस्रार्जुन चेदि अथवा हैहय वंश का राजा था। 'अनर्घराघव' से भी माहिष्मती पर चेदिवशियों का राज्य करना ज्ञात होता है। वाल्मीकि रामायण 10 में लिखा है कि जब लंकापति रावण सहस्रबाहु की. माहिष्मती नगरी को आया, तब उसने अपना पराक्रम दिखाने के हेतु अपनी भुजाओं से नर्मदा के जल-प्रवाह को रोकना चाहा, किन्तु उसकी भुजाओं के बीच से जल निकल गया और सहस्र धाराओं में होकर बहने लगा। इसी विशेष कारण से माहिष्मती (वर्तमान महेश्वर) से तीन मील पर 'सहस्रधारा' नामक स्थान प्रसिद्ध है। कालान्तर में माहिष्मती को महेश्वर कहा जाते लगा। महेश्वर से यदि डोंगी में बैठकर सहस्रधारा देखने जायें, तो प्रकृति देवी की अद्भुत लीला को देखकर दाँतो तले ऊँगली दबानी पड़ती है। **सहस्रधाराओं में विच्छिन्न होकर नर्मदा को बड़ी-बड़ी चट्टानों पर कल्-कल् शब्द करते हुए वेग से बहते देखकर उन धाराओं की भूल-भुलैयाँ में खड़ा हुआ दर्शक स्तब्ध और चकित हुए बिना नहीं रहता।**

पाठकों से हमारा अनुरोध है कि महेश्वर जाने पर सहस्त्रधारा देखना कदापि न भूलें। अस्तु।

पौराणिक काल में तो माहिष्मती प्रसिद्ध नगरी थी ही, किन्तु ऐतिहासिक समय में भी हमें इसकी प्रसिद्धि बहुत कम नहीं देख पड़ती। बहुत प्राचीन काल में कार्तवीर्य के वंशज हैहयों का यहाँ राज्य था यह पहले लिखा जा चुका है। ईसा की नवीं से बारहवीं शताब्दी तक पूर्वी मध्यभारत के अधिकांश भाग पर उनका अधिकार था। सातवीं सदी में पश्चिमी चौलुक्य राजा विनयादित्य ने हैहयों को परास्त कर माहिष्मती को अपने राज्य में मिला लिया। तब हैहयवंशी, चौलुक्यों के सामन्त बनकर रहने लगे और अपने को 'नगरों में श्रेष्ठ माहिष्मती के स्वामी कार्तवीर्य के वंशज लिखते रहे।

नवीं शताब्दी में परमारों ने मालवे पर अपना आधिपत्य जमा लिया तब महेश्वर उनके राज्य का एक प्रधान नगर जान पड़ता है। फिर मांडू के सुल्तानों का इस पर अधिकार हो गया। 27 मार्च, सन् 1422 ई0 को गुजरात के सुल्तान अहमदशाह ने महेश्वर को हुशंगशाह गोरी से छीन लिया। **अकबर के समय में महेश्वर मालवा सूबे की मांडू सरकार के चोली-महेश्वर महल का मुख्यालय था। सन् 1730 के आसपास मल्हारराव होलकर ने इसे मुगलों से छीनकर उस पर अपना अधिकार कर लिया।**

मल्हारराव जी की मृत्यु के पश्चात् देवी अहल्याबाई ने सन् 1766 में राज्य कार्य सम्हालते ही इस नगर को अपनी राजधानी बनाया, जिससे राजनैतिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से इसका महत्त्व बहुत बढ़ गया। यहाँ अहल्याबाई ने देशी साड़ी तैयार करने के व्यवसाय को बहुत उत्तेजन दिया। देवीजी ने तन, मन और धन देकर महेश्वर की प्रर्याप्त उन्नति की, जिससे पौराणिक काल का अपना महत्व इस नगर को पुन: प्राप्त होने लगा। अनेक प्राचीन मंदिरों तथा धर्मस्थानों के भग्नावशेष पहले से विद्यमान थे:। उनके जीर्णोद्धार के साथ-साथ अनेक मंदिर और मकान बन जाने से उसकी बहुत कुछ सौन्दर्य-वृद्धि हुई। नर्मदा के दक्षिण तट पर विशाल घाटों की ऐसी सुंदर पंक्तियाँ देख पड़ती हैं कि उनकी सानी का दृश्य काशी और मथुरा के सिवा शायद ही अन्यत्र कहीं हो। महेश्वर में नर्मदा के दक्षिण तट पर बने हुए किले में आज भी अहल्याबाई का महल, उनकी पूजा का स्थान आदि विद्यमान हैं। पूजा का स्थान, वहां की सामग्री, देवीजी के फिराने की 108 शिवलिंगों के मनको वाली रत्नजटित माला तथा नवरत्नों के शिवलिंग आदि देखकर किस भगवद्भक्त का हृदय अहल्या माता के स्मरण से गद्गद नहीं हो जाता।

नर्मदा-तटस्थ इसी किले में 13 अगस्त, सन् 1795 (श्रावण मास) को पूर्ण शान्ति से भगवान् शंकर के चरणकमलों में अपना ध्यान लगाकर भगवन्नाम का उच्चारण करते हुए देवी अहल्याबाई ने अपनी ऐहिक लीला समाप्त की।

नर्मदा के पवित्र तट पर प्रजा की पुण्यवती माता का देहान्त हुआ, यह देखकर तुकोजीराव के पुत्र यशवंतराव ने इस स्थान को अहल्याबाई के स्मारक के लिए परम उपयुक्त समझा। इसी विचार से यशवंतराव ने किले के पास ही एक अत्यन्त सुंदर एवं विशाल घाट और वैसी ही छत्री बनवाई। इसके निर्माण में 34 वर्ष लगे और लगभग डेढ़ करोड़ रुपया व्यय हुआ। छत्री के विशाल भवनों और घाटों का दृश्य इतना सुन्दर है कि देखते देखते तृप्ति नहीं होती।

घाट के मध्य में होलकर राजवंश विशिष्ट पुरुषों के नाम पर छोटे-छोटे शिवलिंग बने हुए हैं। अन्य तीर्थों के समान यहां भी लोग मछलियों को रामनाम की गोलियाँ और चने खिलाया करते हैं। उस समय कभी कभी कुछ मछलियों की नाक में दो मोतीवाली सुवर्ण की पतली नथ देख पड़ती है। कहते हैं। इस प्रकार की नथें अहल्याबाई ने ही मछलियों की नाक में डलवाई थीं। यह बात कई लोग से सुनी गई, किन्तु लेखक को ऐसी मछलियों देखने का अवसर नहीं मिला। छत्री में शिवलिंग और माता की प्रतिमा का पूजन आज तक बराबर नियमानुसार होता है। इस विशाल भवन के चौक में देवीजी की छत्री के सिवा एक और छत्री बनी हुई है। मंदिर में प्रतिदिन शिवलिंगार्चन करने के लिए ब्राह्मण नियत हैं। घड़ी, उपकर आदि की भी व्यवस्था है।

ब्राह्मणों को विशेष रूप से दान-दक्षिणा और भोजन मिलने का प्रबन्ध होता है। यहाँ की व्यवस्था देखकर खासा राजसी ठाठ जान पड़ता है। इस छत्री पर राज्य की ओर से करीब 50 हजार रुपये का वार्षिक व्यय होता है। यहाँ आनेवाले प्रत्येक दर्शक को यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है कि होलकर राज्य की ओर से माता अहल्या के पुण्य-प्रताप और इनकी विमल कीर्ति को हर तरह से अक्षुण्ण बनाए रखने का स्तुत्य प्रसन्न सदैव होता रहता है।

महेश्वर और अहल्याबाई की छत्री के सम्बन्ध की मोटी मोटी बातों का परिचय हमने पाठकों को उल्लेखित पंक्तियों में करा दियाय अब एक बात का उल्लेख आवश्यक जान पड़ता है। बाहरी चौक से जब हम मुख्य मन्दिर में प्रवेश करते हैं, तब द्वार के बाहर अपनी दाहिनी ओर के ताक में श्याम पाषाण की एक शिला दिखाई पड़ती है। इस अभिलेख की लम्बाई 1 फुट 10 इंच और चौड़ाई 1 फुट है।

इस पर 37 पंक्तियों में एक पद्यमय संस्कृत लेख खुदा हुआ है, जिसकी भाषा अत्यन्त ललित, सरस एवं अलंकृत है। इस शिलालेख में अहल्याबाई की छत्री के निर्माण का उल्लेख है और साथ-ही-साथ सूबेदार मल्हारराव जी होळकर, खंडेराव जी, देवी अहल्याबाई, तुकोजीराव और यशवन्तराव जी प्रथम का यत्किचित् परिचय है। हमने इस लेख को कई बार पढ़ा, और ज्यो-ज्यों पढते गये अधिकाधिक आनन्द प्राप्त हुआ। अहल्याबाई के सम्बन्ध में इस लेख को भी उपयोगी जानते हुए पाठकों के हितार्थ इसका वाचन व अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

शिलालेख का लिप्यान्तरण

1. श्रीगणेशाय नम: श्रीराजराजेश्वराय नम:।। श्रीनर्मदायै नम:

2. अस्ति क्षमारक्षणदक्षिणानां विपक्षपक्षक्षपणक्षमाणं ।। श्रीशौ

3. र्यगांमिर्यगुणैकधाम्नां वंश: क्षितौ होलकरोपनाम्नां ।।1।। स-

4. मजनि जीतमल्हे यत्रा मल्हारिनामा दशमहरिचरित्रो भोगी-

5. भोगातपत्र: ।।जवजितपृषदश्वे राजमान: सदश्वे सदसिहत-
6. वपुष्कान्यस्तुरुष्काश्चकार: ।।2 ।। यतस्तदात्मा तदनूनविक्र -
7. मोविष्णुविरिजे यदनंतभोगभाक् ।। स्वदैवताद्वैतया च खं-
8. खण्डेरावमिधां स्वां प्रथयन् पृथिव्यां ।।3 ।। या तद्वधूभावमुपा-
9. श्रयंती तदीयधर्माननुपालयंती ।। अर्त्रेवसिष्ठस्य कलत्र -
10. मत्र संस्मारयन्ती विमलेश्वरित्रैः ।।4 ।। बलादिलायां कलि-
11. निग्रहाय ग्रहीतभूपालकलत्रदेहा ।। साक्षादहल्याभिधया
12. च तुल्या जनावनायाविरभूदवन्यां ।।5 ।। यस्तां महा-
13. देवतां प्रसाद्य महादेवरतामवाप्य ।। श्रीशी-
14. लशौर्यादिगुणैरुदार: श्रीमान् सुभेदार इति प्रसिद्ध: ।।
15. ।।6 ।। तुकोजिनामा नराजधामा प्राज्यं स्वराज्यं समलं-
16. चकार ।। तत: सुतस्तस्य चतु: समुद्रवेलावन व्यापिय-
17. शोविशाल: ।।7 ।। प्रचंडदोर्मंडितचंडखंड्गविखंडिता-
18. रातिगृहितदंड: ।।अराजतश्रीयशवंतरावनामा महा-
19. राजपदाधिरूढ: ।। 8 ।। महिष्मतीदक्षिणपक्षलक्षिक्षौ-
20. मांशुकांतां तटयुग्मकांतां ।। रेवां समालोक्य तदंकशय्या-
21. मसावहल्यामनुत्यि तस्या: ।।9 ।। लोकान्तरे वा विदिता-2
22. स्तु सेवा ममेति देवासुरसेवितया: अस्यास्तटे घट्टविधा-
23. नपूर्व प्रसादमाधातुमना मनीषी ।।10 ।। श्रीविक्रमादि-
24. त्यमहींन्द्रराज्याद्रसाक्षनागक्षिति - 1856 - संमितेब्दे ।।श्री-
25. शालिवाहस्य शके धाराश्विशैलेंदु -1721 वर्षोर्जसितेर्क -
26. तिथ्यां तारेशवारे श्रावणे प्रभाते चक्रे स्वयं मूलशिला-
27. निवेशं ।।11 ।। दारास्तस्त्य गुणैरुदारा सदा सदाचारध-
28. रा धरयां ।। ताराद्वितीयेव कृतावतारा वाराशिपारान्त
29. यश: प्रसार ।।12 ।।कृष्णमिधा भर्तृरुपक्रमस्य मनोरथ-
30. स्यापि सुपूर्णतायै प्रासादमासादितवैजयंतश्रियं वि-
31. निर्माय विमानरूपं ।।13 ।। श्रीविक्रमदंबरनंदनागधरा-1890-
32शरन्माधवशुक्लपक्षे ।। वारे भृगो: सप्तमसश्रिथौ सा मूर्ते: प्र-
33. तिष्ठां साशिवामकार्पीत् ।। 14 ।। स्ववृत:संपादितदेवभावां
34. भावेन मूर्तौ कृतसन्निधानां ।। अस्मिन्नहल्यां विहितप्रतिष्ठा
35. विधाय सामीप्यमापि स्मरारे: ।। 15 ।। विभाव्य तस्या: पुरत:
36. पुरारिलिंगं समास्थापयदत्र कृष्णा ।। सायुज्यमस्या प्रभ
37. यन्महेशो विभात्यहल्येश्वरनामधेय: ।।16 ।।

शिलालेख का अनुवाद

1. पृथ्वी पर होलकर उपनाम-युक्त (राजाओं) का, एक वंश है, जो ऐश्वर्य, शौर्य, गांभीर्य आदि गुणों की खान, पृथ्वी के पालन में कुशल और शत्रुदल का नाश करने में समर्थ है।

2. उस (वंश) में मल्लारि नाम से भगवान् विष्णु का दसवां अवतार उत्पन्न हुआ, जिन्होंने योद्धाओं को जीता और जिनके मस्तक पर सांप के फन का छत्र था। उन्होंने वायु से भी अधिक वेगवान उत्तम घोड़े पर सवार होकर अपनी बढ़िया तलवार से तुरुष्क (तुर्क) लोगों को काट डाला था।

3. इनके सुपुत्र का खंडेराव नाम अपने कुल-देवता (खंडोबा) से सर्वथा अभिन्न था और पराक्रम में यह हर तरह अपने पिता के तुल्य थे। शेष नाग के शरीर पर बिराजनेवाले विष्णु भगवान् की भांति यह भी नाना प्रकार के सुखों का उपभोग करते हुए शोभायमान होते थे।

4-5 उनकी स्त्री अहल्याबाई थीं, जो उनके (अपने पति) धर्म (राजधर्म, राज्य-संचालन) का पालन करती हुई अपने निर्मल चरित्र से संसार में महर्षि, अत्रि और वसिष्ठ की पत्नियों (अन-सूया और अरुंधती) का स्मरण दिलाती थीं। इन्होंने (अहल्याबाई ने) पृथ्वी पर कलिकाल के निग्रह तथा जन-समाज के रक्षण के लिये रानी का शरीर धारण किया था और यह साक्षात् अहल्या (गौतम ऋषि की पत्नी) के तुल्य18 थीं।

6-8 महादेव की परमभक्ता अहल्याबाई के देवत्व को प्राप्त करके, श्री, शील, शैर्य आदि गुणों से सम्पन्न, उदारचेता, सुभेदार तुकोजीराव ने अपने कार्य से इन्हें प्रसन्न किया था और राजा-से तेजस्वी इन तुकोजी ने विस्तृत राज्य की शोभा बढ़ाई। तदनन्तर उनके पुत्र यशवन्तराव महाराज पद पर आरूढ़ हुए। उनका सुयश चारों समुद्रों के तट तक फैला हुआ था (अर्थात् दिगंत-व्यापी था) और अपने प्रचंड भुजदंडों से उठाये हुए भयानक: खड्ग-द्वारा इन्होंने शत्रुओं का संहार कर उनसे कर ग्रहण किया था।

9-10. बुद्धिमान् नरेश यशवन्तराव ने दोनों तटों से रम्य बनी हुई और माहिष्मती नगरी (वर्तमान महेश्वर) के दक्षिण पार्श्वपर स्थित दुर्ग-रूपी वस्त्रांचल से युक्त रेवा (नर्मदा नदी) का अवलोकन कर और यह विचार कर कि अहल्याबाई नर्मदा की गोद में सोई हुई हैं (अर्थात् नर्मदा-तट पर इन्होंने देहविसर्जन क्रिया), इसके तट पर घाट और देवालय बनाने की इच्छा की, ताकि देवासुरों से पूजित (दिवंगत) देवी को उनकी (यह) सेवा अन्य लोकों में भी विदित हो जाय।

11. यही सोचकर यशवन्तराव ने विक्रम संम्वत् 1856, तदनुसार शक संवत् 1721 कार्तिक शुक्ला 7 सोमवार को प्रात: काल श्रवण नक्षत्र में इसका शिलान्यास-संस्कार किया।

12-13. यशवन्तराव की गुणवती एवं उदार रानी कृष्णाबाई ने ,जो अपने सदाचार के कारण मानों द्वितीय तारा (या तारा की अवतार) थी और जिनका सुयश समुद्रपार तक फैल रहा था, अपने पतिदेव के आरंभ किये हुये मनोरथ को भली-भाँति पूर्ण करने के निमिश्र एक बहुत ऊँचा देवालय बनवाया, जिसकी शोभा इन्द्र महल जैसी थी।

14. इन्होंने विक्रम संवत् 1890 में वैशाख शुक्ल सप्तमी शुक्रवार19 को शिवजी के साथ अहल्या की मूर्ति प्रतिष्ठित की।

15-16 इस देवालय में अपने सदाचार से देवत्व को प्राप्त करने वाली और अपनी भक्ति द्वारा भगवान् के समीप रहने वाली अहल्या की प्रतिमा स्थापित करके और भगवान् स्मर (शंकर) के समीप में अहल्याबाई को जानकर उनकी मूर्ति के सम्मुख कृष्णाबाई ने अहल्येश्वर नाम शिवलिंग की स्थापना की जो अहल्याबाई की सायुज्य मुक्ति को प्रकट करते हैं।

प्रस्तुति- गौरीशंकर दुबे, सिएट (अमेरिका)

■

आलेख

महाराणा ने अहिल्याबाई को बहिन बनाया

डॉ. जे.के ओझा

डॉ. जे.के ओझा राजस्थान के इतिहास पर शोधकार्य करने वाले अग्रणी इतिहासकारों में से एक हैं। आपने इतिहास के कई अनछुए पक्षों को अपने शोधपत्रों के माध्यम से उजागर किया है। संप्रति आपके द्वारा एक दर्जन से अधिक ग्रन्थों का लेखन व सम्पादन – प्रकाशन किया जा चुका है। आपको इतिहास के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान प्रदान करने के कारण तेरापंथ युवक परिषद कानोड़, महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर द्वारा 'महाराणा कुंभा सम्मान, सलिला सम्मान, सलूम्बर, नागरिक अभिनन्दन माँण्डल, राजस्थान लोक कला केन्द्र माँडल प्रशस्ति–पत्र, डॉ. राजेन्द्र प्रकाश भटनागर सम्मान, डॉ. गोपीनाथ शर्मा लोक जीवन सम्मान, प्रेमचन्द सृजन पीठ अभिनन्दन आदि से अंलकृत किया गया हैं।

– अतिथि संपादक

मल्हारराव होलकर के जीवन में ही उसका पुत्र खांडेराव कुंभेर के युद्ध में मारा गया था। अत: मल्हार राव के देहान्त के पश्चात् उसका पौत्र मालेराव 1766 ई. में उत्तराधिकारी बना किन्तु उसने भी कोई एक वर्ष शासन किया होगा कि उसकी भी मृत्यु हो गई। तब खांडेराव की विधवा पत्नी अहिल्याबाई होलकर ने राज्य–कार्य संभाला। वह एक योग्य प्रशासिका थी, जिससे कुछ ही दिनों में उसने प्रशासन पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर दिया। उसका ध्यान भी मेवाड़ की ओर आकर्षित हुआ। इधर मेवाड़ में चल रहे गृह–युद्ध के समय महाराणा अरिसिंह ने विद्रोही रतनसिंह के विपक्ष में मराठा सहायता प्राप्त करने के प्रयत्न में सिंधिया को अपनी ओर मिला ही लिया था। होलकर भी महाराणा के पक्ष में ही था फि र भी उसे (महाराणा) यह भय हुआ कि विद्रोही कहीं होलकर को अपनी तरफन मिला लें। अत: वह हर संभावना को समाप्त करना चाहता था। ऐसी स्थिति में अपने सम्बन्धों को दृढ़ करने के विचार से महाराणा अरिसिंह ने अहिल्याबाई होलकर को अपनी बहिन बनाया और 'कांचाली' के रूप में मार्च 25, 1771ई. को निम्बाहेड़ा परगने के विनोता, केलि और टाटरमाला गाँव दिये।

महाराणा अरिसिंह का दो वर्ष पश्चात् ही देहान्त हो जाने से उसका ग्यारह वर्षीय ज्येष्ठ पुत्र हमीरसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। यह उसकी अपरिपक्व अवस्था थी। अतएव वह शासन भार संभालने में समर्थ नहीं था। राज्य भी कठिनाइयों से ग्रस्त था। तब महाराणा ने सिंधिया को सहायतार्थ बुलाया। अहिल्याबाई का ध्यान भी मेवाड़ की ओर आकर्षित हुआ। उसने सिंधिया को मिले मेवाड़ के गाँवों में से अपना आधा भाग लेने की अभिलाषा से यशवंत राव बाबले, सुबेदार तुकोजी होलकर को उदयपुर की ओर भेजा। अहिल्या बाई स्वयं सिंधिया से तथा मेवाड़ से अपना हिस्सा लेने के विचार से उदयपुर आने की योजना बना रही थी। तब महादजी सिंधिया, होलकर को किसी भी प्रकार का हिस्सा नहीं देना चाहता था। वह तो सैनिक तैयारी कर होलकर का सामना करने का प्रयास कर रहा था।

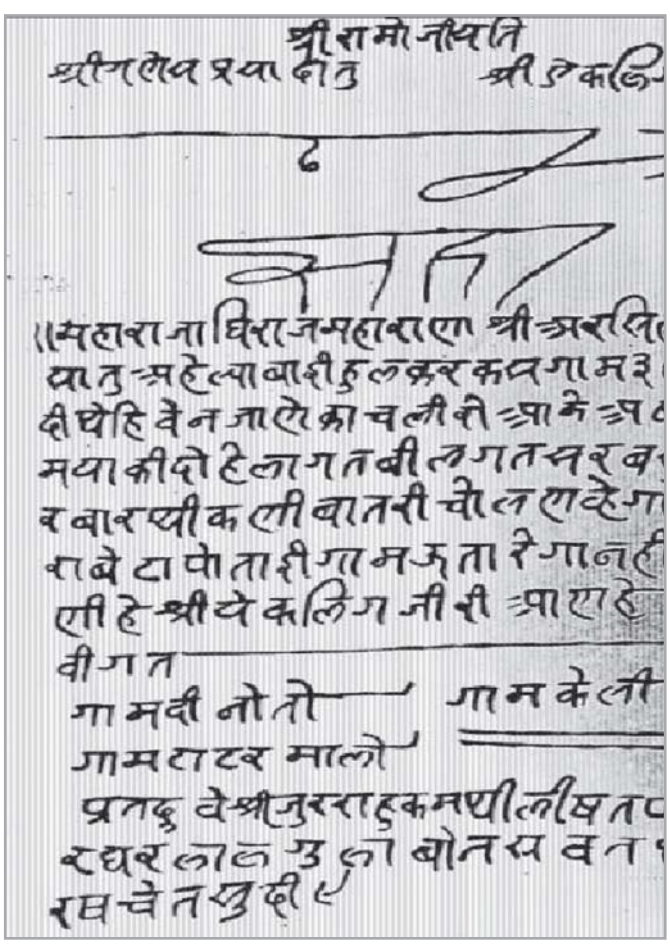

सिंघिया की अपने विरूद्ध तैयारियाँ देख, अहिल्याबाई होलकर उस समय मेवाड़ में नहीं आ सकी, परन्तु वह महाराणा से सिंधिया को दिये गये परगनों के बराबर अपना हिस्सा लेने में निरंतर प्रयत्नशील थी । उसका कहना था कि सिंघिया, होलकर के समान भाग होते हैं, अत: उसे भी होलकर का हिस्सा मिलना चाहिये। महाराणा ने तो सिंघिया को अपनी सहायतार्थ बुलाया था इसलिये उसे पारिश्रमिक के रूप में परगने दिये थे। अब उसका उन परगनों में हस्तक्षेप कर होल्कर को देने का कोई भी अधिकार नहीं रहा। इसके अतिरिक्त होल्कर ने महाराणा को किसी भी प्रकार की सहायता नहीं दी, जिससे महाराणा, सिंधिया के परगने का आधा हिस्सा उसे देने की स्थिति में भी नहीं था। अस्तु, महाराणा से उसकी माँग उचित नहीं थी। यदि सिंधिया–होलकर के समान हिस्सों की दृष्टि से अहिल्याबाई को अपना हिस्सा लेना था तो उसकी माँग या दबाव महाराणा पर न होकर सीधे सिंधिया पर होना चाहिए था। इधर मेवाड़ की स्थिति भी इतनी निर्बल हो चुकी थी कि महाराणा के लिये होलकर को कुछ दे दिलाकर शांत करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बच रहा था। ऐसी स्थिति में महाराणा ने विवश हो 1774 ई. के अंत में अहिल्याबाई होलकर को निम्बाहेड़ा का परगना दे दिया।

अहिल्याबाई निम्बाहेड़ा लेकर शान्त नहीं हुई। उसने सिंधिया से आधा हिस्सा लेने का अपना प्रयत्न जारी रक्खा। अत: उसने इस बार अंबाजी इंगलिया व तुकोजी होलकर को बेगूँ परगने के गाँवों की तरफ भेजा। तब पारस्परिक झगड़े को टालने की दृष्टि से बहीरजी ताकपीर ने उनका विरोध नहीं किया। उसमें लालाजी बल्लाल को कहा कि, ''उन्हें उल्लिखित तालुके नीली देई वगैरह से खर्चा आदि वसूल करने देना। इसके पश्चात् अगले वर्ष से ही इन परगनों के आधे गाँवों पर सिंधिया का तथा आधे पर होल्कर का अधिकार रहेगा।''

इस प्रकार के आज्ञा पत्र जारी कर के बहीरज ताकपीर ने सिंघिया–होल्कर के मध्य तब होने वाले संभावित झगड़े का टाल दिया।

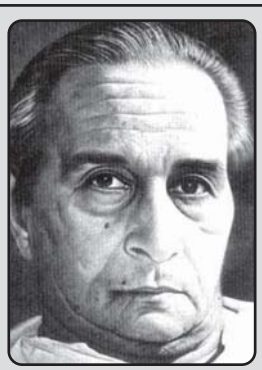

हरिशंकर परसाई

भूमिका

"भारत में कबीर के बाद श्री प्रेमचन्द और प्रेमचन्द के बाद श्री हरिशंकर परसाई ने सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विषयों में सटीक, तीखा, सरल लेखन किया। उनकी भाषा सामान्य थी, उनकी रचनाओं में जनजीवन की बोली के दर्शन होते थे, एक–एक शब्द में व्यंग्य और तीखापन प्रकट होता था। उनका व्यंग्य इतना सजग, तीव्र, तीखा, चेतन्य था जिसमें वर्तमान सामाजिक जीवन की संड़ांध, विरूपता, विसंगती के साथ ही जीवन के प्रति आस्था व्यक्त होती थी, वे घोर यथार्थवादी लेखक विचारक थे उन्होंने व्यावहारिक जीवन में भीषण संघर्ष किया इसलिए वे जीवन के हर संदर्भ में जुझारू रचानाओं के साथ जुड़े हुए है। वे राजनीति, समाज, संस्कृति, साहित्य और कला के यथार्थ वाहक है। यही कारण है कि उनके व्यक्तितत्व में कबीर का फक्कड़पन तथा उनके लेखन में निराला की जीवंतता समन्वित है। उनके निबन्ध पाठ्य पुस्तकों में शामिल किये गये हैं। उनके लिखे व्यंग्य पर कई नाटक खेले गये और वे व्यंग्य विद्या के अमर लेखक माने जाते हैं। वे लोक विश्वास के रूप में उभरे और व्यंग्य को लोक विश्वास की चरमसीमा तक पहुँचाया।"

कला समय

उमेश कुमार गुप्ता
इस विशेषांक के अतिथि संपादक
(भोपाल म.प्र.)
मो. 9479909299, 9425420399

आगामी अंक
दिसम्बर 2024–जनवरी 2025

हरिशंकर परसाई जन्म शताब्दी वर्ष विशेषांक

अतिथि संपादक : उमेश कुमार गुप्ता
प्रिंसिपल जिला न्यायाधीश रिटा.

इस प्रतिष्ठापूर्ण विशेषांक हेतु मौलिक आलेख, दुर्लभ छाया चित्र, विशेष पाण्डुलिपियाँ सादर आमंत्रित हैं। सामग्री प्राप्ति की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2024 है।

– संपादक

आलेख

अहिल्याबाई और रामपुरा के चंद्रावत

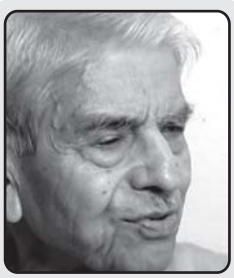

डॉ.एस.के.भट्ट

अविभाजित मन्दसौर, मन्दसौर जिले के निवासी डॉ. शशिकांत भट्ट (निदेशक- मुद्रा अकादमी, 115 कैलाश पार्क, मनोरमागंज, इन्दौर) अन्तराष्ट्रीय स्तर पर मुद्रविशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। आपका यह लेख 50 वर्ष पूर्व Studies in The History of Malwa (The Jounal oF Malav Itihas Parishad, Indore) Vol.I ,1973-1974 में "Ahilya Bai Holkar and the Chandrawats of Rampura" शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। कला समय के पाठकों के लिये इसका हिन्दी रूपान्तरण प्रस्तुत किया जा रहा है। विद्वान लेखक ने अपने लेख में सभी सन्दर्भ प्रस्तुत किये हैं। जिज्ञासु पाठक मूल लेख का भी अध्ययन कर सकते हैं।

- अतिथि सम्पादक

उदयपुर के राजकुमार द्वारा चंद्रावती ठाकुरों की सहायता से बसाया गया रामपुरा, 1729 ई. में जयपुर के सवाई जयसिंह के छोटे पुत्र माधोसिंह को जागीर के रूप में महाराणा संग्राम सिंह द्वारा सौंपा गया था, इस विशेष शर्त पर कि जयपुर के सिंहासन पर बैठते ही माधोसिंह रामपुरा का परगना वापस कर देंगे। लेकिन माधोसिंह ने रामपुरा की जागीर, जिसे 'अलग करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं था', 1749 ई. में मल्हारराव होलकर को सौंप दी, जो उन्हें अपने भाई ईश्वरसिंह के विरुद्ध जयपुर की गद्दी हासिल करने में मिली सहायता के लिए मिली थी।2 इससे रामपुरा के चंद्रावतों में बहुत असंतोष पैदा हुआ, जिसके परिणामस्वरूप राजपूतों और मराठों के बीच की खाई और चौड़ी हो गई। इसलिए चंद्रावत अपने क्षेत्र की हानि को कभी नहीं भूल सके और जब भी उन्होंने मराठों को दक्षिण में अपने मामलों में व्यस्त पाया, तो उन्होंने इसे पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयास जारी रखे।

पानीपत के युद्ध में मराठा सेना की हार ने राजपूताना में मराठा विरोधी आंदोलन को जन्म दिया। फरवरी 1761 ई. में चंद्रावतों ने रामपुरा में मराठा चौकियों को नष्ट कर दिया और उदयपुर के महाराणा ने अपने एक सेनापति शाह कुशाल देपुरा को इसे अपने नियंत्रण में लाने के लिए भेजा। अप्रैल तक, लक्ष्मणसिंह चंद्रावत ने होलकर से रामपुरा को वापस छीनने का प्रयास कियाय महंतपुर के कमाविसदार कृष्णजी तांडव ने तीन से चार सौ राजपूतों को धोखा देकर उनकी योजना को विफल कर दिया। इस विजय से रामपुरा के परगना के 518 गांवों में से 488 गांव होलकर के पास आ गए, जिनसे प्रतिवर्ष साढ़े तीन लाख रुपए का राजस्व प्राप्त होता था। शेष 21 गांव बाद में होलकर को दे दिए गए।मल्हार राव द्वारा लक्ष्मणसिंह को जागीर में दे दिया गया। इसके बाद जब तक सूबेदार मल्हार राव शासन कर रहे थे, मल्हारराव होलकर के खिलाफकभी सिर नहीं उठा पाए।

मई 1766 ई. में सूबेदार मल्हार राव होलकर की मृत्यु और गोविंद कृष्ण को रामपुरा के कमा. विसदार के पद से हटा दिए जाने के बाद, 1766 ई. के अंत तक चंद्रावतों ने फिर से होलकरों के खिलाफसिर उठा लिया। वे अशांत हो गए और रामपुरा परगना को तहस-नहस करना शुरू कर दिया। अहिल्याबाई ने इस समय तक चंद्रचूड़ प्रकरण पर काबू पा लिया था, इसलिए उन्होंने विद्रोही को दंडित करने के लिए गंगाधर यशवंत के पुत्र अनाजी (अन्याबे) की कमान में एक सेना तैयार की। सितंबर 1767 ई. तक रामपुरा के चंद्रावतों लक्ष्मणसिंह को पराजित कर दिया गया व एक नया समझौता हुआ, जिसके अनुसार, अहिल्याबाई ने 31 गांवों की पुरानी जागीर उसे लौटाने पर सहमति जताई, केवल कोटा और बूंदी के सरदारों द्वारा अच्छे आचरण की गारंटी देने पर और इस शर्त पर कि वह जागीर में उसे दिए गए गांवों में कोई किला नहीं बनाएगा। यह सब अहिल्याबाई के शासनकाल के पहले वर्ष में हुआ, जब वह आंतरिक मामलों में व्यस्त थी और चंद्रावतों के साथ युद्ध करना पसंद नहीं करती थी। इसलिए उसने समझौता करने की नीति अपनाई। लेकिन वह अपने राज्य की उत्तरी सीमा पर, विशेष रूप से निम्बाहेड़ा, जावद और रामपुरा क्षेत्रों में राजपूतों की गतिविधियों पर सतर्क रहती थी।

1769 ई. में उत्तराधिकार के मुद्दे के निपटारे में महाराणा अरिसिंह को 63,50,000 रुपये खर्च करने पड़े और फिर भी मेवाड़ में शांति नहीं हुई। रतनसिंह ने सिंधिया के साथ किए गए समझौते की शर्तों का पालन नहीं किया। डेढ़ वर्ष के भीतरतनसिंह के समर्थकों ने उदयपुर के महाराणा के विरुद्ध विद्रोही गुट को दो बार भेजा। पंद्रह हजार नागा

सैनिकों को एकत्र करके आसपास के गांवों को लूटना शुरू कर दिया। राणा अरिसिंह ने उन्हें दो बार पराजित किया, पहले मैक्कुंडा में तथा दूसरी बार खारी नदी के तट पर। लेकिन इससे विद्रोही गुट का अंत नहीं हो सका। तीसरी बार रतनसिंह के समर्थक सूरतसिंह मेहता ने जयपुर से दस हजार जोगियों की सेना एकत्रित की, उन्हें चित्तौड़गढ़ से दस मील दक्षिण में गंगरार में एकत्र होने का निर्देश दिया, तथा आसपास के जिलों को लूटना शुरू कर दिया। महाराणा अरिसिंह ने रावत भीमसिंह को उदयपुर में छोड़कर, एक बड़ी सेना के साथ गंगरार में शत्रु से भिड़ने के लिए कूच किया, तथा युद्ध में विद्रोहियों को करारी शिकस्त दी। इस बीच, रतनसिंह ने अरिसिंह को गंगरार में तथा भीमसिंह को उदयपुर में युद्ध में उलझा हुआ देखकर, चित्तौड़ के किले का किलेदार सूरतसिंह मेहता को नियुक्त किया। उसने बदले में जोगियों और चंद्रावतों को परगने में और अधिक उत्पात मचाने के लिए प्रोत्साहित किया। सूरतसिंह मेहता ने अपने भाई सरदारसिंह के नेतृत्व में 1300 जोगियों की एक सेना भेजी, जो मराठा चौकी जावद पर अधिकार करने में सफल रही।

दूसरी ओर, सूबेदार तुकोजीराव को होलकर सेना के एक बड़े भाग के साथ उत्तर में बड़े अभियान में व्यस्त पाकर, चंद्रावतों ने फरवरी 1771 ई. में रामपुरा परगना में उत्पात मचाया। अहिल्याबाई ने तुरंत जितनी संख्या में सेना जुटा सकी, जुटाई और अपने विश्वस्त अंगरक्षक शरीफभाई को विद्रोह को दबाने के लिए रामपुरा की ओर भेज दिया। राघो रणछोड़ ने तोपखाना रेवासा से रामपुरा ले जाया और जीरन में गोविंद कृष्ण से जा मिला इस बीच, अरि-सिंह भी जावद तक आ गए। जावद से राघो रणछोड़ महाराणा अरिसिंह के साथ चित्तौड़ परगना के मौजा अछोल की ओर बढ़े, क्योंकि अहिल्याबाई ने उन्हें लिखा था कि सीमा क्षेत्र में सतर्क रहें, जहां गोस्वामी फिर से उपद्रव कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृष्णजी तांडव और शरीफभाई की कमान में रामपुरा की ओर सेना भेजी। पहले तो होलकर की सेना मल्हारगढ़ और मंदसौर के बीच पलसोडा गांव में हुए युद्ध में चंद्रावतों के खिलाफ सफल नहीं हो सकी। फिर भी अहिल्याबाई ने सभी तरफसे अपने प्रयास जारी रखे। तीन महीने तक चले युद्ध के बाद होलकर सेना ने युद्ध में विजय प्राप्त की। युद्ध की पूरी व्यवस्था और प्रबंधन की योजना अहिल्याबाई ने बनाई थी। इसी बीच अरिसिंह उदयपुर पहुंचे और सूरतसिंह मेहता के खिलाफरावत भीमसिंह को भेजा, जो भीमसिंह के आगमन की खबर पाकर इतना भयभीत हो गया कि चित्तौड़ का किला छोड़कर भाग गया। चित्तौड़ से भीमसिंह ने होलकर को पत्र लिखकर चंद्रावतों पर शर्तें थोपते हुए शांति स्थापित करने के लिए अपने नेता को भेजने के लिए कहा। ऐसा प्रतीत होता है कि अहिल्याबाई ने इस उद्देश्य के लिए नारो विश्वनाथ को नियुक्त किया था।

मेवाड़ के गृहयुद्ध में तुकोजीराव होलकर का झुकाव अरिसिंह और 1769 ई. में उदयपुर तक चले गए थे और सिंधिया के विरुद्ध महाराणा की सहायता की। शायद इसी से होलकर और उदयपुर के राणा के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध विकसित होने का मार्ग प्रशस्त हुआ। अरिसिंह स्वयं को रतनसिंह और उसके अनुयायियों के साथ युद्ध में व्यस्त पाता था, अत: वह अहिल्याबाई के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने के लिए उत्सुक था, ताकि अपने राज्य की दक्षिणी सीमाओं की भी रक्षा कर सके। यह सब ध्यान में रखते हुए, 8 अप्रैल, 1771 (चैत्र सदी, 9, 1827 वि.स.) को महाराणा अरिसिंह ने अहिल्याबाई को अपनी बहन (धर्म बहिन) के रूप में स्वीकार करते हुए कांचरी के लिए (एक वस्त्र के बदले में) टोड़रमाला, वीनोता और केली ये तीन गाँव उपहार में दिए।

इस समय तक अहिल्याबाई ने देख लिया था कि चन्द्रावत विद्रोह के समर्थक निम्बाहेड़ा के रास्ते जावद तक आकर नियमित रूप से उसके राज्य की उत्तरी सीमा का उल्लंघन कर रहे थे। अत:उत्तरी सीमा की सुरक्षा और सुरक्षा के लिए, रामपुरा के चंद्रावतों के समर्थकों के आक्रमण को रोकने के लिए, तथा उनकी गतिविधियों पर नजर रखने और नियंत्रण रखने के लिए, 1774 ई. में जब बेगूं ठिकाने के गांव सिंधिया को दे दिए गए, तो अहिल्याबाई ने सिंधिया से संधि की याचना की और निम्बाहेड़ा का परगना होलकरों को सौंपने की मांग की, स्वयं महाराणा ने अपने आपको असहाय पाकर निराशा में उनकी मांगों के आगे झुक गया और निम्बाहेड़ा होलकर राज्य को सौंप दिया गया। यह वास्तव में अहिल्याबाई की विदेश नीति का एक मास्टरस्ट्रोक था।

1782 ई. में, चंद्रावतों की मनमानी, वर्षा की कमी और भीलों और सोंधियाओं के आक्रमणों के कारण,परगना रामपुरा के निवासी भयभीत होकर पलायन कर गये कई बड़े मौजे जैसे पड़दा जो अपने लौह अयस्क के उत्पादन के लिये जाना जाता था पूर्णत: उजड़ गया। चन्द्रावतों के भय से होने वाले इस आतंक को रोकने के लिये अहिल्याबाई के आदेश से आबाजी विष्णु ने रामपुरा क्षैत्र में पड़दा, मनासा के किलों को ध्वंस कर पलायन को रोकने का प्रंयास किया। सितंबर 1782 में व्यकोजी बाबूराव को दो – तीन हजार घुड़ सवारों के साथ अन्तरालिया के राव के विरूद्ध भेजा। होल्कर के विरुद्ध चन्द्रावतों ने 1783 के प्रारम्भ में ही अपना सिर उठाया। इस बार उन्होंने संगठित एवं सुनियोजित प्रयास किया। भाटखेड़ी के विजयसिंह चन्द्रावत और दातोली के सलामसिंह ने आमद के भवानीशंकर से मतभेद दूर करके होल्कर राज्य के तुलुका झारड़ा में कंझारड़ा नामक गांव छीन लिया। नानाजी भास्कर को विद्रोह को दबाने के लिए एक सेना और एक तोप, 'दलसलाम' के साथ विद्रोहियों को कुचलने के लिये भेजा गया। इसके साथ ही कृष्णजी तांडव के पुत्र लक्ष्मण राव तांडव को 200 घुड़सवार और एक हजार पैदल सेना के साथ दो तोपों के साथ इंदौर से विद्रोह को दबाने के लिए भेजा गया।

विद्रोहियों को पहले तो बढ़त मिली इस पर लक्ष्मण तण्डेओ ने निकटवर्ती भोपाल के पठानों को बुला लिया।27 कादरखां और अश्क मुहम्मद खां एक सौ से दो सौ घुड़सवारों के साथ होलकरों की सहायता के लिए दौड़े। वर्षा सेना भयानक थी। देवलिया (प्रताबगढ़) के सामंतसिंह ने विजयसिंह, सलामसिंह और होलकरों के बीच समझौता करवाया। समझौते की शर्तें इस प्रकार थीं:-

1. अहिल्याबाई ने बेघरों के लिए मकान बनाने के लिए सात हजार रुपए दिए, जमीन दूसरे पक्ष (भवानीसिंह) को देनी थी।

2. भवानीसिंह और उसके भाई के बीच विवाद का निर्णय पिछले उपयोग की औपचारिक जांच के बाद किया जाना था। पक्षों को आपस में समझौता करने के लिए प्रेरित किया जाना था।

3. और विजयसिंह और सलामसिंह को भविष्य में विद्रोह न करने के लिए कहा गया। उन्हें मामलातदार के साथ सहयोग करना था और वह सब करना था जिससे राज्य का हित सुरक्षित हो। देवलिया के जालमसिंह को इस समझौते का जमानतदार होना था।

इस प्रकार समझौते से विद्रोह शांत हो गया, लेकिन समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सका। विद्रोहियों को पूरी तरह से कुचला नहीं गया। उनकी प्रगति कुछ समय के लिए रुक गई, लेकिन होलकरों के प्रति चन्द्रावतों की दुर्भावना कम नहीं हुई। वे होलकरों के विरुद्ध अवसर की प्रतीक्षा में डटे रहे। और वह अवसर 1787 ई. में आया।

1787 ई. में लालसोट के युद्ध में महादजी सिन्धिया की पराजय ने राजपूताना में मराठा विरोधी आन्दोलन को पुन: तीव्र गति प्रदान की। इससे पहले भी जयपुर, जोधपुर और उदयपुर के महाराणाओं द्वारा मेवाड़ से मराठों को निकालने की योजना तैयार की जा चुकी थी और लालसोट में पराजय की घटना ने राजपूतों को अपने पराये हुए क्षेत्र पर पुन: कब्जा करके योजना को क्रियान्वित करने का अवसर प्रदान किया। जयपुर के महाराणा ने उदयपुर के राणा भीमसिंह को मराठों की चौकी नष्ट करने का सुझाव दिया। मेवाड़ के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और इस उद्देश्य के लिए अपनी सेना की सेवाएं प्रदान कीं। इन परिस्थितियों में फरवरी 1788 में, मालदास मेहता और मौजी राम की कमान में मेवाड़ की सेनाओं ने निम्बाहेड़ा पर कब्जा कर लिया और विजयी होकर जावद की ओर बढ़ी और उस पर कब्जा कर लिया। राज्यपाल शिवाजी नाना ने आत्मसमर्पण कर दिया और उन्हें अपने प्रभाव के साथ बाहर निकलने की अनुमति दी गई। जावद पर कब्जा करने के बाद, मेवाड़ की सेनाएँ चल्दू की ओर बढ़ीं। इसी समय, मेघावतों ने इकट्ठा होकर, बेगुन, सिंगोली और पठार पर आस-पास के जिलों के अन्य गाँवों से मराठों को खदेड़ दिया जबकि चंद्रावतों ने भी रामपुरा की अपनी प्राचीन जागीर को छुड़ा लिया, इस प्रकार कुछ समय के लिए पूरा क्षेत्र वापस मिल गया। इस सफलता से उत्साहित होकर, चन्द्रावत अपने राजपूत भाइयों से मिलने के लिए चल्दू में आगे बढ़े, जहाँ संयुक्त सेनाओं ने होलकरों के खिलाफ अपना झंडा फहराया।

राजपूतों के हाथों होलकर सेना की हार की खबर अहिल्याबाई तक पहुंची, जिन्होंने तुरंत अबाजी पंत और राघो रणछोड़ के नेतृत्व में सेना भेजी। दोनों सेनाएं चकरदा में मिलीं, जहां अबाजी पंत हार गए। इस बार अहिल्याबाई ने शरीफभाई को राघो रणछोड़ की मदद के लिए मैदान में जाने को कहा और खुद मैदान में ही रहीं व दुश्मन को हराने के लिए रोजाना सैनिकों की भर्ती करती रहीं। इस बीच सिंधिया से मदद मांगी गई। इसके अलावा, उन्होंने अपने भाई तुलाजी सिंधे को 5000 घुड़सवारों के साथ शिव नाना की मदद के लिए भेजा, जिन्होंने मंदसौर के किले में शरण ली थी। हरकिया खाल के पास चल्दू में भीषण लड़ाई हुई। होलकरों ने खाल (नाला) में तीन हजार सैनिकों की एक रिजर्व सेना को छिपाकर रखा था। इस रणनीति ने होलकरों को जीत दिलाई। उदयपुर के महाराणा के मंत्री मालदास मेहता, कुशाल सिंह और जमादार पंजू के साथ मैदान में मारे गए। कानोड़ के रावत जालिमसिंह और सादड़ी के सुल्तानसिंह गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्हें कैदी बना लिया गया। होलकरों की विजयी सेना अगले दिन जावद, निम्बाहेड़ा और रानीपुरा की ओर बढ़ी, ताकि वहाँ मराठा चौकियाँ फिर से स्थापित की जा सकें, और वहाँ से रामपुरा की ओर बढ़ी, ताकि वहाँ के लोगों को दंडित किया जा सके। विद्रोही आमद की ओर भाग गए। विद्रोह को बढ़ावा देने वाले नेताओं को कड़ी सजा दी गई। रामपुरा से लाई गई तोप से अमंत को घायल कर दिया गया। विद्रोहियों के सरगना शोभगसिंह को खतरनाक तरीके से जला दिया गया। उसे मृत्युदंड दिया गया और उसका भाई सेना के बचे हुए हिस्से के साथ भाग गया। इस प्रकार अहिल्याबाई ने चन्दरावतों पर विजय प्राप्त की। इस घटना के छह साल बाद ही उनकी जागीर जब्त कर ली गई और वापस कर दी गई। सन् 1795 ई. में भवानीसिंह चंद्रावत ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत उन्होंने रावत भीमसिंह चंद्रावत द्वारा हस्ताक्षरित अच्छे आचरण की जमानत दी और मामलेदार के साथ राजकीय सेवा में सहयोग करने तथा होलकरों को नियमित कर देने पर सहमति जताई। उन्होंने अपने पिछले दुर्व्यवहार के लिए खेद भी व्यक्त किया।

हरकिया खाल के निकट चल्दू के युद्ध में प्राप्त विजय ने अहिल्याबाई को नाम और प्रसिद्धि दिलाई। इसने नाना फडनीस का ध्यान आकर्षित किया, जिन्होंने पूना में आयोजित एक भव्य दरबार में देवी की वीरता और साहस की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस प्रकार चंद्रावत प्रकरण समाप्त हुआ, जो अहिल्याबाई को अपने सत्ताईस वर्ष के शासनकाल में सामना करने वाला पहला और एकमात्र संघर्ष था।

-प्रस्तुति: कमल लाल रेगर, सहायक प्राध्यापक लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, प्रतापगढ़ (राज.) मो. 8890789577

■

आलेख

आठले दफ्तर में अहिल्याबाई के पत्र

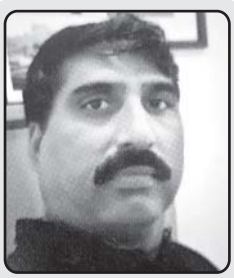

डॉ. सहदेव सिंह चौहान

श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ में सहायक शोध अधिकारी के पद पर कार्यरत डॉ.सहदेव सिंह इतिहास के गहन अध्येता है। अब तक आपकी दर्जनभर पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। कोई चालीस से अधिक शोधपत्रों का प्रकाशन देश की लब्धप्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं, अभिनन्दन ग्रंथों में हुआ हैं। निरन्तर शोध एवं सर्वेक्षण से जुड़े डॉ. चौहान गहन विषयों पर ही दृष्टि केन्द्रित करते हैं **– अतिथि सम्पादक**

इतिहास प्रसिद्ध , ऐतिहासिक मालवा कब तक इतिहास अथवा इतिहास के साधनों की उपेक्षा तथा उसकी गरिमा को कहाँ तक तिरस्कृत किया जावेगा? कैची और गोंददानी ही पर निर्भर शोध की आत्मप्रवंचना का क्या कभी अंत नहीं हो सकेगा? 20वीं शताबदी के प्रारंभिक युगों में ऐतिहासिक साध्न सामग्री के संग्रह, संरक्षण और प्रकाशन का जो अनुकरणीय कार्य महाराष्ट्र के साधनहीन किन्तु एकनिष्ट इतिहासकारों ने किया था, वह कार्य मालवा के साधन सम्पन्न व्यक्तियों , शासकों ने कभी उस और ध्या नही नहीं दिया।

एक और कटु सत्य यह है कि मालवा और विशेषकर उत्तर भारत से सम्बद्ध स्थानीय शासन और मराठा घरानों और उसके प्रमूख राजाओं, जागीरदारों के इतिहास की सामग्री के लिये हमें अन्य प्रदेशों के पुरालेख संग्रहों अथवा इतर ऐतिहासिक सामग्री संग्रहों की खोज करना पड़ती है, किन्तु सीतामऊ (मालवा) के महाराजकुमार डॉ. रघुबीरसिंह द्वारा स्थापित श्रीनटनागर शोध संस्थान में मराठा इतिहास से समृद्ध अनेकानेक दफ्तर (संग्रह) विद्यमान हैं। संशोंधक इन संग्रहों में अहल्याबाई के पत्रव्यवहार खोज सकते हैं –

1. **गुलगुले दफ्तर, कोटा (राजस्थान)** – इस दफ्तर में सन् 1733 से 1822 तक के लगभग 6000 पत्रों का संग्रह है।

2. **भगवती प्रसाद दफ्तर, माण्डू (मध्यप्रदेश)** – इस दफ्तर में माण्डू के जमीदार और कानूनगो भगवती प्रसाद के द्वारा संग्रहित लगभग 332 कागज–पत्रों का संग्रह है।

3. **छोटी पॉती संग्रह, देवास (मध्यप्रदेश)** – देवास छोटी पॉती के पंवार शासक से सम्बन्धित अभिलेख तथा देवास कुलकर्णी के 18वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण दस्तावेज संग्रहित है।

4. **लेले संग्रह, धार (मध्यप्रदेश)** – पंवार राज वंश धार राज्य से सम्बधित 25 फाईलें।

5. **आठले दफ्तर, धार (महाराष्ट्र)** – इस दफ्तर की जानकारी का सर्वप्रथम उपयोग महाराज कुमार डॉ. रघुबीरसिंह ने अपने शोधकार्य ''मालवा इन ट्रांजिशन'' के लिये किया। आपने मण्डलोई दफ्तर (इन्दौर) की प्रामाणिक प्रतिलिपियों की प्राप्ति हेतु सन् 1933 में श्रीकृष्ण विट्ठल आठले से सम्पर्क किया था। इसके बाद 1934–1935 ई. में सारे संग्रह की नकल करवाकर अपने लिये प्रतिलिपियाँ प्राप्त कर ली थीं। बाद में श्रीविट्ठल के स्वर्गवासी होने पर सन् 1945 में समूचा आठले दफ्तर श्रीनटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ (मालवा) के लिये प्राप्त कर लिया गया।

इस दफ्तर में मूल कागज बहुत अधिक नहीं है, परन्तु स्वयं श्रीकृष्ण विट्ठल आठले द्वारा देवनागरी लिपि में की गई सारी प्रतिलिपियॉ ही हैं। अब इन प्रतिलिपियों के मूल पत्र कहाँ हैं? इस जानकारी का अभाव है। इस दफ्तर में संग्रहित पत्र सन् 1776 से 1835 के बीच के हैं। इसके अलावा गौरे दफ्तर में सन् 1787–1805 ई. तक के 204 पत्र, मण्डलोई दफ्तर में सन् 1662–1816 ई. के 284 पत्र, धार दफ्तर में सन् 1721–1776 ई. तक के पत्र तथा रिंगणगांवा येथील भाउ सहिबाची अस्सल बखर संग्रहीत हैं।

आठले दफ्तर में संग्रहित पुण्यश्लोका अहल्याबाई होलकर से सम्बन्धित लगभग 43 पत्र हैं। इनके सिवाय 3 पत्र सम्बन्धित व्यक्तियों के द्वारा अहल्याबाई को लिखे गये हैं। 'कला समय' के पाठकों की सुविधा हेतु इस आलेख के साथ एक पत्र प्रस्तुत किया जा रहा है –

लेखांक –13 **7 मई, 1787**

श्री

ॲ महो दुलेराव मंडलोई

पा इन्दूर प्रति

अहिल्याबाई होलकर सुा सला समानेन मया व अलफ रामपूरा वाले पिथीसिंग का सजा देने सरकार से सेना भेजी। उसके डर से वह भागा भागा फिर रहा है। उसका कोई ठिकाना ज्ञात नहीं। उसकी जानकारी आपको हो या न हो जानकार आदमी भेजकर सुक्ष्मतासे शोध कर सरकार मे लिख भेजेंगे इस विश्वास से यह पत्र प्रस्तुत किया है अत आप मन में किसी विषय का संदेह न लाकर लिखे अनुसार विश्वास रख विश्वसनीय आदमी भेजकर तथ्य वृत लाकर हुजुर लिखकर भेजीये अविश्वास कदापि न करे छ18 रजब मोर्तब

सुद

आलेख

होलकर राजवंश की छत्रियों का रासायनिक उपचार

डॉ. प्रवीण श्रीवास्तव

डॉ.प्रवीण श्रीवास्तव लम्बे समय तक म.प्र. पुरातत्व विभाग,भोपाल में रसायनविद् के पद पर कार्यरत रहे हैं। सेवानिवृश्रि पश्चात आप इन्दौर में निवास करते हुये प्राचीन व नवनिर्मित प्रतिमाओं के रासायनिक लेप, सिन्दुरपुती प्रतिमाओं , प्राचीन महलों, कोठियों, छत्रियों के रासायनिक उपचार आदि कार्यो में जुटे हुए हैं। आपने होलकर रियासत की अनेक छत्रियों का रासायनिक उपचार किया है

– अतिथि सम्पादक

मानव अपने ईर्द–गिर्द जिन वस्तुओं को पाता है वे प्राय:दो प्रकार की सामग्रियों से निर्मित होते हैं –1. कार्बनिक, 2. अकार्बनिक। कार्बनिक पदार्थो में लकड़ी, कपड़ा, हड्डियाँ, चमड़ा या यूँ कहें तो वह सामग्री होती है जो जीव या वनस्पति जगत से सम्बन्ध रखती है। अकार्बनिक पदार्थ पदार्थ प्राय: निर्जिव जैसे पत्थर, धातुएँ आदि। इन्ही दानों सामग्रियों से मानव अपनी दुनियाँ का निर्माण करता हैं। हमारे समाज में निर्मित किले, महल, छत्रियाँ, चबूतरे, मन्दिर, मसजिद, चर्च, कब्रें आदि का निर्माण अकार्बनिक पदार्थों से किया जाता है।

इन दोनों प्रकार के पदार्थों में कार्बनिक पदार्थ पदार्थों की तुलना में अकार्बनिक पदार्थ दिर्घजीवी होते हैं यही कारण है कि इनसे निर्मित स्मारक सदियों से धूप, वर्षा को सहते हुऐ हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर का आभास कराने के लिये विद्यमान हैं। लेकिन इस धरती पर कुछ भी स्थायी नहीं है। भग्न होना, टूटना, क्षरित होना स्वभाविक प्रक्रिया है इसके कारण वर्तमान समय में स्मारकों के अनुरक्षण का कार्य किया जाना अति महत्वपूर्ण गतिविधि है।

पुरातत्वीय महत्व के स्मारकों के क्षरण के प्राकृतिक व मानवजन्य दो प्रमुख कारण होते हैं जिन्हे कुछ इस प्रकार समझा जा सकता है– 1. वातावरण का प्रभाव, 2. घूल–मिट्टी 3. पौधे, वृक्ष एवं उनकी जड़ें, 4. खारे पानी का प्रभाव, 5. एल्गी –फन्जाई आदि का प्रभाव, 6. पशु– पक्षी जन्य प्रभाव, 7. मानव जन्य प्रभाव आदि–आदि।

वर्तमान समय में इन्दौर शहर के नाम अनगिनत प्रतिमान कायम हैं जैसे:–

1. म.प्र. में यह सर्वाधिक आबादी अबादी वाला शहर है।
2. यह म.प्र. का सबसे बड़ा औद्योगिक नगर है।
3. भारत भर में यह नगर स्वच्छता के मामले में निरन्तर सातबी बार सर्वोच्य स्थान पर रहकर एक प्रतिमान कर चुका है जो संपूर्ण भारत के लिये एक मिसाल है।

छत्रियों के मामले में भी इस नगर का अपना प्रतिमान कायम है। यहाँ के होलकर शासकों ने खान व सरस्वती नदियों के किनारे पक्के घाटों का निर्माण कराकर इनके तटों पर अपने पुरखों की छत्रियों का निर्माण कर शहर की सौन्दर्यता में चार चाँद लगा दिये। वर्तमान समय में जब शहर का विस्तार हो गया तो ये छत्रियाँ अब शहर के बीच में आ गयीं।

होलकर राजपरिवार की निम्नलिखित महत्वपूर्ण छत्रियाँ वर्तमान शहर में विद्यमान हैं–

1. गौतमाबाई होलकर की छत्री।
2. मालेराव होलकर की छत्री।

3. तुकोजीराव द्वितीय की छत्री।
4. शिवाजीराव होलकर की छत्री।
5. मल्हारराव होलकर प्रथम की छत्री।
6. मल्हाराव होलकर द्वितीय की छत्री।
7. कृष्णाबाई होलकर की छत्री।
8. बोलिया सरकार की छत्री।

सदियों पूर्व निर्मित ये छत्रियाँ धीरे–धीरे क्षरित होने लगीं थीं अत: इनका रासायनिक उपचार आवश्यक हो गया था। अत: ऐतिहासिक महत्व की इन छत्रियों पर निम्न कार्य संपादित किये गये:–

1. छत्रियों के जंघा भाग में नमक के प्रभाव को समाप्त करने के लिये बेरियर तैयार करवाया गया।

2. इसके पंश्चात पेपर प्लब के द्वारा नमक का प्रभाव दूर किया गया।
3. इसके पश्चात अमोनिया तथा न्यूट्रल डिटरजेन्ट के मिश्रण के द्वारा मृत एल्गी,फंजाई एवं रंगों के प्रभाव को दूर किया गया।
4. धूप व जमीन धंसने आदि कारणों से पत्थरों में दूरियाँ, दरारें आदि के आजानें के कारण मेचिंग स्टोन डस्ट से फिलिंग कर उन्हें जोड़नें का कार्य सम्पन्न किया।
5. वर्षो से जमें जाले, विभिन्न प्रकार की मख्खियों द्वारा निर्मित उनके आवास, चमगादडों के आवास आदि बंद किये गये।
6. इन कार्यवाहियों के बाद छत्रियों की खूब अच्छी तरह पानी ये धुलाई की गई ताकि इन पर रासायनिक लेप किया जा सके।
7. पानी से सफाई के बाद इथाइल सिलिकेट की कोटिंग कर छत्रियों को मजबूती प्रदान की गई।
8. सबसे अंत में पोली विनायल ऐसिटेट की कोटिंग की गई।

इतनी प्रक्रियाओं के संपन्न होने पर स्मारकों का स्वरूप निखर जाता है।

प्राचीन धराहरों के अनुरक्षण में रासायनिक उपचार एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो अवधि विशेष के बाद दोहराने की आवश्यकता होती है। इस प्रक्रिया से वातावरण के विनाशकारी प्रभाव को कम करने में सहायता मिलती है और स्मारकों को लम्बे समय तक सुरक्षित रक्षा जा सकता है। आज **इन्दौर की छत्रियाँ पर्यटकों के विशेष आकर्षण** का केन्द्र है।

पर्यटकों से आग्रह है कि वे अपने पर्यटन के दौरान: -

1. छत्रियों पर शालीन तथा अश्लील लेखन न करें।
2. स्मारक स्थल की सीमा में कूडादानों का प्रयोग करें।
3. इन छत्रियों की सुन्दरता बढ़ाने वाले उद्यान को क्षति न पहुँचायें।

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

के सदस्य बने

मैं ..... कला समय पत्रिका का ..... एक वर्ष : 300/- रूपये, दो वर्ष : 600/- रूपये, चार वर्ष : 1000/- रूपये, आजीवन : 10000/- रूपये का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। पत्रिका का साधारण डाक शुल्क एवं रजिस्टर्ड शुल्क रूपये 150/- प्रतिवर्ष सहित कुल रूपये ..... ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर ..... दिनांक ..... संलग्न है।

नाम : .....

पता : .....

.....

पिन : ..... मो.: .....

हस्ताक्षर

सदस्यता सहयोग राशि:

वार्षिक	:	300 (व्यक्तिगत)	350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)
चार वर्ष	:	1000 (व्यक्तिगत)	1200 (संस्थागत)
आजीवन	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)

(15 वर्ष के लिए)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 150/-अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग

जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :

'कला समय' का बैंक खाता विवरण

पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

- कृपया सदस्यता शुल्क 'कला समय' के नाम भेजें।
- सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद अगले अंक से पत्रिका भेजना प्रारम्भ की जावेगी।
- सदस्यता शुल्क निम्न पते पर भेजे:- जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.) 462016

-प्रबंध संपादक

आलेख

अहिल्याबाई होलकरः आदर्श नारी

नेहा भांडारकर

नेहा भाण्डारकर संप्रति भारतीय आयुर्विमा महामंडल में कार्यरत हैं। उत्कृष्ट साहित्यिक कौशल के लिये अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से अंलकृत की मराठी, अंग्रेजी व हिन्दी में सौलह पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका हैं। आपको दो बार हिन्दी राज्य साहित्य अकादमी महाराष्ट्र द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है।

– अतिथि संपादक

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

उपरोक्त श्लोक से नारी शब्द से क्या अर्थबोध होता है ? यहीं की, नारी शब्द की परिभाषा को लेकर प्राचीन या इतिहास काल में नारी को सशक्त समझकर उन्हें सम्माननीय दर्जा मिलता रहा है। नारी शब्द में 1) स्त्री, 2) औरत, 3) महिला... इन तीन गुरु वर्णों की एक वृत्ति पाई जाती हैं, जो ऊर्जा का भी प्रतीक मानी जाती है।

प्राचीन काल से एक ही नारी विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न दायित्वों का निर्वाह करते हुए सदैव संस्कृति और सभ्यता की पोषक और संरक्षक मानी जाती थी। प्राचीन भारत में नारी की सामाजिक स्थिति उच्च थी। समाज में नारी को सम्मानजनक पद भी प्राप्त होते थे और प्रतिष्ठा भी। विशेष कर राजघरानों में। और अनेक विशेष स्थानों पर पुरुष वर्ग की प्रेरणा का स्रोत भी नारी ही होती थी।

300 वर्ष पूर्व भारत वर्ष में जन्मी हुई, मालवा की रानी राजश्री देवी अहिल्याबाई होलकर भी भारतीय इतिहास में एक आदर्श नारी मानी गई हैं। जिसे संपूर्ण विश्व में एक आदर्श रानी के रूप में भी सराहा है। आदर्श शासक के रूप में ही नहीं अपितु एक आदर्श हिंदू नारी के रूप में भारतीय इतिहास ने उनका नाम जतन किया हैं। और उनके आदर्श नारी विशेष गुणोंके लिए आज भी उन्हें स्मरण किया जाता है।

अहिल्यादेवी का जन्म महाराष्ट्र के चौंड़ी गाँव में एक मराठी परिवार में हुआ था। सखाराम शास्त्री भागवत द्वारा लिखित संस्कृत पुस्तक 'अहिल्या चरितम्' के अनुसार, कालदर्शिका में मराठी तिथि और पंचांग के अनुसार अहिल्यादेवी की जन्म तारीख 31 मई 1725 सिद्ध हुई थी। तब तक इतिहासकारों ने हर जगह अहिल्यादेवी का जन्म मराठी तिथि के अनुसार ही प्रविष्ट किया था। इस संदर्भ के अनुसार अहिल्याबाई के जन्म का त्रिशताब्दी वर्ष 31, मई, 2024 इस तारीख से शुरू हुआ है। आइए इस अवसर पर तत्कालिन आदर्श नारी के रूप में एक बेटी, पत्नी, बहू, मां, शासक, सामाजिक समरसता और अहिल्याबाई के लोककल्याणकारी कार्य जैसे कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार कर इस लोकमाता नारी शक्ति का जागरण करें।

अपने स्वयं के लिए माँगी जाती है, वह होती हैं भीख।''परिवार के लिए मांगी जाती है, वह होती है भिक्षा। ''समाज के लिए जो मांगा जाता है, वह है दान।''और ब्रह्मांड के लिए जो मांगा जाता है, वह है पसायदान। संतों की भाँति अहिल्याबाई भी जीवन भर उसी निष्ठा के साथ अपनी रैयत और अवाम के लिए प्रयास करती रहीं और पुण्य कर्म करती रहीं।

अहिल्याबाई एक कर्मयोगिनी थीं। लेकिन कुछ इतिहासकारों के अनुसार ''अहिल्याबाई को पुण्यश्लोक'' की उपाधि तब तक नहीं मिली जब तक वह जीवित रहीं। इतिहासकारों के अनुसार, अहिल्यादेवी के लिए ''पुण्यश्लोक'' शब्द का प्रयोग सबसे पहले 'विद्या ज्ञानविस्तार' के 1907 अंक में किया गया था। इसके अलावा, यह बहुत गर्व की बात है कि ब्रिटिश काल के दौरान एक राजनेता, प्रशासक के रूप में अहिल्याबाई की तुलना रूस की महारानी कैथरीन द ग्रेट और इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ और डेनमार्क की रानी मार्गरेट से की जाती थी।

1767 से 1795 के बीच 28 वर्षों के दौरान, सत्ता के लिए अहिल्याबाई के मानदंड शासन की तुलना में रैयतों और अवाम के प्रेम और लोककल्याण पर अधिक आधारित थे। और इसी कसौटी के कारण उनके कार्य को स्त्री प्रकृति और मातृशक्ति की अवधारणा की सार्वभौम स्थापना के रूप में प्रतिष्ठा मिली है। यह एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है, जो उन्हें 'लोकमाता' की भी उपाधि मिली थी। बेटी, पत्नी, बहू, मां, एक शासक इन सभी मापदंडों को एक ही इकाई में मापना हो तो अहिल्याबाई एक आदर्श नारी भी साबित हुई थी।

भारतीय नारी की पहचान केवल सुंदरता नहीं, अपितु उनके गुण, सादगी और विनयशीलता है। भारत देश ही ऐसा है, जहां नारियों में अलग-अगल राज्यों में अलग-अलग परंपरा और संस्कृतियां विद्यमान

हैं। भारतीय नारी की एक विशेषता उनकी शक्ति और साहस है। भारतीय महिलाओं को उनकी अद्भुत क्षमता और अविचलित धैर्य के लिए जाना जाता है। आलेख के शुरुआत में परिभाषित नारी के सम्पूर्ण गुण अहिल्याबाई को एक सशक्त आदर्श नारी के रूप स्वीकारने को बाध्य करता है।

सामाजिक समानता एक ऐसी स्थिति है जिसमें समाज में सभी व्यक्तियों को समान अधिकार, स्वतंत्रता और स्थिति प्राप्त होती है, जिसमें नागरिक अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, स्वायत्तता और कुछ सार्वजनिक वस्तुओं और सामाजिक सेवाओं तक समान पहुंच शामिल है। अहिल्याबाई के शासन काल में ऐसा सौहार्द देखा जा सकता है। आइए, अहिल्याबाई के आदर्श नारी के रूप में अवाम के हित में जुड़े कार्यों और सद्भाव के 2 प्रसिद्ध उदाहरण देखें...

(1) अहिल्या देवी के राज्य में कई भील और गोंड जनजातियाँ अपनी आजीविका के लिए तीर्थयात्रियों को लूटती थीं। जैसे ही अहिल्याबाई के पास शिकायत आई, उन्होंने उसका निपटारा कर दिया। उनकी लूट को 'भीलकवड़ी कर' ऐसा नाम देकर सरकारी मान्यता दी गई। उन लोगों को उनकी आजीविका के लिए कृषि भू खंड देकर उनका पुनर्वास किया गया। और बदले में उनसे उस क्षेत्र के मंदिरों की रक्षा करने के लिए कहा गया।

भीलों और पिंडारियों से रैयतों की रक्षा करनेवाले एक युवक के साथ अपनी बेटी मुक्ताबाई का अंतरजातीय विवाह करने का निर्णय लेना भी उनकी निर्णय लेने की क्षमता का प्रमाण है। इस प्रकार यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अहिल्याबाई ने एक तीर से दो शिकार किये हैं। भील, पिंडारी और गोंड प्रजा तथा तीर्थयात्रियों सभी को न्याय मिला। इसके अलावा, बेटी मुक्ताबाई के लिए यशवंतराव फणसे जैसा यथोचित युवा वर।

इससे आपको पता चलता है कि अहिल्याबाई का प्रशासन कितना जनोन्मुख था।

उनके अंदर पनपती आदर्श नारी... एक औरत जो मां थी, एक शासक जो महिला थी, और एक स्त्री जो धर्मपरायण थी। इन तीनों गुरु वर्णोंकी वृत्ति अहिल्याबाई को आदर्श नारी साबित करने में मददगार साबित हुई।

(2) उनकी शासन-शैली बहुत अनोखी थी। कहा जाता है कि भूखंड के बारे में 7/12 की अवधारणा स्वयं अहिल्यादेवी ने लागू की थी, जिसका प्रयोग आज भी महाराष्ट्र में, संपत्ति के 7/12 प्रक्रिया के लिए किया जाता है। होलकर सरकार कुछ जरूरतमंद लोगों के लिए बारह पेड़ लगाएगी। जैसे आम, इमली, फूल आदि। वह व्यक्ति उन सभी पेड़ों की देखभाल करेगा। उन बारह पेड़ों में से पांच पेड़ों की आय सरकारी खजाने में जाएगी और सात पेड़ों की आय उस अनुग्रहित व्यक्ति के पास जाएगी। आज के परिवेश में उस 7/12 संकल्पना में बहुत सारे बदलाव आए हैं। तथापि इस अवधारणा को लोककथाओं से मजबूत समर्थन प्राप्त है। उनके शासनकाल में रैयतों के लिए लागू की गई यह अवधारणाएँ बिलकुल नई थीं और उन्होंने अपने कुशल और सुनियोजित प्रशासन के माध्यम से इन्हें सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया था।

अहिल्याबाई को एक आदर्श भारतीय महिला के रूप में जाना जाता है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर न केवल भारतीय नारी ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष को गर्व है। उनके धार्मिक, पवित्र हाथ में शिव प्रतीक की उपस्थिति...सच्चाई और सुंदरता के मार्ग पर चलने के उनके दृढ़ संकल्प की साक्षीदार है। सत्य, शिव और सौंदर्य का सुंदर संयोजन उनमें बसी स्त्री शक्ति का स्रोत था। हमारे देश में तीर्थस्थलों के साथ-साथ जलस्रोतों का भी महत्व समझाने के अनेक प्रमाण हमें मिलते हैं। उस समय की किसी महिला के लिए पुण्यश्लोक विशेषण पाना बहुत कठिन था, जो अहिल्याबाई को आसानी से मिल गया।

जो बचाता है वह तीर्थ ...और आंतरिक एवम बाह्य दोषों और दरिद्रता को जो दूर करता है उसे 'कुंड' कहा जाता है।

हिंदू धर्मग्रंथों में तीर्थस्थलों और कुंडों और उनके आचरण और धार्मिक प्रथाओं के बारे में अपने अपने निर्देश हैं। उस समय भारतीय शासकों के लिए धर्मग्रन्थ एवं उन पर टीकाएँ मार्गदर्शक रही थी। कहने का तात्पर्य यह है कि, अन्य शासकों की तरह अहिल्याबाई ने भी राष्ट्र के लिए सड़कें, तालाब, धर्मशालाएं, अन्न क्षेत्र, मंदिर, मंदिरों का जीर्णोद्धार, घाट निर्माण आदि सुविधाएं उपलब्ध कराकर अपनी विशिष्टता साबित की। ये सभी रचनाएँ सरकारी खजाने से कम और उनकी निजी संपत्ति और धन से अधिक हुईं। अत: एक शासक के रूप में उनका अन्य शासकों से यह अंतर अधिक गहराई से देखा जा सकता है।

इन सभी जनकल्याणकारी कार्यों के कारण रानी अहिल्याबाई प्रजा के लिए पुण्यश्लोक एवम लोकमाता बनीं। यह उनके अंदर मौजूद नारी शक्ति और मातृ शक्ति का प्रबल परिणाम और प्रभाव था। प्रजा के सुख और कल्याण के लिए यदि कोई शासक उदारतापूर्वक लोककल्याण कार्य करता है, वह भी अपनी निजी संपत्ति से, अपने निजी खजाने से, तो इससे भी बडी मानवता कोई और नहीं है, वह रैयत के लिए इतनी लगन से काम करके खुद को धन्य मानती थी। इसीलिए पुणे की पेशवा सरकार अहिल्या देवी को आदर्श रानी मानती थी। और पेशवाई अहिल्यादेवी की इस राजधानी महेश्वर को गर्व से 'पुण्यद्वार' महेश्वर कहा करते थे।

अहिल्या देवी द्वारा बनवाए गए अनेक मंदिरों के कारण, मंदिर के निर्माण कार्य से नृत्य, गायन, संगीत वाद्ययंत्र, मूर्तिकला, स्थापत्य, चित्रकला, मूर्तिकला जैसी कलाओं का प्रदर्शन करनेवाले कलाकारों की

कला को विस्तार मिला था। कारीगरों को नौकरियाँ और रोजगार मिल रहे थे। महेश्वर में बुनकरों को आमंत्रित किया गया था और उनके लिए नई बस्तियाँ बनाई गईं थी। प्रसिद्ध महेश्वर सिल्क उन्हीं की देन है।

उनकी भूमिका अक्सर अध्यात्मिकता से जुड़ी होती थी, जो हमेशा नैतिकता, आंतरिक सत्व, मानवता की नमी, शाश्वत मानवीय मूल्यों के आंतरिक खिंचाव और सभी मानव धर्मों में योग्यता की शाश्वत भावना में दृढ़ विश्वास से जुड़ी थी। और मानवता हमेशा सद्भाव का प्रतीक है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सामाजिक समरसता एवं मानवतावाद एक दूसरे के पूरक हैं। अहिल्याबाई आध्यात्मिक प्रवृत्ति की थीं, अत: प्रजा का समग्र कल्याण, प्रजा की प्रसन्नता ही उनकी 28 वर्ष/5 माह/17 दिन की आयु का मुख्य मापदंड थी।

दरअसल, अहिल्याबाई के पास राज्य, धन और सेना थी। तमाम सम्पत्ति और शक्ति के बावजूद उन्होंने अपना जीवन स्वावलंबन के साथ बिताया था।

''दुनिया में जो कुछ भी है उसका आनंद आत्म-बलिदान के साथ लेना चाहिए, इस भावना के साथ, कि सब कुछ भगवान का है। और किसी के धन का लालच नहीं करना चाहिए।''.

उन्होंने अपने जीवन में ईशोपनिषद के इस वचन का पूर्णतरू पालन करने का उदाहरण समाज के सामने रखा। होलकर परिवार की देशभक्ति और सांसारिक प्रतिष्ठा को आत्मविश्वास से ऊँचा उठाने वाली मालवा की उस रानी का शासन काल अत्यंत गौरवशाली था। हालाँकि, उनका निजी जीवन बहुत संघर्षपूर्ण, कठिन और दर्दनाक था।अहिल्याबाई द्वारा विभिन्न स्थानों पर किये गये जनकल्याणकारी कार्यों में धार्मिक स्तर भी प्रमुख है परन्तु अहिल्याबाई की धर्मपरायणता स्वार्थपरक नहीं, लोकभीमुख थी। अत: भारत के समग्र इतिहास में अहिल्याबाई का स्थान अद्वितीय है। अहिल्याबाई एक वीर महारानी थीं। सर जॉन मैल्कम ने तत्कालीन मध्य भारत का इतिहास लिखा है। इसमें अहिल्याबाई की जीवनी का हिस्सा शामिल है।

अहिल्याबाई का वर्णन करते हुए वे कहते हैं...

"Ahilyabai has become by general strategies] the model of good government] in Malwa— Her name is considered] as such eÛcellent authority] that an objection is] never made] when her praise is needed] as precedent तत्कालीन ब्रिटिश वाइसराय लॉर्ड एलनबरो ने भी कहा था, ''अहिल्याबाई सर्वश्रेष्ठ राजनयिक और सर्वश्रेष्ठ राजनेता हैं।'' उस समय मराठा साम्राज्य में लोकमाता की उपाधि पाने वाली वह एकमात्र रानी थीं। उनमें दूरदर्शिता भी थी। उन्होंने अपने प्रशासन में पत्रों के माध्यम से पेशवाओं को बार-बार चेतावनी देने का साहस किया था और सभी मराठों और भारत के अन्य शासकों जैसे की राजपूत, सिख आदि से अंग्रेजों के खिलाफलड़ने का आग्रह किया था।

अहिल्या देवी एक दूरदर्शी नेता थीं। उन्होंने बदलती व्यवस्था के अनुरूप अपनी पारंपरिक सैन्य व्यवस्था में बदलाव किया था। और पश्चिमी शैली की सेना का गठन कर्नल जे.पी.बॉयड नामक ब्रिटिश अधिकारी के माध्यम से किया था। उन्होंने अपने सैनिकों को आधुनिक तरीकों से प्रशिक्षित किया था। होलकर परिवार का तोपखाना भी अहिल्याबाई के नियंत्रण में था। उनके शाही दरबार में कई कलाकार और कवि भी अपनी कला का प्रदर्शन करने आया करते थे। सुप्रसिद्ध मराठी कवि मोरोपंत उनमें से एक हैं। एक दिन राज दरबार में एक अन्य मराठी कवि अनंत फंदी श्रृंगार गीत गा रहे थे , तो उन्होंने उस कवि को डांटते हुए कहा था,''आज जब अंग्रेज अपने देश में हर जगह अपने पैर फैला रहे हैं, ऐसे समय पर तुम सामाजिक जागरूकता के लिए गाने के बजाय ये किस तरह के गीत गा रहे हो ?

कवि प्रभाकर ने भी उनके दरबार में अहिल्याबाई की प्रशंसा में गीत गाए थे। यह सर्वविदित है कि अहिल्याबाई ने उन्हें आत्म-प्रशंसा के बजाय सामाजिक जागरूकता से संबंधित कुछ लिखने की सलाह दी थी। अहिल्याबाई की फटकार से प्रभावित होकर कवि अनंत फंदी और कवि प्रभाकर भी, दोनों ने अपने अपने गीत गायन की शैली को बदल दिया। और उनकी आवाज देश भक्ति के लिए गाने लगी। उनका गीत प्रकार मराठी में 'फटका' शैली के रूप में लोकप्रिय हुआ। अहिल्या देवी के समय का युग और समाज आज की तरह स्वतंत्र विचारधारा में विश्वास नहीं करता था। समाज की अवधारणाएं मनु स्मृति से प्रेरित थी। इसलिए वह उस समय की सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं में फंसी महिलाओं के लिए एक आदर्श महिला साबित हुई। उन महिलाओंके लिए अहिल्याबाई एक आदर्श नारी थी।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि 1735 के आसपास यानी 18 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में अहिल्याबाई ने स्वयं से शुरुआत करते हुए मराठी राजपरिवार में महिला शिक्षा की नींव रखी थी। दहेज विरोधी फ तवा, विधवा पुनर्विवाह, सती प्रथा का विरोध, नि:संतान विधवाओं को पुत्र गोद लेने का अधिकार जैसे सभी आधुनिक विचार उनके कार्यों से प्रभावित थे, जिससे यह भी सिद्ध होता है कि अहिल्याबाई उस समय एक ''युग प्रर्वतक' भी थीं।

अहिल्याबाई अपनी गरीब प्रजा और अनेक निराश्रित परिवारों को न्याय देती थी। हर तरह से पारिवारिक अन्याय के खिलाफ लड़कर, पीड़ितों को न्याय देना, दुर्व्यवहार के खिलाफ जाँच करना इत्यादि काम वो स्वयं करती थी। उनके द्वारा, पीड़ितोंको उनके अधिकार बहाल करने और विधवाओं को संपत्ति में हिस्सा दिलाने की कई कहानियां इतिहास में दर्ज हैं। अहिल्या देवी अपनी न्याय प्रणाली और न्याय प्रेम के लिए जानी

जाती थीं। लोकमंगल, प्रजावत्सल, लोकमाता की उपाधियाँ उन्हें लोगों ने दी थीं। उनकी दूरदृष्टी और दूरदर्शिता की पेशवा सरकार अक्सर प्रशंसा करती थी। राजर्षी तथा राजश्री यह दो अलग विशेषण है।

राजर्षी' उसे कहा जाता है जिसने कठोर तपस्या करके अपार ज्ञान प्राप्त किया हो। लेकिन अहिल्याबाई को शनिवारवाड़ा से जो पत्र प्राप्त होते थे, उनमें उन्हें 'राजश्री अहिल्याबाई' कहकर संबोधित किया जाता था।

वह एक शासक थी। एक राज्य की सम्पन्न रानी थी। और श्री रूप लक्ष्मी थी। (शासक .श्री) जिसका अर्थ था 'राजश्री'। क्योंकि उनके पास पेशवाओं से अधिक धन और संपत्ति थी। आवश्यकता पड़ने पर पेशवा उनसे उधार भी लेते थे। यदि पेशवा 50000/- का ऋण माँगते थे, तो वह उन्हें 5 लाख का ऋण दे देती थी। इस तरह से उनका 'राजश्री' होना भी एक आदर्श नारी का ही रूप था।

उनके पास महिलाओं की एक सैन्य इकाई थी। होलकर द्वारा सत्ता पर कुटिल दृष्टि रखने वाले रघुनाथराव पेशवा के विरुद्ध युद्ध पुकार कर, महिला सैनिकों की एक टुकड़ी लड़ने के लिए तैयार रखने का इतिहास सर्वश्रुत है। महेश्वर पर टीपू सुल्तान जैसे महान योद्धा की भी टेढ़ी नजर नहीं थी। अहिल्याबाई एक आदर्श रानी और आदर्श नारी होने का यह भी एक पुख्ता सबूत था। अपने ससुर, सुबेदार मल्हारराव होलकर की मृत्यु के पश्चात, वह एक ऐसी शासक रानी थीं, जो बिना किसी पदवी, या सुबेदार के पद पर अपनी औपचारिक नियुक्ति के बिना ही, राजधानी महेश्वर से सम्पूर्ण मालवा पर शासन करती थीं, वह शास्त्रप्रेमी और न्यायप्रेमी थी। साथ ही वह एक कूटनीतिज्ञ और कुशल शासक भी थीं। वह शासक जरूर थी, लेकिन वह कभी भी रत्नों से जड़े ऊँचे सिंहासन पर नहीं बैठी। अपने पूरे जीवन भर, दरबार में एक साधारण सफेद कंबल पर बैठकर ही उन्होंने न्यायालय का संचालन किया। न्याय करते समय उनके हाथ में शिवलिंग होता था। जिससे ईश्वर साक्षी होकर सबके साथ वह उचित न्याय कर सके। उन्होंने सरकारी कामकाज तो किया, लेकिन कभी सत्ता की भूख नहीं रखी।

26 मई 1728 को होलकर का शासनकाल प्रारम्भ हुआ था। महेश्वर और इंदौर पर होलकर राजाओं की 14 पीढ़ियों ने कुल 220 वर्ष और 22 दिनों तक शासन किया। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद 20, अप्रैल 1948 को मध्य भारत संघ का गठन किया गया था और भारत में सभी संस्थाओं और राजशाही को समाप्त कर दिया गया था। उस समय होलकरशाही, होलकर राजशक्ति का भी भारतीय संघ में विलय हो गया था। आज के महाराष्ट्र के जामखेड तालुका के चौंधी गांव में एक सामान्य व्यक्ति के घर जन्मी अहिल्याबाई ने कुल 28 साल 5 महीने 17 दिनों तक होलकरों पर शासन किया, और मालवा प्रांत में महेश्वर को उनकी राजधानी बनाया। उनका शासनकाल 27 मार्च 1767 से 13 अगस्त 1795 तक रहा। (दूसरे तुकोजी ने लगातार 42 वर्षों तक शासन किया।)

अहिल्याबाई होलकर का जीवन काल 1725 से 1795 तक 300 वर्ष पुराना है। लेकिन उस समय, जब पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था थी, जब लड़कियों के लिए पढ़ना सामाजिक रूप से स्वीकार्य नहीं था, अहिल्याबाई मोडी लिपि में पढ़ और लिख सकती थीं। उन्होंने हिंदी, संस्कृत और मराठी का अध्ययन किया था। उनके पास (नागरिक) मुलकी और (सैन्य) लश्करी दोनों प्रशिक्षण थे। सास गौतमा बाई और ससुर मल्हारराव होलकर के मार्गदर्शन में वह सक्षम बनीं थी। उन्हें अपने जीवन में बहुत कम समय के लिए अपने पति खांडेराव और बेटे मालेराव का समर्थन प्राप्त हुआ।

उनके शासन के दौरान दहेज विरोधी फत्तवे जारी किये गये थे। उन्होंने अपने ससुर सुभेदार मल्हारराव होलकर के अनुरोध को मानते हुए स्वयं से सती प्रथा न मानने की शुरुआत कि थी। विधवा विवाह को समाज द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिए, इसके लिए उन्होंने स्वयं कोशिश की। हिंदू धर्म में गोद भरने का रिवाज होता है। अहिल्याबाई ने जीवनदायिनी देवी के रूप में नर्मदा नदी को गोद भराई करने की प्रथा शुरू की थी। आज भी होलकर उत्तराधिकारी तीर या एक बड़े चक्र जैसे बड़े पहिये से (रहट) नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक साड़ियाँ अर्पण करते हैं।

अहिल्याबाई द्वारा विभिन्न स्थानों पर किये गये जनकल्याणकारी कार्यों में धार्मिक परतें हैं। उस समय उन्होंने गुजरात, पंढरपुर, नासिक, उदयपुर, उज्जैन, उड़ीसा, नेपाल, मद्रास, कारवार, रामेश्वर, निज़ाम राज्य आदि में कावड़ियों द्वारा गंगा जल ले जाने की प्रथा शुरू की थी। ये सभी स्थान हिंदुओं के प्रमुख धार्मिक केंद्र थे और सभी के लिए खुले थे। **'नारी अस्य समाजस्य कुशलवास्तुकारा अस्ति।''** भावार्थ- **''नारी ही समाज की आदर्श शिल्पी है।'** अहिल्याबाई के लिये यह श्लोक अत्यंत यथार्थ प्रतीत होता है।

अहिल्याबाई की प्रतिज्ञा को महेश्वर किले में होलकर राज्य के प्रतीक चिन्ह पर पढ़ा जा सकता है। वह इस तरह है...''मेरा काम लोगों को खुश करना है। मैं अपने हर कार्य के लिए जिम्मेदार रहूंगी। मैं आज यहां एक शासक के रूप में जो भी कार्य कर रही हूं उसके लिए मुझे भगवान को जवाब देना पड़ेगा। मैं उस जिम्मेदारी को पूरा करना चाहती हूं जो भगवान ने मुझे सौंपी है। मुझे किसी भी स्थिति में इसे पूर्ण करना है। अहिल्याबाई ने अपने जीवन के अंत तक इस वादे को सख्ती से निभाया। 13 अगस्त 1795 को यह लोकमाता अनंत में विलीन हो गयी। जब भी किसी आदर्श नारी की छबि मन में आती हैं तो लोकमाता पुण्यश्लोक राजश्री देवी अहिल्याबाई होलकर का नाम अग्रस्थान पर होना स्वाभाविक है।

सम्पर्क : नागपुर (महाराष्ट्र)

आलेख

लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर का अवदान

डॉ. सरोज गुप्ता

भारतदेश के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित मालव भूमि अपने गहन गम्भीर भाव, पग-पग रोटी, डग-डग नीर के रुप में श्रेष्ठता समृद्धता के लिए प्रसिद्ध रही है। यहाँ पर न्यायप्रेमी सम्राट विक्रमादित्य, कला व संस्कृति प्रेमी राजा भोज व पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर जैसे धर्मपरायण शासकों ने अपने कुशल नेतृत्व में शासन की बागडोर सम्भाली और समाजोत्थान के कार्यों में सतत् संलग्न रहकर शासन किया। महाराष्ट्र की पुत्री और मालवा की बहूरानी के नाम से विशिष्ट पहचान बनाने वाली अहिल्याबाई का जन्म महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर की तहसील बीड के अन्तर्गत चौंडी नामक गाँव में 31, मई, 1725 को माणकोजी शिंदे व धर्मपत्नी सुशीलाबाई के यहाँ हुआ। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि अहिल्या बाई ने अपनी शिक्षा दीक्षा श्रेष्ठ संस्कारों से एक दिन शिव मंदिर में दर्शन हेतु पधारे राजपुरुष बाजीराव पेशवा और सेनानी मल्हारराव होल्कर को अपनी अलौकिक दिव्य आभा से वाक् चातुर्य से चमत्कृत किया। मालवा राज्य के सूबेदार मल्हारराव होल्कर ने अपने पुत्रखंडेराव के लिए अहिल्याबाई जैसी तेजस्वी बालिका को चुना और पुत्रवधू बनाकर मालवा ले आये। अहिल्याबाई होलकर ने विपरीत परिस्थितियों में साहस, विवेक और धैर्य का परिचय देते हुए जो कुछ जनहितार्थ कार्य किया वह सदा सदा के लिए भारतीयों के हृदयों में प्रतिष्ठित होकर स्पृहणीय, प्रेरणास्पद व अनुकरणीय बन गया।

अहिल्याबाई ने अपने ज्ञान, विनम्रता, सेवाभाव से होल्कर परिवार में अप्रतिम स्थान बनाया। समसामयिक कुचक्रों पर विजय पायी। असीम प्रेम, करुणा और त्याग की प्रतिमूर्ति बनकर अपने कार्य व्यवहार से समाज को संस्कारित करने का कार्य किया। महिलाओं में आत्मशक्ति, बल, साहस की शिक्षा दीक्षा देने का अभूतपूर्व कार्य किया। पुत्र मालेराव, पुत्री मुक्ताबाई का विधिवत् पालन पोषण,शिक्षा दीक्षा दिलाई। पति को विपरीत परिस्थितियों से निकाल कर ससुर मल्हार राव द्वारा राज्य की बागडोर दिलवायी। दुर्भाग्यवश मराठा सेना ने भरतपुर पर चढाई की तब मराठों और जाटों में घमासान युद्ध हुआ। कुंभेरी के युद्ध में 24 मार्च 1754 को खंडेराव वीरगति को प्राप्त हुए। अहिल्याबाई के सती होने के विचार को मल्हारराव ने तोडकर राज्य का दायित्व सौंपा।

लोकमाता अहिल्याबाई ने राज्य के लिए समर्पित भाव से कार्य किया। अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत भर के प्रसिद्ध स्थानों, तीर्थों, घाट, कुआँ, बावडियों, सडकों का निर्माण कराया। अन्नक्षेत्र, प्याऊ, अध्ययन की व्यवस्था मंदिरों में विद्वानों की व्यवस्था आदि श्रेयस्कर कार्यों द्वारा आत्मप्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्यागकर धर्मपरायण व न्याय की प्रतिमूर्ति बनी और महेश्वर में 13/8/1795 को स्वर्गारोहण किया।

जनजन की नेत्री लोकमाता अहिल्याबाई होलकर ने जो निर्माण कार्य किये उनमें प्रमुख हैं- अंबागाँव में मंदिर, अयोध्या में श्रीराम मंदिर, अमरकंटक में धर्मशाला, आलमपुर में हरिहरेश्वर मंदिर, उज्जैन में महाकालेश्वर में पूजन की व्यवस्था व चिंतामणि गणपति मंदिर का निर्माण, ऋषिकेश में मंदिर, अमलेश्वर, गौरी सोमनाथ का मंदिर, कर्नाटक में गरीबों की सहायता के कार्य, काशी में मणिकर्णिका, दशाश्वमेघ घाट व जीर्णोद्धार कार्य, कुरुक्षेत्र में घाट और मंदिर, केदारनाथ में धर्मशाला और कुंड, कोल्हापुर में मंदिर, गंगोत्री में मंदिर व धर्मशाला, गया जी तीर्थ क्षेत्र में विष्णु मंदिर का जीर्णोद्धार सहित चित्रकूट, जगन्नाथ पुरी, नासिक, त्रयंम्बकेश्वर तीर्थ, देवप्रयाग, द्वारिकाधीश मंदिर, दारुकवन, श्रीनाथ द्वारा, नैमिषारण्य, परली, पंढरपुर, पुष्कर बद्रीनाथ मंदिर, बिठूर, मथुरा, महेश्वर, रामेश्वरम, वृन्दावन, श्रीशैल, सतारा, सोमनाथ, हरिद्वार आदि तीर्थ क्षेत्र जो गाँवगाँव, गलीगली में थे। इन तीर्थ क्षेत्रों में अन्नकूट, प्याऊ व अन्य व्यवस्थायें स्वयं पहुँचकर, देखकर संज्ञान में लेकर जीर्णोद्धार कार्य किए।

लोकमाता अहिल्याबाई होलकर ने तीर्थ क्षेत्र में जीर्णोद्धार के साथ नदी तट पर दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए घाट बनवाये। वाराणसी का दशाश्वमेघ व अहिल्या घाट, अयोध्या में सरयू घाट, हरिद्वार में हर की पौडी, मथुरा में कालियदह घाट, मंडलेश्वर का घाट, पुणतंबा गोदावरी का घाट, महेश्वर के घाट, कुरुक्षेत्र मेंलक्ष्मी कुंड, बिठूर में ब्राह्मण घाट का निर्माण कार्य किया गया। लोकमाता अहिल्याबाई होलकर का नाम उनके जन-हितकारी कार्यों के कारण भारतीय जनमानस में बडी श्रद्धा के साथ लिया जाता है। भारत की महान मातृशक्तियों में विशेष रुप से- छत्रपति शिवाजी की वीरमाता जीजा बाई, रानी लक्ष्मीबाई, न्यायप्रिय तमिलनाडु की देवी कण्णगी, नागालैंड की रानी के साथ लोकमाता अहिल्याबाई होलकर ने अपने अद्भुत गुणों एवं स्त्री सामर्थ्य की प्रतीक बनकर अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित किया। उनका बहुमूल्य जीवन समग्र मानवता के लिए एक जीती जागती मिसाल एवं अमूल्य धरोहर बन गया है। कुशल दार्शनिक महिला शासक के रुप में लोकमाता अहिल्या बाई होलकर के वर्चस्व एवं अवदान से समस्त भारतीय महिला जगत गौरवान्वित है।

लेखिका वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
सम्पर्क : प्राचार्य- पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय कला एवं वाणिज्य अग्रणी महाविद्यालय सागर म. प्र.

आलेख

अहिल्याबाई होलकर संग्रहालय, महेश्वर

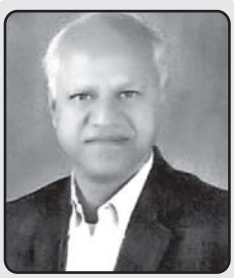

डॉ. घनश्याम बटवाल

14, अगस्त, 1955 को मंदसौर में जन्में डॉ. घनश्याम बटवाल स्नातकोत्तर होने के साथ ही वैद्य विशारद भी हैं। पत्रकारिता महाविद्यालय नई दिल्ली से डिप्लोमा इन जर्नलिज्म भी किया है। इस तरह से श्री बटवाल बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। श्री बटवाल 1978 से लगातार पत्रकारिता एवं लेखन का कार्य कर रहे हैं। नई दुनिया, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, फ्री-प्रेस सहित अनेक समाचार-पत्रों में अपनी लेखनी का कमाल दिखाते रहे हैं। वर्तमान में 'फ्री-प्रेस' और 'शिवना की पुकार' में कार्य कर रहे हैं। आपने 'जल-संरक्षण 'और 'सिलिकोसिस 'जैसी बीमारी पर शोधपरक रिपोर्ट प्रस्तुत की है। अपनी श्रेष्ठ पत्रकारिता के कारण आपको माखनलाल चतुर्वेदी आंचलिक पत्रकारिता सम्मान, खोजी पत्रकारिता पुरस्कार सहित अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

- अतिथि सम्पादक

यदि आप इन्दौर से महेश्वर के प्रवास पर हों तो मुझे आप को एक सलाह देना है। यदि आपका अपना वाहन है तो आप हायवे की अपेक्षा महू , जामगेट होकर महेश्वर का प्रवास करें। इस मार्ग से आप प्रकृति, पहाड़ व वन सम्पदा का भरपुर आनन्द ले सकते हैं।पर, यह सलाह उन्ही के लिये है जो वास्तव में महेश्वर के पर्यटन पर निकले हों। इस रास्ते से अहिल्याबाई होलकर द्वारा निर्मित जाम गेट के साथ -साथ अहिल्याबाई होलकर संग्रहालय का भी आसानी से अवलोकन कर सकते है।

महेश्वर में 1970 में संग्रहालय की स्थापना की गई थी। इस संग्रहालय में मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र की पुरासंपदा प्रदर्शित की गई थी। तब यह सामग्री खासगी ट्रस्ट के होलकर राजवाड़ा में प्रदर्शित थी अत: सैकडों पर्यटक इसका अवलोकन कर लेते थे। आगे चलकर एक अच्छे भवन की चाह में नवीन संग्रहालय भवन का लोकार्पण 17 जून, 1998 को प्रदेश के मुख्यमंत्री मंत्री माननीय दिग्विजय सिंह के करकमलों से सम्पन्न हुआ। दुर्भाग्य से नवीन भवन की चाह ने संग्रहालय भवन को इतना दूर बना दिया की अब यह महेश्वर से लगभग तीन-चार कि.मी. दूर लगता है। टेम्पो वाले को यदि आप यहाँ चलने को कहोगे तो पहले आपका मुँह देखेगा? मैंने जाम गेट वाले मार्ग की सलाह इसीलिये दी क्योंकि इस मार्ग से आप संग्रहालय के बिल्कुल करीब से महेश्वर में प्रवेश करेंगे। प्राचीन जेल के पास ही 8 एकड़ जमीन पर नवीन संग्रहालय भवन का निर्माण किया गया है।

दो मंजिले इस संग्रहालय भवन में राजवाड़ा महेश्वर में पूर्व प्रदर्शित पुरावशेषों के साथ -साथ निमाड़ क्षेत्र के हीरापुर, चोली, नावडाटोली, कसरावद, दूधीनाला, नांदेर, ऊन, काटकूट, जेठवाया आदि स्थानों की पुरातत्व महत्व की सामग्री आठ दीर्घाओं में प्रदर्शित है। इनमें - शैव प्रतिमा, वैष्णव प्रतिमा, जैन प्रतिमा, उत्खनित सामग्री, लघु पाषाण प्रतिमा, छायाचित्र, स्वर्ण जंयन्ती व अस्त्र -शस्त्र शीर्षक से आठ दीर्घाओं में सामग्री प्रदर्शित है। संग्रहालयों के अवलोकन का मजा तब आता है जब वहाँ कुशल मार्गदर्शक पदस्थ हो। वर्तमान में म.प्र.पुरातत्व,अभिलेखागार एवं संग्रहालय विभाग कर्मचारियों की समस्या से जूझ रहा है। आठ-दस संग्रहालयों पर एक कर्मचारी ही बचा है। ऐसी स्थिति में पर्यटकों को भारी निराशा का सामना करना पडता है। **संग्रहालय की वीरानगी से मुक्ति का एक साधन माता अहिल्याबाई है,यदि यहाँ इनके लाईट एण्ड साउण्ड शो की शुरूवात की जावे। तो उचित होगा।**

कला समय: बैंक खाता विवरण

1.	**खाता का नाम**	:	कला समय
2.	**खाता संख्या**	:	09321011000775 (चालू खाता)
3.	**बैंक शाखा**	:	पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) 462016
4.	**आईएफएस कोड**	:	PUNB0093210

प्रबंध संपादक

आपका बहुमूल्य आर्थिक सहयोग पत्रिका के लिए जीवनदायी संजीवनी होगी।

आलेख

300 वीं जन्म जयंती पर विशेष.....

अलौकिक शक्ति, धर्म, न्याय की ज्योतिपुंज देवी अहिल्याबाई

शंभु दयाल गुरु

जन्म सागर, 5 नवम्बर, 1929, शिक्षा एम.ए. (इतिहास), एम.ए. (राजनीति विज्ञान), एल.एल.बी., सेवा जबलपुर में पत्रकारिता से आरंभ। 'नवभारत' में सह-संपादक, जन-संपर्क अधिकारी, म.प्र. शासन, मध्यप्रदेश जिला गजेटियर विभा तथा म.प्र. राज्य अभिलेखागार में संचालक, मध्यप्रदेश इतिहास परिषद के संस्थापक सदस्य, परिषद की शोध पत्रिका के संपादक तथा अध्यक्ष, जिला गजेटियर के इतिहास अध्यायों में मध्यप्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम के विस्मृत और धूमिल पृष्ठों को उजागर किया। मध्यप्रदेश के इतिहास, संस्कृति, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पर प्रमाणिक और मौलिक स्रोतों के आधार पर तटस्थता के साथ प्रस्तुत किया, इतिहास की अनेक पुस्तकों का लेखन-प्रकाशन। साथ ही अनेक पुस्तकों का संपादन।

– अतिथि संपादक

देवी अहिल्याबाई का जीवन भारतीय नारीत्व के गौरव और गरिमा का एक स्वर्णिम पृष्ठ है। इतिहास में कभी-कभी ही, ऐसी विभूतियों के दर्शन होते हैं जिनके कार्य और जीवन, आने वाली पीढ़ियों के लिए मिसाल बन जाते हैं। जो अपने सतकर्मों की ऐसी आभा बिखेरते हैं कि जिससे सारा लोक-जीवन आलोकित और अनुप्राणित हो जाता है। देवी अहिल्याबाई ऐसी ही असाधारण और आलौकित शक्ति की ज्योतिपुंज थीं। वे वास्तव में महादेवी थीं। दया और धर्म की प्रतिमूर्ति। गंगा की तरह पवित्र।

सुप्रसिद्ध मराठी कवि मोरो पंत ने देवी अहिल्याबाई के सतकार्यों से अभिभूत होकर लिखा था, 'हे देवी अहिल्याबाई ! धर्म तथा न्याय में आस्था रखने वाली नारियों में आप सर्वोपरि हैं। आप भगवान हरिहर की भक्त हैं और पृथ्वी की आभूषण हैं। न्याय और आस्था के प्रति समर्पण में आप अद्वितीय हैं।'

अहिल्याबाई का जन्म सन् 1725 में अहमदनगर चैड़ी गांव में हुआ था। श्रद्धा स्वरूप हाल ही में अहमदनगर को नया नाम दिया गया है 'अहिल्या नगर'। वे मनकोजीराव शिंदे की पुत्री थीं। पिता ने उन्हें पढ़ाया-लिखाया। अहिल्याबाई की पढ़ने में गहरी रुचि थी। वे धार्मिक ग्रंथ पढ़ने लगीं। इससे धर्म में उनकी आस्था विकसित हुई। एक बार मल्हारराव होल्कर उस गांव पहुंचे। महाराजा गुणग्राही थे। उन्होंने छोटी-सी अहिल्या की बुद्धि से प्रभावित होकर, उस साधारण परिवार की कन्या को अपने पुत्र खण्डेराव से ब्याह करके, 1733 में उन्हें इंदौर ले आये। उन्हें विश्वास हुआ कि यह कन्या, अहिल्याबाई राज-काज में योग्यता से सहायता करेगी। इतिहास गवाह है कि उनका विश्वास फलीभूत हुआ।

सौभाग्य से अहिल्याबाई को अपनी सासू माँ गौतमाबाई का सहयोग और मार्गदर्शन निरंतर मिलता रहा। गौतमा बाई युद्ध के मैदान तथा राज-काज में, अपने पति मल्हार राव को बड़ी बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह देती थीं। धर्म में उनकी अटूट आस्था थी। मल्हार राव तथा गौतमाबाई ब्रह्मेन्द स्वामी के शिष्य थे। स्वामी जी महान पेशवा बाजीराव प्रथम के भी गुरु थे।

उल्लेखनीय है कि मल्हारराव अपने पुत्र खण्डेराव के स्वभाव व व्यवहार से दु:खी थे। वह क्रोधी, हटी, व्यसनी था। इसीलिए मल्हारराव सोच-समझकर अहिल्याबाई को बहू बनाकर लाये। उन्हें महाराजा और गौतमाबाई ने बहुत अच्छी तरह प्रशिक्षित किया। परिणाम सामने थे। उन्हें जो भी दायित्व सौंपा जाता, अहिल्याबाई योग्यता से पूरा करतीं। उनके प्रयास और सद्व्यवहार से खण्डेराव के स्वभाव में परिवर्तन आया। राज-काज और युद्ध में भी खण्डेराव, पिता के मार्गदर्शन में, साथ देने लगा।

उत्तर भारत में एक सैनिक अभियान के दौरान, खण्डेराव ने भरतपुर के निकट, कुम्भेर का किला घेर लिया। युद्ध लम्बे समय तक चलता रहा। दुर्भाग्य से, एक तोप के गोले से खण्डेराव का प्राणान्त हो गया। यह दुर्घटना 17 मार्च 1754 को घटी। अपने एक मात्र पुत्र के निधन ने मल्हारराव को झकझोर दिया। परन्तु मल्हारराव धैर्य खोने वाले योद्धा नहीं थे। अहिल्याबाई की क्या मनोस्थिति थी, समझा जा सकता है। तत्कालीन प्रथा के अनुसार वे सती होने लगी। मल्हारराव दूरदर्शी शासक थे। मल्हारराव उन्हें अपनी पुत्रवधु की योग्यता बुद्धिमत्ता का पूरा अंदाजा था। उन्होंने अहिल्याबाई को सती नहीं होने दिया।

अहिल्या को शासन की बागडोर

मल्हारराव ने जो पत्र अहिल्याबाई को लिखे हैं, उनसे स्पष्ट होता है कि उन्होंने राज-काज की अनेक जिम्मेदारियां अहिल्याबाई को सौंप दी थीं। उससे जहां एक ओर मल्हार राव की सूझ-बूझ, कड़े अनुशासन और प्रशासनिक क्षमता की झलक मिलती है। यह भी प्रकट होता है कि वे

अहिल्याबाई को प्रशिक्षित कर रहे थे।

पुत्र: निधन

देवी अहिल्याबाई के धैर्य की भगवान परीक्षा ले रहे था। 20 मार्च 1766 को मल्हार राव की ग्वालियर के पास आलमपुर में अचानक मृत्यु हो गयी। अब अहिल्याबाई का पुत्र मालेराव सिंहासन पर बैठा। लेकिन दुर्भाग्य से वह भी केवल 9 माह में दिनांक 27 मार्च 1767 को मात्र 22 वर्ष की आयु में संसार से विदा हो गया।

तेजस्वी अहिल्याबाई

अब देवी जी के सामने कोई विकल्प नहीं था। अत: शासन का भार अपने कंधों पर उठा लिया। उन्होंने मल्हारराव के एक विश्वास प्राप्त अधिकारी तुका जी होल्कर को अपनी सेना का सेनापति नियुक्त किया। उन्होंने गंगाधर राव को अपना मंत्री बनाया और राजकाज शुरू किया। परंतु गंगाधर स्वार्थी निकला। उसकी मंशा राज्य हड़पने की थी। उसने अहिल्याबाई से कहा कि वे भजन-पूजन करें और राजकाज उसके ऊपर छोड दें। उनका विचार था कि जिसे वे सक्षम, योग्य और राजकाज में प्रवीण पायेंगी, उसे अपने बाद होल्कर की इंदौर रियासत की विरासत सौंपेगी।

उधर पेशवा का भाई रघुनाथ राव, मालवा का राज्य हड़पने की लालसा पाले था। उसने देखा कि कोई उत्तराधिकारी नहीं है तो राज्य को अपने अधीन ले लेना चाहिये। इसमें उसे गंगाधरराव का परामर्श और सहयोग मिला। रघुनाथ राव सेना के साथ मालवा पहुंच गया। लेकिन तेजस्वी अहिल्याबाई को इतनी आसानी से झुकाया नहीं जा सकता था। उन्होंने मुकाबले की तैयारी तत्काल शुरू की। अपनी सेना के अधिकारियों और हर एक गांव के मुखियों की एक संयुक्त सभा आयोजित की। सब ने सर्व-सम्मति से कहा कि देवी जी को ही राज्य की बागडोर संभालना चाहिये। यह भी निर्णय लिया गया कि रघुनाथ राव से युद्ध किया जाये।

तुकोजी सेना लेकर डट गया। उसने कहलवा भेजा 'सोच समझकर आना,' यहां तलवारें खिंची हैं। यही नहीं स्वयं अहिल्याबाई यौद्धा की पोशाक में अपनी सेना का साहस ऊंचाईयों पर पहुंचा रही थीं। उनका पक्ष सर्वथा न्याय का था अत:उन्हें सब ओर से समर्थन मिला। नागपुर के भोंसले की सेना सहायता के लिए पहुंची। पेशवा ने पूना से एक सेना की टुकड़ी सहायता के लिये भेजी। जब रघुनाथ राव ने सेना इंदौर आक्रमण करने का अपनी सेना को आदेश दिया, तो स्वयं उसकी सेना के अधिकारियों ने देवी जी के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की। इससे रघुनाथ राव घबरा गया। अपनी इज्जत बचाने के लिए उसे कहना पड़ा कि वह तो मालेराव के निधन पर शोक प्रकट करने आया है और तत्काल उल्टे पांव पूना लौट गया। उन्हें महादजी सिन्धिया का भी समर्थन मिला।

माराठा साम्राज्य की दो महान विभूतियों, अहिल्याबाई और महाद जी सिंधिया के संबंध जीवन पर्यन्त मधुर बने रहे। इससे पानीपत के तीसरे युद्ध में पराजय के बाद मराठा शक्ति के अभ्युदम में बहुत सहायता मिली। महादजी सदा अहिल्याबाई की सहायता करते रहे और अहिल्या देवी भी उन्हें हमेशा सलाह और आर्थिक सहायता प्रदान करती रहीं। एक बार उन्होंने महादजी को 30 लाख रुपयों का ऋण दिया था। महादजी एक बार महेश्वर में देवी जी के अतिथि रहे और वहां से उनके तपस्या मय जीवन से अत्यंत प्रभावित होकर लौटे।

सिंहासनारुढ़

अहिल्याबाई 11 दिसंबर 1767 को सिंहासन पर बैठीं। उनके कुशल और दयालु शासन काल में इंदौर रियासत ने जो तरक्की की वह स्वर्ण अक्षरों में लिखी जाएगी। उनके प्रशसनकाल में इंदौर एक गांव से, एक बड़े व्यापार, कला-संस्कृति केन्द्र के रूप में विकसित हो गया। उन्होंने 1767 में इंदौर को अपनी राजधानी बनाया था। दूसरे राज्यों के व्यापारी, सेठ और साहूकार इंदौर में आकर बसने लगे। इससे लोगों की सुख-सुविधाओं में वृद्धि हुई। लोगों को रोजगार, नौकरियां मिलने लगीं।

दु:ख की घड़ियां

अहिल्याबाई की एक पुत्री भी थी। उसका नाम मुक्ता बाई था। उसका विवाह यश्यावंत राव फणशी से हुआ था। अपने पुत्र की मृत्यु के बाद अहिल्याबाई मुक्ताबाई के पुत्र नथोवा को अपने पास रख लिया था। कहा जाता है कि उनकी इच्छा नथोवा को उत्तराधिकारी सौंपने का था। परंतु दुर्दैव से उसकी भी मृत्यु हो गयी। दुर्भाग्य अकेला नहीं आता। कुछ समय बाद उनके दामाद की भी मृत्यु हो गयी। पुत्री भी चिता में समाकर सती हो गयी। पुत्री और शरीर पंचभूत में मिलने के बाद उन्होंने होश संभाला। तीन दिन तक वे गुमसुम बनी रही।

लेकिन उन्हें कर्तव्य पुकार रहा था। जब वे एकदम अकेली थीं। पति, ससुर, पुत्र, नाती, पुत्र, दामाद सब एक के बाद एक, उनकी आंखों के सामने विदा हो चुके थे। दु:ख और चिन्ताओं से घिरी अहिल्या बाई ने अपने आपको राज्य और पूजा की सेवा में समर्पित कर दिया। सुबह 4 बजे उठकर मध्यरात्रि तक उन्हें यही चिन्ता रहती कि जनता की हालत कैसे सुधारी जाये।

पेशवाओं का समर्थन

ऐसी कठिन परिस्थिति में उन्हें पेशवाओं बाला जी राव और फिर माधवराव का पूरा समर्थन मिलता रहा। माधव राव और उनकी रमाबाई, उनके प्रति आदर और स्नेह रखते थे। हर एक मोड़ पर उन्हें पेशवा का दृढ़ समर्थन मिला। उनके बीच बहुमूल्य भेंटों का आदान-प्रदान भी लगातार होता रहा। नाना फड़नवीस भी उन्हें देवी स्वरूप मानते थे।

कल्याणकारी नीतियां

अहिल्याबाई के शासन काल में इंदौर रियासत ने जो तरक्की की वह स्वर्ण अक्षरों में लिखी जायेगी। दया, सहिष्णुता और उदारता उनके

प्रशासन का मुख्य लक्षण था। लोक-कल्याण की प्रगति उनको सुख देती थी। व्यापारियों, किसानों आदि की समृद्धि देखकर वे खुशी से फूले नहीं समाती थीं। रियासत में सब ओर कानून का राज्य था। कोई, किसी से जोर-जबरदस्ती या किसी पर अत्याचार नहीं कर सकता था। किसानों पर उदारता से भूमिकर लागू किया गया था। न्याय सस्ता और द्रुतगति से किया जाता था। मामले पहले नींचे के न्यायालय और पंचायतें निपटाती थी। अपीलें वे स्वयं सुनती थीं। इसके लिए और प्रशासन के अन्य कार्य निपटाने के लिए वे प्रतिदिन दरबार में बैठती थीं।

न्याय प्रिय और उदार

अहिल्याबाई के समय में पड़ोसी राज्यों से समन्वय इतने अच्छे थे कि उनके जीवन काल में एक बार को छोड़कर, कभी कोई आक्रमण नहीं हुए। वे शांति प्रिय नागरिकों के प्रति स्नेही और अपराधियों के प्रति उदार थीं। न उन्होंने कभी कोई अधिकारी बदला न नौकरी से निकालने का मौका आया। उनके संरक्षण में इंदौर गांव से एक समृद्ध नगर में परिवर्तित हो गया और मालवा व्यापार का प्रमुख केन्द्र बन गया। राजवाड़े ने लिखा है कि यदि मराठों ने अहिल्याबाई के अच्छे और न्यायप्रिय प्रशासन का अनुकरण किया होता तो उत्तर भारत में अपने पैर जमाने में मराठा सफल हो जाते।

महिला सशक्तिकरण की प्रतीक

उनकी न्यायप्रियता मेल्करम में बड़ी दिल्चस्प जानकारी दी है। वह लिखता है कि एक तुकोजी ने इंदौर ने एक अमीर बेंकर देवीचंद की मृत्यु के बाद उसकी सम्पत्ति पर कब्जा करना चाहा क्योंकि उसकी कोई संतान नहीं थी। देवीचंद की पत्नी भागी-भागी देवी जी शरण में पहुंची। अहिल्याबाई ने विधवा पत्नी को संपत्ति का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। तुकोजी को आदेश दिया कि इंदौर से अपनी सेना हटा लें और शहर से अन्यायपूर्ण वसूली न की जाये।

उन्होने नियम बनाया कि विधवाएं अपने पति का धन प्राप्त कर सकती हैं। उनके राज्य में नि:सन्तान लोग, स्त्री-पुरुष बच्चें गोद ले सकते थे और अपनी संपत्ति धन को चाहे जिसे दे सकते थे।

महिला सशक्तिकरण में उनका स्मर्णीय योगदान किया। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने दृढ़ता से यह साबित किया कि महिलाएं भी प्रभावी शासक हो सकती हैं।

महान निर्माता, मंदिर, घाट, बावड़ियां, सड़क, धर्मशालाएं बनवायी

देवी अहिल्याबाई के विविध निर्माण कार्य, समय की शिला पर अंकित है। उन्होंने उत्तर में केदारनाथ से लेकर दक्षिण में रामेश्वरम तक और पूर्व में जागन्नाथपुरी से लेकर पश्चिम में द्वारका तक अनेक मंदिरों का निर्माण जीर्णोद्धार कराया, सड़कों, बावड़ियों, तालाबों, घाटों, धर्मशालाओं का निर्माण कराया। उन्होंने अपने शासनकाल में गंगोत्री, अयोध्या, महाराष्ट्र के त्रयंब्क गांव, उज्जैन काशी, आलमपुर, पुष्कर, गया, महेश्वर में मंदिर बनवाये। साथ ही विश्वनाथ मंदिर, सोमनाथ मंदिर, एलोरा में मंदिर आदि अनेक स्थानों पर जीर्णाद्धार कराया।

काशी में सुप्रसिद्ध मणिकर्णिका, राजघाट, अस्सी घाट, उज्जैन, महेश्वर आदिमें अनेक घाटों का निर्माण। वृंदावन, महेश्वर, उज्जैन, पुष्कर आदि में बावड़ियां तैयार करायी ताकि तीर्थयात्रियों को सहजता से पानी मिल सके। तीर्थों में धर्मशालाएं स्थापित की, जहां तीर्थयात्री शरण पा सकें।

हजारों लोगों को गर्म कपड़े और कंबल बांटे जाते थे। गर्मी में राहगीरों को पानी पिलाने के लिए बड़ी संख्या में लोग नियुक्त किये जाते थे।

उन्होंने आलमपुर में अपने ससुर की स्मृति में छतरी बनवायी थी। पति, पुत्र, पुत्री के लिये भी छतरियों का निर्माण कराया था।

देवी अहिल्याबाई बहुत प्रसन्न चित्त रहा करती थीं। वे शायद ही कभी गुस्सा होती थीं। परन्तु यदि कोई अन्याय, अत्याचार या दुष्टता का प्रकरण उनके सामने आता, तो ऐसे लोग उनके सामने आने में थर्राते थे।

उनके चेहरे पर विलक्षण सौम्यता और दीप्ती थी। उनकी दया और धर्म में आस्था के कारण, भारतवासी उन्हें सदा श्रद्धा से स्मरण करते हैं। उनकी लोग कल्याणकारी भावना के सामने विदेशी भी नत-मस्तक थे। जॉन मेल्कम और मेके ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। अवसन ने अहिल्याबाई की प्रशस्ती में लिये गए एक मराठी लोकगीत को अंग्रेजी में अनूदित किया और इंदौर रियासत में पदस्थ अंग्रेज रेजीडेन्ट (राजदूत) की पत्नी, श्रीमती जोअन्ना बेली ने 1904 में अंग्रेजी में पूरा खण्ड काव्य ही उन पर रच डाला था।

महादेवी अहिल्याबाई को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जॉन मेल्कम ने लिखा था 'अपने देश के शासकों में, उनका शत्रु होना, या किसी विरोधी प्रयत्न के विरूद्ध उनका पक्ष न लेना, देशद्राही कार्य माना जाता था। सब लोगों की उनमें ऐसी ही श्रद्धा थी। दक्खिन का निज़ाम तथा टीपू-सुल्तान उन्हें पेशवा के समान ही आदर देते थे। मुसलमान लोग हिन्दुओं के साथ मिलकर उनके दीर्घ जीवन और समृद्धि के लिए प्रार्थना करते थे। दिनांक 13 अगस्त 1795 को देवी अहिल्याबाई परलोक सिधारी अहिल्याबाई शिवजी की बड़ी भक्त थी। राजधानी इंन्दौर से महेश्वर में रहना उन्होंने पंसद किया लम्बे समय तक वे वहीं रही उनके निधन के बाद यशन्तराव होलकर ने अहिल्याबाई की स्मृति में छतरी, घाट और मंदिर बनवाया ओर महेश्वर में अहिल्याबाई की गाद्दी का स्थान आज भी सुरक्षित है।

सम्पर्क : ई-4/83, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016
मो. 9644784115

■

तीर्थों की तारक: उद्धारक

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

सुभाषितों के अनुसार जो तारे वह तीर्थ कहलाता हैं और जो निमज्जन से भितरी-बाहरी दोष दारिद्र्य का हरण करे, वह कुंड या पुष्करणी। शास्त्रों में इनके नामकरण और उनके प्रति आचरण तथा धर्मपालन के अपने-अपने निर्देश है। स्मृतियां, जो धर्मशास्त्र हैं और उन पर अपरार्क, योगेश्वर, कुल्लूक भट्ट जैसी टीकाएँ और हेमाद्रि के निबंध जैसी रचनाएं भारतीय शासकों का मार्गदर्शन करती रही है। अहिल्याबाई ने भी स्मृतियों के निर्देशानुसार तीर्थों के उद्धार और जलस्त्रोतों के निर्माण और पुनः संस्कार में पर्याप्त रुचि ली। नर्मदा के प्रवाह क्षेत्र तक ही उनके काम सीमित नहीं रहे, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार भी उनके कार्यों के साक्षी हैं। ज्योतिर्लिंग की महिमा के विस्तार में उनका योगदान बहुत अधिक है। नेमावर जिसको नर्मदा का नाभि स्थल कहा जाता है, में उनके घाट पर बैठकर मैं विचार कर रहा था कि क्षत्रप शासक नहपान के बाद से सोपानों के निर्माण और नियोजन की जो परम्परा देश में चली, अहिल्याबाई ने उसका एक व्रत की तरह पालन किया। नाथद्वारा में जिस कुंड पर हम स्नान करते थे, वैसे कई कुण्ड उनके निर्माण की कहानी लिए है। अन्नक्षेत्र की परंपरा भारत को एक स्तर और ऊंचाई देती हैं।

इस दिशा में किये गये कार्य 'इष्टापूर्त' कोटी के कहलाते है। वराहमिहिर की बृहत्संहिता और उस पर भट्टोत्पल की विवृत्ति, टीका यह सिद्ध करती है। अहिल्याबाई के सुंदर और स्थाई महत्व के कार्य भारतीय संस्कृति के निम्न मूल्यों और मर्यादाओं का पोषण करते हैं। यथा:

1. प्रजा की आत्मनिर्भरता के लिये कृषि, शिल्प, फल-फूलादि कार्यों का विकास और ऐसे सत्कार्यों को बढावा देना।
2. शासित क्षेत्रों के अलावा जो अन्य प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्र हों, वहां पर तीर्थयात्रियों की सुख-सुविधा के लिये मंदिर, सराय, विश्रांति गृह और जलादि का उचित प्रबंधन।
3. अकाल और पलायन को दृष्टिगत रखते हुए जलस्त्रोतों के विकास जैसे स्थायी महत्त्व के कार्यों का संपादन।
4. अपने कार्य को शिवमय, शिवपूजनमय सिद्ध करते हुए प्रजा में 'सर्वभूत हिते रत:' के आदर्श की स्थापना, यह रूप उनको प्रजा में पार्वती या शक्ति जैसा सिद्ध करने में सहायक रहा।

जब कभी मेरा महेश्वर जाना हुआ, उसके घाट के शिल्प में मुझे अहिल्याबाई के मातृभाव से लेकर वीरांगना की छवियां उत्कीर्ण दिखाई दीं। वे अनेक रूपों में शिलामय होकर मूर्तिमान हैं। कहीं वे शिशु को कोख में उठाए हैं तो कहीं शिशुरंजना होकर प्रजा के बीच है। कहीं वे हथियार उठाए हैं तो कहीं गज और अश्व रथ के साथ चतुरंगिनी सेना नायिका होकर अपनी विजय पताका फहरा रही है।

मेरी माँ अहिल्याबाई से सबसे अधिक प्रभावित थीं क्योंकि बाई को महाराणा ने जो तीन गांव (बीनोता, केली और टांटरमाला) दिए, उनमें मां के संबंधी रहते थे और इस तरह वह उन गांवों से जुड़ी थीं। वह उनके लिए गाती थी :

ना रूप पायो ना सुहाग जीवायो
अहिल्याबाई तेरे करम सौं भरतखंड हरषायो।
नारी होकर तुने रानी वो सन्मान पायो
नर्मदा हंसी तो हिमालो गौरव गीत गायो...।

भारत अहिल्याबाई से गौरवान्वित है। उनकी प्रतिभा ने विदेशियों को भी प्रभावित किया और उन्होंने मुक्त कंठ से उनकी प्रजा परायणता और वात्सल्य भाव को लिखा है। पुरुष राजाओं के दौर में वह संपूर्ण स्त्री सामर्थ्य की धनी साम्राज्ञी थीं।

गया के विष्णुपद मंदिर की विशेषता

गया जी (तीर्थ) में फल्गु नदी के किनारे विष्णुपाद या विष्णुपद मंदिर का निर्माण मालवा की रानी देवी अहिल्या बाई होल्कर ने सन 1787 में कराया। इस मंदिर के निर्माण में 3 लाख रुपए का खर्च आया था और बारह वर्षों तक 6 सौ मजदूर काम करते रहे। ये शिल्पी और मजदूर राजस्थान के जयपुर से लाए गए थे। इनके साथ शर्त थी कि काम पूरा होते ही इन्हें अपने-अपने घर लौटना पड़ेगा। सन 1795 में जब उनका

देहावसान हुआ तब भी ये शिल्पी और मजदूर मंदिर के आसपास काम में लगे हुए थे लेकिन इनकी मृत्यु की खबर सुनकर काम रोक दिया गया। इस वक़्त राजा मित्रजित ने इन शिल्पियों और मजदूरों को सनद देकर बसाया जो खान बहादुर के पिता थे। खान बहादुर बहुत अच्छे चित्रकार भी थे जिनके कई चित्र आज भी ऐतिहासिक हैं। ये शिल्पी आज भी गया में देखे जा सकते हैं जिनका मुख्य पेशा पत्थरों को तराशकर मूर्तियाँ बनाना है।

अष्टकोणीय (अष्टफलकीय) आधार पर खड़े किए गए इस मंदिर के ऊपर तक 8 फलक ही हैं। इस मंदिर में 18 स्तम्भ हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि सभी पर अलग-अलग पोज़ के 'नारायण चरण' बनाए गए हैं। यह 'नारायण चरण' 30 सेंटीमीटर का है जिस पर शंख, चक्र, गदा अंकित हैं। विष्णुपाद मंदिर स्थानीय बैसाल्ट चट्टानों को काटकर बनाया गया है। मंदिर के शीर्ष पर सोने का कलश और झण्डा लगा हुआ है जिसका वजन 51 किलोग्राम है। मंदिर अपनी वास्तुकला के लिए विश्व विख्यात है जिसमें नट मंदिर और गर्भगृह की प्राचीन परंपरा का पालन किया गया है। गर्भगृह का शिखर 1 सौ मीटर ऊंचा है और नट मंदिर की ऊंचाई 30 मीटर है।

ये बैसाल्ट पत्थर गया से 19 मील दूर पत्थलकट्टी से लाए गए थे। इन पत्थरों को प्रभावी काला रंग देने के लिए सीम (Dolichos lablab) की पत्तियों और तने के रस इस्तेमाल किए गए। इस मंदिर को धर्मशिला के नाम से भी जाना जाता है।

ऐतिहासिक रिकॉर्ड बताते हैं कि अहिल्या बाई मालवा की रानी थी जिनकी राजधानी महेश्वर थी। वे शिव भक्त थी लेकिन विष्णु की भक्ति भी कम नहीं करती थीं। गया में विष्णुपाद मंदिर के निर्माण से पहले उन्होंने महाराष्ट्र के अमरावती में चंद्रभागा (पूर्णा) नदी के तट पर एक विष्णुपद मंदिर बनवाया था जो बरसात के मौसम में लगभग पूरी तरह डूब जाता था। यह मंदिर 16 स्तंभों पर टिका हुआ है जिसके सभी स्तंभों पर विष्णु के एक-एक जोड़े चरण चिह्न अंकित हैं लेकिन सभी एक-दूसरे से भिन्न हैं। विष्णु का चरणचिह्न इस मंदिर में सालों भर लगभग पूरी तरह डूबा रहता है। यही वो मंदिर था जिसने गया में विशाल मंदिर बनवाने की प्रेरणा उन्हें दी।

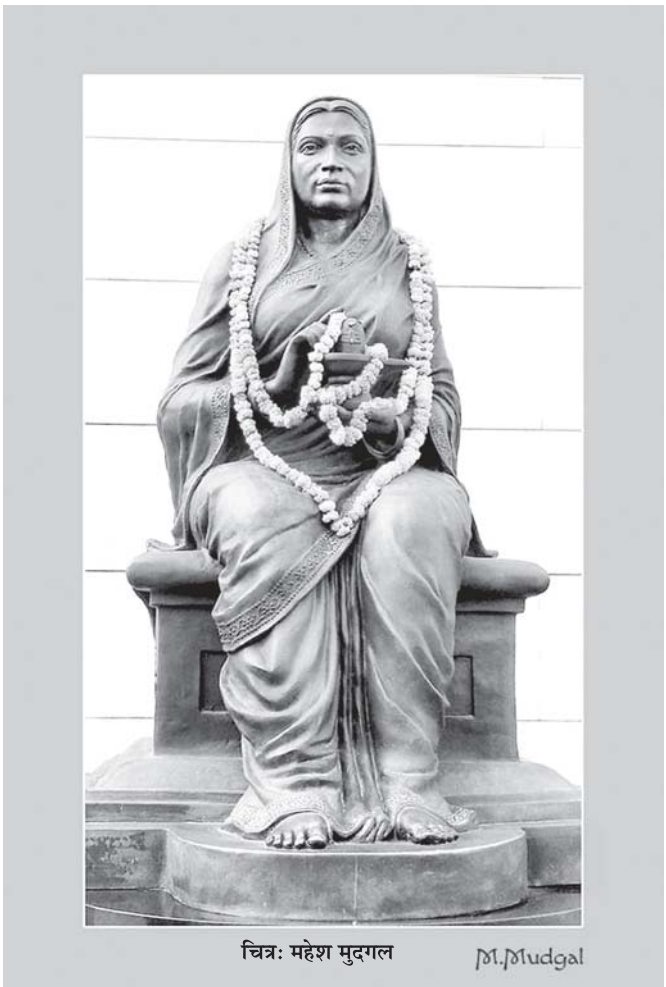

चित्रः महेश मुदगल M.Mudgal

वे राजस्थान की मीराबाई की तरह ही भक्त थी जिनका उद्देश्य था – मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरों न कोई। परिवार में सबको खो देने के बाद इन्होंने प्रजा और ईश्वर के प्रति अपना पूरा समय दिया। गया के प्रति उनकी आस्था ने विवाह के पश्चात इस मंदिर का निर्माण कराया था। गया की सबसे पहली यात्रा उन्होंने अपनी दादी के साथ 1731 में की थी। तब वे 6 वर्ष की थी। कहते हैं नर्मदा नदी को साड़ी चढ़ाने की परंपरा इन्होंने ही शुरू की थी। ये बेहतरीन तीरंदाज़ थीं। तीर में साड़ी का एक किनारा बांधकर और उसे प्रत्यंचा पर चढ़ाकर खींचते हुए नर्मदा नदी पार कर देती थी। इसे देखने के लिए जनसमूह उमड़ पड़ता था। यह परंपरा उनके बाद भी चलती रही।

जब इनकी मृत्यु हुई थी तब भारत भर में कई मंदिरों में काम चल रहा था। ये सभी रुक गए। गया में तब विष्णुपाद मंदिर के प्रांगण में इनकी एक प्रतिमा बनाकर इन शिल्पियों ने स्थापित करा दी। यह प्रतिमा आज भी इस मंदिर में है। इन्होंने जिन मंदिरों का निर्माण कराया इनमें काशी विश्वनाथ मंदिर भी एक था, जिसे अपने वास्तविक जगह से थोड़ा हटाकर बनाया गया क्योंकि वास्तविक जगह में ज्ञानवापी मस्जिद खड़ी थी। रानी अहिल्याबाई ने त्रयंबकेश्वर मंदिर का निर्माण भी कराया। इंदौर

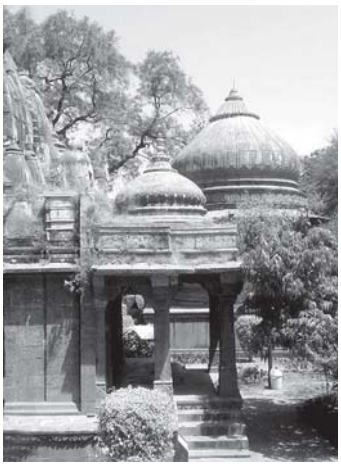

स्टेट गज़ेटियर बताता है कि मालवा स्टेट के अंदर के इंदौर, महेश्वर और आलमपुरा तथा स्टेट के बाहर के उज्जैन, ओंकारेश्वर, रावर, कुंभर, पुष्कर, पूना, जेजुरी, बद्रीनाथ, हरिद्वार, अयोध्या, काशी, गया, वृन्दावन, नेमिषारण्य, अमरकंटक, पंढरपुर और रामेश्वर में मंदिर, छतरी घाट और धर्मशाला का निर्माण भी इनके कार्यकाल में जमकर हुआ।

इस बात को छोडना भी गुनाह होगा कि मुसलमानों के पूजा स्थल को भी इन्होंने निर्माण तथा मरम्मत के लिए हर तरीके की सहायता दिए। खासकर, मज़ारों के निर्माण के लिए इन्होंने सदा मदद दी।

(मित्रवर Shri Krishan Jugnu जी के अनुरोध पर लिखित)

अहल्याबाई का शिलालेख

शिवपूजा में सदा निरत रहने वाली भगवती स्वरूपा अहल्या बाई का एक अभिलेख मित्रवर श्री राज्यपाल शर्मा (झालावाड़) ने भिजवाया है। यह जाम गेट महू के द्वार पर लगा है और देवनागरी के स्पष्टाक्षरों में संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इसमें संवत लिखने में ही दो श्लोकों का प्रयोग किया गया है। विक्रम और शक दोनों ही संवतों का प्रयोग किया गया है, विक्रम संवत 1847 के माघ मास की 13वीं तिथि को इसको लिखा गया है। द्वार की प्रशंसा में मनोहर शब्द मात्र लिखा गया है।

मूलपाठ इस प्रकार है।

श्री।
श्रीगणेशाय नम।।
स्वस्ति श्रीविक्रमार्कस्य संमत्
1847 सप्ताब्धिनागभू
शाके 1712 युग्मकुसप्तैक मिते
दुर्मति वत्सरे।।1।।
माघे शुक्ल त्रयोदश्यां पुष्यर्क्षे
बुधवासरे।।सुषा (स्नुषा) मल्लारि रावस्य
खंडेरावस्य वल्लभा।।2।।
शिवपूजापरां नित्यं ब्रह्मप्याधर्म तत्परा।
अहल्याख्य बबंधेदं मार्ग द्वार सुशोभनम्।।3।।

जलस्त्रोतों की उद्धारक : अहिल्याबाई

देश की प्रेरणास्पद नारी शक्तियों में अहिल्याबाई का नाम श्रद्धा से लिया जाता है । यह नाम देश के उन तीर्थों के साथ विशेष रूप से जुड़ा हुआ है जो जन आस्था के केंद्र हैं। जगत्-जनार्दन की अर्चना के साथ ही जन-जन के लिए जलसेवा के निमित्त इस महामना का नाम लिया जाता है। एक कहावत सी लोक में है : **जनार्दन ने अहिल्या की जल सेवा स्वीकार की।**

सचमुच, एक प्रजानिष्ठ शासक होकर अहिल्याबाई ने जल सेवा के लिए जो संकल्प किया और जलस्त्रोतों के उद्धार सहित निर्माण के लिए संपदादान का जो पुण्यकार्य किया, उसने उनके पुण्य साम्राज्य की सीमाओं को बहुत बढ़ाया और चिरायु किया।

माहिष्मती में नर्मदा के घाट, जिनकी रचना तीर्थ पर शिव नामों के स्मरण के रूप में की गई है, उन महामना का सजीव स्वप्न है और देशवासियों के सम्मुख एक आदर्श है। गंगा वाला बनारस तो उनके संकल्प की फलश्रुति ही है। वे संकल्पों में शिव रही या शिव संकल्प की धनी रही, वैष्णव तीर्थ नाथद्वारा में भी उनका बनवाया कुंड है जो अहिल्या कुंड के नाम से ही जाना जाता है- वे जहां पधारी वहां वरुणदेव प्रसन्न हुए और उनके संकल्प की पूर्ति के लिए बारहों मास जलदायक रहे। (जल और भारतीय संस्कृति : श्रीकृष्ण जुगनू)

आज उनके अवतरण दिवस पर उनके संकल्प की सिद्धि याद आ रही है, कितने बरस पहले उन्होंने यह जान लिया था:

'नहीं जलसेवा सम कछु काजा।
महत काज एहि सरब समाजा।'

कण - कण में कीर्ति की कथा

सृजन का जो सात्विक सुख स्त्री रत्नों की बदौलत किसी

समाज को मिलता है, वह स्मरण का हेतु हो जाता है। वेदों से लेकर पुराणों और महाकाव्यों में जिन नारी रत्नों के विषय में विमर्श किया गया है, वे अपने – अपने विशिष्ट मूल्यों के कारण सदा स्मरणीय हैं। माताएं ही जानती हैं समाज और किसी क्षेत्र के गुणों और विभूतियों तथा तत्त्वों को। महाभारतकार ने इसी अर्थ में कहा है:

माता जानाति यद्गोत्रं माता जानाति यस्य सः।
मातुर्भरणमात्रेण प्रीतिः स्नेहः पितुः प्रजाः।।[शांतिपर्व 266, 35]

सच में रेख और लेख में मीन – मेख नहीं, महिला (मां) और शिला (शिलालेख) इसलिए मातृका कही जाती हैं कि वे अपनी स्मृतियों से सिद्ध करती हैं कि पुत्र का पिता कौन है? उसका गोत्र, वंश और चिह्न लक्षण आदि विशिष्टतायें क्या है? अपनी कोख में धारण करने के कारण सच में उनमें स्नेह होता है। अन्य सब अटकलें पिता के प्रभुत्व की तरह प्रजा को कब्जे में रखने के उपाय मात्र है।

काल जयी कीर्ति कथाएं :

विश्व इतिहास के अनेक संदर्भ बताते हैं कि नारी चरित्रों ने अपनी कालजयी कीर्ति कथाओं का लेखन अपने चीर से भी अधिक लम्बा किया है। नारियों की शक्ति और सामर्थ्य के प्रसंग हर युग में मिलते है और उनके गुणों की प्रशंसा संहिताओं में निबद्ध हुई मिलती है। वराहमिहिर ने वनिताओं को विधाता के हाथों गढ़ा अनुपम रत्न कहा है। नीतिकार कामन्दक ने बल, हाल ने मदन की मूर्ति, परिमल ने प्रिया, वात्स्यायन ने गुण, हलायुध ने मन का मंडन और मार्कंडेय पुराणकार ने सृष्टि तथा प्रकृति की अधिष्ठात्री कहा है : या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।(देवी माहात्म्य)

नाथद्वारा में अहिल्याबाई का बनवाया पवित्र जल का कुंड।

उक्त सबके सब विशेषण या संज्ञाएं स्त्रीरत्न के कीर्तिमुलक कार्यों की उपज है। लज्जा, शक्ति, माया, लक्ष्मी आदि सारे रूप नारी के निजी और सृजनात्मक मूल्यों के सूचक है। मध्य काल और उत्तर-मध्य काल में, जब कि काव्य में रीतिकाल का प्रधान्य रहा, राज्य शासन में अनेक प्रकारेण स्त्री शक्तियों का दौर भी रहा।

इसी काल में होलकर घराने में कीर्तिवान हुई अहिल्याबाई, जो अपने गुणों और धर्मपरायणता के बलबुते पर पुण्यश्लोक सिद्ध हुई। उनकी कसौटी राजकाज से ज्यादा प्रजा वात्सल्य की पृष्ठभूमि वाली अधिक रही और इस कसौटी ने उनके कृतित्व की प्रतिष्ठा स्त्री प्रकृति की सर्वविध स्थापना जैसे रूप में की है।

अहिल्याबाई एक आदर्श नारी के रूप में सर्वपरिचित है। भारतीय नारियां उनके व्यक्तित्व पर, कृतित्व पर गौरव का अनुभव करती है। उनके न्यायनिष्ठ हाथ में शिव प्रतीक का होना, सत्य और सुन्दर पथ प्रमाण के संकल्प के साक्षी रहे है तो उनके साथ में देशभर की प्रजा ने तीर्थोद्धार के साथ- साथ जलस्त्रोतों के महत्त्व को भी आत्मसात कर अभिव्यक्त किया है। किसी नारी का पुण्यश्लोक होना उस दौर में बड़ा कठीण काज ही कहा जायेगा।

लेखक – वरिष्ठ साहित्यकार,भारत विद्याविद्
और संस्कृत के वैज्ञानिक ग्रंथो के खोजकर्ता है।
संपर्क : विश्राधरम्, 40 राजश्री कॉलोनी, विनायक नगर,
उदयपुर 313001 (राज.) मो. 9928072766

■

आलेख

सगुणी मायऽ अहिल्या राणी

डॉ. सुमन चौरे

विगत वर्ष हम पश्चिम धाम द्वारका जी गये थे। द्वारकाधीश जी के दर्शन करते हुए नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन पूजन कर आगे ज्योर्तिलिंग सोमनाथ जी के दर्शनों के लिये प्रस्थान किया। परिवार के छोटे-बड़े बच्चे सहित कुल मिलाकर हम दस लोग थे। तीर्थयात्रा पर निकले थे। भीड़-भाड़ की संभावनाएं तो रहती ही हैं। हम संध्याकाल पहुंचे। हमारे मन में तरह-तरह के प्रश्न उठने लगे। कैसे दर्शन होंगे, आरती मिल जाये तो बड़ा अच्छा रहेगा आदि-आदि। मंदिर पहुंचे तो बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ कि वहां हमारे परिवार के अलावा दस बीस लोग और थे। आरती में बिल्कुल सामने ही खड़े रहे। वहीं बच्चों ने जी भर कर दौड़ा दौड़ की हम भी मन भरकर बैठे। पंडित जी से चर्चा हुई। चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि 'आप लोग बड़े अच्छे समय पर आयें हैं। दीवाली त्योहार का अवसर है, तो सब लोग अपने-अपने घर व्यवसाय में हैं, त्योहार मनाने में लगे हैं। इन दिनों स्थानीय लोग भी कम ही आते हैं।

पंडित जी से चर्चा के दौरान हमने अपना विचार रखा कि कल गोवत्स द्वादशी भी है और शाम को प्रदोष भी है। हमारी ऐसी कामना है कि हम रुद्राभिषेक करवा लें। पंडित जी ने कहा यहां तो नहीं हो पाएगा मैं आपको फोन नंबर देता हूँ, वे पंडित जी आपका अभिषेक अहिल्याबाई के मंदिर में करवा देंगे अहिल्या बाई का नाम सुनकर मैं जरा चौंकी, वह तो हमारी अहिल्यबाई हैं यहाँ-कहाँ ?

पंडित जी ने दिये नम्बर के अनुसार अभिषेक करवाने वाले पंडित जी से संपर्क हुआ। पंडित जी ने हमें बुलाया। उनके द्वारा निर्देशित स्थान पर प्रात: ही पहुंच गये। पंडित जी ने बतलाया, यह असली सोमनाथ मंदिर है जिसे महेश्वर की राणी देवी अहिल्याबाई होल्कर ने बनवाया वह बड़ा मंदिर तो बाद में नया बना है। मुगल इसका बाल भी बांका नहीं कर सके। बाहर से ही मंदिर के दर्शन कर मन गद्‌गद हो उठा। अद्‌भुत समागम। समुद्र के तट पर माँ रेवा के दर्शन हो गये। काले पाषाण से बना मंदिर मन को अलौकिक आनन्द हुआ। गर्भ गृह में पहुंचते ही काले पाषाण के बड़े से शिवलिंग के दर्शन कर मन में अपार श्रद्धा उमड़ पड़ी। पंडित जी ने स्वयं पूजन की तैयारी लगाकर रखी थी। पंडित जी ने पूजन प्रारंभ कराया हमने उन्हें बताया, हम लोग अहिल्याबाई के क्षेत्र के लोग ही हैं। उनकी हमारे प्रति बड़ी श्रद्धा जागी। उन्होंने बड़े ही अन्तर्मन से अभिषेक करवाया। मुझे तो अभिषेक करवाते-करवाते लग रहा था, मानों अहिल्याबाई बैठी हैं और यह शिवलिंग उनके हाथ में रखा है। मेरे हृदय में अपार श्रद्धा उभर कर उठ रही थी। मुझे अनुभूत हो रहा था, लग रहा था कि अहिल्या राणी, देवी माता कैसी विराट और समर्पित रही, जिन्होंने देश के कोने-कोने में तीर्थ स्थानों पर भव्य मंदिर बनवाये। देश में भक्ति की आस प्रवाहित कर दी।

यह चित्र वरिष्ठ चित्रकार
श्री ओम प्रकाश सोनी बिजोलिया ने बनाया है।

पंडित जी ने पूरे मनोयोग से पूर्ण शिवपूजन के साथ रुद्राभिषेक करवाया रुद्री-रुद्राष्टध्यायी श्री शिवम हिम्न: स्त्रोत तथा शिव ताण्डव स्त्रोत के साथ रुद्राभिषेक के श्लोकों के मध्य मुझे तो सिर्फ वही गीत सुनाई दे रहे थे जो हम अपने मामा के घर मझघर के झूले पर हमारी मावसियों के साथ गाते थे। पंडित जी के श्लोक में मुझे वहीं गीत देवी अहिल्या के जस जैसे सुनाई दिये।

मायं रेवा को जसोऽ निरमल पाणी,
असी सुगजी हो मायं अहिल्या राणी
दु:खी नऽ को दुख्ख हरऽ बड़ी बलिहारीऽ
निमाड़ को उद्धार करण जणमी उवतारिऽ
बोलऽ ते अमिरित वाणी
अहिल्या राणी
मायं बईण नऽ की पीड़ा जाणऽ
पिरजा का लोगऽ ओकाऽ मनऽ अरु प्राणऽ...
मुगल फिरंगी नक्खऽ मेटणऽ की ठाणी
अहिल्या राणी

भावार्थ : माँ रेवा का जल जैसा निर्मल और गुणी है, उसी प्रकार की सगुणी अहिल्या माता है। वह दु:खियों के दु:खों को दूर करती है, उसकी महिमा अपार है, ऐसा लगता है, निमाड़ का उद्धार करने को ही उसका अवतार हुआ है। वह माता और बहिनों के दर्द को समझती है। समस्त प्रजा को वह अपना मन प्राण समझती हैं। उसकी वाणी में अमृत की धारा प्रवाहित होती है। उसने सब के कष्ट दूर करने के लिए मुगलों और फिरंगियों को देश से खदेड़ने की ठानी है। माता अहिल्या निमाड़ के लिए शिव शंभु का वरदान है।

माता अहिल्या देवी के विषय में लिखने का सोचती हूं एक स्मृतियों का बहुत बड़ा कुनबा ममसाल याने मामा के घर का दूसरे अपने परिवार का दादा-बाबूजी के साथ बचपन में महेश्वर गई थी, तब का है। फिर तो कई बार महेश्वर गई, किन्तु वह बालपन की स्मृतियां ही मेरी अपनी अनुभूतियों का एक बड़ा अविस्मरीय खजाना है। मुझे पूरी तरह से याद है मैं वर्ष 1956 में निमाड़ की एक लोक साहित्य संगोष्ठी में गई थी। तब अपने दादा-बाबूजी के साथ बहुत से साहित्यकार थे। हम किले में पहुंचे। मैं तब आठ साल की ही थी। किले में सबसे पहले मण्डप सभा कक्ष में पहुंचे। मुझे पूरी तरह स्पष्ट दिखाई दे रहा था, स्तम्भों पर एक जैसी कलाकृति दिखाई दे रही थी। न सुई की नोक इतना अन्तर न बाल बराबर फर्क। मैंने सबके सामने अपनी बाल सुलभ जिज्ञासा रखी ऐसी अद्‌भुत कला एक हाथ ने बनाई या यह अनेक हाथों का हुनर हो। किले की खूबियां बनाने वाले एक भाई ने बताया, प्रमुख तो इस सबका निर्माण का उद्देश्य था राज्य के कलाकारों की कला में निखार लाना उनकी आजीविका तय करना और दूसरा गरीब जनता को रोजगार देना। उन्होंने आगे बताया इस किला का शास्त्रीय पद्धति से निर्माण हुआ है। किले की छत पर क्या बनना है। गुंबद, मुंढेर पर क्या बनना है द्वार झरोखे पर क्या बनना है, स्तम्भों पर क्या बनना है? कला में निष्णात कला पारखी सब रूप रेखा बनाते थे। निर्माण की पद्धति थी, संस्कृत के विद्वान पंडित श्लोक बोलते थे और उनके उच्चारण के ही स्तम्भों एक साथ ही बीसों हाथ-छैनी हथौड़ा चलाते थे - पद्‌मनाभम. कमल नयनम ... एक साथ एक जैसी कला उकेरी जाती थी। कला जौहरी घूम-घूमकर निरीक्षण करते थे। इस प्रकार एक ही किले एक ही मंदिर के निर्माण में कितने ही सिद्ध हस्तों की आजीविक चलती थी। यह रानी अहिल्याबाई की सूझ-बूझ और ममतामयी माता की कार्य क्षमता का परिचायक है।

माता अहिल्याबाई का किला देखकर छोटी उम्र में ही मन में देवी अहिल्याबाई राणी के प्रति असीम श्रद्धा और आस्था ने जन्म लिया। कैसी रही होंगी वह राणी, उन दिनों न आधुनिक साधन न सुविधा थे और न ही नारी स्वतंत्रता फिर भी अपनी प्रजा के सुख-सुविधाओं और उनकी योग्यता का मूल्यांकन कर उनके हित में कार्य करना अपने आप में एक देवी शक्ति का प्राकट्य भाव ही रहा है, तभी वह राणी से माता कहलाई। किले के नित्य नियम काम-काज से हमारे मामाजी भी जुड़े हुए थे। वे राजमाता अहिल्याबाई के जीवन काल से चली आ रही पूजन पद्धति में भी सम्मिलित थे। वे हमें अहिल्याबाई के पूजन स्थान पर ले गये, वहां वे सभी शिवलिंग पूजन में रखे थे, जिनका नित्य पूजन स्वयं अहिल्याबाई अपने हाथों से किया करती थी। वहीं पर भगवान के लिये बना सोने का झूला भी रखा था जिसको हमने बहुत पास से बिल्कुल निकट से देखा सवा मन (पचास सेर) सोने का झूला। लगा इसका स्पर्श कर लें। जिसे एक देवी ने नित्य पूजा यहां देवी अहिल्या की आस्था का प्रबल प्रवाह उस उम्र में भी मुझे हुआ था जो आज तक जैसा का तैसा मेरी आँखों में बसा है वैसे तो राजमाता अहिल्याबाई के विषय में सब लोग बहुत कुछ तो नहीं पर कुछ न कुछ तो अवश्य जानते थे। बात यह अलग है कि जो व्यक्ति वहां की जानकारी देता था तो उसमें अहिल्याबाई के प्रति इतना समर्पित आन्तरिक आदर भाव होता था मानों वह माता अहिल्या के साथ रहा है और आजकल की ही बात बता रहा है। यहां तो माता अहिल्या का हम हमारा, अपन अपने पन का भाव है, जिसकी गरिमा की आँच आज भी कर्मचारियों पर प्रजा पर है।

राजमाता की कचहरी बैठक वे बता रहे थे जब राजमाता ने अपनी राजधानी इंदौर से महेश्वर लाने का निर्णय लिया तो उन्होंने सोचा बोली के अभाव में प्रजा से संभाषण अधूरा रहेगा। प्रजा की सही बात समझना और अपनी बात प्रजा को समझाना इसलिए राजमाता ने उस क्षेत्र निमाड़ी और आदिवासियों की भीली सीखी! बड़े से कक्ष में राजमाता की मूर्ति और उनके हाथ में शिवलिंग दूर से ही देखकर लगा जैसे कोई तेज प्रवहित हो रहा है। अहिल्याबाई की प्रतिमा के चारों ओर तेज प्रभा मण्डल निर्मित हो गया हो। एक निश्चित अंतराल में पूर्व निश्चित तिथियों में दरबार नियमित लगा करता था। किन्तु कोई तत्काल समस्या आ जाय तो बीच में भी दरबार लगाया करती थी। कभी लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं पर भी सामूहिक दरबार लगाती थी ताकि प्रजा आपत्ति न उठाए। दरबार में वह सबसे पहले उन लोगों को आगे बैठाती थी जो दीन हो, गरीब हो और छोटी बस्ती से आते हों। अपने संबोधन में सर्व प्रथम शिव शंभु की जय और फिर माता रेवा की जै और फिर म्हारा निमाड़वासी नऽ का पायँ लागू हाथ जोड़कर कहती। सभा में वह आश्वस्त कर कहती थी जिसको जो कुछ कहना है पूरी तरह निर्भीक होकर कहे खुलकर कहो ''बार-आर आश्वस्त करते हुए कहती थी - डरो मत शिव शंभु तुम्हारा साथ है। यदि राज्य का प्रशासनिक कर्मचारी सतावजऽ तो बिना संकोच का बिना भय का बताओ।'' माता अहिल्या न्याय करते समय अपने हाथ में शिव शंकर को इसलिए विराजित रखती थी कि यह न्याय उनके शंकर ने किया है। उनसे कोई गलत फैसला न हो जाय। वे प्रजा के अमन चैन की सत्यता जानने के लिए रात्रि में वेश बदलकर अपने राज्य में घूमती थी। अपने विश्वसनीय सेवकों को भी उन्होंने यह कार्य सौंप रखा था। वे चाहती थी कि मेरे राज्य में कोई भूखा न सोय न कोई प्रशासन की ओर से प्रताड़ित किया जाए।

बैठक के पश्चात हम किले की भीतर बढ़े जहां एक लम्बा चौड़ा कक्ष देखा। वहां पर महिलाएं हाथ करघों पर साड़ियां बुन रही थीं। चूंकि हम दो चार बहने छोटी उम्र की थी तो उन्होंने हमसे कहा देखो राजमाता अहिल्याबाई कितनी महान थीं वे महिलाओं की खूबियों को अच्छे से जानती थी, इसलिए उन्होंने महिलाओं को रोजगार देकर उनमें आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता और आत्म जागृति का विकास कराया। राजमाता ने देखा निमाड़ की धरती सफेद सोना उगलती है, याने उत्तम कोटि का कपास भरपूर मात्रा में होता है। यह कपास कच्चे माल के रूप में दूसरे राज्यों में कम दाम पर चला जाता है। तब अहिल्याबाई की दूरदृष्टि और सूझ-बूझ ने बहुत बड़ा वस्त्रोद्योग निमाड़ में स्थपित करा दिया। महेश्वरी लगड़ा बाहर जाने लगा, जिससे यहां की प्रजा को आर्थिक लाभ मिला और बाहर से नगद राशि आने लगी जो राजकोष में बढ़ोत्तरी का जरिया बना प्रजा के हित और राजकार्य में पैसा लगने लगा। राजमाता ने महिलाओं के मान-सम्मान का ध्यान रखते उनमें स्थित शक्ति का पूरा उपयोग किया। उनकी शक्ति को पहचान कर उन्हें आगे बढ़ने के अवसर दिया। उन्होंने अपने निमाड़ की महिलाओं की कार्य कुशलता को देखकर शक्तिशली सशस्त्र सेना तैयार की। प्रशिक्षित महिलाएं बरछी, भाला, तीर-कमान और तलवार

बड़ी निपुणता से चलाना सीख गई। इस सेना को रानी अहिल्याबाई ने पेशवा की सेना से मुकाबला करने के लिए तैयार की थी। पेशवा रानी अहिल्याबाई की इस बुद्धिमत्ता को भांप गये, कि अगर मैंने नारी सेना को हराया तो भी मेरी क्या ताकत क्या प्रशंसा क्या महत्व होगा? वे पीछे हट गये। आगे रानी अहिल्याबाई के नेतृत्व में इस नारी सेना ने मुगलों के भी छक्के छुड़ाये। अहिल्या बाई की इस नारी सेना ने कई आदिवासी हिंसक समूहों को भी परास्त उन्हें ठण्डा कर दिया। अहिल्याबाई होल्कर पहली ऐसी शासक थीं जिन्होंने अपने राज्य को सशक्त बनाने हेतु नारियों को ससम्मान आदर करते हुए हर क्षेत्र में उन्हें स्थापित किया। सेना गठन उनकी अपनी बुद्धिमत्ता का परिचायक रही।

अहिल्याबाई चहुमुंखी प्रतिभा की धनी तो थी ही, परन्तु उनकी शिवभक्ति और अपने आराध्य में अटूट श्रद्धा ने ही उसे राणी से माता और माता से देवी बना दिया। बहुत सुना था अहिल्याबाई की पार्थिव शिव पूजा के विषय में बड़ी जिज्ञासा थी बालमन में इस पूजा को देखने की। दूसरे दिन हम भोर से पहले ही उस स्थान पर पहुंच गये, जहां प्रतिदिन सवा लाख पार्थेश्वर बनाकर पूर्ण शास्त्रीय विधि – विधान से पूजन कर उन्हें सूर्योदय के पूर्व ही पुण्य सलिला नर्मदा जी में विसर्जन कर दिये जाते। यह बड़ा ही अद्‌भुत दृश्य था। हमने देखा कैसे लकड़ी के बड़े-बड़े पाटों पर निश्चित संख्यानुसार काली माटी से शिवलिंग निर्मित करना। साथ ही एक साथ सौ-सवा सौ पंडितों के समवेत स्वर में संस्कृत के मंत्रों के श्लोकों का वाचन कर स्तुति पूजन करना समूचा वातावरण सुंगधित गुंजित और भक्तिमय हो जाता था। भासता था जैसे उस पूजन में अदृश्य रूप से देवी अहिल्या भी मौजूद रहती हैं। यह शाश्वत सत्य है शिव सदैव अपनी पूजा में उपस्थित रहते हैं। माँ रेवा की लन्छू लहर-लहर में सूर्य की रक्तिम आभा हिलोले ले रही थी। पार्थेश्वर विसर्जन का श्रद्धा भाव मन में तरंगित हो रहा था। इसके पश्चात तो कई बार महेश्वर गई किन्तु में बचपन की उस आभा कान्ति को अपने मन के एक कोने में अभी भी संजोये हुई हूं क्योंकि वहां भी अब वैसा नहीं है, समय के साथ सब कुछ बदल रहा है। बदलता जा रहा है।

राजमाता अहिल्याबाई होल्कर को मैं अपने मातृ पक्ष की ओर से ऐसा जानती हूं, जैसे वह मेरी माता की निकट संबंधी हैं। मैं पुन: अपने बचपन में खो गई। अहिल्याबाई को कोई कैसे जानता है, पहचानता है। सबके अपने अलग-अलग अनुभव और अलग-अलग अध्ययन है, किन्तु मुझे अहिल्याबाई अपने ममसाल (ननिहाल) की एक सदस्य सी जान पड़ती हैं। मेरी मौसियां झूले पर बैठकर अहिल्याबाई के ऐसे गीत गाया जैसे राम-कृष्ण की महिमा या देवी के जस गा रही हो। मेरे मामा एक कथा वाचक थे, जो कथा के मध्य किसी राजा की उदारता दयालुता या दानवीरता का उदाहरण देते थे, तो वे माता अहिल्याबाई की उससे तुलना किया करते थे। वे निमाड़ का एक आदर्श रूप माता अहिल्याबाई को ही मानते थे। मामा का गांव क्षेत्र अहिल्याबाई के राज्य प्रशासन में ही आता था।

गाँव-गाँव ओटले-ओटले, दासे-दासे पर बैठकर लोग अहिल्याबाई के शासन काल के यशोगान करते थे। यहां तक कि बात-बात में दैनिक व्यवहार, क्रिया-कलापों में भी अहिल्याबाई की महान सहिष्णुता, कर्मठता और दूर दृष्टि का उदाहरण देते थे। वे बाते ऐसे किया करते थे मानों आज कल की बात कर रहे हों। उनकी जीवन्त कथा शैली और सपाट बयानी ऐसी कि उनके कहानी किस्से सुनकर ऐसा लगता था कि वे अहिल्याबाई की सभा से अभी हाल उठकर चले आ रहे हों। राजा मल्हारराव की कर कहते थे, राजा ऐसा ही होना चाहिए जो व्यक्ति की खूबियों को पल भर में परख लें। मल्हारराव ऐसे ही जौहरी थे, जिन्होंने अहिल्याबाई जैसे हीरे को परख कर गांव से ले आये थे। उन्होंने अपने अयोग्य बेटे के लिए ऐसी ही योग्य बहू चाहिये थी, जो उनके साथ उनके राजकीय कार्यों में भी सहयोग दे। मल्हारराव होल्कर ने चारों ओर से उठे अपने विरोध को स्वीकार करते हुए अहिल्याबाई पर पूर्ण जबावदारी सौंप दी। और अहिल्याबाई भी अपने ससुर की परीक्षा में पूरी तरह खरी उतरी। यद्यपि अहिल्याबाई के पति खण्डेराव होल्कर एक अच्छे यौद्धा तो थे ही उन्होंने निज़ाम को हराया, मीरमनी खान को धूल चटा दी। तारापुर का किला फतह किया पुर्तगालियों का बड़ी बहादुरी से सामना किया किन्तु उनकी एक बुरी आदत तुनक मिजज़ी और कामवासना ने उन्हें अयोग्य शासक साबित कर दिया। कुंभेर के किले की घेराबंदी के समय छल द्वारा उन्हें गोले से उड़ा दिया। मल्हारराव अपने बेटे खण्डेराव के ऐसे अंत से हिल गये। जब रानी अहिल्याबाई अपने पति खण्डेराव के साथ सती होने को तैयार हुई तब मल्हारराव ने कहा – बेटी मेरी तरफ देखो, मैंने तुम्हें इस राज्य की प्रजा की रक्षा के लिए तैयार किया है। तुम्हें इस प्रजा की भलाई के लिए और मेरे विश्वास के लिए जीवित रहना होगा। खण्डेराव के जाने पर मेरा पुत्र गया, किन्तु तुम्हारे जाने से हमारा मालवा राज्य और होल्कर परिवार का सब कुछ चला जायेगा। अपने पितृ तुल्य ससुर की दयनीय दशा देखकर अहिल्याबाई ने श्वेत वस्त्र धारण कर हाथ में शिवशंभु को रखकर अपना नया दूसरा जीवन शुरू किया।

होल्कर परिवार पर आई घोर विपत्ति को देखकर शत्रु प्रसन्न हुए। विरोधी शक्तियों का हौंसला और बढ़ गया। अहिल्याबाई पर मल्हारराव का विश्वास देखकर परिवार के भीतर भी विरोध बढ़ा और अहिल्याबाई के विरूद्ध नये-नये षड़यंत्र रचे जाने लगे। किन्तु अहिल्या तो अहिल्या ही थी, दुगनी शक्ति से समस्त विभीषिकाओं से जूझी। राज सिंहासन पाने के लिए परिवार के लोग ही फन उठाकर खड़े हो गये। अहिल्याबाई शिव शंकर की भक्ति में तटस्थ खड़ी रही। अहिल्या पर कुछ वश नहीं चला तो खण्डेराव की विमाता ने मालेराव का अपनी माँ अहिल्याबाई के खिलाफ भड़काना शुरू किया। इस व्यवहार से अहिल्या आहत हुईं, किन्तु राज्य को अपना ध्यये मानकर अपना जीवन उसी ओर होम दिया। सब कुछ सहन कर राज्य की चिन्ता में लगी रहने वाली माता को लोग अब माता अहिल्याबाई कहने लगे।

मेरी छोटी मम्माय (नानी) तो अहिल्याबाई की ऐसी भक्त थी, कि बात-बात में वह अपनी बहू-बेटियों को अहिल्याबाई का उदाहरण देती थी। हम मज़ाक मज़ाक में पूछते थे, ''नानी मायं आप तो अहिल्याबाई का ऐसा उदाहरण देती हैं, जैसे उसके साथ रही हो।'' अपनी पूजा में सभी देवी-देवताओं के साथ अहिल्या माता की जय भी बोलती थी। वे कहा करती थीं, हाँ बेटी सीखो-सीखो अहिल्या सी सीखो। दुश्मन सी लड़ती भी थी, नऽ घर को चूल्हा चौकों सबका रुचि को भोजन भी बणावती थी। सासु धणी तलती थी पण कदी जुबाव नी देती थी। संवदार उठी नऽ सासु-ससरा

का पाय लागती थी, ओका माथा शी पल्लू नी सरकऽ एतरो काण कायदो राखती थी। हम लोग नानी मायं के साथ ऐसी ही बातें करते थे ताकि वे अहिल्याबाई का उदाहरण दें। यही अहिल्याबाई के जीवन की सार्थकता रही कि कोई दो ढ़ाई सौ साल बाद भी जन-मन में ऐसी रची बसी है। जो राम-कृष्ण सीता राधा आदि जैसे ही अहिल्याबाई के भी किस्से कैणात कथा-वार्ता और लोक श्रुति के भंडार भरे हैं। निमाड़ तो अहिल्या मय है। वहाँ आज भी लोग आँखन देखी जैसी, कानन सुनी जैसी बात करते हैं।

निमाड़ के प्रख्यात लोक साहित्यकार बाबूलाल सेन दादा महेश्वर में ही रहे हैं। उनके घर पहुंचे कि ही वे अहिल्या की बात शुरू कर देते थे। वे अहिल्याबाई की न्याय प्रियता के किस्से उनके मुंह से सुने, ऐसा लगता है, जैसे वे उस समय के प्रत्यक्षदर्शी रहे हों। सेन दादा के घर की गली अहिल्याबाई के किले के पिछले द्वार पर ही खुलती है। वे कहते थे कितने ही राजा रजवाड़े न्याय मूर्ति हुए, किन्तु देवी अहिल्या जैसा न्याय किसी ने नहीं किया। अहिल्याबाई न्याय करती थी, तो शिवशंभु को वे यह कह कर न्याय देती थी, यह न्याय आप ही कर रहे हैं शिवशंभु।'

सेना दादा कहा करते थे अहिल्याबाई न्याय की देवी है। एक बार का किस्सा वे सुनाया करते थे कि उनका पुत्र मालेराव बड़ा ही उदण्ड निराधरमी और दुराचारी था समझ लो माता के चरित्र के एक दम उल्टा विपरीत। एक वारी की बातऽ आय, मालेराव रथ भगाड़ तो जाई रहयो थों। अर्थात् निरुद्देश्य रथ दौड़ा रहा था। रास्ते में गाय बछुड़े जा रहे थे। डर के बछुड़ा भागा और रथ के निकट आ गया। मालेराव अपनी मस्ती में रथ दौड़ा रहा। जान-बूझकर रथ तेज दौड़ा रहा था बछुड़ा रथ के नीचे आकर मर गया गाय उसके पास बैठकर रोने लगी। संयोग से अहिल्याबाई उधर से गुजरी। उन्होंने इस स्थिति को देखा कि अपने मृत बछुड़े के पास बैठकर गाय रो रही थी। अहिल्याबाई ममत भी द्रवित हो आँखों से बह निकली। वहां उपस्थित जनता में से किसी ने भी नहीं बताया कि बछुड़े कैसे मरा किसने मारा। अहिल्याबाई तो अहिल्याबाई थी, उन्होंने पता लगा लिया कि इसका हत्यारा कौन है? बछुड़ा का अन्तिम संस्कार कराकर अहिल्याबाई महल में पहुंची। उन्होंने अपनी सुनवाई को बुलाया और पूछा - सुनवाई एक उहापोह में एक दुविधा में हूं, तुमही मेरी समस्या का निराकरण, निदान कर सकती हो' बहू ने कहा कहिये सासु बाई अहिल्याबाई ने पूछा - 'किसी की माँ के सामने कोई उसकी संतान को कुचलकर मार डाले तो, उस हत्यारे के लिए के लिए क्या सजा हो? उसे क्या दण्ड दिया जाना चाहिए? बहू मेना बाई ने तुरन्त कहा 'उसे तो मृत्य दण्ड देना चाहिए सासुबाई। अहिल्याबाई ने सेवकों को, तुरंत आदेश दिया 'मालेराव के हाथ-पांव बांधकर रथ के पहिये से कुचल दिया जाय।' सेन दादा डबडबाई आंखों से बोले देखो 'मायं नऽ कसो जीवऽ बांध्यो' अर्थात माँ ने अपना हृदय कितना कठोर किया होगा तब ऐसा निर्णय लिया। कोई भी कर्मचारी ऐसा काम करने को तैयार नहीं हुआ। तब स्वयं अहिल्याबाई रथ पर बैठी और रथ के सामने मालेराव को फेंक दिया। अहिल्याबाई ने जैसे ही रथको हांका वहीं गाय कहां से दौड़कर आई और रथ के सामने खड़ी हो गई। अहिल्याबाई ने रथ से कूदकर गाय को हटाने का प्रयास किया गाय अडिग खड़ी रही। अहिल्याबाई गाय के गले लगकर फूट-फूटकर रोने लगी। गाय की आंखों से भी अजस्र धार बहने लगी। कहते हैं, कुछ दिन बाद किसी बीमारी से मालेराव की मृत्यु हो गई। लगता है ममता न्याय और दया का इस सृष्टि पर कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता है न रहा होगा। अहिल्याबाई ने अपनी ममता को कलंकित नहीं होने दिया। अहिल्याबाई के जीवन के उनकी न्यायप्रियता के अनेकों उदाहरण अभी भी गांवों में प्रचलित हैं।

महाराजा होल्कर राव के जाने के पश्चात राज्य की तो बात ही अलग है, अहिल्याबाई के साथ राजगद्दी को लेकर घरेलू षड़यंत्र बढ़े। मुगल अंग्रेज शक्तियां ताकत वर हो गईं, किन्तु अहिल्याबाई को साथ देने जेठ तुकोजी एक सास भी थी। मल्हार राव के साथ तीन रानियां सती हो गईं, मालवा वाली रानी जो अहिल्या को बहुत प्यार करती थी, जीवित रहकर उसकी ताकत बनीं। अहिल्याबाई ने अपने इष्ट देव के लिए सवामन याने पचास सेर सोने से सुन्दर झूला निर्मित करवाया। झूला देवालय में ही रखा रहता था जिसे डाकुओं ने किले की दीवार फांदकर चुराया था। कहते हैं डाकुओं ने घोरपड़ (गोह) की पूँछ में रस्सी बांधकर उसे किले की दीवाल से चिपकया और रस्सी पकड़ कर दीवाल फांद कर देवालय से, डाकू झूला और सामान लूटकर ले गये किन्तु एकाएक डाकुओं को दिखना बन्द हो गया। उन्हें लगा कोई शक्ति उन्हें पीछे खींच रही है। वे अंधे जैसे हो गये। बड़ी मुश्किल से उन्होंने किले से बाहर निकलकर झूला जमीन में गाड़ दिया। इसके पश्चात डाकू पकड़ा भी गये और झूला मिल गया।

अहिल्याबाई के विषय में क्या लिखूं क्या छोड़ूं। लोक में रंजी बसी देवी, देवी के गीत अभी भी झूले पर बैठ कर गाते हैं। जब भी मामा के गांव जाते हैं, बड़े ही सब बड़े-बूढ़े ही गये फिर भी उसी उमंग से गीत गाते हैं -

इना लिमाड़ऽ मऽ सबसी बड़ी अहिल्या माता,
अहिल्या माता का जसऽ नक्छत्र गावता।।
जोगो-जोगो शिवालय बणाडया
रेवा तट पर घाटऽ न घाटऽ बंधाड्या
पंडित पुजारी नऽ का मानऽ बधायाऽ
दीन दुःखी नऽ का दरद मिटायाऽ
असी कलु मंऽ तकऽ हमऽ जसऽ गावताऽ
इनी पिरथी पर सबसी बड़ी अहिल्या माताऽ....

भावार्थ : इस निमाड़ में सबसे बड़ी अहिल्या माता है। जिनके यश तो तारा-गण-नक्षत्र भी गाते हैं। स्थान-स्थान पर उन्होंने शिव मंदिर और देवी-देवताओं के मंदिर बनवाये। उन्होंने विद्वान पंडित और ज्ञानी लोगों का सम्मान बढ़ाया। गरीब दलित और दुखियों का उद्धार किया। रेवा-तट और पवित्र नदियों पर भव्य घाट बनवायें। गरीबों को रोजगार देकर प्रजा का हित किया। लोग अहिल्याबाई को माता मानकर उनकी कीर्ति करते हैं। ऐसे ही कलियुग में इस पृथ्वी पर अहिल्या माता है।

मेरे निमाड़ की पहचान। निमाड़ का गौरव निमाड़ की माता लोक कल्याणकारी अहिल्या माता की जय। बार-बार नमन उन्हें।

लेखिका - वरिष्ठ लोक संस्कृतिविद् हैं।
संपर्क : 13 समर्थ परिसर, ई-8 एक्स्टेन्शन, बावड़िया कला, पोस्ट ऑफिस त्रिलंगा, भोपाल-462039 मो.: 09424440377, 09819549984

■

कालड़ी से कैलाश तक

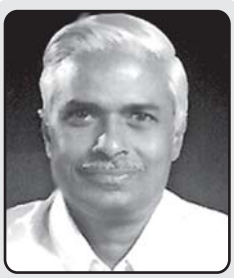

प्रो. डॉ. श्रीराम परिहार
(डी.लिट्)

भारतवर्ष की भूमि वीर प्रसूता है। वीरता युद्ध भूमि में तो प्रमाणित होती है। वह ज्ञान के संवाद-रण में भी अपना लोहा मनवाती है। वीरता जितनी मारक होती है, उतनी ही विनम्र भी होती है। शिव की तरह। राम की तरह। कृष्ण की तरह। केरल की हरीकच्च ओढ़नी ओढ़ी हुई पुण्य-भूमि के सिन्धु तट से मेघ जन्मता है। ताप से तपती हुई सम्पूर्ण भारतवर्ष की धरती पर निरापद बढ़ता जाता है। बढ़ता जाता है। सूखी माटी को भीगोता है। पादपों, वृक्षों, लताओं, तृणों को सींचता है। वनपाखियों-टियापाखियों को नहलाता है। कुओं, बावड़ियों, सर-सरोवरों की गागर भरता है। नदियों-निर्झरों के घर जल महोत्सव मनाता है। किसानों के मन-प्राण में उमंग पैदा करता है। पशुओं को हरी-हरी वसुन्धरा पर विचरण करने का आमन्त्रण देता है। सबके लिए तप से मुक्ति का वायुमण्डल रचता है। अन्त में नगाधिराज हिमालय के हिम मण्डित शिखरों का अपने जल से अभिषेक करता है। इन्हीं शिखरों पर ही कहीं पर शिव-शंकर महादेव समाधि लगाए बैठे हुए है। कैलाशपति कैलाश पर विराजित है। मेघ वहीं जाकर नतमस्तक होता है। अपने पूरे अस्तित्व के साथ प्रणत होकर नि:शेष हो जाता है। मानसरोवर से अनादि नाद **'अहं ब्रह्मास्मि'** प्रस्फुटित होता है। कैलाश के उच्च शिखर के हिम त्रिशूल से ऊपर उठता हुआ यह नाद आकाश तिरोहित हो जाता है।

आदि शंकराचार्य के सम्पूर्ण का साक्षात करने में मेघ का यह रूपक मन को बहुत भाता है। मेघ अनल-अनिल के संघात से जन्म लेता है। आकाश में हवा की पालकी पर सवार होकर क्षितिजों तक की यात्रा करता है। वर्षा बूँदों से ऋतु की प्रकृति को बदल देता है। शास्त्रज्ञ विद्याधर के पुण्य-ताप और संस्कृतिनिष्ठा के वायु सुयोग से पोते के रूप में शंकर का आविर्भाव होता है। सत्कर्म और पुण्य तीसरी पीढ़ी में फलित होते हैं। शिवगुरु और आर्याम्बा शंकर को पुत्र रूप में पाकर जन्म-जन्मान्तर के कर्मों का धन्यवाद करने लगते हैं। शंकर अनुपम गुणों के साथ प्रकट होते हैं। अन्यथा सात वर्ष की अवस्था में कैसे कोई वेद शास्त्र को कण्ठस्थ कर सकता है। यह महादेव शिव का ही अनुग्रह है। उन्हीं का शंकराचार्य के रूप में प्राकट्य विग्रह है। गुरुकुल में रहकर गुरु के सान्निध्य में तपकर और श्रुति के माध्यम से स्मृति में घरकर शंकराचार्य उपनिषद्, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक में निष्णात हो नीरवर मेघ सरीखे लबालब हो जाते हैं। सात वर्ष की अवस्था में ही गुरुकुल से समावर्तन (दीक्षान्त) के उपरांत वे माता की आज्ञा लेकर गुरु की खोज में निकल पड़ते हैं। जैसे वायु का तेज झोंका निकलता है। जैसे आतुर आकुल मेघ निकलता है। जैसे प्रकाश-पथ पर सूर्य निकलता है। जैसे निशीथ में ज्योत्स्ना की अलकें धोता राकेश निकलता है। जैसे काल को चीरकर अमृतत्व निकलता है। जैसे हिरण्य गर्न कलश का ढक्कन हटाकर सत्य निकलता है। वैसे ही मानो वेदों का ज्ञानकाण्ड देह धरकर शंकराचार्य के रूप में सम्पूर्ण भारतवर्ष के नभमण्डल पर छा जाना चाहता है।

आठ वर्ष की अवस्था का बालक शंकर गुरु की खोज में चल देता है। चल देता है- दक्षिण से उत्तर की ओर। चल देता है। कालड़ी से कैलाश की ओर। चल देता है - तापशाप हरा नदी आलवाई की सजल गोद से पुण्यदा नदी माँ रेवा के तट ओर। गुरुकुल में बालक शंकर ने सुन रखा है- इस भूतल पर भगवत्पाद गोविन्द महाज्ञानी हैं। वे वेदान्त के मर्मज्ञ है। महर्षि वेदव्यास के पुत्र शुकदेव मुनि, शुकदेव मुनि के शिष्य विख्यात वेदान्ती आचार्य गौड़पाद और आचार्य गौड़पाद के शिष्य गुरु गोविन्दपाचार्य है। वे इस समय भी अपनी योग साधना में लीन हैं। ब्रहा की सिद्धि में रत है। वे माँ नर्मदा के तट पर गुफा में तपस्या कर रहे हैं। वे योगसूत्र के रचयिता पतञ्जलि के अवतार है।

शंकराचार्य गुरुकुल में गुरुमुख से यह अमृतवाणी सुनकर गोविन्दपाचार्य का शिष्य बनने और उनसे दीक्षा लेने का संकल्प ले लेते हैं। निकल पड़ते हैं गुरु की खोजकर उनकी शरण में जाने के लिए। जैसी भवितव्यता होती है, वैसा योग-संयोग भी बनता चला जाता है। शंकराचार्य माता आर्याम्बा और पिता शिवगुरु की तपस्या के फलस्वरूप जन्म लेते हैं। तपस्या के कारण भगवान शिव के वरदान रूप में उन्हें पुत्र शंकर की प्राप्ति होती है। पुत्र प्राप्ति की कामना में तपस्या, सद्वृति, सदाचरण सद्च्छा, सद्मनोभाव का सुमेल होता है, तो शंकर जैसा बेटा जन्म लेता है। सुसंस्कृत चरित्र, विचार, भाव, आचरण चिन्तन, मनन सबकी अनुकूलता और सकारात्मकता होती है, तब जन्म के साथ ही सुसंस्कार लेकर आने वाली सन्तति की प्राप्ति होती है। ऐसी सन्तान अगले पिछले कुलों का नाम और उद्धार करती है। समाज और राष्ट्र को भी अपने आलोक-वलय से आलोकित करती है। परम्परा का पुनर्मूल्यांकन होता है। संस्कृति में नयी आभा और युगानूकूल नयी मूल्यवत्ता दिपदिपानें जगती है। जीवन सौभाग्य है। संस्कृति जीवन को सुसंस्कृत करती है। धर्म

जीवन को दृष्टि देता है। सनातनता अद्वैत दर्शन से जीवन को शिवत्व पथ पर एक सबल घटक देती है। मेध-सा श्यामल-श्यामल जीवन भारतवर्ष के नभोमण्डल में छा जाता है-कालड़ी से कैलाश तक।

लक्ष्य सुनिश्चित है। मार्ग अनजाना है। वन-पथ है। गिरि-गह्वर है। वन-पशु है। आश्रम है। नदी, नद, सरोवर है। ग्राम है। वनवासी है। लताएँ-वेलियाँ है। वनफूल हैं। चौकड़ी भरते मृग हैं। शाखा से शाखा पर कूदते वानर हैं। चहचहाते पंछी है। गीत गाते झरने हैं। सिंह गर्जना है। चिंघाड़ते हाथी हैं। सर्र-सर्र सरकते नाग हैं। दादुर ध्वनि है। शीतल मंद सुगंधित पवन है। जेठ-वैसाख की तपन है। सावन भादौं की झड़ी है। शरद की चाँदनी है। हेमन्त की उज्ज्वला धूप है। माघ-पौष की ठिठुरन है। फागुन-चैत्र का वासन्ती उत्सव है। तरुवर पर कोकिल बोल रही है। वन में रुड़ा मोर नाच रहे हैं। पातळिया देहयष्टि वाला आठ वर्षीय संन्यासी इन सबमें ब्रह्म के दर्शन करता हुआ चला जा रहा है। अनथक चला जा रहा है। अनवरत चला जा रहा है। उपनिषदों से निकलकर वेदान्त की प्रत्यंचा से छूटे ज्ञान के तीर की तरह चला जा रहा है। वेदों के ज्ञानकाण्ड की ध्वजा लहराती हुई दक्षिण-उत्तर, पश्चिम पूरब की धरती पर दिग्विजय के प्रण के साथ बढ़ती जा रही है। यह शंकर का संकल्प है। गुरु से दीक्षा लेने की अभिलाषा है। वेदान्त दर्शन को आत्मसात करने की आकांक्षा है। अद्वैत को समयानुकूल व्यावहारिक स्तर पर उतारने की आतुरता है। अद्वैत दर्शन और अभेद दृष्टि द्वारा सनातन धर्म की पुनर्स्थापना करने की उत्कण्ठा है। एक संन्यासी इसी धुन में दण्ड-कमण्डल लिए सनातन पथ पर सनातन पुरुष की भाँति धावमान चला जा रहा है।

ओंकारेश्वर में माँ नर्मदा के तट पर गहन गुफा में परम तपस्वी गोविन्दपाद ध्यान मग्न हैं। शंकर उन्हीं की शरण में आ जाते हैं। अपनी यात्रा के आरम्भ में निर्जन वन में एक सरोवर के किनारे मेंढक के बच्चों पर एक काले सर्प को अपनी फण की छाँव करके बच्चों को धूप से बचाते हुए देखते हैं। यह विपरीत, प्रकृति वाले जीवों को एकसाथ जोड़ने की आश्चर्य भरी स्थिति के बारे में, जानने हेतु आतुर-आकुल हो उठते हैं। पास ही खड़े एक बटुक से ज्ञात होता है कि यह श्रृंग गिरि क्षेत्र है। यह ऋषियों की तपस्या स्थली है। यहाँ सब बैर-भाव छोड़कर प्रेम से रहते हैं। शंकराचार्य के भीतर सारे भारतवर्ष को इसी सात्विक भाव से भर देने का संकल्प जाग जाता है। बाद में बहुत बाद में उत्तर से दक्षिण जाते समय उन्होंने इसी स्थान पर ऋंगेरी मठ की स्थापना की है। सात्त्विकता से परिपूरित और प्राकृतिक सुषमा से लकदक स्थल नर्मदा कूल पर गोविन्दपाद की गुफा के चौतरफा आचार्य शंकर को अपूर्व अनुभव होता है। शिष्य को मनचाहा गुरु मिल जाता है। गुरु को सुयोग्य शिष्य प्राप्त हो जाता है। जैसे धरती के गर्भ में ठहरे हुए जल को प्रवाह मिल जाता है। पंछी को पंख मिल जाते है। फूल को सुगन्ध मिल जाती है। शब्द को अर्थ मिल जाते हैं। युग-युग से मौन वीणा के तारों में झंकार बज उठती है। गुरु गोविन्दपाद शिष्य शंकर को चारों वेदों के चारों महावाक्यों '**तत्त्वमसि प्रज्ञानं ब्रह्म अहं ब्रह्मास्मि,** अयात्मा ब्रह्म का तत्वज्ञान देते हैं। महर्षि वेदव्यास के 'ब्रह्मसूत्र की अद्वैतपरक व्याख्या शंकर को सुनाते हैं। शंकराचार्य की दिव्यदेह से ब्रह्मज्योति की झाँई प्रकट होने लगती है। गुरु की परमतोष होता है। वर्षाकाल के क्षणों में माँ नर्मदा का बाढ़-प्रवाह साधनारत गुरु की गुफा तक आ जाता है। शंकराचार्य माँ नर्मदा की स्तुति, प्रार्थना, विनती में नर्मदाष्टक रचते हुए प्रणत हो जाते हैं। माँ नर्मदा द्वार पर रखे कमण्डल में समा जाती है। दिशाएँ गूंज उठती है- '**त्वदीय पाद पंकजं, नमामि देवी नर्मदे।**'

गुरु की आज्ञा होती है अद्वैतमत का प्रचार करने की। ब्रह्मसूत्र का भाष्य लिखने की। शंकर गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करते हैं। गुरु का आशीर्वाद पाकर शंकर दिग्विजय के लिए प्रस्थान करते हैं। वे शंकर से शंकराचार्य हो जाते हैं। अपने गुरुभाइयों के साथ वे प्रयागराज होते हुए वाराणसी आते हैं। वाराणसी धर्म, संस्कृति का केन्द्र रहा है। पंडितों, वाद-विवादों, युक्तियों, तर्कों, गूढ़-रहस्यों, व्याख्यानों, प्रवचनों, उपदेशों, पूजा-अनुष्ठानों से काशी प्रकाशित क्षेत्र रहता है। शैव, पाशुपत, पांतजल, शाक्त, गाणपत्य, जैन, बौद्ध, तांत्रिक, सिद्ध, कापालिक आदि मतों सम्प्रदायों का केन्द्र है। यहीं शंकराचार्य चांडाल के वेशधारी शिव से '**सर्व खल्विदं ब्रह्म**' सब कुछ ब्रह्म ही है- वेदवाक्य का गूढ़ार्थ प्राप्त करते हैं। भगवान विश्वनाथ से ही उन्हें भास्कराचार्य, अभिनवगुप्त, नीलकण्ठ, प्रभाकर, कुमारिल भट्ट, मण्डन मिश्र से शास्त्रार्थ कर 'अद्वैत ब्रह्म' की स्थापना करने का भी अप्रत्यक्ष रूप से अनुदेश मिलता है। वेदान्त का मुख्य प्रतिपाद्य 'अद्वैत ब्रह्म' ही है। शंकराचार्य ब्रह्मसूत्र का भाष्य लिखने और अपनी साधना को शीतल धार देने हेतु विश्वनाथ भगवान के दर्शन कर बद्रीकाश्रम की ओर निकल पड़ते हैं। माँ गंगा के आँचल की लहर-लहर पर शंकराचार्य के विनत स्वर सार्थक और साकार होते हैं-

देवि सुरसरि भगवति गङ्गे, त्रिभुवन तारिणि तरलतरङ्गे।
शङ्करमौलि विहारिणि विमेले, मम मतिरास्तां तव पदकमले ।।

बनारस से बद्रीनाथ की यात्रा देवसरि गंगा के किनारे-किनारे होती है। गंगा के किनारे उत्सव भरे हैं। उसकी लहर लहर में उमंग है। गंगा इस पुण्य-धरा पर धर्म-प्रवाह है। धर्म अपने चार कर्म-स्रोतों में साकार होता है। सत्य, दान, दया, तप यह चार ही कर्म का सौन्दर्य भी बनते हैं। यह ही धर्म को ईश्वर और सृष्टि के मध्य का सेतु भी बनाते हैं। गंगा सृष्टि में अनादि जल-रूप सत्य है। वह जल के दान से सृष्टि और संस्कृति दोनों का भरण करती है। वह इतनी करुणार्द्र-दयामय है कि पुण्यात्मा पापात्मा सबको तारती आ रही है। तार रही है। वह भगीरथ के तप का फल है। वह स्वयं सृष्टि के कल्याण हेतु तप: स्फूर्त है। शंकराचार्य धर्म-स्वरूप गंगा के तटों का सौन्दर्य निहारते अपनी शिखर-यात्रा पर बढ़ते जाते हैं। गंगा हिमालय से मैदान में आ रही है। प्रयागराज-वाराणसी को धन्यता दे रही है। शंकराचार्य वाराणसी-प्रयागराज, हरिद्वार, ऋषिकेश से हिमालय की ओर जाते हैं। जल ऊपर से नीचे की ओर बहता है। मेघ ऊपर की ओर

बढ़ता है। उसकी पहुँच और गति गिरि-श्रृंगों की ओर की होती है।

हरिद्वार हरि और हर के घर का द्वार हैं। बद्रीनाथ विष्णु धाम है। केदारनाथ शिवधाम है। देहरादून घाटी का प्रवेश द्वार है। सब कुछ अद्‌भुत है। बहुत चमत्कारिक और सम्मोहित करने वाली प्रकृति-परिवेश है भारतभूमि का। ऋषिकेश ऋषियों की तप: भूमि है। यज्ञभूमि है। हिमालय में तपस्या-विभूत ऋषियों के केश हिमालय की मैदानी घाटियों तक फैल रहे हैं। जटा जूट जब खुलते होंगे, तो ऋषिकेश तक उनका विस्तार और प्रभाव रहता होगा। शंकराचार्य यहीं बहुत भावविभीर और धर्म प्रवाह में डूबे हुए से हो जाते हैं। मंदिर-मंदिर आश्रम-आश्रम में जाकर वे प्रणत होते हैं। विष्णु मंदिर में जाते है। मंदिर को विष्णु के श्रीविग्रह से विहीन पाते हैं। पागल जिज्ञासु की तरह पूछाते हैं- विष्णु की मूर्ति के बारे में। ज्ञात होता है कि आततायियों के भय से भगवान विष्णु की मूर्ति की गंगा-जल में छुपा दिया है। शंकराचार्य भक्त वात्सल विष्णु की प्रतिमा को अपने साथियों के सहयोग से बहुत खोज-बीन के बाद गंगा-प्रवाह से निकालते हैं। उसे वेद-नीति-रीति द्वारा पंडितों के माध्यम से विष्णु मंदिर में प्रतिस्थापित कराते हैं। शंकराचार्य अद्वैत ब्रह्म के सिद्धांत के माध्यम से सनातन धर्म की स्थापना हेतु जनमते हैं, पर वे यह भी स्थापित करते हैं कि तीर्थ और देवालय धर्म संस्थापना के ही सगुण अंग-उपांग है। यह भी सन्देश देते हैं कि संन्यासी, योगी, यति, तपस्वी, मनस्वी अकेले मुक्ति नहीं चाहता है। वह सबके कल्याण और सबकी मुक्ति में अपनी मुक्ति चाहता है। मुक्ति पाता है। यही है उपनिषद् का **''यस्य सर्वमात्मैवाभूत।''**

ऋषिकेश से बद्रीनाथ तक का पथ प्राकृतिक रूप से अटाटूट सौन्दर्यमय है। सम्मोहक है। आकर्षक है। चुम्बकीय है। जादुई सुन्दर है। जीवन्त है। निर्गुण ब्रह्म का सगुण रूप है। पत्ता-पत्ता, टहनी-टहनी, कली-कली, पुष्प-पुष्प, संवादातुर हैं। हिमालय शिव का विराट-विशाल समाधि स्वरूप है। हिमालय में सृष्टि के पाँचों तत्त्व शान्त मौन क्रियाशील हैं। अनन्त नील नभ का आक्षितिज शुभ्र असीम विस्तार है। भूमि की ममता की उठान अनगिनत हिम शिखरों में छलछला रही है। जल अवतार धरकर स्रोतो, झरनों, हिमनदो, नदो, सरिताओं, जलकुण्डों में धावमान बिछल रहा है। पवन चर-अचर सबमें व्याप्त और स्थित **'प्रणव ऊँ'** का महानाद द्युलोक, अन्तरिक्षलोक, भूलोक, पाताललोक में ध्वन्वित कर रहा है। कण-कण और क्षण-क्षण अन्तस की आग से ज्योतित और स्फूर्त है। हिमशिखर बोल रहे है। बुला रहे हैं। नदियाँ वेदों की ऋचाओं का गान कर रही है। तृण, तरु, लता, गुल्म, यज्ञ यजन में तल्लीन हैं। सगुन चिरैया, चिड़ा-चिड़कली, दादुर-मोर, पपीहा-कोकिल एक अखण्ड बटुक संन्यासी की आगमन वेला में सप्तसुरों में छत्तीसों राग गा रहे हैं। बीहड़-अनजाना अबूझ मार्ग शंकराचार्य के लक्ष्य - बिन्दु पर सुगम हो चलता है। हिंसक पशु मैत्रीभाव से तरलाईत होकर सहचर बन जाते हैं। अलकनन्दा की धारा शंकराचार्य की ज्ञान विभूति को स्नान कराने हेतु आतुर हो उठती है। पर्वत, मैदान, घाटी, चढ़ाव, शिखर, उठान, निचान, तृण, घास, तरुवर, लता, पुष्प, कंकर, पत्थर, चट्टान, कोमल माटी की शंकराचार्य की हिमालय यात्रा बदरीनाथ मंदिर के द्वार पर आकर अपना अभीप्सित स्थल और अनुपम आनन्द-बिन्दु पाकर एक पुनश्चरण पूरा करती है।

बद्रीकाश्रम के आगे लहर-लहरकर अलकनन्दा सनातन काल से बह रही है। पीछे नर-नारायण पर्वत है। इन्हीं के मध्य वेदव्यास गुहा है। अखण्ड शान्ति है। आक्षितिज प्रशान्ति है। अद्भुत उत्फुल्लता है। कल्याणी मौन है। आत्मिक आनन्द की झोंक अनुभव हो रही है। शंकराचार्य की दृष्टि 'व्यास गुफा पर स्थिर हो जाती है। इसी गुफा में महर्षि वेदव्यास ने ब्रह्मसूत्र की रचना की है। शंकराचार्य उसी पावन पौराणिक प्राकृतिक गुफा में बैठकर ब्रह्मसूत्र का भाष्य लिखना चाहते हैं। गुरु का आदेश है। आत्मा का संकल्प है। वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना का क्षण है। शब्द ब्रह्म की महिमा है। जगत का कल्याण है। ज्ञान का निर्विकल्प प्रकाश है। सारे कर्मकाण्ड तो उस ज्ञानज्योति तक जाने और उसके आलोक में स्वयं के स्वरूप को देखने-पाने के साधन मात्र हैं। अपने समय के बौद्धिकों को शंकराचार्य यही सूत्र समझाते हैं। अपने शिष्यों साथियों के साथ बद्रीकाश्रम में वैदिक धर्म की नयी किन्तु वास्तविक व्याख्या कर सनातन सत्य को सबके सामने रखते हैं। पुजारियों की सहमति से विष्णु के विग्रह को नारदकुण्ड से निकालकर वेद विधान से मन्दिर में स्थापित करते हैं। अलवानन्दा और केशव गंगा के पवित्र संगम पर स्थित व्यास गुफा में ब्रह्मसूत्र का भाष्य लिखकर भारतीय वाड्मय का पुण्य-अर्चन करते हैं।

आदि शंकराचार्य हिमालय के नर-नारायण पर्वतों के आशीष की धूप-छाँह में ज्ञानसाधना और योगसाधना दोनों साधते हैं। इसी दिव्य क्षेत्र से उन्हें अन्य ग्रन्थों का भाष्य करने की अन्त: प्रेरणा मिलती है। इसी देव भूमि से उन्हें कुमारिल भट्ट, मण्डन मिश्र, और उग्रभैरव से भेंट करने, संवाद करने, शास्त्रार्थ करने और वेदान्त के अद्वैत दर्शन के मूल ज्ञानरूप से आत्मसात करने का आत्मादेश भी प्राप्त होता है। बौद्ध धर्म में दीक्षित होने के बाद भी कुमारिल भट्ट का अखण्ड विश्वास है कि कि 'वेद सत्य हैं। कुमारिल भट्ट अपने समय के भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध वार्तिककार रहे हैं। शबरस्वामी के प्रसिद्ध मीमांसा भाष्य की उन्होंने टीकाएँ लिखी है। ये टीकाएँ वार्तिक कही जाती है। उन्होंने 'श्लोकवार्तिक' और 'तंत्रवार्तिक' दो प्रसिद्ध टीकाएँ लिखी है। हिमालय से विदा लेकर शंकराचार्य तीर्थराज प्रयाग में कुमारिल भट्ट के दर्शनार्थ चल पड़ते है। तीर्थराज प्रयाग में कुमारिल भट्ट गुरु के अपमान करने के अपराध में तुषों (भूसा) के ढेर पर बैठे हैं। ढेर में अग्नि प्रविष्ट करा दी गई है। वे स्वयं को तुषों के साथ दाहकर गुरु अपमान के पाप से मुक्त होना चाहते हैं। शंकराचार्य उन्हें इस दशा में देखकर विह्वल हो जाते हैं। उन्हें रोकते हैं। पर वे रूकते नहीं हैं। कुमारिल भट्ट जैसे परम योगी तपी को देखकर शंकराचार्य प्रणाम करते हैं। शंकराचार्य जैसे दिव्य संन्यासी के अपने महाप्रयाण की वेला में दर्शनकर कुमारिल मट्ट अमित तोष अनुभव करते हैं। माटी की देह भूसे के साथ अग्नि हो जाती है। हन्सा उड़ जाता है।

माहिष्मती में परम शास्त्रज्ञ मण्डन मिश्र अपनी परम विदूषी भार्या भारती के साथ वेदों के कर्मकाण्ड के मत के प्रचार में संलग्न हैं। विषय के आधार पर वेदों के दो भाग हैं। ज्ञानकाण्ड और कर्मकाण्ड। शंकराचार्य आत्मानन्द और विश्वशांति के लिए ज्ञानकाण्ड को तप द्वारा उचित सिद्ध करने वाले आदि आचार्य है। मण्डन मिश्र के वैदूष्य का प्रभाव रहता है कि द्वार पर शुक-सारिका भी संस्कृत में संवाद करते हैं। मण्डन मिश्र जितने गहरे गुणी-धर्मी हैं; उनकी धर्मनिष्ठ पत्नी उतनी कर्म-सिद्ध हैं। शंकराचार्य और मण्डन मिश्र का शास्त्रार्थ प्रारंभ होता है। धर्मात्मा भारती जी निर्णायक की भूमिका में हैं। शंकराचार्य अपना सिद्धांत प्रतिपादित करते हैं 'इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ब्रह्म एक है। वह सत, चित्, आनन्द है। जब ब्रह्म का ज्ञान होता है, तब जीव अपने वास्तविक विशुद्ध स्वरूप को प्राप्त होता है।' मण्डन मिश्र अपना सिद्धान्त रखते है 'वेद का सत्य रूप कर्म में है। वेद का कर्मकाण्ड ही प्रमाण है। जीव की दु:खों से मुक्ति कर्म द्वारा ही होती है।' शास्त्रार्थ में मण्डन मिश्र अपनी अर्द्धांगिनी सहित परास्त होते हैं। शंकराचार्य के शिष्य बन जाते हैं। शंकराचार्य उन्हें संन्यास पंथ में दीक्षित करते हैं। वे ही शंकराचार्य के शिष्य 'सुरेश्वराचार्य' कहलाते हैं।

माहिष्मती से शंकराचार्य दक्षिण की राह लेते हैं। मार्ग में वे अपने शिष्यों पद्मपाद और सुरेश्वराचार्य के साथ वैदिक धर्म का प्रचार करते चले जा रहे हैं। नाशिक में रामचन्द्र और पण्ढरपुर में विठ्ठल की पाद-पूजा कर वे कृष्णा और तुंगभद्रा के पवित्र संगम पर महिमावान श्रीशैल पर्वत पर पहुँचते हैं। यहाँ भगवान मल्लिकार्जुन महादेव शिव विराजित हैं। यह शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह तंत्रसाधना केन्द्र रहता है। यह प्राकृतिक रूप से अपूर्व सौन्दर्यशाली है। श्रीशैल पर भव्य शिव मंदिर की शोभा निहारते मन नहीं भरता है। ज्योति स्वरूप शिव साक्षात् अनुभव में पैठते चले जाते हैं। पुण्य क्षेत्र पाशुपत, वैष्णव, शैव, शाक्त और कापालिको की साधनाओं का केन्द्र रहा है। शंकराचार्य देखते है कि यहाँ कापालिक उग्रभैरव की तंत्रसाधना दूर-दूर प्रभाव छोड़ रही है। कापालिक एक उग्रशैव सम्प्रदाय है। इसके साधक माला, अलंकरण कुण्डल, चूडामणि, भरम, यज्ञोपवीत आदि छह प्रतीक धारण करते हैं। मनुष्यों की हड्डियों की माला पहनते हैं। श्मशान में रहते हैं। वहीं साधना करते है। शंकराचार्य को ऐसे अवैदिक पंथ से जनसामान्य को मुक्त कराना है। कापालिक उग्रभैरव को इस क्षेत्र में शंकराचार्य का आगमन रुचता नहीं है। पहले तो यह छल से शंकराचार्य का सेवक बनकर विश्वास प्राप्त करता है। बाद में रात्रि के समय उन पर प्राण घातक प्रहार कर मार डालना चाहता है। उसकी कुचाल सुरेश्वराचार्य भाँप जाते हैं। वे शंकराचार्य की रक्षा करते हैं। उग्रभैरव का नाश करते हैं। सम्पूर्ण सिद्ध क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार और स्थापना करते हैं। महाकवि कालिदास ऐसी विभूतियों के विषय में कहते हैं- पुण्यवन्तों का मनोरथ कल्पवृक्ष के समान फल देने वाला होता है-

सद्य एव सुकृतां हि पच्यते कल्पवृक्षफल धर्मि कांक्षितम्।

शिष्य हस्तामलक और शिष्य तोटकाचार्य की प्राप्ति के बाद शंकराचार्य अपनी माँ के अंतिम दर्शन के लिए कालड़ी पहुँचते हैं। माँ जैसे बेटे शंकर की प्रतीक्षा ही कर रही है। शंकर के आते ही. उन्हें देखते ही वे अपनी अंतिम यात्रा पर चल देती है। उस यात्रा से उसी रूप में कौन कोई लौटकर नहीं आता है। शंकराचार्य संन्यासी होकर भी अपनी माँ का अंतिम संस्कार करते है। अपनी जन्मभूमि को अंतिम प्रणाम करके दिग्विजय के लिए शिष्यों के साथ चल पड़ते हैं। वे श्रृंगेरीमठ की स्थापना करते हैं। वे वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए सम्पूर्ण भारतवर्ष को अद्वैत दर्शन से आप्लावित करते हैं। वे चारों तीर्थ धामों के निकट चार मठों की स्थापना करते हैं। जगन्नाथपुरी में गोवर्धनमठ, बद्रिकाश्रम के पास ज्योतिर्मठ, द्वारिकापुरी में शारदामठ, रामेश्वरधाम के पास मैसूर में श्रृंगेरीमठ स्थापित करते हैं। ज्योतिर्मठ में तोटकाचार्य, गोवर्धनमठ में पद्मचार्य, श्रृंगेरीमठ में सुरेश्वराचार्य और शारदामठ में हस्तामलकाचार्य को अध्यक्ष रूप में नियुक्त करते हैं। ये पद आज तक शंकराचार्य पीठ के नाम से सम्मानित हैं।

ऊँ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

अद: और इदं दोनों में पूर्ण चिरपूर्ण है। पूर्ण ही नित्य स्वयं प्रकाश सत्ता के रूप में सर्वत्र पूर्ण रूप में विद्यमान है। पूर्ण अद्वय है। अनन्त है। अखण्ड है। इस पूर्ण से जो उत्पन्न होता है, वह भी पूर्ण ही है। नि:सृत स्वरूप पूर्ण में समाहित होकर पूर्ण ही रहता है। ज्ञानसाधना करते हुए वेदवाणी के आलोक में आदिशंकराचार्य अद्वैतवाद के रहस्य को भलीभाँति हृदयंगम करते है। 'यह सृष्टि किसी बाहरी शक्ति से रचित नहीं है। यह उत्पत्ति, स्थिति और लय के क्रम में स्वमेव संचालित होती है। यह एक अनन्त जीवन-क्रम है। यह ही ब्रह्म है 'तत्त्वमसि'। हे श्वेतकेतु। वह तू ही है। तू नर में है। तू नारी में है। तू युवा में है। तू बाल-वृद्ध में है। तू मुझमे है। मैं भी तू ही हूँ। तू चराचर में है। तू सब में है। इसी ब्रह्म सत्य का प्रसार और स्थापना का कार्य पूर्ण कर आदि शंकराचार्य बत्तीस वर्ष की आयु में कैलाश धाम की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। शंकर के स्वरूप शंकराचार्य कैलाश मानसरोवर से अपने शिवधाम की ओर महाप्रयाण कर जाते हैं। वैदिक धर्म अपनी सनातनता में गौरव पाता है। जनकल्याण का सहज पथ आलोकित होता है। आत्मा आनन्दोत्सव मनाती है। मानसरोवर में कमल खिल जाते हैं। हंसा मोती चुगते हैं। सुमेरू के हिम मण्डित शुभ्र शिखर का रवि-रश्मियाँ अभिषेक करती है।

चिदानन्दरूप: शिवोऽह शिवोऽहम् ।
इति शुभम् ।!

लेखक वरिष्ठ निबंधकार, साहित्यकार हैं।
सम्पर्क : आजाद नगर, खण्डवा 450001

आलेख

इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है देवी अहिल्याबाई का जीवन

हरीश दुबे

पुण्य श्लोका अहिल्याबाई होल्कर की जीवन गाथा इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। प्रजा प्रेम ने उन्हें लोक माता की पदवी से अलंकृत किया। ज्ञान विशारद, धर्म परायण, न्याय प्रिय शासिका अहिल्याबाई होल्कर श्रध्दा की असीम पात्र बनकर देवी कहलाई मराठी कवि मोरोपंत ने लिखा है, हे। देवी आप तीनों लोको में धन्य हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व की स्वामिनी देवी राज दरबार में जहाँ सख्त शासिका थी, वहीं संवेदनामयी भारतीय नारी और कला साहित्य की आराधिका थी। विद्वानों और वीरों को उनके राज्य में राज्याश्रय प्राप्त था। कवि अनंत फंदी जो मूल रूप से तमाशगीर थे, देवी के दिव्य वचनों से प्रेरित होकर ईश्वर के गुणानुवाद कर धन्य हो गए। देवी की प्रशंसा इतिहासकार राय बहादुर वैध, प्रभाकर शाहीन, संस्कृत विद्वान् खुशी राम, कविवर्य मोरोपंत, आंग्ल विदुषी देवी जान्ता देवी, सर जॉन मालकम आदि देशी- विदेशी हस्तियों ने मुक्त कंठ से की थी। चारों धाम तीर्थ सहित अनेक दर्शनीय पुण्य स्थलों पर देवी ने शिवालयों, धर्मशालाओं, जलाशयों, घाटों व अन्नक्षेत्रों का निर्माण करवाकर होल्कर राज्य की कीर्ति कोष को अक्षुण्ण बनाया। महारानी के स्वर्णिम शासन काल में मूक पशुओं के अधिकार भी सुरक्षित थे। गाँव-कस्बों के समीप चरनोई की जमीन अनिवार्य रूप से छोड़ी जाती थी।

पुण्यमयी देवी की श्रध्दा भगवान आशुतोष महादेव अखिलेश्वर एवं पुण्य सलिला माँ नर्मदा के प्रति अगाध रूप से थी। राजपाठ का कार्य मातु श्री भगवान शंकर को साक्षी मानकर संपादित करती थीं। नर्मदा के पावन तट उनके शासन काल में निर्मित सुरम्य घाट भव्य मंदिर दिव्य शिवालयों मंदिर छत्रियों पर उत्कीर्ण प्रस्तर शिल्प उनकी सहज धार्मिक भावना तथा कला मर्मज्ञता को प्रदर्शित करते हैं। सनातन संस्कृति की अनंत उपासक होते हुए भी 'मातु श्री' सभी धर्मी के प्रति सहिष्णु एवं उदार थीं। सभी धर्मालंबियो हृदय से उदारमना देवी की कार्यशैली के कायल थे। होल्कर वंश की राजधानी इंदौर में उनके द्वारा ऐतिहासिक निमार्ण करवाया गया। इंदौर शहर भी देवी आहिल्या की नगरी कहलाता है। महेश्वर को देवी कि देन अनुपम है। उन्होंने दूर दराज मैसूर, हैदराबाद, नागपुर आदि स्थानों से बुनकरों को महेश्वर लाकर बसाया। प्रसिद्ध महेश्वरी साड़ी उद्योग की बुनियाद भी उन्होंने रखी। शांत चित्त व प्रसन्नमना देवी किसी राजद्रोही के लिए बड़ी कठोर थी। उनके राज्य में हैदराबाद से मुस्लिम टीपू सुल्तान की रियासत से ब्राह्मण व अन्य विद्वान महेश्वर आकर बसे थे। उनके शौर्य और साहस के चर्चे सुन-सुनकर त्तकालिन रियासतदार थर्राते थे। सत्ता के समकालीन शिखर देवी श्री अहिल्या जी को सम्मान से शाही मसनद प्रदान करते थे। अमन, चैन, सौहार्द का महकता हुआ पुष्प गुच्छ था देवी श्री का होलकर वंशी राज्य । महाराष्ट्र के छोटे से गाँव चौढी उस की सुन्दर-सुशील नन्हीं सी बालिका कालान्तर उस में विशाल होल्कर साम्राज्य की शासिका बनी, जो न्याय के लिए भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध है। निष्ठुर नियति के निर्मम प्रहार उन्होंने अपने प्रिय परिजनों को एक-एक कर विदा कर सहन किए थे। ईश्वरी प्रेरणा ने उन्हें अद्भुत आत्मबल प्रदान किया। फलत: उनके हौसलों ने संघर्षो से जुझते हुए सत्ता के माध्यम से सत्यं शिवम् सुंदरम की स्थापना कर मानवीय आदर्शों का स्वर्णिम इतिहास रचा। होलकर वंश की कीर्ति पताका के रूप में प्रात: स्मरणीया देवी श्री अहिल्या बाई होल्कर का नाम सदैव अमर रहेगा।

उनके द्वारा परोकारी कार्यों के निर्माणों की श्रृंखला उनकी यश कीर्ति के गीत सुनाती है। न्याय प्रिय: प्रजा वत्सला देवी श्री ने सदैव अपने दरबार में समता और ममता की दीप शिखा को प्रकाशमान रखा। हर जाति हर वर्ग के लिए यथोचित सुविधाएँ, उनकी समस्याओं का हल प्राथमिकता के आधार पर होता था। पुजारी-खटपटियों को भी खेती-किसानी के लिए मंदिर पेटे जमीने दी जाती थी। वहीं कलाकारों को तीज-त्योहार पर ईनामो-इकराम दिए जाते थे। उनके प्रेरक वचन थे-

ईश्वर ने मुझ पर जो उत्तर दायित्व रखा है। वह मुझे निभाना है। मेरा काम पजा को सुखी रखना है। मैं अपने प्रत्येक काम के लिए जिम्मेदार है। सामर्थ्य और सत्ता के बल पर में यहाँ जो कुछ भी कर रही हूँ। उसका ईश्वर के यहाँ मुझे जवाब देना होगा। मेरा यहाँ कुछ भी नहीं है, जिसका, है उसी को भेजती हूँ। जो कुछ लेती हूँ. वह मुझ पर ऋण है, जाने कैसे चुका पाऊँगी।' यह अमृत वचन महेश्वर स्थित राजवाड़ा जहाँ देवी श्री के पूजा घर में सोने का झूला लगा है, उस परिसर में लिखे है जिन्हें पढ़कर हृदय भावों से भर जाता है। और नेत्र सजल हो जाते हैं। इतनी सादगी, सरलता और नैतिक बल उस होल्कर वंश की ऐश्वर्य मयी सत्ता की उस स्वामिनी शासिका देवी श्री अहिल्याबाई होल्कर के रहे। जीवन में राजसी ठाठ-बाट मगर यह सात्त्विक जीवन शैली, हमें चिंतन करने पर विवश कर देती है। देवी श्री की प्रजा वत्सलता ने उन्हें हृदय सिंहासन पर महारानी देवी और लोक भाता की पदवी से आसीन किया। अध्यात्म की आभा से आभासित मातुश्री का जीवन प्रेरणा का ऐसा प्रकाश पुज है, जो युगों- युगों तक मानव समाज को सद्मार्ग दिखाता रहेगा।

लोकमाता अहिल्याबाई ने भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्वों ईश्वर भक्ति, समता व स्वतंत्रता को मानवीय जीवन में परिभाषित कर यह सिद्ध किया कि देश में शांति सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए सैनिक शक्ति या आतंकवाद नहीं मानव जाति को जीने के लिए मौलिक अधिकारों को स्वीकार करने से सुशासन स्थापित होता है।

जब कोई धर्म जाति सम्प्रदाय को कुचलने की भावना जागृत कर अपने वर्चस्व का अधिकार बताने का प्रयत्न करता है, तो उस समय देश में अराजकता व अशांति हो जाती है। देवी श्री ने अपनी राजनीतिक कार्य कुशलता से प्रजा को पुत्र के समान स्नेह देकर भारत की तत्कालिन युद्ध जन्य परिस्थितियों के अशांत वातावरण में शांति स्थापित कर भारतीय संस्कृति की अस्मिता को संजोये रखने का अपनी क्षमता से पूर्ण रूपेण प्रयास किया।

अपने उज्जवल चरित्र की मातोश्री ने यथार्थ रीति से देश ही अपितु विश्व के सम्मुख अपने कुल-समाज और समस्त मानव जाति को अपनी प्रगाढ़ भक्ति, सद्कार्य और अपनी पवित्रता से स्वर्णिम आभा प्रदान की। उन्होंने समर्थ रामदास स्वामी की इन पंक्तियों से जीवन को पवित्र कर सार्थक किया । यथा- जिसने परमार्थ ज्ञान प्राप्त किया, उसने अपना जन्म यशस्वी किया। सपनों का कर्तव्य यही है कि परमार्थ करते हुए जीवन में यश अर्जित करके अपने पूर्वजों का उद्धार हरि भक्ति से करें।

संत समर्थ रामदास स्वामी के इन्हीं वचनों को देवी श्री ने जीवन में अपना कर प्रभु भक्ति द्वारा अपना तन-मन-धन राष्ट्र को समर्पित किया और परमार्थ में ही सदैव क्रियाशील रहीं।

प्रत्येक मानव के चरित्र के तीन बल होते हैं- शरीर बल, बुद्धि बल और आत्मबल इन तीनों शक्तियों को अहिल्या देवी ने संपादित कर भारतीय संस्कृति का रक्षण किया। उन्होंने अपने बुद्धिबल से दरबार में नियमित रूप से बैठकर प्रतिदिन के झगड़े-विवाद निपटाये और आत्मबल से अतुल्य यथ-कीर्ति अर्जित की। यह उनके अद्भुत साहस का ही प्रमाण है कि मानव जाति का अभ्युदय देवी श्री के कार्यकाल के पहले तक सैन्य शक्ति और युद्ध आधारित होता रहा जो अस्थाई कहा जाएगा । मगर यह उनके अद्भुत साहस का ही प्रमाण है, कि अपनी प्रकृति जन्म वीरता के साथ अगाध ईश्वर आस्था एवं परोपकारी कार्यों को उन्होंने जीवन का लक्ष्य बनाकर अशांत समाज में चिर स्थायी शांति का मार्ग प्रशस्त किया। इसी मार्ग से पुण्य श्लोक माई ने निष्ठा लगन और परिश्रमपूर्ण कार्य संपूर्ण देश में अपने वीरों- विद्वानों और परिश्रमी कार्यभारियों द्वारा निर्माणों की अद्भूत और अनवरत श्रृंखलाएं रचीं।

होल्कर वंश की कीर्ति पताका देवी अहिल्याबाई होल्कर का यशस्वी जीवन पुण्य सलिला माँ रेवा की तरह पवित्र गतिशील, निर्मल पावन सरल एवं तरल रहा। वहीं वे अपनी तेजस्विता लिए सूर्य की तरह प्रकाशित रही। उन्होंने सिद्ध किया कि समाज में मनुष्य का स्थान जन्म से नहीं किन्तु उच्च चरित्र से होता है। उन्होंने अपने राज्य की सम्पत्ति का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए नहीं किया। गरीबों की दीन दुखियों की तथा समाज के उपेक्षितों की सेवा करने में ही उन्होंने ईश्वर का स्वरूप देखा। वैधानिक परंपरानुसार प्राप्त अपनी खासगी सम्पत्ति के सोलह करोड रूपयों को उन्होंने अपने राज्य में ही नहीं, वरन् देश के चार तीर्थ स्थलों, सप्तपुरियों, बारह ज्योर्तिलिगों जनोपयोगी कुंए- बावड़ियों, देवालयों-शिवालयों के जीर्णोद्धार के सद्कार्य, तथा घाट, तालाब, सडके व छायादार वृक्षों के रोपण पर्यावरण के संतुलन में खर्च किए। इस समर्पण के पीछे उनका दिव्य भाव था- यह सब मेरा नहीं है, तेरा तुझको ही अर्पित करती हूँ।

उनके प्रमाणिक चित्रों पर उनके दांए हाथ की तर्जनी उंगली पावन शिवलिंग पर चढ़े हुए बिल्वपत्र पर दिखाई देती है। इस चित्र को देखकर संस्कृति के रक्षक के रूप में उन्हें पहचाना जाता है। उनकी इस साधारण मगर दिव्य छवि के पीछे समूची भारतीय सनातन संस्कृति का गौरव छिपा हुआ है। सत्ता और सामर्थ्य के बल पर उन्होंने सदा सर्वदा मानव समाज के कल्याण की कल्पना की और देश भर में दुर्लभ स्थानों में कराये गए परोपकारी कार्यों से जीव मात्र का रक्षण-व संरक्षण किया।

अपनी अगाध श्रद्धा और अनुपम ईश्वरी भक्ति से उन्होंने राज कार्य में जनहित कार्यों की सुदीर्घ श्रृंखला रची। समूची मानव जाति के लिए उनके मन में सेवा का पवित्र भाव सदैव रहता था। मानव के अलावा प्राणी मात्र जिनमें पशु-पक्षी जलचर नभचर सभी प्राणी सम्मिलित है। सभी के लिए अन्न, जल की व्यवस्था सुनिश्चित की। गोमाता व गोवंश के लिए उनके राज्य में चरनोई के लिए जमीने सुरक्षित रहती थी। वहीं पक्षियों से लिए खेतों में अनाज की फसलें खुली छोडी जाती थी ।

संभवतया देवी श्री ही भारतवर्ष की ऐसी पहली महिला शासिका थीं, जिन्होंने राजनीति के साथ धर्म का समन्वय किया। और यह सिद्ध कर दिया कि किस प्रकार धर्म की सहायता से राजनीति भी श्रेयस्कर व कल्याणकारी हो सकती है। इसी महान उद्देश्य को लेकर भगवान त्रिनेत्र धारी सदा सदाशिव देवादिदेव महादेव की अनन्य भक्ति से जीवन कृतार्थ किया।

दिवाकर की तरह चमचमाता होलकर राज्य शिव को अर्पित रहा। उनके राज्य में जारी हर परिपत्र पर और हर आदेश पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा होता था हुजूर श्री शंकर आर्डर शिवलिंग को हाथों में धारण किए हुए चित्र में बिल्वपत्र की तीन पत्तियों यह दर्शाती है कि प्रत्येक मनुष्य को अपना कर्तव्य तीन तापों के नाश करने वाले भगवान अखिलेश्वर: अभ्यंकर महादेव, श्री शंकर जी को साक्षी रखकर करना चाहिए ।

लोकमाता के सात्त्विक, सौम्य सदैव प्रेरक चित्रों को देखकर हमें अपने जीवन को ऊँचा उठाने की प्रेरणा मिलती है।

हम भारतियों के लिए मातुश्री का सादगी पूर्ण चित्र संस्कृति के रक्षक के रूप में दिखायी देता है। चित्र को देखकर हमे अपनी गौरवपूर्ण संस्कृति का भान होता है।

ईश्वर को साक्षी रखकर अपना कार्य करना ही धर्म का मुख्य लक्षण है। देवी श्री ने इसी आदर्श को सदैव अपने सम्मुख रखा। पति, पुत्र, सास, ससुर, कन्या, दामाद, प्रपौत्र सब बारी-बारी विदा हो गए और देवी

माँ ने यह बिछोह का दारुण दु:ख अकेले ढोया । कुल 23 मृत्यु का तांडव माताजी ने अपने सत्तर वर्षीय जीवन में देखा ।

इतने पर भी वे इन दारुण दु:खों से विचलित नहीं हुई । कवि की संवेदनशील लेखनी ने इसका मार्मिक चित्रण किया है।

पथ पर कितने काँटे आये पर रानी ने कदम बढ़ाये
ऐसा कठिन वक्त भी आया
सर से उठा पति का साया
पर रानी ने धीरज धरकर
राजपाठ का काम चलाया
संकट के बादल थे छाये-पर रानी ने कदम बढ़ाये
मिटी नहीं थी उसकी दुख की छाया
पति चल दिए विधि की माया
दु:ख की अग्नि में तप-तपकर
पीली पड़ गई कंचन काया
आँखों ने अश्रु बरसाये पर रानी ने कदम बढ़ाये
ममता की सुंदर फुलवारी
बेटी मुक्ता बाई प्यारी
माँ के सूने घर को तजकर
उसने भी कर ली तैयारी
इतने सदमें कौन उठाये पर रानी ने कदम बढ़ायें

महापुरुष और महान आत्माएँ वे ही होती हैं जो मानवीय कल्याण के लिए पृथ्वी पर जन्म लेती है। और करुणा से द्रवीभूत हो अपने निजी दुख वेदना को भुलाकर सर्वहारा के भले का सोचती है।

देवी अहिल्या जी के जीवन का नारी शक्ति को संदेश है तुम अबला नहीं, सबला हो । सनातन संस्कृति की शुभ सुरभि हो।

देवीश्री ने अपने त्याग-तपस्या और तेज की दिव्य प्रभा से भारतीय इतिहास एवं महान संस्कृति को अपने गौरव के आलोक से आलोकित किया । वे महान शिवोपासक थीं। संवेदनशील शासिका और धर्म परायण महारानी थी। ऐसी गुणमयी - शीलमयी और शिवमयी भारतीय सन्नारी के बहुआयामी व्यक्तित्व पर कवि की लेखनी कहती है-

लोग मंगल गीत उनके गा रहे
उन्हीं के दीपक जलाये जा रहे
पुण्य की साकार प्रतिमा वे बनी
हम सभी आशीष उनसे पा रहे
ज्ञान गौरव से भरा भंडार है।
माँ अहिल्या देवी है, अवतार है ।।

राजकाज में निपुण देवी श्री की कार्य क्षमता अद्भुत थी। उनकी दूरदर्शिता का कहीं कोई सानी नहीं था। समयोचित व्यवहार उनकी प्रखर मेधा और अद्भुत प्रतिभा के दिव्य प्रकाश के प्रसंगों से उनका स्वर्णिम शासन काल युगों युगों से मानव समाज का मार्ग दर्शन कर रहा है।

पुराणों में माहिष्मती के नाम से विख्यात महेश्वर आज अहिल्या नगरी के नाम से विश्व में सुविख्यात है।

विन्ध्य- सतपुड़ा के मध्य अमृतमयी पुण्यसलिला माँ नर्मदा जी की का कल-कल पीयूष प्रवाह महेश्वर के सौभाग्य का सूचक है।

स्कन्ध पुराण के अनुसार महादेव शिव-देवी पार्वती और शक्ति रूपा माँ नर्मदा जी का वास यहाँ अनादि काल से माना गया है। शिव की पंच पुरियों में यह एक महिमामय पुरी है। माहिष्मती की पुण्यधरा देश की एक सौ आठ दिव्य शक्ति पीठों में सम्मिलित है। इक्यावन सिद्ध के उल्लेख में महेश्वर का नाम नभ के तारक की तरह ज्वाज्वल्यमान है। ऋषि मुनियों की तपस्थली एवं अवतारों की लीला भूमि इस पृथ्वी पर अपनी विशिष्ट आभा बिखेरने वाली नगरी है। महर्षि वेद व्यास ने पुराणों में इसे गुप्तकाशी के नाम से संबोधित किया। यहाँ की माटी में अनेक यज्ञ हुए और यहाँ अग्नि देव का वास है। जिस लंकापति रावण ने वरुण, कुबेर व यम को भी जीत लिया था उसे कार्तिवीर्य राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुन ने माहिष्मति की वीर भूमि में पराजित कर 6 माह बंदी बनाकर रखा।

विद्वान विप्र पं. मंडन मिश्र की इसी धरा पर पं. मिश्र जी का आद्य गुरु शंकराचार्य शास्त्रार्थ हुआ था। ऐसी ऐतिहासिक पुराण प्रसिद्ध माहिष्मति (महेश्वर) को श्रध्यावान महारानी देवी श्री अहिल्याबाई बाई होल्कर ने अपनी राजधानी बनाया। और इस पवित्र भूमि को अपने परोपकारी कार्यों की कर्मभूमि बनाकर उसकी सुरभि को चंदनी बनाया । विद्वान विदुषी वीरगंना महारानी ने अपने ऐश्वर्य पूर्ण साम्राज्य में कई अद्भूत निर्माण कार्य करवयें महेश्वर अपनी राजधानी में उन्होंने चारो धाम के पुण्य मंदिरों की विधि विधान से निर्माण कर स्थापना की। महेश्वर सहित सप्तपुरियों में ज्योर्तिलिंगों के प्रत्ति रूप में कलात्मक शिवालय और देवालयों का निर्माण और जीर्णोद्धार करवाया। पार्थिव पूजा के पौराणिक महत्व को जानते हुए लिंगावेन पूजागृह की स्थापना की। जो आज भी जारी है। देवी जी के शासन काल में 88 ब्राह्मणों संचालित लिंगार्चन पूजा वर्तमान में 11 ब्राहम्णों द्वारा की जाती है। अहिल्येश्वर मंदिर को होल्कर वंश का अमर स्मारक कहा जाता है। म.प्र. शासन द्वारा घोषित पवित्र नगरी महेश्वर की सबसे अनूठी कृति है, माँ नर्मदा के तट पर बने सुरम्य घाट एवं अहिल्या घाट पर बना मनोरम भव्य द्वार जो देवी श्री के ऐश्वर्य शाली वैभवपूर्ण राज्य की कहानी कहता है। प्राचीन समय के उत्कीर्ण शिल्प की यहाँ सुंदर कृतियाँ हैं। महेश्वर के घाट, मंदिर, छत्रियों; तिवारियों, शिवालयों देवालयों में प्रस्तर पर उत्कीर्ण शिल्प देखकर आज भी आधुनिक शिक्षा प्राप्त अभियंता रूपाकार दांतों तले ऊंगलियाँ दबाते हैं। महेश्वर में पुष्प नर्मदा को पावन तर - निर्मित घाटों की अपनी सबकी अलग- अलग कहानियाँ हैं। आस्थावान देवी श्री ने पुराणों में उल्लेखित इन प्रसंगों पर घाटों का निर्माण कर तदानुसार उनका नामकरण किया। यथा मंगल घाट (मगर घाट) मातंगेश्वर घाट, गणपति, घाट, बड़घाट, पेशवा घाट आदि।

सम्पर्क : म. गांधी मार्ग, भारतीय स्टेट बैंक के पास, महेश्वर।
मोबाइल 9993126478

■

आलेख

लेखिका सावित्री परमार का यह विशेष आलेख 6 फरवरी 1983 में 'धर्मयुग' पत्रिका में प्रकाशित हुआ है इसके महत्वपूर्ण अंश इस विशेषांक में साभार सहित प्रकाशित ...

अहिल्याबाई का महेश्वर, जहाँ शिवजी राज करते हैं

- सावित्री परमार

जल में अहिल्या-घाट प्रतिबिंबित हो रहे हैं। मंदिर, घाट, सीढ़ियां, बुर्जियां और पेड़-पौधों की छायाएं लहरों में हिलोर-हिलोर कर इतिहास के एक पूरे अध्याय को हवा की चिरकनों के साथ जैसे खोल-खोल कर सामने साकार कर रही हैं। सहस्त्रधारा का सौम्य-चंचल रूप निगाहें बांधे डाल रहा है। कतार-कतार दुग्ध-चवल धाराएं अविरल बही जारही है। जाने किस दिशा में ? ऊंचाई से जल गिर रहा है। जहां पानी गिरता है, वहां इतना तीव्र बेग है श्वेत-फेनिल का कि चारों और जैसे धुएं के बादल छा रहे हैं। बड़ा घनघोर शोर ..... धरती को छूने का ऐसा असीम उल्लास! इतने प्रगाढ़ आलिंगन? मिलन का ऐसा उल्लसित उच्छ्वास।

नर्मदा को बांहों में भरने की कोशिश

इसके विषय में एक प्राचीन किंवदंती सुनने कों मिली है। कहते हैं कि एक बार यहां नर्मदा के तट पर है ह्यवंशी सहस्त्रार्जुन अपनी प्राणप्रिया रानियों के साथ आमोद-प्रमोद करता हुआ विचरण कर रहा था। जब वह जल-क्रीड़ा करने के लिए नर्मदा में उतरा, किसी रानी ने मुग्ध अनुरोध किया कि वह अपनी विशाल भुजाओं में नर्मदा को कस कर बांध ले। सुन कर उसका पौरुष अहं से जाग उठा और जैसे ही कार्तवीर्य अर्जुन ने नर्मदा की गौरवर्णी रूपराशि को अपनी बांहों में भरना चाहा कि वह चंचल होकर उसकी भुजाओं से फिसल कर सहस्त्र धाराओं में खिलखिला उठी। नर्मदा के ऐस बिखरे, स्वतंत्र और विजयी रूप को देखकर अर्जुन अचंभित रह गया। अपनी रानियों के सामने नर्मदा से पराजित होकर उसका दर्प-तेज फीका हो कर कितना लज्जित हुआ होगा!

मुझे इसी क्रम में जानकारी मिली है कि इस पुरातन माहिष्मती का गौरव ही यह रहा है कि यहां जिस पुरुष ने भी अपने अहंकार को प्रदर्शित करा चाहा, वही नारी से पराजित हुआ। कई छोटी-बड़ी अंतर्कथाएं सुनायी गयी हैं - वेद, उपनिषदों, पुराण-शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य का वाद-विवाद जब परम कर्मकांडी, उद्भट विद्वान पंडित मंडन मिश्र के साथ इसी नगरी में हुआ, तब मंडन मिश्र की तेजस्वी पत्नी शारदा द्वारा कामशास्त्र संबंधी पेचीदा प्रश्नों के धुआंधार प्रहारों ने आचार्य शंकर को धराशायी कर दिया था।

इसी नगरी पर नारी के शासन को दुर्बल मान कर पराक्रमी राघोवा दादा इसे अपने झंडे के नीचे लेने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन रानी अहिल्याबाई होल्कर का सशक्त उत्तर पाकर उसे उल्टे पांव भागना पड़ा। ऐसी ही यह नारी-विजय से कीर्तिवान महेश्वर नगरी। बड़ी कठिनाई से अपनी आंखें सहस्त्रधरा से मोड़कर महल को देखने के लिए अकेली लौटती हूं, क्योंकि जिस नर्मदा को कार्तवीर्य अर्जुन अपने मदमत्त आलिंगन में बांध नहीं पाया था।

सोने के शिवलिंग की चोरी

अहिल्याबाई रानी का महल देखने के लिए मैं सामने के द्वार से अपनी यात्रा प्रारंभ करती हूं। चारों तरफ बरामदे और बीच में बड़ा सा चौक (आंगन) है। आंगन में कलात्मक तुलसी चौरा बना हुआ है। बरामदे पार करते हुए उसी स्थान पर आती हूं, जो छोटी सी कोठरी-नुमा एक जगह है- जहां अनवरत पहरा रहता है। भाई सूरज जी को फोटो लेने से साफ मना कर दिया गया है। मुझे बाहर से देखने भी इजाजत दे दी गई है। लगभग चार-पांच सेंटीमीटर मोटी सलाखें पास-पास जुड़ी हुई है उस प्रकोष्ठ द्वार पर पता लगा यह एक निजी पूजा का मंदिर था। इसमें ठोस सोने का शिवलिंग है। पहरा क्यों है? क्योंकि यह एक बार चोरी हो गया था, इसे फिर से बरामद किया गया तभी से सख्त पहरा रहता है। बाहर से देख लेने पर कोई आपत्ति नहीं है। स्वर्ण का ठोस शिवलिंग नीम अंधेरे में पूरी पावनता के साथ उत्कीर्ण हो रहा है। महल अपनी रानी की तरह बहुत सादा है लेकिन कलात्मक है। निर्माण कला श्रेष्ठ है रानी अहिल्याबाई की छतरी बहुत सुंदर है इस महल में आने का बस एक ही दरवाजा है। बाहर बरामदे में सादी मगर कलात्मक गाय, घोड़ा और महावत सहित हाथी की मूर्तियां हैं। जो धार्मिक उदारता, प्रजा के बीच घूम-घूम कर सतर्कता और प्रजावत्सलता तथा शासन की रक्षा के लिए क्रम की प्रतीक लगती है।

किले के भीतर हम रानी के पुराने गृह-कक्ष में प्रवेश करते हैं। इस कक्ष को उनकी यादों में यथासंभव सज्जित रखा गया है। रानी का यह वह कक्ष था जहां बैठकर वह शासन सूत्र संचालित करती थीं। यहीं पर गद्दी पर बिराजमान होकर न्याय करती थी। सादा स्तंभ कटावदार हल्की नक्काशी के टोढ़े चौड़ी शहतीर से टिकी छत पास-पास सलाखों से चुनी रेलिंग ऊपर भी मोटी सलाखों की बदिशें चारों और बरामदे कमरे-सभी स्वच्छ, धुले-धुले से पवित्र पूरे कक्ष में धवलता छायी हुई है। रानी की प्रत्येक वस्तु करीने से सुरक्षित रखी है। नीचे एक मोटा गद्दा ऊपर श्वेत झकझक चादर फिर रेशमी मखमली कलापूर्ण वस्त्र इसके ऊपर फिर एक गद्दी आसपास और मध्य में गोल गाव-तकिये (मसनदे) बीच वाली मसनद के सहारे रानी का चित्र टिका हुआ है पास ही खूबसूरत एक बड़ी पेटी-पास में शिव जी का बड़ा चित्र इसी चित्र के सहारे सिंहासन, जिस पर श्वेत वस्त्र धारण किये हुए हैं रानी का भव्य चित्र है। चेहरे पर वात्सल्य और मातृ शक्ति की विजय का मुलाजुला भाव सजीव हो रहा है। पास में एक आदमकद राजसी पोशाक में भव्य मूर्ति है सिर पर होल्करी पगड़ी चूड़ीदार पायजामा कारचोबी की अचकन और हाथ में स्वर्ण छड़ी आसपास फ्रेम में जड़ें अन्य चित्र भी है जो रानी से संबंधित है। छत के चौड़े शहतीर पर दोहरी झालरें है (श्वेत कत्थाई) झूल रही है। सादे शीशे के अंडाकार फानूस लटक रहे हैं।

मैं अपलक उस रानी के दीप्त नेत्रों और मातृत्व की गरिमा से ओतप्रोत चेहरे की ओर देखती रह जाती हूं, अपने पूरे शासन काल में शासकीय स्तर पर जो धर्म, संस्कृति, साहित्य-संगीत, कला और प्रजा की भलाई के लिए उत्सर्ग रही। यह सामने वही इतिहास की अमर-कथा है। प्रजा के अधिकारों, अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रही। वैवध्य जीवन को श्वेत वस्त्रों में शुचितापूर्वक लपेट लिया और आंतरिक, बाह्य संघर्षों-चिंताओं से जूझने का दृढ़ आत्मबल ओढ़े रही। जिजीविषा का कठोर दृढ़ निश्चय-क्रम-क्रम से आये हृदय विदारक कष्टों का बूंद-बूंद हलाहल पी कर अपने कार्यों से इसी जहर को चंदन-गंध बना दिया। शासन का सामंती गर्व-नारी की भावुकता - पीड़ा का कोई भी क्षण इस पुण्यशीला-वीर रानी को अपने मार्गसे डिगा नहीं सका - न इनके ऊपर हावी हुआ। गंगाजल-सा निर्मल जिनका चरित्र रहा। प्रजा ने जिसे 'देवी जी' संबोधन दिया, शत्रुपक्ष जिनका आत्मविश्वास, स्वाभिमान, प्रजा-वत्सलता और युद्ध के सन्नद्ध साहस देख कर ईष्या से जलता रहा, भय-भीत होता रहा। रानी ने शासन की संपत्ति को, सारे वैभव की, राजगद्दी को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति न मान करदेव अर्पित कर दिया - शिव को भेंट करके स्वयं एक सेविका के रूप में प्रभु आज्ञा से कार्य करती रही-मृत्यु तक मानवता से और शासन की सुरक्षा से मुक्त नहीं हुई-सारा जीवन कदम-कदम पर चुनौतियों से पुकारता-ललकारता मिला और उनका मन घोड़े पर कसी जीन-सा दृढ़ रहा- तभी तो इस कक्ष में, चित्र में और एक-एक वस्तु में व्यतीत हुआ अतीत यशोकीर्ति का स्फुरण बना हुआ है।

अमरवट, जो अब तक नहीं बदला

द्वारों पर दोनों और द्वारपालों की जीवंत प्रतिमाएं है कहीं-कहीं से आकृतियां झरने लगी हैं। फिर भी ऐसा लगता है कि ये अभी बोल उठेंगी। अहिल्याबाई के कक्ष की गद्दी-सिंहासन के बाद उनका पूजा-गृह है, जहां देवताओं की मूर्तियां सज्जित हैं। शिव-शिवलिंग फूलों से गमक रहे है। इसी पूजा घर के सामने एक वटवृक्ष है लंबाई-चौड़ाई और घेराव में कुछ अलग-थलग-सा मुझे बताया गया है कि इस वृक्ष का नाम 'अमरवट' है। यह माता देवी अहिल्याबाई की बाल्यावस्था से ही है। सदैव उनसे प्यार-दुलार पाता रहा। वे इसे संवारती रहीं। जल चढ़ाती रहीं-तब से ले कर आज तक यह इतना ही आकार लिये हुए है-न इसमें इंच भर भी बढ़ोतरी होती है, न घटता है। हर मौसम में एक ही रूप-इसी से अमरवट।

फर्नीचर के नाम पर राजशाही युग जैसी कुर्सियां हैं। तख्ते, पलंग और चौकियां। इनकी हालत भी जर्जर हो रही है। फिर हम आते हैं अहिल्याबाई के बहुत सुंदर मंदिर में। ढ़ेरो घंटे लटके हुए हैं। दूसरी ओर अहिल्याबाई घाट है। हनुमान जी की विशाल मूर्ति है। यह मंदिर रानी की स्मृति में बनाया गया है। इसके कलश, ध्वजा-तोरण और सभा-मंडप बड़े कलात्मक हैं। जमीन से बहुत ऊंची सपील पर निर्मित किया गया है। सामने बह रही नर्मदा। मंदिर का कलेवर मदिर-मदिर लहरों के साथ आंख मिचौली कर रहा है। अहिल्या घाट और मंदिर नर्मदा में बिंबित हो कर एक जादुई परिवेश उपस्थित कर रहे हैं। सूर्य की किरणों में मंदिर के उत्कृष्ट कटाव-गुबंद और कलशों की घुमावदार बनावट चमचमा रही है। अपूर्व वास्तुकला का नमूना है यह मंदिर।

शिव के चरणों में अर्पित राज

धर्माचरण करने वाली अहिल्याबाई होल्कर के कारण ही यह पौराणिक नगरी माहिष्मती इतिहास की अमर कीर्ति बनी-केवल प्रजा के लिए, कर्म-पालन के लिए रानी ने जीवन को कठोर परीक्षाओं के बीच गुजारा राजलक्ष्मी को बेल-पत्र की तरह शिवजी पर चढ़ा कर समर्पित कर दिया। दीन-दुखियों की सेना के लिए।

राज्य है कहां ?

उधर अकेली रानी को महेश्वर की गाद्दी पर देख कर आसपास के राजा लोग सिर उठाने लगे। एक स्त्री शासन करे प्रजा-वत्सता का सेहरा पहने, यह कैसे बर्दाश्त हो सकता था? मंत्रणाएं-षड्यंत्र प्रारंभ हो गये कि रानी अपनी पुत्री को उत्तराधिकारी नहीं बना सकती, और यदि वे ऐसा करने का साहस करेगी तो इसे हम धर्म, संस्कार के विरुद्ध करार देकर महेश्वर की गद्दी को पेशवा राज्य में मिला लेंगे बस, फिर क्या था! तुरंत गंगाधर चंद्रचूड़ की ओर से एक फरमान तैयार किया गया। रानी अहिल्याबाई सुनो अकेले तुमसे इतना बड़ा शासन नहीं चलेगा। वैसे भी हम नहीं चाहते कि तुम आगे भी एक नारी को अर्थात अपनी बेटी को उत्तराधिकारी बनाओ। यह आज्ञा-आदेश है। इसे अपने लिए बिना युद्ध के एक सुअवसर समझो और अपनी शासन सत्ता पेशवा राज्य में शामिल कर दो रानी का मन फिर चुनौती मातृ-सत्ता के अपमान और पड़ोसी राज्यों के कलुषित षड़यंत्रों से दु:खी हो उठे ऊपर से वे उसी दृढ़ता के साथ अडिग बनी अपना कार्य करती रही। स्वयं घोड़े पर बैठकर कई दौरे करती रहीं। सीमाएं मजबूत करायी गयी। नर्मदा की ओर घाट, पुल और किले की प्राचीर और सुदृढ़ कराई। दुश्मन कब क्या कदम उठा ले? सजग रहना चाहिए यह विचार उन्हें एक पल भी चिंताओं से मुक्त नही कर पाता था। श्वसुर के युग के अत्यधिक विश्वसनीय, पराक्रमी, युद्ध नीति में कुशल कई मंत्री, सेनापति और यौद्धा थे इनमें तुको जी और महादीजी रानी के अधिक निकट के सलाहकर थे तभी फिर सरदर्द बना दक्षिणी पेशवाओं में से राघोवा दादा उसकी लोलुप दृष्टि महेश्वर पर वर्षों से थी। वह बहुत महात्वकांक्षी, ईर्ष्यालु और राज्य विस्तार चाहने वाला लालची व्यक्ति था। जब से होल्कर गद्दी पर विधवा रानी का शासन-सूत्र विकास, प्रगति और प्रसिद्धि के शिखर छूने लगा था उसकी पद लोलुपता और बड़ गई थी। वह 50 हजार सैनिकों को लेकर चालाक महेश्वर को हड़पने के लिए नर्मदा के किनारे डेरे डाल कर बैठ गया। पहले उसने सूचना दी कि अहिल्याबाई के पति की मृत्यु पर मैं नहीं आ सका था। अब पुत्र की भी मृत्यु हो चुकी है मैं संवेदना प्रकट करने के लिए आया हूं। सुनकर रानी के चेहरे पर व्यंग्य की हंसी फैल गयी कि शायद पेशवाओं के यहां यह दस्तूर होगा कि किसी दु:खी विधवा औरत के पास संवेदना प्रकट करने के लिए चुनिंदा फौज के विशाल लश्कर को साथ लेकर भयंकर अस्त्र-शस्त्रों से लेस होकर जाया जाता है। लेकिन हमारे होल्कर वंश में यह रिवाज नहीं है। आखिर राघोवा ने अपनी असली कुटलिता प्रकट कर ही दी कि सच बात तो यह है कि हम नहीं चाहते कि राज्य सिंहासन पर एक अकेली विधवा नारी बैठे। शासन सूत्र संचालित करने का पारंपरिक अधिकार केवल पुरुषों को है यह स्थान स्त्रियों के लिए नहीं है .....। एकदम वर्जित है।

■

7 सितम्बर 2024 को 'कला समय' संपादक मण्डल दल द्वारा लोकमाता अहिल्याबाई होलकर राजबाड़ा महेश्वर भ्रमण के अवसर पर हुए अनुभव का यात्रा वृतांत...

ऐतिहासिक विरासत : महेश्वर की महिमा

-भँवरलाल श्रीवास

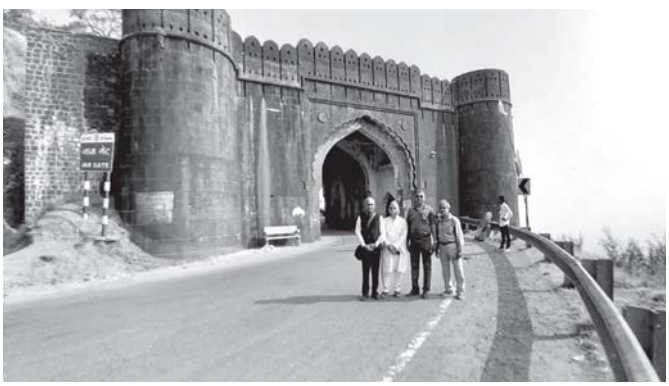

लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर पर केन्द्रित 'कला समय' का यह विशेषांक निकालने के निमित्त इस अंक के अतिथि संपादक विद्वान इतिहासकार पुरातत्वविद राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय के नेत्रत्व में 'कला समय' संपादक मण्डल टीम ने विचार किया कि विशेषांक प्रकाशन के पहले एक अवलोकन महेश्वर धाम जाकर अहिल्याबाई होल्कर का राजवाड़ा, माँ नर्मदा का घाट उसकी सहस्त्र धाराएं, महल, सहस्त्रबाहु धाम सहित महेश्वर के ऐतिहासिक विरासत और वर्तमान में देवी अहिल्याबाई होल्कर की राजधानी रहा महेश्वर को 'कला समय' टीम ने देखने और जानने के इस उत्सुक्ता ने 6 नवम्बर 2024 का दिन नियत किया गया। श्री पाण्डेय जी से बात हुई तो उनकी सहमति से हमारी चार सदस्यों की टीम महेश्वर के लिए रवाना हुई। श्री पाण्डेय जी स्वयं के वाहन से मंदसौर से महेश्वर के लिए रवाना हुए हम भोपाल से चार्टेड बस द्वारा इंदौर रवाना हुए। हम और पाण्डेय जी से चर्चानुसार हमें चार्टेड बस अड्डे पर मिलना था फिर चारों लोग महेश्वर के लिए कार द्वारा जाना तय हुआ था। हम सुबह 7 बजे बस द्वारा इंदौर के लिए रवाना हुए सुबह 11 बजे हम इंदौर पहुंच गये। श्री पाण्डेय जी अपने आवश्यक कार्यों का संपादन करते हुए ठीक 1 बजे के लगभग इंदौर अटल बस स्टैंड हम लोगों के पास पहुंच गये। वहां से पं. कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय जी, भँवरलाल श्रीवास, सूबेदार श्री बद्रीनारायण जोशी जी जो स्वयं कार चलाकर लाये थे। तथा श्री मनोज व्यास जी सहित कार में बैठकर महेश्वर के लिए प्रस्थान किया। इस बीच हम लोगों ने एक अच्छे ढाबे पर खाना खाया फिर सीधे महेश्वर के लिए पहुंचने के पहले महेश्वर की संपूर्ण जानकारी 'कला समय' की स्तम्भ लेखिका डॉ. सुमन चौरे से बात की तो उन्होंने महेश्वर के विद्वान साहित्यकार श्री हरीश दुबे जी का उन्होंने नम्बर दिया। हम लोगों ने उन्हें फोन लगाया उन्होंने हमारी भरपूर मदद करने की सहमति दी। हम लगभग 5 बजे महेश्वर पहुंच गये। दुबे जी हमारा इंतजार ही कर रहे थे। वे हमें महेश्वर के प्रवेश द्वार पर ही मिल गये थे। उन्होंने हमें सीधे गाड़ी ऊपर राजवाड़ा में ले चलने के लिए कहा वैसे सामान्य वाहन ऊपर जाना वर्जित है परन्तु उनके सहयोग और सहमति से हमारा वाहन ऊपर राजवाड़ा में चला गया। दिन सर्दी के होने के कारण शाम हो चली थी। हमने जल्दी-जल्दी एक नजर में देवी अहिल्याबाई की अष्ठधातु की प्रतिमा देखी फिर अन्दर जहां रानी अपना रोज दरबार लगाती थी वह देखा और अंत में देवी अहिल्याबाई होल्कर का पूजाघर देखा जहां फोटोग्राफी वर्जित है। इस तरह हमारा पहला दिन डूब गया। श्री दुबे जी के सहयोग से ही किफायतीदर पर सर्वसुविधायुक्त होटल (एसी) में ठहरने की व्यवस्था हुई। रात को हम सभी लोग भगवान सहस्त्रबाहु जी के मंदिर दर्शन करने गये जहां उनका जन्म जयंती उत्सव से मंदिर रंग-बिरंगी रोशनी से सराबोर हो रहा था हम उसी रात वहां आरती के समय उपस्थित थे। सभी लोगों ने आरती में सम्मिलित हुए। फिर वहां से सिधे बाजार में राजवाड़ा से नीचे दूध की दुकान पर रात्रि 9 बजे चारों ने दूध लिया क्योंकि दोपहर का खाना देर से खाने की वजह से किसी को भूख ज्यादा थी नहीं। इसलिए सभी की सहमति से सिर्फ दूध ही लिया और होटल में वापस आ गये। श्री दुबे जी हमें होटल में ठहरा कर अपने घर चले गये थे।

दूसरे दिन दिनांक 7.11.2024 को सुबह माँ नर्मदा में स्नान हेतु घाट पर गये चारों लोगों ने पहले महल का भरपूर अवलोकन, फोटोग्राफी की तथा फिर माँ नर्मदा के स्वच्छ, पवित्र जल में स्नान किया तथा चारों ने 'नर्मदा माई' की विधिवत पूजा-अर्चना तथा दीपदान का कार्तिक माह में विशेष महत्व है। हम लोगों ने भी माई को नारियल प्रसाद और दीपदान किया और आर्शीवाद प्राप्त किया। फिर सीधे होटल आकर अपना-अपना सामान लिया इस बार हम जिस उद्देश्य से महेश्वर के लिए आये थे। बिना

समय गंवाये हम राजवाड़ा प्रांगण में लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर की प्रतिमा के पास आ गये यहां हमने 'कला समय' का आयुष्य संस्कृति विशेषांक का लोकार्पण महाराजा प्रिंस रिचर्ड होल्कर जो वहीं राजवाड़ा के अंदर ही रहते हैं के हाथों इस विशेषांक का लोकार्पण कराया। इस लोकार्पण में सम्मिलित स्थानीय विद्वान तथा 'कला समय' टीम के सदस्य सम्मिलित हुए। 'कला समय' के प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास लोक माता अहिल्याबाई विशेषांक के अतिथि संपादक पं. कैलाशचन्द्र धनश्याम पाण्डेय, सूबेदार अध्यात्म गुरु श्री बद्रीनारायण जोशी, श्री मनोज व्यास, साहित्यकार श्री हरीश दुबे कविवर सत्यदेव बंदूके सहित सात लोगों ने इस प्रतिष्ठापूर्ण अंक का लोकार्पण सम्पन्न हुआ जिसके दूसरे दिन स्थानीय समाचार पत्रों में प्राथमिकता से लोकार्पण की खबर को प्रकाशित किया हम श्री हरीश दुबे और सभी मीडिया कर्मियों के हृदय से आभारी हैं।

लोकार्पण के बाद हम पुन: राजदरबार और पूजा घर देखने हेतु राजवाड़ा में गये तो हमारे साथ श्री हरीश दुबे जी जो स्वयं महेश्वर निवासी हैं और वरिष्ठ साहित्यकार भी हैं। हमें राजवाड़े की विस्तार से जानकारी दिलाने हेतु लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर के पूजा घर में पूजा करने वाले पंडित श्री नरेन्द्र रावत जी से परिचय कराया उन्होंने जैसा हमें राजवाड़ा का वृत्तांत बताया वह इस प्रकार है – 'देवी अहिल्याबाई जहां रोज पूजा करती थी उस पूजा घर में स्थित सोने का पालना (झूला) रखा है। जिसमें लड्डू गोपाल जी झूला झूल रहे हैं। वहां पर दक्षिणवर्ती शंख रखा है। झूले के दोनों और विष्णु पूजा सिंहासन है इसी के आसपास चांदी के शिवलिंग पूजा स्थल पर हैं। यह सभी नर्मदा के शिवलिंग नर्मदेश्वर हैं। नीचे शिव पूजा में जितने शिवलिंग हैं सभी चांदी के मुकुट से सुशोभित हैं। जिसमें एक मुकुट काशी विश्वनाथ मंदिर का है। एक अहिल्याबाई के छतरी का है। एवं एक विथलेश्वर का है बाकी छोटे-छोटे मुकुट घाट पर स्थित शिवलिंग के हैं। अहिल्याबाई के समय में सारे मुकुट मंदिरों में जाते थे। प्रति सोमवार शाम के समय श्रृंगार आरती होने के बाद वापस पूजा घर में जाते थे। देव पूजा में अहिल्याबाई के कुलदेवता मल्हारी मार्तंड (खण्डोबा) परिवार सहित यहां विराजते हैं। देवी अहिल्याबाई का पूजा का करने का समय सूर्य उदय तथा सूर्यास्त दोनों समय आरती पूजा करती थी। वर्तमान में पं. नरेन्द्र रावत जी 1986 से इनकी पूजा परम्परागत तरिके से कर रहें हैं। रहे हैं। इनके साथ मुख्य पुजारी विनायक शास्त्री जी भी हैं। ये दोनों समय अहिल्याबाई के पूजा घर की अभी भी नियमित पूजा करते हैं दोनों समय आरती भी करते है उन्होंने कहा आज भी महेश्वर राजवाड़ा में प्रतिदिन पार्थिव शिवलिंग का निर्माण होता है। अहिल्याबाई के समय में 108 ब्राह्मण प्रतिदिन एक लाख पच्चीस हजार शिवलिंग रोज बनाते थे। काली मिट्टी के अब वर्तमान में सात ब्राह्मणों द्वारा ग्याराह हजार शिवलिंग प्रतिदिन बनाये जाते हैं। इन शिवलिंगों को सुबह सातों पंडित 8:30 बजे से 10:00 बजे तक बनाते है ततपश्चात 12 बजे सभी पार्थिव शिवलिंग को माँ नर्मदा जी में विर्सजन कर दिये जाते है।

अब हम 'कला समय' के लोकार्पण समारोह में आमंत्रित कविवर सत्यदेव बंदूके के निमंत्रण पर हम उनकी होटल राजराजेश्वर पैलेस पर

गये जहां उन्होंने 'कला समय' प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास का सम्मान किया उन्होंने अपनी लोकमाता पुण्य श्लोकी देवी अहिल्याबाई पर अपनी कविता लोकमाता अहिल्याबाई के फोटो युक्त भी भेंट की तथा सभी साहित्य, कलाबन्धु, सम्मानीय 'कला समय' टीम के स्वल्पाहार के बाद हम इंदौर के लिए रवाना हुए। सुखद स्मृतियों के साथ लौट आये लौटते समय जाम गेट भी देखा और वहाँ लगे शिलालेख के चित्र भी लिए हम इंदौर संग्राहलय में भी गये जहां अतिथि संपादक श्री कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय जी ने अहिल्याबाई के समय के शिलालेख, ताम्रपत्रों का भी अवलोकन किया। इसके बाद हमको अटल बस अड्डा पर पाण्डेय जी ने उतार दिया। हम भोपाल के लिए तुरन्त खड़ी चार्टड बस में बैठकर भोपाल के लिए रवाना हो गये। श्री पाण्डेय जी और श्री बद्रीनारायण जोशी जी दोनों मंदसौर के लिए अपनी कार से रवाना हो गये। धन्य है। लोकमाता अहिल्याबाई की ऐतिहासिक विरासत महेश्वर की महिमा।

लेखक : कला समय पत्रिका के प्रधान संपादक हैं।

■

आर्ट कैंप का तिलिस्म अनोखा

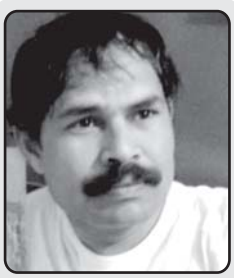

चेतन औदिच्य

वह एक ज़िंदा वक़्त होता है
जवान कलाकारों के हाथों में
दौड़ रही होती है विद्युत
और वरिष्ठ कलाकार
अपनी ही अनुभव गंध के साथ
गर्व से भरे भरे घूमते हैं वहां।

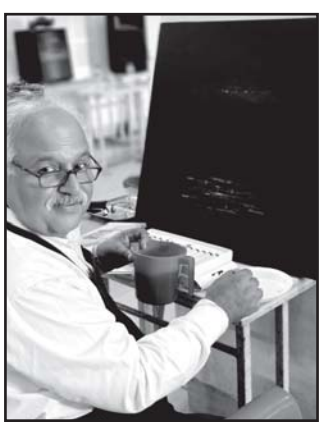

कोई गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध
खींच रहा होता हैं रेखाएं
तो कोई आकाश को
उतार लाता है
कैनवस की ज़मी पर।

किसी के रंगों में
डूब रहा होता है कोई
अंगड़ाई लेता बदन ।
कोई रंग डुबो रहे होते हैं
उदास चेहरों को
अपने गीली ज़द में ।

फूलों की रंगत को
कैनवस पर बिछा देने को
बैचैन दीखती है
नोकें कलम की।
पैलेट में पड़े दीवाने रंग
पहाड़ों से
कर रहे होते है बातें।

आर्ट कैंप तिलिस्म है दुनिया का
ग़र कलंदर हो कला के
तो आओ, इधर आओ।

यदि आप कलाकार हैं और आपने किसी कला शिविर में भाग लिया है तो इस बात से सहमत होंगे कि आर्ट कैंप कुछ दिनों की ऐसी दुनिया होती है जिसमें रहकर हम सबसे ज्यादा उल्लसित होते हैं। सबसे ज्यादा ऊर्जावान ,सबसे ज्यादा प्रसन्न और सबसे ज्यादा सृजनात्मक भी। लगता है जैसे तमाम तरह के सामाजिक, आर्थिक, व्यावहारिक बंधनों से मुक्त हो, हम अपने जीवन को वर्तमान में बहुत होशो हवास के साथ जी रहे हैं। जैसे हमारे मन के सभी तनाव विगलित हो गए हों । कलाकार साथियों के बीच जैसे जीवन उत्सव बन गया हो। शिविर में महसूस होता है जैसे हम 'स्वयं' के जीने के लिए 'स्वयं की ही दुनिया' में रह रहे हैं। अपनी ही इच्छा से, अपनी दुनिया बना रहे होते हैं । उन चंद दिनों की दुनिया को और भी खूबसूरत बनाने में शिविर के साथी कलाकार भी वैसे ही जुटे होते हैं जैसे हम। हर कला शिविर की अपनी कहानी होती है। और हर कलाकार की भी अपनी। कलाकारों के अलग-अलग अनुभव, उनकी अपनी कहानी का कलेवर बनता है। शिविर में औपचारिक और अनौपचारिक बातचीत में दुनिया जहान के विचार साझा होते हैं । दुनिया की हलचलों का समागम उन चंद दिनों की गतिविधियों में देखा जा सकता है। कला किधर जा रही है? कला में क्या होना चाहिए? कला में कौन 'कलाकारी' कर रहा है? बाजार की चालाकियों ने किसे फाँस लिया। बड़े-बड़े नामचीनो ने कौनसे दांव-पेच अपनाकर नाम कमाया। कौन कलाकार निरा मूर्ख ही रहा । कौन कलाकार इन दिनों खूब चल रहा है? कौन कलाकार दृश्य से गायब हो गया ? किस कलाकार को अब शिविर में बुलाना है । और किस काईयें को अब नहीं बुलाना है ? तमाम तरह की बातों वाली, शिविर की ये गप-गोष्ठियां उन चंद दिनों का मजेदार तड़का होता है। इस तरह कला की दुनिया में कला शिविरों का अपना जबरा परिदृश्य है। इस परिदृश्य में कृति का निर्माण करना तो महज एक कृत्य है। इसके साथ अलग-अलग तरह की अनेक बातें जुड़ी हैं। जिनमें सबसे महत्वपूर्ण है मित्रता का जीवंत अनुभव। दूरदराज़ के कलाकार दोस्तों से मिलकर , उनके साथ काम करके दिल कैसे बाग-बाग हो जाता है,यह हम सभी का अनुभव है।

कला की दुनिया में कला शिविरों का अपना अलग ही महत्व है। भारत तथा भारत से बाहर पूरी दुनिया में व्यक्तियों अथवा संस्थाओं द्वारा कला शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है । कला शिविर वस्तुत: एक

ऐसा माहौल होता है जहां कलाकार और कलाकृतियों के साथ उन पर होने वाले औपचारिक –अनौपचारिक विमर्श भी जीवंत रूप में उपस्थिति देता है। वहां छोटी सी, किंतु कुछ दिनों के लिए एक ऐसी दुनिया साक्षात होती है जहां छोटे बड़े, वरिष्ठ कनिष्ठ सभी स्तरों के कलाकार अपनी अभिव्यक्ति देते हैं। हम दो शिविरों की बात यहां करना चाहेंगे। राजस्थान विश्वविद्यालय के दृश्यकला विभाग में 'कला चर्चा' ग्रुप द्वारा किया गया मंथन –3 का आयोजन तथा उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में किया गया ललिता –3 का आयोजन । यूं तो हर कला शिविर की अपनी विशेषताएं होती हैं । हर शिविर अपने ढंग से संपादित किया जाता है। किंतु कुछ कला शिविर इस तरह से होते हैं कि उनकी स्मृति मानस से लुप्त नहीं होती । कला मंथन और ललिता के शिविर इसी कोटी के रहे ।

कलाचर्चा ट्रस्ट, ड्राइंग एन्ड पेंटिंग विभाग, विजुअल आर्ट्स विभाग और अलुमनी एसोशियेशन विजुअल आर्ट्स विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय कलाकार शिविर कला मंथन के तृतीय संस्करण का आरंभ योग दिवस सप्ताह में फेकल्टी फाइन आर्ट्स ऑडिटोरियम, जयपुर में किया गया । दीप प्रज्वलन के साथ शुभारंभ के मौके पर विजुअल आर्ट्स विभाग अध्यक्ष डॉ. रजत पंडेल और ड्रॉइंग एवं पेंटिंग विभाग अध्यक्ष डॉ. आई यू. खान सहित सहायक आचार्य डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। इस शिविर में भाग लेने हेतु उज्जैन से वरिष्ठ कलाकार चंद्रशेखर काले, देवास से मनोज पंवार, वड़ोदरा से अजीत वर्मा, गोरखपुर से डॉ. भारत भूषण, उदयपुर से चेतन औदिच्य आए। जयपुर से डॉ. रीता पांडे, रितिक पटेल, ताराचंद शर्मा, डॉ. रेणु शाही, नीलम नियाजी, रीतिका जागिड, नीरज सैनी, रुचि दीक्षित, आकाश जांगिड, पूजा भारद्वाज और हिमाक्षी शर्मा ने भी कलाकार के रूप में भागीदारी की।

शिविर की यह विशेषता रही कि राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रतिभागी विद्यार्थियों ने कला शिविर को लेकर अपने मनाभावों को बखूबी व्यक्त किया। कला विद्यार्थियों का कहना था कि कला रचना के साथ कला की वैचारिकी पर जो चर्चा शिविर में हुई वह अत्यंत उपयोगी रही। समकालीन कला पर विभिन्न कोणों से अलग–अलग तरह के विमर्श सामने आए जो युवा कलाकारों की समझ विकसित करने में अपरिहार्य थे। सभी विद्यार्थियों ने इस आयोजन की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताया

और इसकी सराहना की। कलाचर्चा संयोजक और कलाकार ताराचंद शर्मा ने सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागत करते हुए कला के मूल स्वरूप और उससे जुड़ी तमाम तरह की गतिविधियों के निहितार्थ को शिविर में अमली जामा पहनाया। उद्घाटन सत्र में उज्जैन से वरिष्ठ कलाकार चंद्रशेखर काले ने सभी आयोजकों का आभार जताया तथा इस महत्वाकांशी आयोजन की विद्यार्थियों के लिए सार्थकता बताई। शिविर के बहाने वरिष्ठ कलाकारों के सानिध्य का अवसर सृजित करने के लिए कला चर्चा की सराहना की। शिविर के समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान ललित कला अकादमी के पूर्व अध्यक्ष कलाविद प्रो. सी.एस. मेहता ने की । इस अवसर पर शिविर में बनाई गई कलाकृतियों के प्रदर्शनी को देखते हुए प्रो.मेहता ने कहा कि युवा कलाकार नई चेतना के साथ कला क्षेत्र में आ रहे हैं यह प्रशंसनीय है।

यदि समस्त औपचारिकताओं के साथ संपन्न होने वाले किसी अनौपचारिक कला शिविर का नाम लिया जाए तो प्रतिवर्ष गोरखपुर में होने वाले ललिता संस्था के कला शिविर का उल्लेख करना अपरिहार्य है। कला, लोक कला, मंचीय कला और संस्कृति के न्यास %ललिता% द्वारा बाबा गोरख की भूमि पर अंतर्राष्ट्रीय कला कार्यशाला आयोजित की गई । जिसमें 'कला शिविर' के सामान्य डिजाइन से आगे, कला के आपसी सौहार्द का ऐसा अवसर उपलब्ध करवाया गया कि अभीभूत हुए बिना नहीं रहा जा सकता। शिविर के दूसरे दिन वैश्विक शांति में ललित कलाओं का योगदान विषयक संगोष्ठी में नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली के डायरेक्टर जनरल डॉ. संजीव किशोर गौतम ने अपने व्याख्यान में मर्मपूर्ण बात कही कि 'कलाओं का काम महज सौन्दर्य का अंकन और धनोपार्जन करना ही नहीं है बल्कि चित्त शुद्धि के साथ–साथ समाज में शांति की स्थापना करना भी है' यह बात इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि जहां समकाल में अनेक देशों में युद्ध की विभीषिका छाई है ऐसे में कला जगत की भूमिका को एक दिशासूचक मिलता है।

इस कला शिविर में देश विदेश के पच्चीस से अधिक कलाकारों ने शिरकत की प्रो. ईश्वर दयाल, डॉ. चन्द्र शेखर काले, मनोज पवार, अजीत वर्मा, चेतन औदिच्य, डॉ. चित्रसेन, नंदलाल, सुरेन्द्र बी.जगताप, शैलेन्द्र सिंह आदि मौजूद रहे।

स्तंभकार लेखक: वरिष्ठ चित्रकार और कवि हैं।
सम्पर्क : 49, सी, जनता मार्ग, सूरजपोल अंदर,
उदयपुर– 313001(राज.) मो. 9602015389

पुस्तक समीक्षा

कामना से काल हारा की समीक्षा

पुस्तक विवरण-

पुस्तक शीर्षक	:	कामना से काल हारा
लेखक	:	ओम बबेले
प्रकाशक	:	Mandrake Publications, Bhopal
पृष्ठ संख्या	:	80
मूल्य	:	₹199/-
प्रकाशन वर्ष	:	प्रथम संस्करण 2024

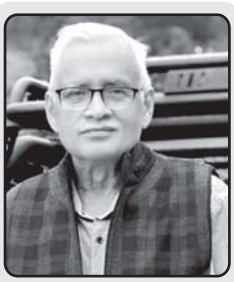

देवनाथ द्विवेदी

शुरू में मैंने ओम बबेले जी के कविता संग्रह को इसी भाव से पढ़ा कि मैं एक कविता प्रेमी पाठक भर हूँ। लेकिन शीघ्र ही मुझे आभास हुआ कि इनका साहित्यिक अवदान मुझसे कुछ अधिक की अपेक्षा भी करता है। इनके संग्रह के तीन खण्डों की तीन भिन्न विधाओं वाली रचनाओं ने मुझे सिर्फ पढ़ने से आगे जाकर इनकी सघन जांच पड़ताल करने का हौसला भी दिया ! अत: अब मैं ओम बबेले के कृति की समीक्षा के साथ ही शायद अपने समीक्षक वाली भूमिका की भी समीक्षा करने वाला हूँ !

लेखक: ओम बबेले

ओम बबेले जी दो वर्षों तक मेरे सहकर्मी भी रहे हैं। उस अवधि में ओम बबेले जी की पहचान हिन्दी के प्रवक्ता के साथ साथ एक अच्छे संगीत प्रेमी के रूप में भी थी। झांसी जिले के उस छोटे से कस्बे , समथर में हम पारिवारिक मित्र के रूप में भी जुड़ गए थे। वे प्राय: अपने आवास पर आयोजित संगीत सभाओं में कविता और ग़ज़लों की रचना प्रक्रिया पर भी बात किया करते थे । मैं ये समझ सका हूँ कि उनमें सार्थक कविता कर्म का बीजारोपण आज से लगभग पैंतीस वर्ष पहले हो चुका था । ये उनके कविताकर्म का उद्भवनकाल था । उनके स्वभाव में कविता के प्रति कोई जल्दबाजी नहीं थी । संभवत: वे खुद अपने आपको अपने ही तय किये गए मानकों पर रखकर कुछ रचना चाहते थे । ऐसे में आश्चर्य नहीं कि वे यंत्रवत लिखने के बजाय उत्प्रेरित होने पर ही कुछ लिखने वाले कवि हैं । कवियों की यह प्रजाति बड़ी दुर्लभ है । इस तरह के एक वरिष्ठ कवि , जिनका नाम मैं सम्मान के साथ लेना चाहता हूँ वे हैं नरेश सक्सेना जी जिनके कुल दो कविता संग्रहों की एक एक रचनाएं मील का पत्थर बन चुकी हैं ।

इनके पूरे रचनाकर्म पर बात करने से पहले ये कहना भी जरूरी है कि ये जितना अपने स्वभाव से सरल और भावुक हैं , इनकी रचनाएं उतनी ही जटिल और गुम्फित हैं । वे पाठक से अतिरिक्त ध्यान और संलिप्तता की अपेक्षा करती हैं । इस तरह वे अपने पहले ही कविता संग्रह में एक गंभीर और सुस्थापित कवि के जिल्दबंद स्वरुप में प्रस्तुत होते हैं । उनके शांत मानस जगत को जो भी कुछ उद्वेलित करता है उसे ओम बबेले पूरे एहतराम और आधिकारिक प्रेक्षक की तरह ही अपनी कविता गीत या ग़ज़ल में लाते हैं ।

पुस्तक में प्रकाशक की एक गौर तलब टिप्पणी भी है .....

इस संग्रह में गीत जहाँ कोमल शब्दों में प्रकृति और दर्शन के करीब चले जाते हैं वहीं कविता गहरे सवालों से टकराती है और जब ग़ज़ल की बात आती है तो तेवर विद्रोही हो जाते हैं ।

ओम बबेले की रचनाएं निश्चित ही प्रकाशक के आकलन के अनुसार ही वर्गीकृत की जा सकती हैं ।

कवि ओम प्रकाश बबेले ने अपनी छोटी सी भूमिका में बड़ी बड़ी बातें कही हैं , जैसे कि उनकी कविता के दो सहज स्रोत प्रेम और दु:ख हैं । वे अपने अल्प लेखन का कारण अपने देश-काल का जड़ीभूत हो जाना बताते हैं साथ ही वे ये भी कहते हैं कि प्रयत्न और परिश्रम मेरी रचनाओं और जीवन दोनों से दूर ही रहे । यह उनकी स्पष्टोक्ति ही नहीं है वरन एक दुर्लभ किस्म की सहजता भी है । वे लिखे गए की गुणवत्ता से समझौता करने वाले रचनाकार नहीं हैं । अच्छी कवितायें प्रयत्न और परिश्रम से नहीं लिखी जातीं । वे एक पारखी नज़र और संवेदनशील हृदय से सहज और उन्मुक्त स्रोत की तरह उद्भूत कृतियाँ

होती हैं ।

ओम बबेले अगेय या छंदमुक्त रचनाओं को ही आज के समय की प्रतिनिधि कविता कहते हैं जबकि मेरे समझ से इन्हें गद्य कवितायें या छंदमुक्त कवितायें ही कहना उचित है । छंदमुक्त कवितायें भी वे ही अच्छी लगती हैं जिनमें थोड़ी लयात्मकता जरूर हो।

निराला जी जब लिखते हैं कि 'वह तोड़ती पत्थर , तो गेयता लाने के लिए ही वे आगे लिखते हैं इलाहाबाद के पथ पर । इसी तरह 'वह आता ! दो टूक कलेजे के करता , पछताता पथ पर आता 'इस छंदमुक्त कविता में भी आता , करता और पछताता में एक लयात्मकता तो है ही। इसी कविता में आगे भी इस लयात्मकता का निर्वहन स्पष्ट दिखता है' मुट्ठी भर दाने को , भूख मिटाने को '। और इसी कविता कौशल के चलते उनकी अधिकाँश छंदमुक्त कविताओं को पढ़ते समय कहीं भी अप्रिय व्यवधान नहीं आता। बाद के भी अनेक प्रतिष्ठित कवियों ने भी अपनी छंदमुक्त कविताओं में यथासंभव और शायद सायास भी तुक तान और लयात्मकता का अनिवार्यत: ख्याल रखा है । गिरिजा कुमार माथुर , नरेश सक्सेना , त्रिलोचन और केदारनाथ सिंह जैसे कवियों ने यही किया है ।

'कामना से काल हारा' में गीत , गद्य कविता और ग़ज़ल तीनों ही हैं तो भी मैं कहूँगा कि यदि बबेले के कवि का समग्र परिचय पाना हो तो उनके गीतों को ठीक से पढ़ लेना ही काफी है ।

वे गीत विधा के जादूगर हैं। वे गीत में बसते हैं और गीत उनमें बसते हैं । वे गीतों के रसिया हैं और गीत उनके पास संस्कारी शिशु की तरह बाल लीलाएं करते हुए दीखते हैं । वे एक साथ करुणा , उद्दात्त प्रेम , प्रकृति से अटूट लगाव , रस रंजन , उत्सवप्रियता और अबाबील पखेरू जैसी तेज़ और सटीक उड़ानों का विभोर कर देने वाला अंदाज़ पेश करते हैं । किसी भी एक गीत को लीजिये , उसमें आपको एक साथ सब कुछ मिलेगा ! फाग श्रंखला के पांच गीत तो अद्वितीय ही है ! इनके निर्वहन में वे रीतिकालीन कवि के समकक्ष जा पहुंचते हैं .....

मादल सुनावै वेणु हिए हरसावै खोर, खोरिन फिरों री ऐसो जिय ललचात है

बूढ़े होंहि बारे होंहि , जसुदा दुलारे होंहि , सबै हंसि हंसि कें गरियाबो सुझात है !

होली के मस्ती का जो आलम ओम ने घनाक्षरी फॉर्मेट में अपने रसवन्ती रचना में बाँधा है उसकी एक और बानगी भी 'देखन जोगू' है ....

बड़े और छोटन को, फैंटन कछोटन कौ नाइन ठकुराइन कौ भेद ना लखात है,

श्याम खों पुकारो उते श्यामा मुस्काय रही आँखिन ते नाहीं आज कानन सुझात है

होरी में जौ कीच हूँ सो नीच रंग वारौ ओम फागुन में गुन नाहीं अवगुन सुहात है!

अपने गीतों की रचना करते हुए वे निष्प्रयास ही प्रेम , देह-वीणा और रूप-लावण्य से होते हुए आत्मा के गीत और मन प्राण के संगीत तक जा पहुँचते हैं ! संग्रह का शीर्षक भी इसी गीत से उद्धृत है ....

विस्मरण की आयी वेला , स्मरण फिर भी तुम्हारा , कामना से काल हारा !

देह की वीणा बजाई , किस सनातन भावना से ....रूप था लावण्य था या मनो मनसिज की मदिरता ...

कुछ नहीं बाहर कहीं, भीतर सिवा उसके नहीं कुछ ....आत्मा का गीत है, मन प्राण का संगीत है ये ....

प्रेम अनहद गूंजते कट जाए माया जाल सारा.... कामना से काल हारा !

किसी भी गीत में अपनी ओर से ओम बबेले कोई कोर कसर नहीं छोड़ते और मानों अपनी आत्मा का सत्व उसमें उलीच देते हैं। इसीलिये मैं फिर कहूँगा कि ओम प्रकाश बबेले मूलत: एक सरस और भावुक गीतकार ही हैं। यह इस तथ्य से भी स्वयंसिद्ध है कि वे एक अप्रतिम मेधा के कंपोजर भी हैं और गायक भी हैं ।

उनकी एक और रससिक्त गीत-कविता मुझे उद्वेलित कर गयी ....

राजा को डर था परजा से पापी कहलाता / सजा दिए थे घाट मगर जल कैसे ले आता ?/ बचा दरकने से , जो पाया पानी / मूंछ ऐंठता फिरे पुण्य का मानी / भीग न जाएँ छत पर कपड़े माँ को दे आराम / छत पर गोरी गयी तभी क्या हुआ कि हाय राम ! / बरसता रहा ,बरसता रहा पानी / बरसे कभी कभार ये मीठा पानी ।

इस गीत में वे राजा और प्रजा के प्रतीकों द्वारा राजनीति के मायावी चेहरे को बेनकाब करते है और फिर पानी की असली मिठास जताने के लिए छत पर कपड़े उतारने को आई हुई छोरी को पानी की मिठास में भीगते हुए देखते हैं । इस तरह कवि पानी के कितने ही रूप को पानी की तरलता के समान ही पाठक के सामने ले आता है !

अपनी अन्य कितनी ही कविताओं में ओम बबेले मन में एक साथ उठते विचारों, भावनाओं और उद्दात्त संवेगों को एक ही कविता में शब्दों का पैरहन पहनाते हुए एक साथ प्रकृति प्रेमी, रूहानी प्रेम का परचम लहराते आशिक, अपने परिवेश को पढ़ते समझते और लिखते शब्दशिल्पी और अभिव्यक्ति में एक इंद्रजाल सा बुनते दार्शनिक भी नज़र आते हैं ! ऐसी ही बुनावट वाली रचनाओं के नमूने पेश हैं ।

1- चांदनी ऐसी नहीं है, है नहीं ऐसा सवेरा ,इस धरा पर तुम बताओ कौन जैसा देश मेरा !

2- जितनी मन से जियी जिंदगी उतनी गीत हुई , बाक़ी तो बस बेमन से जीने की रीत हुई ।

3- जो तुमने कभी चाँद के नाम गाया वही गीत अब चांदनी गा रही है

सुरीली अजानी मदिर रागिनी सी मेरे मौन मन में समा जा रही है

कँवल गिनते गिनते थकी तर्जनी तब हुआ एक पर्वत के उस पार सूरज

हुए मौन सरगम सुरीले खगों के , कहा तुमने धीरे से रात आ रही है !

4- हरहराती नदी सा न बह पाऊंगा बाँध पर बाँध हैं मैं ठहर जाऊँगा

फिर भी रिस रिस के जितना भी धारा बना तुम जहां हो उसी ओर ढर जाऊँगा ।

5– आज बहुत ही याद आ रहे अपनी बस्ती अपने लोग
वे द्वारे वे छतें और वे हँसते दीप जलाते लोग ।

उन्होनें बुन्देली में रचा एक गीत भी संग्रह में शामिल करके गीतों के उस आदिम विस्तार तक हमें देख पाने की दृष्टि दी है जहां खेतों में बीज रोपते किसान या ओखल में धान कूटती स्त्री अथवा झूले पर पींग बढ़ाती युवतियाँ अपनी स्थानीय बोली–बानी को निष्प्रयास ही लोकगीतों में ढालती आयी हैं ।

जो वे कै रये सो हम कै रये , अपनी नोईं कछू हम कै रये ।

इस बुन्देली गीत में ओम ने आज के तंत्र पर गज़ब का तंज़ कसा है !

गीत खंड के बाद जब वे गद्य कविता पर आते हैं तो पहली ही रचना में राजनीति के अर्धसत्य को उद्घाटित कर देते हैं । वे कहते हैं कि फिर हम ही क्यों हैं विवश / बने रहने को हिंदू मुसलमान / बाभन हरिजन ? क्यों नहीं हो सके सिर्फ , सिर्फ इंसान / किनको आखिर को हुआ लाभ / है कौन सदा टोटे में / इसका हो हिसाब साफ़ साफ़ ।

ये तो सच ही है कि आज के दुरूह हो चले समय में तमाम विद्रूपित और परेशान करते जीवनानुभव को छंदों में बांधना असंभव ही है। इसीलिये कविता जब राज्याश्रयी / सामंती पाबंदियों और निर्देशों से मुक्त हुई तो वह आम जन के विविध सरोकारों , पीड़ाओं और भोगे गए यथार्थ की टोह लेने लगी । अभिव्यक्ति की इस नयी छटपटाहट में छंदमुक्त रचनायें अस्तित्व में आयीं । इस चलन ने अभिव्यक्ति को तो सशक्त बनाया लेकिन कविता की कमनीयता / लावण्यता को क्षति भी पहुंचाई । ठीक उसी तरह कि राजपथ तो बने लेकिन रास्तों पर अपनी छाया डालकर उसे सुरम्य बनाते वृक्षों के हिस्से में बुरे दिन आ गए !

अपनी गद्य कविताओं में ओम ने अपने संज्ञा तंतुओं पर अतिरिक्त बोझ डालकर हर बार कुछ अलग , कुछ नया और कुछ सामयिक अवबोध जुटाया है । इस खंड की रचनाओं में ही उनके कवि का दार्शनिक पक्ष बखूबी उभरा है । इसी खंड में वे सामाजिक सरोकारों के बहुत करीब से गुजरते हैं । इन अगेय रचनाओं में वे कई बार अपने विचार प्रक्रिया में बहुत गहरे उतर जाते हैं । मेरे भीतरी ब्रह्माण्ड में , अनोखा मिलन क्षण , मनु – नदी ऐसी ही गुम्फित रचनाएँ हैं जो पाठक से अतिरिक्त ध्यान चाहती हैं ।

वैशम्पायन , मकान , रात , अच्छे कल के लिए जैसी कविताओं में ओम बबेले के कल्पना लोक के अनूठे गवाक्षों से समसामयिक सरोकारों तक उनके सचेष्ट पहुँच की झलक मिलती है ।

प्राण के परित्राण के खातिर /बहुरुपिया बने हम /बोलते हैं युग–असत्य के संवाद/और करते हैं लक्ष्य भ्रष्ट यात्रा / यन्त्र गति से (वैशम्पायन)

बदकिस्मती इसकी / कि मेरा घर हुआ ये ही मकान / व्यवस्था की दीमक का इसलिए शिकार हुआ / व्यवस्था की कृपा के काबिल न था / इसका इतिहास / ना ही वर्तमान / कि यह भी महल बन पाता (मकान)

जितने घर में थे वे सारे दीपक जलाये हैं मगर वे सब मिलकर भी सूरज तो नहीं बन सकते / वे साथ देते तो हैं अँधेरे में / फिर भी सबेरा तो नहीं कर सकते (रात)

मैं अब ताकता हूँ आसमान / समाता है निरंतर / सारा शोर , सारा धुंआ / धरती का जिसमें / मैं जानता हूँ / ईश्वर की छाती नहीं है आसमान / कुछ नहीं है हमारी दृष्टि की सीमा के सिवा इस खंड की एक और कविता का उल्लेख जरूरी है .... मेरा परिचय' नाम की कविता में ओम बबेले ने एक साधारण मानव की बेबसी को बड़ी साफगोई से उकेरा है....

बहुतेरे कपड़े हैं मेरे पास / पहनता एक–एक कर हूँ जनाब / क्या करूँ / पहिनता वरना किसी तरह भी / सारे एक साथ ....पर क्या करूँ ? बहुत मजबूर हूँ साब / सो तुम्हें तुम्हारे जैसा ही / दीखता हूँ आदमी जनाब। बहुतेरे कपड़े हैं मेरे पास ।

और अब बात करते हैं ओम बबेले के उस शाब्दिक कशीदाकारी की जिसे सुखनवर 'ग़ज़ल' के नाम से जानते आये हैं .....

ये कौन आके न्याय कर गया अँधेरे में , मरे तो मकबरे मिले जिए तो घर न मिला । बड़ी अजीब है ये बात और हकीकत भी , कि आदमी के देश में ही आदमी न मिला ।

ये गज़लकार ओम बबेले के ग़ज़ल खंड का वो पहला झरोखा है जहां से हमें उनके पूरे मानस जगत में एक बेमियादी तल्खी , बेबसी और दबे हुए आक्रोश की शिनाख्त मिलती है । वे ग़मज़दा हैं सामाजिक असमानता से और आदमी की मौजूदा विद्रूपित आदमीयत से । उनके ये विद्रोही तेवर कमोवेश पूरे ग़ज़ल खंड में दिखते हैं ।

हिन्दी में वैसे तो गज़ल जैसी बुनावट वाली रचनाएँ भारतेंदु हरिश्चंद्र , राम नरेश त्रिपाठी , निराला , शमशेर और जानकी वल्लभ शास्त्री के यहाँ देखने को मिलती हैं लेकिन इसे विधिवत काव्य मंच पर बिठाने का काम तो दुष्यंत कुमार ने ही किया है और तभी से पारंपरिक ग़ज़लों के बरअक्स मिश्रित भाषा के साथ सामाजिक सरोकारों को केंद्र में रखकर लिखने का लम्बा दौर जारी है। इसी क्रम में ओम बबेले , जो प्रथमत: एक सक्षम गीतकार हैं , वे भी अच्छी समसामयिक गज़लें लेकर उपस्थित हैं।

उनकी गज़लें परिमाणात्मक स्केल पर भले अभी कम हो लेकिन गुणात्मक पैमाने पर काफी ऊपर रखी जा सकती हैं । उनमें विद्रोह के दबे स्वरों की गूँज प्रमुखता से मौजूद है लेकिन उनमें पर्याप्त विविधिता भी है ।

अपने समाज में फैली चदुर्दिक दुश्चिंताओं को ओम जिस गहराई से अनुभव करते हैं अपनी अभिव्यक्ति में वे उतनी ही गहराई तक विनम्र दिखते हैं । वे अपने पूरे आक्रोश को एक शालीन शब्द शिल्प में

बांध देते हैं । बात को कहने में संकोच नहीं और लाउड होने की आदत नहीं । यही है ओम बबेले की शैली जिसके कुछ नमूने दृष्टव्य हैं .....

लोग गहरे सोग में हंसने लगे , गाने लगे हैं / इस तरह एक हादसे को जश्न दिखलाने लगे हैं ।

हर तरफ विज्ञापनों में सुख बरसता देखकर / दु:ख की चर्चा उठाते लोग शरमाने लगे हैं ।

दोहरे मापदंडों को स्वीकृति मिलने से ओम क्षुब्ध होते हैं और अपनी क्षुब्धता को कुछ इस तरह से प्रकट करते हैं ....

सर हथेली पर रखें या रेत में सर दीजिये / जिस तरह से हो मुनासिब उस तरह जी लीजिये ।

अक्ल इतनी कुलच्छिन निकलेगी ये सोचा न था / दाम देकर आलिमो फ़ाज़िल को चाकर कीजिये ।

कस दिया खुशफहमियों का उसने चौतरफा से जाल, चश्म नम है आपकी तो खुदकुशी कर लीजिये ।

आंख नयी होती है दुनिया वही पुरानी है / प्यासे को अमृत है वैसे पानी पानी है ।

वो गुस्सा वो प्यार रूठकर दोनों चले गए / अब कोई समझाए ज़िन्दगी के क्या मानी है ।

धीरे – धीरे जाना कि मैं जान नहीं सकता / कैसे थामूं उसको जिसका नाम रवानी है ।

कितना आबाद है शहर मेरा / फिर भी वीरान है शहर मेरा / दिल में तहखाने जुबां पर ताले /जैसे गूंगा हुआ शहर मेरा / गली गली में खुल गया बाज़ार / गुम हुआ है यहीं पे घर मेरा ।

इस आख़िरी नमूने में ओम बबेले का समस्त संचित गुस्सा मानो फूट ही पड़ा । यह भी रचनाकार का एक तेवर ही होता है जो कभी न कभी नेपथ्य से बाहर आना ही चाहता है ।

ओम बबेले की कुल सोलह ग़ज़लों में से प्रत्येक अपनी तरफ ध्यान अवश्य खींचती हैं । अपनी अंतिम दो तीन ग़ज़लों में वे विद्रोही तेवर से बाहर निकल कर स्वयं की ही व्याख्या करते दिखते हैं ....

थकने लगे हैं पाँव बता राह क्या करूँ /मंजिल अभी है दूर बहुत दूर क्या करूँ / एक दिल से एक दिमाग से चलता रहा जहां / एक बेजुबां है दूजा बदगुमाँ है क्या करूँ ।

उम्र में जो भी जमाने आये / जिन्दगी तेरे बहाने आये । हम तलबगार नहीं थे तेरे / मिल गयी है तो न छोड़ी जाये । कभी जैसे गरीब की चादर / न बिछे और न ओढ़ी जाए / पलट के आईने में देख सके /जिन्दगी ऐसी संवर के जाए ।

इस समीक्षा को विराम देने से पहले एक आख़िरी बात .....

ओम प्रकाश बबेले के ' कवि रूप ' में अनेक परतें हैं , विविध काव्य कौशल हैं और एक परिपक्व अवलोकन की क्षमता भी । उन्हें निश्चित ही कामना से काल हारा से आगे जाना है । वे आगे बढ़ें और कविता की इन सभी विधाओं को संपन्न करें ऐसी शुभकामना है मेरी । प्रकाशकीय समूह को भी साधुवाद जिन्होंने एक त्रुटिरहित और सुन्दर कलेवर के रूप में ओम बबेले के प्रथम काव्य रचना को प्रस्तुत किया है ।

संपर्क: ए9 अशोक विहार इस्माईल गुंज फैजाबाद रोड
लखनऊ 226028 (उ.प्र.) मो. 9919899827

माँ अहिल्या

सत्यदेव बंदूके

शिव अर्पण कर दिया है, जीवन,,,
तुम वो अहिल्या मां हो।
शिव साक्षी है, तेरे राज्य में,
तुम वो अहिल्या मां हो ।।

दीन दु:खीयों का ध्यान जो रखती,
भावशील वह नारी।
दायित्वों का जो पालन करती.
विश्व पटल पर छायी ।।

दया धर्म ममता की मूरत,
प्रात: स्मरणीया कहलाई।
सद्गुण सदाचार सत्कर्मों से,
विश्व वंदनीय कहलाई ।।

सत्य कर्म में निष्ठा तेरी,
युग = युग प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा पायी है।,
संघर्षों में शोर्य दिखाकर,
माँ देवी तुल्य = पुजायी है।।

सुर सरिता के पावन तट,
मां के गौरव गीत सुनाएं।
माँ रेवा के पावन जल से,
श्रृद्धा सुमन चढायें।।

सम्पर्क : संत विनोबा भावे मार्ग वार्ड क्रमांक 01,
किले के ऊपर, महेश्वर मो. 8319336996

पुस्तक समीक्षा

इस सुबह की रात नहीं: कुछ सुनी कुछ अनसुनी

पुस्तक विवरण-

पुस्तक शीर्षक	:	इस सुबह की रात नहीं
लेखक	:	अरूण कुमार सिन्हा
प्रकाशक	:	आदर्श प्रकाशन, नई दिल्ली
पृष्ठ संख्या	:	80
मूल्य	:	₹195/-
प्रकाशन वर्ष	:	संस्करण 2021

डॉ अरुण कुमार वर्मा

'इस सुबह की रात नहीं' रचना अरूण कुमार सिन्हा जी का संस्मरणात्म कथा साहित्य है। इसका प्रथम संस्करण 2021 में आदर्श प्रकाशन, संगम विहार, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। यह रचना आत्मकथात्म उपन्यास के बहुत नजदीक है। 'यह इनकी हाल ही में प्रकाशित पुस्तक बिग बॉस एक नया घोटुल' का 'पार्ट टू' है। उसमें लेखक ने अपने तेरह वर्ष के अनुभवों को समाहित किया है। यह रचना उसके बाद के अनुभवों पर आधारित है जो कि वर्तमान महामारी की त्रासद गाथा से जुड़कर पुस्तक के महत्व को वैश्विक स्तर प्रदान करती है। इस पुस्तक की शुरूआत बिहार के एक स्कूली आंदोलन से शुरू होती है जोकि 1965 में हुआ था जिसका जिक्र इतिहास के पन्नों पर नहीं हो सका है। इतिहास 1974 से स्टूडेंस मूवमेंट की बात स्वीकार करता है। जबकि यह आन्दोलन पूरी तरह से स्कूली छात्रों का था। कालेज के छात्र इसमें सहयोगी बने। इसमें कोई राजनीति या राजनेता नहीं थे लेकिन इसके परिणाम बड़े ही दूरगामी थे। पुस्तक में लेखक ने लिखा है- 'आज अगर 9 अगस्त 1965 का वृतांत किसी को बताया जाय तो वह यही कहेगा कि कहानी मत सुनाइए। क्या आठ आने (पचास पैसे) के लिए एक राज्य में आंदोलन हो सकता है वह भी स्कूल के छात्रों द्वारा और तब जबकि सामूहिक (ग्रुप), संचार (कम्यूनिकेशन) और संवाद (चैटिंग) की कोई सुविधा न थी।' (इस सुबह की रात नहीं पृष्ठ 15)

लेखकः
अरूण कुमार सिन्हा

लेखक की वर्तमान में इतिहास को समायोजित करने की कला बहुत ही अनूठी है। वर्तमान कोरोना संकट की त्रासद गाथा के साथ उसके लक्षण, प्रकृति और बचाव का बहुत ही वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करते हुए अपने समय के ऐतिहासिक तथ्यों को भी बहुत ही मार्मिक और जागरूक तरीके से वर्णित किया है। लेखक की इस कला को दर्शाते हुए श्री दयानन्द जायसवाल, संपादक, सुसंभाव्य ने लिखा है 'लेखक वर्तमान की देहरी पर खड़ा होकर अतीत और वर्तमान को आत्मसात करते हुए जीवन को समग्र रूप में मानवीय मूल्यों, सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण को अपने लेखन में विकसित किया है।' (इसी पुस्तक से पृष्ठ 7)

पुस्तक में लेखक ने बहुत विस्तार से लॉकडाउन की घटनाओं और कोरोना महामारी की त्रासदी को उद्धृत किया है। लेखक इसकी शुरूआत प्रधानमंत्री जी के लॉकडाउन के दसवें दिन के आहवान से शुरू करता है जिसमें उन्होंने नौ बजे रात को नौ मिनट तक बालकनी में खड़े होकर मोमबत्ती, दिया और टार्च लाइट के दृश्य से उसे अपने स्कूल के दिनों की याद ताजा हो जाती है जब छात्र आन्दोलन कर रहे थे। लेखक इसमें मुंगेर के किले तथा शेरे बिहार कहलाने वाले श्री महामाया प्रसाद सिन्हा का वर्णन भी किया है जो विद्यार्थियों को अपने जिगर का टुकड़ा कहा करते थे।

पुस्तक, कोरोना में आम आदमी के दर्दों को बहुत सहजता से उकेरती है। यह इतनी सहजता से पठनीय है कि जैसे आप ट्रेन की यात्रा कर रहे हों और सारा दृश्य एक-एक करके अवतरित होता है। एक उदाहरण देखिए इस लॉकडाउन पीरिएड में टी.वी. पर बार-बार दृश्य उभरते रहे। 'अपने कंधों पर अपनी पूरी गृहस्थी उठाए मजदूर, सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलते हुए दिखाते मजदूर से मजदूर, मिक्सर मशीन में छुप कर जाते हुए मजदूर, ट्रेन और बस से कुचल कर जाते हुए मजदूर, उठक-बैठक करते मजदूर, लाठियों और गोलियों खाते हुए मजदूर, अपनी नौकरी खोकर शहर की कोठरी खोकर, सड़क के किनारे बैठकर, अनजान रास्तों पर चलते मजदूर, खैरात में मिली रोटी खाकर पेट भरते मजदूर, अपनी रोटी खो चुके मजदूर, सैकड़ों किलोमीटर के सफर पर चलती हांफती दांफती महिलाएं, सड़क किनारे, ट्रेन में बस में और टैक्सी या एम्बुलेंस में बच्चा जनने को मजबूर ये महिलाएं।' (इस सुबह की रात नहीं पृष्ठ 22)

इतना वर्णन उस त्रासद गाथा और सहज शैली की पुष्टि के लिए पर्याप्त है। आज हम इस घटना के प्रयत्क्ष या परोक्ष रूप से साक्षी है परंतु समयांतराल पर

यह पुस्तक इस महामारी पर पुख्ता साक्ष्य साबित होगी।

इतिहास अपने आप को दोहराता है। इस कथन को हम बार-बार पढ़ते या सुनते हैं। इस महामारी में यह बात सत्य साबित होती है। लेखक ने इन महामारियों के क्रम को पुस्तक में अंकित किया है। इस आलेख में उसके तह में हम नहीं जाना चाहते हैं क्योंकि हम उसके प्रत्यक्ष गवाह हैं। महामारी के दौर के साहित्य को हम न के बराबर पढ़ते हैं नहीं तो हमारे लिए उससे बचाव आसान हो सकता। 'द प्लेग' उपन्यास में अल्बर्ट कैमस ने प्लेग महामारी के लक्षणों को लिखा है। आज जो शब्दावलियां कोरोना के लिए प्रयुक्त हो रही है वह सारी शब्दावली और प्रक्रिया समान थी। उस समय भी आइसोलेशन था लेकिन चालीस दिनों का होता था। वर्तमान महामारी के सारे लक्षण प्लेग के समय समान थे। हिन्दी साहित्य में इस पर कम ही लिखा गया है। 'कुल्ली भाट' में निराला जी ने 1918 में फैले स्पैनिस फ्लू के बारे में लिखा है। आज की परिस्थितियाँ और उस समय की परिस्थितियों में कोई अंतर नहीं था। सारे लक्षण आज ही के थे। मृत्यु का कारण हाई निमोनिया ही है। निराला जी की पत्नी का देहांत भी इसी महामारी से हुआ था। अगर हम उस साहित्य को पढ़ते तो उसके बचाव को समझ पाते और कोरोना हमारे लिए एकदम से नया न होता। विवेच्य पुस्तक इस दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। लेखक ने इस महामारी की शुरूआत से उसके लक्षणों तथा उससे बचाव और उससे निर्मित परिस्थितियों को बहुत ही सच्चाई से लिखा है। वायरस की प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए लेखक लिखता है- 'वायरस निर्जीव अवस्था में रहता है लेकिन जैसे ही सेल के संपर्क में आता है वह जीवित हो उठता है और सेल पर कब्जा कर उसे भी वायरस में बदल देता है। यह सेल से सात गुना भारी होता है और इसका बाहरी हिस्सा मजबूत प्रोटीन से बना होता है।' (इस सुबह की रात नहीं पृष्ठ 35)

कथाक्रम को आगे बढाने का लेखक का तरीका बहुत ही आकर्षक है। एक शादी के समारोह में ही पूरी पुस्तक तैयार हो जाती है। इसमें एक तरफ महामारी की त्रासदी है, उससे बचाव के उपाय हैं तो दूसरी तरफ लेखक की स्वयं के जीवन का वृतांत है। पूरी कहानी लेखक गुड़गांव के सेवेन स्टार होटल 'लीला' में एक बारात में शामिल होने आया है वहीं से विस्तार आया है। एक बारात के सेट पर महामारी का वर्णना एकदम विपरीत है लेकिन पाठक दोनों का आनंद लेते हुए पुस्तक को पूरा कर देता है। दो विपरीत भावों को एक साथ प्रस्तुत करना यह सामान्य रचनाकार के बस की बात नहीं है। कहीं भी दोनों के रसास्वादन में बाधा नहीं उत्पन्न हुई है। यहीं पर लेखक ने अपने पूरे संबंधियों का परिचय देता है। लेखक की पारिवारिक पृष्ठभूमि बहुत मजबूत है। सारे सदस्य जैसे महाभारत के एक से बढ़ कर एक महारथी हों। ये सारे लोग विभिन्न विभागों के उच्च पदों पर आसीन है। लेखक कोरोना की सारी जानकारी अपने डॉक्टर चाचा के द्वारा प्रस्तुत कराकर इसकी वैज्ञानिकता को ठोस जमीन प्रदान किया है। रगीनियत के बीच लेखक जीवन की वास्तविकता से भी हमारा परिचय करता है। सेवेन स्टार होटल में रहते हुए उसके बदलते रंग का वर्णन किया है जो जीवन की सच्चाई है- 'यह इन्द्रपुरी धीरे-धीरे अपने रहस्य के आवरण उतारती जा रही थी। होटल दुनिया का सबसे बड़ा बाजार और सबसे अच्छा व्यापार है। लेकिन यह सारा आकर्षण रात बर का था। सवेरा होते ही सारा इन्द्रजाल टूट जाता था। ये बहुमंजिला इमारते, ये रंगविरंगी रोशनियों सवेरा होते ही मेकअप विहीन अभिनेत्रियों की तरह अपना सारा आकर्षण खो देती थी।' (इस सुबह की रात नहीं पृष्ठ 55) लेखक का यह कथन जीवन की वास्तविका है जो सब पर घटित होता है।

अरुण कुमार सिन्हा जी ने इस पुस्तक को वैविध्यपूर्ण बनाया है। महामारी का विषय मुख्य है, ऐतिहासिक आन्दोलनों के साथ खुद के जीयन संघर्ष को भी दर्शाया गया है। अपनी नौकरी के सिलसिले में बीजू पटनायक जी से मुलाकात का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है और बीजू जी की धारित्रिक छवि को प्रमुखता से उकेरा गया है जिससे तत्कालीन राजनैतिक सुचिता का पता चलता है परंतु आज इसका पतन परिलक्षित होता है। होटल की रंगीनियत के बीच अपने टूटे जूते का जिक्र करके घटनाक्रम को यथार्थ के धरातल पर ला दिया है जो कि मनुष्य होने की सच्चाई है नहीं तो हम देवता बन जाते। लेखक ने इसकी सरसता बढ़ाने के लिए भोजपुरी के तड़के लगाए हैं और यह संदेश है कि हम कितने भी बड़े हो जाएं अपनी जड़ों से जुड़कर ही एक अच्छे संसार का निर्माण कर सकते हैं। फिल्मी गीतों की पंक्तियों के माध्यम से भी घटना क्रम को आगे बढ़ाने का कार्य किया गया है जो कि इसकी रोचकता को और अधिक बढ़ा देता है।

प्रस्तुत पुस्तक एक ऐतिहासिक दस्तावेज साबित होगी। इस महामारी की त्रासदी पर साहित्य लिखे गए हैं और आगे भी लिखे जायेंगे लेकिन यह पुस्तक महामारी के घटनाक्रम पर अपने आप में एक मुकम्मल पुस्तक है। लेखक ने इसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ मानवीय दृष्टिकोण भी अपनाया है। लेखक ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि महामारी पर किसी का बस नहीं होता। इसमें न पैसा काम आया न पद. न रिश्ते न नाते. कबीरदास की हंसा जाई अकेला की मुक्ति पूरी तरह से चरित्रार्थ हुई है। हमने यहाँ अलग क्लास और अलग दुनिया बना ली है परंतु महामारी ने सब को समान कर दिया है। किसी एक देश में होता तो सम्पन्न लोग विदेश भाग जाते लेकिन किसी को भी नहीं छोड़ा चाहे महाशक्ति ही क्यूँ न हो सब की शक्ति पलीत हुई है, इसीलिए तो कबीरदास बहुत पहले कह गए थे- 'आया है तो जायेगा राजा रंक फकीर। इक सिंहासन चढि चले इक बंधे जंजीर।।'

निष्कर्षत: इस सुबह की रात नहीं पुस्तक अरूण कुमार सिन्हा जी का सराहनीय प्रयास है। आज हम महामारी के भयानक क्षणों से गुजर रहे हैं। परिस्थियाँ बदलेंगी, हमारी दिनचर्या फिर से पटरी पर आएगी। घरों में कैद लोग फिर निकलेंगे, शहर गुलजार होंगे, सब कुछ भूल हम फिर से आगे बढ़ेंगे परंतु समय बीत जाने के बाद भी यह पुस्तक हमारे कठिनतम समय की दस्तावेज रहेगी। जैसे-जैसे समय बीतेगा इस पुस्तक की महत्ता बढ़ती जायेगी। इस पुस्तक में लेखक ने कोरोना वायरस के प्रथम लहर की त्रासदी को ही स्थान दिया है। आने वाले समय में इस पर और कुछ लिखने की आवश्यकता होगी। शायद लेखक ही इस दिशा में आगे बढ़े। 'इस सुबह की रात नहीं रचना पाठकों को कोरोना से संबंधित जानकारियों से अवगत करायेगी।' जो इस महामारी के दौर को नहीं जिए हैं उनके लिए यह पुस्तक इस परिस्थितियों की बेहतरीन साक्ष्य रहेगी। आने वाली पीढ़ी इसे ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में देखेगी। ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

लेखक - प्रवक्ता (हिन्दी) जवाहर नवोदय विद्यालय
पदमी, मंडला (म.प्र.)-481661
सम्पर्क : बेलहरामऊ, राजाबाजार-जौनपुर (यू.पी.)-222125
संपर्क - 9754128757

'उन बंद होंठों के पीछे एक महिला कलाकार की कहानी दबी पड़ी थी'

'अन्नपूर्णा जी की चुप्पी सुनें, शायद महसूस कर सकेंगे कि क्या होता है इस देश-काल में महिला कलाकार होना'...

रीना सोपम

जो उमड आया था सुरबहार-सितार कलाकार, अन्नपूर्णा देवी के आस-पास उनके जीवन के अंतिम दिनों में, शायद आपने भी सुना होगा इसे। वैसे वो सभी जो मैहर (मध्य प्रदेश स्थित अन्नपूर्णा देवी का जन्म स्थान) और मदीना भवन से बहुत करीब रहे, बड़ी शिद्दत से इसे महसूस भी करते रहे थे। अन्नपूर्णा देवी। हिन्दुस्तानी संगीत में मैहर घराने के प्रणेता, पद्म विभूषण आचार्य अलाउददीन खाँ और मदीना बेगम की तीन बच्चियों में सबसे छोटी। वैसे अप्रैल 17,1927 में जन्म के बाद नाम तो पड़ा था रोशनआरा, लेकिन मैहर के तत्कालीन महाराज सर ब्रिजनाथ सिंह ने उन्हें प्यार से अन्नपूर्णा नाम से पुकारा और फिर यही नाम स्थायी हो गया था उनके लिए। एक विशिष्ठ सरोद वादक की बेटी, अन्नपूर्णा में संगीत की असाधारण मेधा तो थी ही, लेकिन पिता के कठोर अनुशासन और वृहत प्रशिक्षण ने इस प्रतिभा को और भी तराश कर एक अनमोल हीरा बना दिया था। एक कालजयी कलाकार थी वो।

सन् 2018 में उनके निधन के बाद बहुत सारी बातें होती रहीं उनके बारे में। यूं लगा जैसे उनके साँसो की आहट थमी तो हर किसी को उनपर कुछ कहने की हिम्मत सी हुई हो। और इसी क्रम में भारत रत्न पंडित रवि शंकर की परित्यक्ता जैसे विशेषण भी कहे गए उनके लिए। कहते हैं पत्नी बनने से पहले वो पंडित रवि शंकर की गुरु रही थीं। मैहर परम्परा की बहुत सी खास बातें उन्होने ही पंडित जी को सिखाई थी और साथ बैठ कर रियाज भी कराया था। कई संगीत गुणीजनों का तो यह भी मानना है कि अन्नपूर्णा जी पंडित रवि शंकर से उम्दा कलाकार थीं और यदि उन्होंने स्टेज पर्फोरमेस छोड़ा नहीं होता तो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और तंत्र वादन का इतिहास कुछ और ही होता। अगर वो मंचीय कार्यक्रमों की दुनिया में सक्रिय होती तो सितार-सुरबहार वादन क्षेत्र में उपलब्धियों और योगदानों की सूची में शीर्ष पर कौन होता, यह कहना कठिन है।

मैंने पटना स्थित अपने घर की बैठक में कई बार इस विषय पर जोरदार बहस होते सुना। अक्सर छुट्टियों के दिन शहर के कई कलाकार और संगीत प्रेमी यहाँ इकट्ठा होते और बात किसी राग से शुरू हो तो रागदारी के इर्द-गिर्द घूमते हुए कलाकार तक आ जाती और फिर उनके जीवन की हर छोटी-बड़ी गुत्थियों पर हर किसी के अपने विचार होते। 'अन्नपूर्णा दीदी', प्राय: यही संबोधन होता था उनके लिए मेरे पापा, सरोद वादक प्रो सी एल दास का। मैहर में एक बार उनसे भेंट जो हुई थी। 'वो उन दिनो मैहर में ही थीं। मुझे बाबा (उस्ताद अलाउददीन खाँ) ने मदीना भवन के एक ऊपर के कमरे में ही ठहराया था और दिन के भोजन के समय वो मुझे नीचे बुला लिया करते। खाना परोसते समय जो प्यार दुलार दिखा अन्नपूर्णा दीदी में, ऐसा लगा था जैसे सगी दीदी हों', 'पापा ये अक्सर कहते। और जब भी अन्नपूर्णा देवी की चर्चा हो, तो उनके प्रति एक विशेष अपनापन छलक आता था पापा की बातों में।' अक्सर अन्नपूर्णा देवी के सितार और सुरबहार वादन की तुलना पंडित रवि शंकर के वादन से की जाती और इस विषय पर पापा के मित्रों में खूब लम्बी बहस भी होती थी।

यह वो दौर था जब इन दोनों कलाकारों के संगीत के अलावे, उनके निजी जीवन की बातें भी संगीत प्रेमियों के बीच छनकर आती रहती थी और पटना की हमारी बैठक में जब उनके संगीत पर चर्चा होती, तो कभी-कभी उनके व्यक्तिगत जीवन के कुछ क्षण भी इसमें शामिल हो जाते। कैसे दोनों पहले गुरु सखा (एक ही गुरु के शिष्य) बने, फिर उनका यह संबंध पति-पत्नी में बदल गया और फिर दो कलाकारों के बीच एक टकराहट उभरी जो अंतत: दोनों के रिश्ते को निगल गई। पर इससे अधिक दुखद रहा हिंदुस्तानी संगीत के मानचित्र से एक विलक्षण महिला कलाकार का अपने आप को अलग कर देना। याद रहे कि जिन दिनों अन्नपूर्णा जी सितार और सुरबहार पर राग अभ्यास कर रहीं थी, हिंदुस्तान के कोने-कोने में अनेक संगीतकार और संगीत घराने थे। उनके गायन-

वादन और घराने की तूती बोलती थी। लेकिन घर की बेटियों को कला विद्या की यह संपत्ति नसीब नहीं थी। और राग अभ्यास कर एक मंचीय कलाकार बनने का साहस किस महिला में था कुछ पेशेवर परिवार की औरतों को छोड़ कर ? अन्नपूर्णा जी ने न केवल यह साहस दिखाया था, बल्कि महिला कलाकार की एक नई परिभाषा रची थी उन्होंने अपने बूते ।

मेरी समझ से वुमन पावर (स्वी शक्ति) का एक बहुत बड़ा उदाहरण थीं वो। उन्होंने जब मंचीय कार्यक्रम किया तो देश भर को एक महिला कलाकार की ऊँचाई दिखा दी। वो महिला कलाकार कैसे-कैसे मिसाल गढ़ सकती है, इसकी बानगी दिखा दी। और जब वो खामोश हुई तथा मंच के सक्रिय जीवन का त्याग किया, तो एक महिला के आत्म सम्मान, अस्मिता और दृढ़ निश्चय का मतलब क्या होता है, यह भी समझा दिया था। कौन नहीं लालायित रहा उन्हें एक बार मंच पर सुनने को। बल्कि उनकी एक झलक पाने को भी संगीत प्रेमी तरसते रहे। लेकिन अन्नपूर्णा तो अन्नपूर्णा थी। आचार्य अलाउद्दीन खाँ की बेटी। भीष्म

प्रतिज्ञा सा था उनका संकल्प। एक बार जो निश्चय किया तो उसे जीवन भर निबाहा। एक चुप्पी सी साध ली थी उन्होंने।

यह मौन जिसे उन्होंने अपने जीवन के आरंभिक दौर में

अपनाया, उसे अंत तक संभाला और सम्मान दिया। उन बंद होंठों के पीछे एक महिला कलाकार की कहानी दबी पड़ी थी। उस अबोले शब्द-भाव को अगर सुनने-समझने की फुरसत हो, तो ही यह महसूस कर पाएँगे कि ये गाथा भले ही अन्नपूर्णा जी की हो, लेकिन यह इस देश की कई अन्य महिला कलाकार जिन्हें हम नहीं जानते, उनके जीवन की भी सच्चाई है। अन्नपूर्णा जी की चुप्पी सुनें, मेरा मानना है, आप ये महसूस कर पाएंगे कि क्या होता है इस देश-काल में महिला कलाकार होना।

संपर्क: लेखिका पत्रकार तथा कला लेखिका, 35/257, रोड नंबर-10ई, राजेन्द्र नगर, पटना- 800016 बिहार।
मोबाइल : 9334195556

हरीश दुबे

धन्य अहिल्यादेवी होल्कर

झिलमिल दीपक स्वर्ण उजाला
चंदन अक्षत तुलसी माला
राज भवन है सादगी वाला
सभी बोलिए हृदय खोलकर
धन्य अहिल्या देवी होल्कर।

मंगल कर महादेव विराजे
शास्त्र-शस्त्र न्याय विधि साजे
सुखद् भोर शहनाई बाजे
सभी बोलिए हृदय खोलकर
धन्य अहिल्या देवी होल्कर।

माहिष्मती सुखद मनभावन
तरल ब्रह्म जल रेवा पावन
दीप है शोभित जगमग आंगन
सभी बोलिए हृदय खोलकर
धन्य अहिल्या देवी होल्कर ।

कांतिमयी करूणामयी माता
संघषों से भरी है गाथा
प्रजा वत्सला युग निर्माता
सभी बोलिए हृदय खोलकर
धन्य अहिल्या देवी होल्कर।

कीर्ति पताका गगन उठाये
यश के गीत धरा गूंजाये
शताब्दियां तब महिमा गाये
सभी बोलिए हृदय खोलकर
धन्य अहिल्या देवी होल्कर ।

सम्पर्क : म. गांधी मार्ग, भारतीय स्टेट बैंक के पास, महेश्वर। मोबाइल 9993126478

भारत भवन, भोपाल में पहली बार ''नृत्य में अद्वैत'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन
पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम सहित राष्ट्रीय - अंतरराष्ट्रीय नृत्यकार एवं नृत्य-अध्येता हुए शामिल

जब आप नृत्य करते हैं तो नृत्य-नर्तक-दर्शक सब एक हो जाते हैं, यही अद्वैत बोध है.

आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश शासन द्वारा भारत भवन, भोपाल में पहली बार 04 से 06 नवंबर, 2024 तक नृत्य से जुड़े प्रमुख कलाकारों एवं विषय-विशेषज्ञों/ अध्येताओं के साथ 'नृत्य में अद्वैत' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस तरह के अनूठे एवं नवीन सन्दर्भ में 'नृत्य में अद्वैत' विषयों पर तीन दिवसीय कार्यशाला में चिन्मय मिशन कोयम्बटूर की प्रमुख स्वामिनी विमलानंद सरस्वती, विश्व प्रसिद्ध भरतनाट्यम नृत्यांगना एवं पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम, केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी की अध्यक्ष डॉ. संध्या पुरेचा, पद्मश्री डॉ. शोवना नारायण, नृत्यांगना डॉ.पद्मजा सुरेश, न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. श्वेता अदातिया, कला मर्मज्ञनाट्यशास्त्र के अध्येता एवं पूर्व कुलपति डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, कथक नृत्यांगना डॉ. कुमकुमधर, डॉ. प्रेमचंद होम्बल, डॉ. रेवती रामचंद्रन, ओडिसी नृत्यांगना डॉ. शुभदा नारायण, संयोजक डॉ. लता मुंशी, न्यास के सलाहकार एवं पूर्व कुलपति डॉ. यज्ञेश्वर शास्त्री, आवासीय आचार्य स्वायमी वेदत्त्वानंद सरस्वती जी, प्रमुख सचिव संस्कृति एवं न्यासी शिवशेखर शुक्ला सहित देशभर से विभिन्न संस्थाओं एवं नृत्य शैलियों कथक, भरतनाट्यम, ओडिसी, मोहिनीअट्टम, मणिपुरी नृत्य अकादमी-इम्फाल, कथक केन्द्रॉ नई दिल्ली, कथक केन्द्रन भोपाल, राजा मानसिंह तोमर संगीत विश्वविद्यालय-ग्वायलियर, खैरागढ़कला एवं संगीत विश्वीविद्यालय-छत्तीसगढ़ आदि से लगभग 100 नृत्य अध्येता एवं कलाकार सम्मिलित हुए।

इस तीन दिवसीय कार्यशाला में प्रतिदिन सुबह योग, ध्यान के साथ अद्वैत, नृत्य एवं मस्तिष्क, नृत्य में रस एवं सात्विक अभिनय, नृत्य में अद्वैत एवं मोक्ष की अवधारणा,शरणागति,नृत्यकला एवं अद्वैतानुभूति एवं नाट्य शास्त्र पर विभिन्न सत्र हुए।

आत्मज्ञान के लिए मन की शुद्धता,सूक्ष्मता एवं एकाग्रता आवश्यक: स्वामिनी विमलानंद सरस्व ती

पहले सत्र में स्वामिनी विमलानंद सरस्वती ने कहा कि कला का सौन्दर्य आनंद में है, कला की विशेषता है कि उसमें सदैव नवीनता विद्यमान होती है। कला एवं नृत्य का आध्यात्मिक संबंध स्पष्ट करते हुए कहा कि भगवान बैठें तो कला है और चले तो नृत्य है। नृत्य भी एक प्रकार की साधना है, जिससे मन परिष्कृत होता है।

उन्होंने वेदांत का उदारहण देते हुए कहा कि आत्मज्ञान के लिए मन की शुद्धता, सूक्ष्मता एवं एकाग्रता आवश्यक है, आत्मज्ञान की प्राप्ति ज्ञान मात्र से होती है, इसलिए आवश्यक है कि हमारा मन राग, द्वेष से मुक्त हो। हमारे जीवन की जैसी दृष्टि होती है हमें वैसी सृष्टि दिखाई देती है। हम इस जीवन में जिन परिस्थितियों का सामना करते हैं वो सब हमारे कर्म-फल के आधार पर है।

उन्होंने कहा हमारे यहाँ कला में नृत्य की अभिव्यक्ति सदैव दिव्य मानी गयी है। नर्तन करना ईश्वर का स्वभाव है। हमारी सभी कलात्मक क्रियाएँ ईश्वर से ही आती हैं और उन्हें ही समर्पित होती हैं। सब कुछ अंतत: ईश्वर में ही समाहित हो जाता है। जीवात्मा और परमात्मा का संबंध कृष्ण और अर्जुन की तरह होता है। गुरु के सानिध्य के द्वारा हम ईश्वर से तादात्म्य स्थापित कर सकते हैं। अद्वैत ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। किंतु बिना उपयुक्त साधनों के अंतिम लक्ष्य असाध्य है। इस लक्ष्य को साधने के लिये कला और नृत्य उपयुक्त साधनकी श्रेणी में है।

हर सुंदर कला तप के फलस्वरूप ही जन्म लेती है - पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम

पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम ने शास्त्रीय नृत्य में अद्वैत के

विभिन्न सिद्धांतों और स्वरूपों की विस्तार से चर्चा की। इस दौरान डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम ने 'प्रैक्टिकल सेशन ऑफ डांस ऑन रस एंड सात्विक अभिनय' पर चर्चा करते हुए कहा कि नृत्य के माध्यम से शरीर और मन का समागम होता हैं। हर सुंदर कला तप के फलस्वरूप ही जन्म लेती हैं, कलाकार कला को केवल प्रदर्शित करता हैं कला पूर्व से ही विद्यमान होती हैं। जहाँ दृष्टि होती हैं वहाँ मन होता है, जहाँ मन होता है वहाँ भाव होता है और जहाँ भाव होता हैं वहीं रस प्राप्त होगा। यही ''रसो वै स:'' की परिकल्पना है।

यदि रस न हो तो कुछ भी आपके हृदय को स्पर्श नहीं कर सकता। जब आप नृत्य करते है तो नृत्य, नर्तक एवं दर्शक सब एक हो जाते है। यही अद्वैत है। अंत में म.प्र. शासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसा कोई राज्य नहीं है जिसने आध्यात्मिक चेतना, सनातन संस्कार को कलाओं में परिणित करने का कार्य किया है। 81 वर्षीय डॉ. सुब्रह्मण्यम नेइस उम्र में जब मंच पर आचार्य शंकर रचित भज गोविन्दम् पर भरतनाट्यम की प्रस्तुति दी तो पूरा सभागार भाव विभोर हो गया।

यदि हम भाव नहीं समझते तो रस तक पहुँचना संभव नहीं : डॉ. संध्या पुरेचा

कार्यशाला के शुभारंभ सत्र में केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी की अध्यक्ष डॉ. संध्या पुरेचा ने कहा कि जीव केवल अज्ञान के कारण ब्रह्म को नहीं जान पाता है। जबकि ब्रह्म तो उसके अंदर ही होता है। उन्होंने कहा कि यदि हम भाव नहीं समझते तो रस तक पहुँचना संभव नहीं है। कला में संलग्न होने के लिए विकार रहित होना आवश्यक है। विकारों के साथ रसास्वादन होना संभव नहीं और परमानंद के लिये सत्त्व प्राप्त करना होता है। आज के युग में यदि सत्त्व को लेकर चलेंगे तो ही कला की साधना सफल होगी।

पद्मश्री डॉ. शोवना नारायण ने मानवीय मस्तिष्क की कार्य क्षमता, सीमा आदि पर विस्तृत चर्चा की। डॉ. शोवना ने कहा कि जीवन है तो गति है। गति होती है तो मूवमेंट होता है और वहीं से साउंड की उत्पत्ति होती है जो गति का एक अहम हिस्सा है। इस दौरान उन्होंने नृत्य में कदमताल की व्याख्या करते हुए कहा कि जब हम पद संचलन करते हैं तो संगीत सुनाई देता है जो ध्यान का एक हिस्सा है।

दूसरे दिन वरिष्ठ नृत्यांगना डॉ. पद्मजा सुरेश ने नृत्य में शरणागति सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि नृत्य एक सहज साधना है। साधना हमें आंतरिक रूप से प्रकाशित करती है। नाट्य साधना के द्वारा ही चेतना की उच्चतम अवस्था तक पहुँचा जा सकता है। चर्चा के सत्र को आगे बढ़ाते हुए डॉ. पद्मजा ने कहा कि नृत्य के माध्यम से स्थूल से सूक्ष्म शरीर की ओर बढ़ते है। इस दौरान उन्होंने नाट्य में अभय मुद्रा का उदारहण देते हुए कहा कि अभय अद्वैत का प्रतीक है और कला महामाया का चिन्मय विलास है। नवधा भक्ति, नारद भक्ति सूत्र सहित शास्त्रों में भी शरणागति की विशेष महिमा बताई गई है। यही नहीं शैव सिद्धांत में भी शरणागति महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे ही हम उपासना के सबसे निकट होते हैं।

मोक्ष की अवधारणा पर आयोजित सत्र में डॉ. शुभदा वराड़कर ने कहा' ओडिसी नृत्य में मोक्ष की अवधारणा पहले से है जिसे हम अनुभव करते हैं।' इस दौरान उन्होंने ओडिसी नृत्य में मोक्ष के भावों को सजीव ढंग से मंच पर प्रदर्शित किया।

सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए भरतनाट्यम नृत्यांगना एवं कोरियोग्राफर डॉ. रेवती रामचंद्रन ने कहा कि इस तरह के आयोजन मन को विस्तारित करते है। यह हमारे आंतरिक एवं आध्यात्मिक विकास में उपयोगी है। जब हम नृत्य करते हैं तो देह भाव से ऊपर उठकर अपनी पहचान को विलोपित करते हैं। कलाकार मंच पर सृष्टिकर्ता की भूमिका में होता है, जो अपनी रचनात्मकता से कला का निर्माण करता है। भारत में कला परम्परा दर्शको के उत्थान के लिए है और कलाकार की यही प्राथमिकता भी होना चाहिए। सृष्टि का विस्तार हमारी दृष्टि पर ही निर्भर करता है।

तीसरे दिन के सत्र में नाट्यशास्त्र के वरिष्ठ अध्येता एवं पूर्व कुलपति डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी ने 'नृत्य कला एवं अद्वैतानुभूति' पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आनंद ही वह गंगोत्री है, जिससे काव्य एवं रस की भगीरथी निकलती है। जब हम कला की साधना करते है तो नायक, कवि और श्रोता इन तीनों का अनुभव एक ही होता है। काव्य आत्मा की कलात्मक अनुभूति है तो रस नृत्य की रसात्मक अनुभूति है। वेद, उपनिषद जिस रस की चर्चा करते है वह आनंद ही है। नृत्य मात्र मनोरंजन नहीं है पुरुषार्थ में उसकी परिणति होना चाहिए। आत्मा नृत्य है तो जीवात्मा रंगमंच है, इन्द्रियाँ इनका आस्वादन करती हैं। उन्होंने कहा कि कलाएँ हमें निरंतर संस्कारित एवं परिमार्जित करती है, कला की साधना में ही आनंद की सिद्धि होती है।

उन्होंने कहा कि जब मैं डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यमजी को देखता हूँ तो उनके रूप में पूरी परंपरा दिखाई देती है। नाट्यशास्त्र केवल लिखित ग्रंथ मात्र नही है, बल्कि यह प्रयोग प्रधान है। हम आदिकाल से ही देखें तो पाते हैं कि हमारी कलाओं ने हमारे बीच एकता को बढ़ाने का कार्य किया है।

ऋषियों ने कहा है कि कलाकर अपने को अनेकों में बिखेर देता है। अपने को जान लेना ही असीम से जुड़ना है। काव्य रस और नाट्य रस दोनों अलग हैं, ऐसा कहना सर्वथा अनुचित होगा। हमारे महाभारत और नाट्य शास्त्र विशाल वृक्ष की तरह है जिनसे कई शाखाएं निकलीं।

सत्र के अध्यक्ष वरिष्ठ नृत्यकार डॉ. प्रेमचंद्र होम्बल ने कहा कि बिना भाव के न तो नाट्य है और न ही नृत्य। भाव से हमें अनुभूति होती है जिससे हम रस तक पहुँचते हैं। इस रस तक पहुँचने का माध्यम नृत्य और नाट्य है। मानव त्रिगुणात्मक होता है। उसमें सत्व, रज और तम जैसे गुण पाए जाते हैं। जब हम सत्व के धरातल पर होंगे तभी हमें रस की अनुभूति होगी। हमारा लक्ष्य है भाव का प्रदर्शन और उसके माध्यम से रस की अनुभूति प्राप्त करना और यह स्थिर भाव से धीरे-धीरे आगे बढ़ने पर ही संभव है। जो परमानंद की ओर ले जाये, वह कला है। कथक नृत्यांगना डॉ कुमकुम धर ने कहा कि मैंने 50 वर्षों में ऐसा अभूतपूर्व आयोजन नहीं देखा, उन्होंने इस आयोजन के लिए न्यास का आभार व्यक्त किया।

नृत्य में अद्वैत विषय पर हर वर्ष होगी कार्यशाला : प्रमुख सचिव श्री शुक्ला

प्रमुख सचिव एवं न्यासी शिवशेखर शुक्ला ने कहा कि आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास का मूल उद्देश्य अद्वैत वेदान्त दर्शन का लोकव्यापीकरण है, जिससे सम्पूर्ण विश्व में शांति, मैत्री, सद्भाव तथा सतत् विकास जैसे लक्ष्यों की प्राप्ति हो, इसी सन्दर्भ में कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में समय-समय पर न्यास द्वारा विविध समारोह, कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण शिविर आदि आयोजित किये जाते हैं। इसी क्रम में 'नृत्य में अद्वैत' विषय पर आयोजित कार्यशाला आप सबकी आत्मीय और सक्रिय भागीदारी से अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला के समापन अवसर पर न्यास अपना यह संकल्प प्रकट करना चाहता है कि – नृत्य में अद्वैत विषय पर यह कार्यशाला अगले वर्ष भी आयोजित होगी। नृत्य में अद्वैत विषय पर विद्वानों तथा आध्यात्मिक विभूतियों के माध्यम से हम एक ग्रंथ भी प्रकाशित करेंगे, जिससे इस विषय को समझने और इससे प्रेरणा प्राप्त करने में कला अध्येताओं को सुविधा हो। कला, साहित्य, संगीत विषयों पर आगे यह कार्यशाला विस्तार लेगी, जिसके अन्तर्गत कार्यशालाओं का आयोजन, ग्रंथ प्रकाशन, शोध, शैक्षणिक एवं विषय विस्तार की संकल्पना को मूर्त रूप दिया जा सकेगा। न्यास संकल्पित है कि कला साधकों के माध्यम से अद्वैत-बोध की लोकव्याप्ति हेतु हर संभव प्रयत्न किया जाये। यह कार्यशाला युवा नृत्यकारों और विशेषज्ञों के लिए विशिष्ट रही है। इसके वैशिष्ट्य को ध्यान में रखते हुए न्यास ऐसे प्रकल्पों को निरन्तरता देने में सदैव प्रयत्नशील रहेगा। अद्वैत-बोध के व्यापक प्रसार हेतु आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के परस्पर समन्वय तथा सहयोग से देश-विदेश के अनेक नगरों में कार्यक्रम आयोजित करेगा।

हर्षल पुलेकर के भजनों ने किया मंत्रमुग्ध

तीनों दिन शाम को संकीर्तन में आर्ट ऑफ़ लिविंग के प्रसिद्ध गायक हर्षल पुलेकर ने ''हरि सुन्दर नंद मुकुंदा, हरि नारायण हरि ओम...'', ''अच्चुतम केशवं कृष्ण दामोदरं...,राम नारायणं जानकी वल्लभम...'',''जय जय राधा रमण हरी बोल...,जय जय राधा रमण हरि बोल....'' जैसे भक्ति गीतों को प्रस्तुत किया।

2025 में होने वाले ''अद्वैत जागरण युवा शिविर'' का कैलेंडर लॉन्च

न्यास द्वारा 18 से 40 वर्ष के युवाओं के लिए वर्ष 2025 में देश के विभिन्न आश्रमों एवं संस्थानों में 20 अद्वैत जागरण युवा शिविर का आयोजन किया जाएगा, यह शिविर हिमाचल,उत्तराखंड,केरल, तमिलनाडु,महाराष्ट्र एवं ओंकारेश्वर-मध्यनप्रदेश में आचार्य शंकर विरचित प्रकरण ग्रन्थ पर सम्पन्नं होंगे। कार्यशाला के समापन समारोह में 2025 के कैलेंडर को जारी करते हुए सभी ने शिविर हेतु अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की।

शंकरदूतों की उपस्थिति रही आकर्षण का केन्द्र

तीन दिवसीय इस कार्यशाला में शंकरदूतों ने अपनी उपस्थिति, सहयोग एवं विभिन्न प्रस्तुतियों से सभी को आकर्षित किया, जिनके सहयोग की सराहना सभी ने की। देशभर से आए शंकरदूतों ने निर्वाणषट्कम, तोटकाष्टकम्, गुरुपादुका स्त्रोत, शिवपंचाक्षर स्त्रोत एवं मंगलाचरण का गायन किया।

जीवन में हम जो कुछ भी करते हैं, वह आनंद की खोज में ही होता है। उपनिषदों में, आनंद की पहचान ब्रह्म से की जाती है, जिसे 'रसो वै सः' के रूप में व्यक्त किया गया है। जो इस रस को प्राप्त करते हैं, वे आनंद स्वरूप हो जाते हैं, जैसा कि कहा गया है- 'रसं ह्येवायं लब्ध्वा आनन्दीभवति'। नृत्य अद्वैत की अवस्था को प्राप्त करने का सहज माध्यम है। जब प्रस्तोता प्रस्तुति करते हैं, तो वे अपनी प्रस्तुति के साथ 'एक' हो जाते हैं। प्रस्तोता और प्रस्तुति का भेद समाप्त हो जाता है। यही अद्वैत भाव है। इन्हीं विविध आयामों को समेटे हुए इस कार्यशाला का आयोजन किया गया।

रपट: शुभम चौहान, सहायक कार्यक्रम अधिकारी,
आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास

आयोजन

देश का सर्वेश्रेष्ठ फिल्म अनुकूल राज्य है मध्यप्रदेश
प्रमुख सचिव श्री शिवशेखर शुक्ला

गोवा में चल रहे भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में म.प्र. टूरिज्म बोर्ड ने आयोजित किया नॉलेज सेशन
प्रमुख सचिव श्री शुक्ला बोले- फिल्म टूरिज्म पॉलिसी 2.0 जल्द
कई फिल्मकारों ने प्रदेश में फिल्म शूटिंग के लिये दिखाई रूचि

मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा गोवा में चल रहे 55वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आई.एफ.एफ.आई) का गोवा में सहभागित कर प्रदेश में फिल्म शूटिंग संभावनाओं का प्रचार किया। प्रमुख सचिव पर्यटन व संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव और टूरिज्म बोर्ड के प्रबंध संचालक श्री शिवशेखर शुक्ला व अपर प्रबंध संचालक सुश्री बिदिशा मुखर्जी द्वारा फिल्म निर्माता, निर्देशक, अभिनेता व उद्योग से जुड़े हितधारकों से चर्चा कर प्रदेश में फिल्म परियोजनाओं की शूटिंग हेतु आमंत्रित किया।

फिल्म महोत्सव के दौरान टूरिज्म बोर्ड द्वारा गुरुवार को एक नॉलेज सेशन आयोजित किया। 'लाइट्स, कैमरा, सहयोग: मध्य प्रदेश में फिल्मांकन के लिए सरकार और उद्योग साझेदारी' श्रृंखला में प्रमुख सचिव श्री शिवशेखर शुक्ला सहित फिल्म निर्देशक श्री अमर कौशिक, आमिर खान प्रोडक्शंस की सीईओ सुश्री अपर्णा पुरोहित, अभिनेता श्री अभिषेक बनर्जी, अभिनेता सुश्री नितांशी गोयल, अभिनेता श्री स्पर्श श्रीवास्तव और अभिनेता-निर्माता सुश्री वाणी टीकू त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किये। इस दौरान प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने प्रदेश में फिल्म शूटिंग को प्रोत्साहित करने और राज्य को एक प्रमुख फिल्म निर्माण गंतव्य के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से म.प्र. फिल्म टूरिज्म पॉलिसी के विभिन्न बिंदुओं से अवगत कराया।

प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने कहा, ''मध्य प्रदेश को 2017 और 2020 के लिये दो बार फिल्म अनुकूल राज्य का राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने पर गर्व है। प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जीवंत वन्य जीवन और पवित्र आध्यात्मिक स्थलों से राज्य के विविध स्थान एक प्राकृतिक फिल्म सेट का रूप देते है। उन्होंने हाल ही में शूट की गई फिल्मों व वेब सीरिज (स्त्री-2, भूल भुलैया-3, लापता लेडीज, पंचायत, महारानी, गुल्लक आदि) के उदाहरण देकर राज्य की लोकप्रियता का उल्लेख किया। उन्होंने राज्य सरकार की ओर से फिल्म निर्माताओं को दी जाने वाली आर्थिक सहायता का विवरण दिया और शूटिंग की मंजूरी के लिए सिंगल-विंडो क्लीयरेंस जैसी सरल और पारदर्शी प्रक्रिया की जानकारी दी। श्री शुक्ला ने बताया कि, प्रदेश के ऐतिहासिक स्थलों, राष्ट्रीय उद्यानों, और ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच आसान है। उक्त क्षेत्रों में सभी आवश्यक सुविधाएं जैसे बिजली, इंटरनेट, और परिवहन की व्यवस्था उपलब्ध है। शूटिंग के दौरान स्थानीय प्रशासन और समुदाय का पूर्ण सहयोग मिलता है। उन्होंने कहा कि, देश में फिल्म शूटिंग के लिए म.प्र. की पहचान 'सस्ती और सुविधाजनक' गंतव्य के रूप में है। प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने फिल्म निर्माताओं से राज्य की लोकेशन पर फिल्म शूटिंग के लिए प्रस्ताव लाने का आग्रह किया और प्रशासन द्वारा शूटिंग में हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। नॉलेज सेशन में फिल्म निर्माताओं ने मध्य प्रदेश की फिल्म टूरिज्म पॉलिसी की सराहना की। कई प्रोडक्शन हाउस ने राज्य में भविष्य की परियोजनाओं के लिए रुचि दिखाई।''

अमर कौशिक ने कहा, मध्य प्रदेश में बनेंगे 'स्त्री' के कई सीक्वल

निर्देशक अमर कौशिक ने पुष्टि की है कि लोकप्रिय हॉरर-कॉमेडी फ्रैंचाइज़ी 'स्त्री' के कई सीक्वल बनने वाले हैं। यह घोषणा गोवा में भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (IFFI) में नॉलेज सीरीज़

सेमिनार के दौरान की गई।

कौशिक ने खुलासा किया कि अपकमिंग सीक्वल मुख्य रूप से मध्य प्रदेश में फिल्माए जाएंगे, जो अपने सुंदर प्राकृतिक स्थान और मध्य प्रदेश सरकार के उदार प्रोत्साहन के कारण फिल्म शूट करने के लिए लोकप्रिय जगह बन गया है। दिलचस्प बात यह है कि मूल स्त्री को शुरू में गोवा में सेट करने की योजना बनाई गई थी, लेकिन आखिर इसे मध्य प्रदेश के चंदेरी में शूट किया गया। कौशिक ने बताया कि वह पारंपरिक प्रेतवाधित घर या समुद्र तट के स्थान के बजाय काल्पनिक शहर की सेट पर यह फिल्म शूट करना चाहते थे।

स्त्री फ्रैंचाइज़ी, जिसमें 2018 की हिट और इसका हालिया सीक्वल, स्त्री 2 शामिल है, एक बड़ी व्यावसायिक सफलता रही है। इस फिल्म में राजकुमार राव, श्रद्धा कपूर और पंकज त्रिपाठी ने अभिनय किया था, इस फिल्म को हास्य हॉरर और सामाजिक टिप्पणी के मिश्रण के लिए आलोचकों की प्रशंसा मिली है।

फिल्म टूरिज्म पॉलिसी 2.0 जल्द- प्रमुख सचिव श्री शुक्ला

सेशन में प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने जानकारी दी कि, देशभर के फिल्मकारों, फिल्म उद्योग से जुड़े विशेषज्ञों व हितग्राहियों से मिले सुझावों के आधार पर म.प्र. फिल्म टूरिज्म पॉलिसी में बदलाव किये जा रहे हैं। फिल्म टूरिज्म पॉलिसी 2.0 को जल्द जारी किया जाएगा। जो राज्य में फिल्म शूटिंग को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए तैयार की गई एक नवीन और समग्र नीति होगी। इसका उद्देश्य फिल्म निर्माताओं को अतिरिक्त सुविधाएं और प्रोत्साहन प्रदान करना है ताकि मध्य प्रदेश को भारत का शीर्ष फिल्म निर्माण स्थल बनाया जा सके। अंतरराष्ट्रीय फिल्म निर्माताओं को आकर्षित करना, राज्य के अनछुए पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देना, स्थानीय समुदाय और युवाओं को रोजगार के अवसर सृजित करने के लिये पॉलिसी में बदलाव किये जा रहे है।

रपट: ऋचा दुबे, म.प्र. टूरिज्म बोर्ड

अहिल्याबाई की गौरव गाथा

- डॉ. तारुणी कारिया

भारत की गौरव गाथा में
गान गुणी वीरों का है
जिसने अपना लक्ष्य पा लिया
मान उन्हीं तीरों का है

मुगल काल का मर्दन करके
जो साम्राज्य प्रसिद्ध हुआ
वही मराठा शूरवीर बन
राजरूप में सिद्ध हुआ

बनी अहिल्या बाई शासक
राजनीति तब शीर्ष रही
शिक्षित और कुशल महारानी
जनमंगल की तीर्थ रही

जब स्वराज्य की हद से आगे
बढ़कर नित सत्कर्म किये
मंदिर, कूप, तलाव, बावड़ी
घाट बनाये नित्य नए

अन्नक्षेत्र चलते थे जिसमें
सबको भोजन मिलता था
प्याऊ जगह जगह बनवाई
प्यासा कोई न रहता था

उन मंदिर में विद्वानों की
शास्त्र सभाएँ होती थीं
चिंतन और मनन के बल पर
सत् चर्चाएँ होती थीं

कर्म सुकर्म किये कितने ही
संघर्षों से सबल बनीं
विकट परिस्थितियों में भी वे
जन मन जीवन सफल बनी

थीं पतिहीन परन्तु मन में
दीप शक्ति का जला गईं
राज कुचक्रो षड्यन्त्रों के
बीच, नया पथ चला गई

नहीं हार मानी थी जिसने
ऐसी बाई अहिल्या थीं
वर्षों बाद आज भी जीवित
ऐसी सती अहिल्या थीं

पुत्र मोह से विरत, न्याय की
राह चलीं ओ निडर रहीं
वर्षों बाद आज भी जिनकी
कीर्ति पताका फहर रही

सम्पर्क : 9, हर्मिस क्रिस्टल, कोनराड होटल के सामने, मंगलदास रोड़, पुणे पिन 411001

गोत्र : भारतीयों की विशिष्ट पहचान

महेश्वर। लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर के 300 जयंती वर्ष के अवसर पर महेश्वर में निमाड उत्सव के दौरान गोत्र उद्भव, मान्यता और प्रतीक विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। जनजातीय लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल के निदेशक श्री धर्मेंद्र पारे के संयोजन में इस संगोष्ठी भारतीय गोत्र व्यवस्था के उद्भव और मान्यता पर पूर्वाग्रहों से घिरे तथाकथित आधुनिक समाजों को तमाम सामाजिक कुंठाओं से ऊपर उठकर इस विषय पर नए सिरे से विचार करने का आह्वान किया गया। चौमासा के इसी विषय पर संपादित आलेखों के विशेषांक का लोकार्पण भी हुआ।

उदघाटन अवसर पर प्रसिद्ध संत स्वामी समानन्द गिरि ने गीता और अन्य ग्रंथों के आलोक में वर्ण, गोत्र और समाज व्यवस्था की शुद्धि को रेखांकित किया और इस शुद्धि की मान्यता को वैज्ञानिक बताया। डॉ. पारे ने गोत्र व्यवस्था पर विचार को विश्व के लिए महत्वपूर्ण कहा। भारतीय विद्या के अध्येता डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने गोत्र परिकल्पना को ऋषियों का बड़ा अवदान कहा जो संपूर्ण उप महाद्वीप में शुद्धि, संस्कार और श्राद्ध के संकल्प के रूप में स्मरणीय है। वर्ण जातियों, गोत्र, प्रवर आदि सामाजिक पहचान ही नहीं, समूह और संगठनों के सूचक और अपनत्व की पहचान है। दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान, भोपाल के निदेशक डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा ने गोत्र व्यवस्था को भारतीय समाज के सुरक्षा दुर्ग के रूप में रेखांकित किया।

तीन दिवसीय इस संगोष्ठी में नागर, आरण्यक एवं घुमंतू समाजों की गोत्र परंपरा पर अध्येताओं ने विस्तृत जानकारी प्रदान की। विशेषकर भील, गोंड, यदुवंशी, बैगा, मैना, कुचबंधिया, वाधरी, पारधी, कोरवा, बेड़िया, खरवार, बंजारा, भारिया, सहरिया, मिलाला, कोरकू, बहुरूपिया, कायस्थ, भगोरिया, सिकलीगर, गुज्जर, बरवाला, स्वर्णकार, भारद्वाज, अग्रवाल वैश्य समाजों की गोत्र परंपरा पर महत्वपूर्ण, शोध सर्वेक्षण आधारित जानकारियां साझा की। सभी शोध पत्र गंभीर विमर्श के केंद्र में भी रहे।

विद्वानों में ब्रजेन्द्र सिंहल (नई दिल्ली), प्रवीन कुमार (धर्मशाला), उपेन्द्र देव पाण्डेय (वाराणसी), डॉ. सीमा सूर्यवंशी (छिंदवाड़ा), डॉ. अनिता सोनी (लखनऊ), डॉ. नेत्रा रावणकर (उज्जैन), माधव शरण पाराशर (डिंडोरी), शिवम शर्मा (छतरपुर), करण सिंह (पिछोर), डॉ. शोभासिंह (गुना), प्रकाशचंद्र कसेरा (जौनपुर), डॉ. योग्यता भार्गव (अशोकनगर), गोपी सोनी (कबीरधाम), डॉ. श्रीकृष्ण काकडे (अकोला), डॉ. भुवनेश्वर दूबे (मीरजापुर), इन्द्र नारायण ठाकुर (नई दिल्ली) डॉ. पूजा सक्सेना (भोपाल), डॉ. विभा ठाकुर (नई दिल्ली), डॉ. लक्ष्मीकांत चंदेला (रीवा), डॉ. टीकमणि पटवारी (छिंदवाड़ा), डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव (ग्वालियर), डॉ. सत्या सोनी (उमरिया), डॉ. दीपा कुचेकर (नाशिक), स्वाति आनंद (बिलासपुर), उमा मिश्रा (जयपुर) श्री गणेश कुमार तुमड़ाम (पांडुरना), डॉ. कमला नरवरिया (भिंड), डॉ. तरुण दांगौड़े (खंडवा), डॉ. अलका यादव (बिलासपुर), सुश्री काजल (बागपत), डॉ. अर्पणा बादल (भोपाल), डॉ. खेमराज आर्य (श्योपुर), अनिश कुमार सिंह (सोनभद्र), छोगालाल कुमरावत (खरगोन), डॉ. बसोरी लाल इनवाती (सिवक डॉ. अल्पना त्रिवेद्वी (भोपाल), श्री राम कुमार वर्मा (दुर्ग), अरुण कुमार शुक्ला (इंदौर), पीसीलाल यादव (खैरागढ़), ज्ञानेश चौबे (हरदा), नीलिमा गुर्जर (भोपाल), मुकेश कुमार जैन (बाड़मेर) श्री भावेश वी. जाधव (सूरत), डॉ. आर. पी. शाक्य (भोपाल) ने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

पुस्तक - समीक्षा

'कला समय' पत्रिका में कला, संस्कृति, साहित्य, इतिहास पुरातत्व, लोक साहित्य, पर्यटन, गीत, ग़ज़ल, कविता एवं समसामयिक इत्यादि विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित की जाती है। प्रकाशनार्थ समीक्षा के साथ पुस्तक की एक प्रति भेजना आवश्यक है। साथ ही समीक्षा दो पृष्ठों से अधिक की नहीं होना चाहिए। **– संपादक**

वैदिक काल से ही नारी पर विमर्श होता रहा ओर हर कालखंड में सम्मान किया गया – डॉ. केदारनाथ शुक्ला

जिस बुद्धि में नए उन्मेष हैं वही नारी प्रतिभा है – डॉ. शर्मा

महान कवि भास के रूपकों पर केंद्रित शोध ग्रंथ का हुआ विमोचन

मन्दसौर। महान कवि भास ने समसामयिक घटनाओं का चित्रण अपने रचना कौशल में किया, नर शब्द से नारी शब्द की उत्पत्ति हुई स्त्री अबला नारी वधू वामा वनिता महिला आदि सब नारी के ही रूप है प्रत्येक नारी स्त्री है परंतु प्रत्येक स्त्री नारी नहीं है नारी विपदा में पुरुष का साथ छोड़ती नहीं है उक्त विचार विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति वरेण्य विद्वान संस्कृतविद डॉक्टर बालकृष्ण शर्मा ने मन्दसौर के पशुपतिनाथ अतिथि गृह सभागृह में आयोजित लेखिका साहित्यकार डॉ प्रतिभा श्रीवास्तव के शोध ग्रंथ 'कवि भास के रूपकों में नारी पात्र' के लोकार्पण के अवसर पर व्यक्त किये।

डॉ शर्मा ने महाभारत, रामचरितमानस, पुराण, कथाओं में उद्धरित पात्रों , प्रसंगों को सामने रखते हुए नारी पात्रों का चित्रण किया । कालांतर में पुराणों के माध्यम से क्या सही क्या गलत , क्या करणीय और क्या अकरणीय कार्य या व्यवहार है यह बताया है, सम्प्रेषण की दृष्टि से यह अधिक आत्मसात हुई है, नारी पात्रों में भी कई तरह के चरित्र और चरित सामने आए हैं। महाकवि भास ने नाटकों के माध्यम से नारी चरित्रों को प्रस्तुत किया है। उनका संस्कृति और साहित्यिक योगदान मूल्यवान है।

संस्कृत अध्ययन शाला के आचार्य डॉ केदारनाथ शुक्ला ने इस अवसर पर कहा की स्त्री के बिना पुरुष को यज्ञ अनुष्ठान कर्मकांड का अधिकार नहीं है , शिष्टाचार का सौंदर्य नारी है पृथ्वी स्वयं नारी है वेद काल में नारी – स्त्री का विमर्श होता रहा, नर से नारी बना है, सद्कर्म में नारी के बिना साधना पूरी करने में कठिनाई है और नारियों को सम्मान के साथ जीवन के हरस्तर पर महत्व के साथ प्रतिपादित किया है ।कवि भास ने अलग अलग नाटकों की प्रस्तुति में नारी की उपस्थिति को उभारने के साथ चरित्र को समाज के समक्ष रखा है ।

प्रारंभ में दीप प्रज्वलन एवम पशुपतिनाथ संस्कृत विद्यालय के आचार्य विष्णु प्रसाद ज्ञानी और वैदिक बटुको ने स्वस्तिवाचन का पाठ किया,

विमोचन समारोह की अध्यक्षता साहित्यकार एवं व्यंगकार डॉ तीरथ सिंह खरबंदा ने की ओर संबोधित करते हुए कहा कि लेखिका डॉक्टर प्रतिभा श्रीवास्तव का पुरुषार्थ उनकी रचना शोध प्रबंध पुस्तक में झलकता है । आपने सद्साहित्य पठन पाठन में रुचि कम होने पर चिंता व्यक्त की ।

समारोह के विशिष्ट अतिथि जनपरिषद अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार डॉ घनश्याम बटवाल, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रांतीय प्रभारी श्री ब्रजेश जोशी, आर्य समाज विद्यालय आचार्य श्री मुकेश आर्य ने अपने विचार रखे ।

प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत शाल श्रीफल से श्री नगेंद्र श्रीवास्तव श्री नवांशु श्रीवास्तव श्रीमती प्राची श्रीवास्तव , श्री सौरभ दुबे ने पुष्प गुच्छ देकर किया,

अतिथि परिचय श्रीमती सुष्मिता दास डॉ प्रदीप चतुर्वेदी ने दिया, स्वागत भाषण श्री प्रांशु श्रीवास्तव ने दिया कार्यक्रम में प्राचार्य श्री सौरभ दुबे सुश्री स्नेहा सुश्री उदिता मेहता एवं नगर के अनेक साहित्यकारों, सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा लेखिका डॉ प्रतिभा श्रीवास्तव का अभिनंदन किया गया

कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर ललित नागर ने किया और आभार श्री नवांशु श्रीवास्तव ने व्यक्त किया, लेखिका साहित्यकार डॉ

प्रतिभा श्रीवास्तव ने शोध कार्य और शोध ग्रंथ के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि पूर्व कुलपति, आचार्य डॉ बालकृष्ण शर्मा के निर्देशन में शोध कार्य ग्रंथ रचना हुई और उनकी उपस्थिति में स्वयं के हाथों से विमोचन हुआ यह जीवन की बहुत बड़ी अभिलाषा पूरी होना है। आपने डॉ शर्मा एवं अतिथियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की

रतट : डॉ. घनश्याम बटवाल, मन्दसौर

यू. जी. सी. की व्याख्यानमाला में किया संवाद

मन्दसौर । रंगमंच केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है बल्कि इसके माध्यम से समाज में संस्कृति का आदान-प्रदान होने के साथ-साथ सामूहिकता का भी विकास होता है । दुनिया भर में हुए शोधों में निकल कर आया है की कला क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों के स्वास्थ्य का स्तर सामान्य लोगों की अपेक्षा बेहतर होता है । यह बात नाट्य शिक्षक व दार्शनिक श्री प्रदीप शर्मा ने राजमाता विजयाराजे सिंधिया शासकीय उद्यानिकी महाविद्यालय में आयोजित व्याख्यान माला में संवाद करते हुए कही।

केंद्रीय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे सांस्कृतिक अभियान के अंतर्गत यह व्याख्यान संवाद आयोजित किया गया। उद्यानिकी महाविद्यालय के छात्र छात्राओं से संवाद करते हुए श्री शर्मा ने बताया कि वैदिक काल से ही भारत और अन्य देशों में रंगमंच की परंपरा चली आ रही है । ऋग्वेद के अंदर भी लोक रंजन के लिए लिखी गई ऋचाओं का उल्लेख मिलता है तो महाभारत काल में भी राजा युधिष्ठिर के समय कलाकारों के लिए विशेष प्रकार के अनुदान दिए जाने का उल्लेख दूसरे खंड में अध्ययन के लिए उपलब्ध है । उत्तर वैदिक काल में भी जब समुद्रों के माध्यम से व्यापार व्यवसाय शुरू हुआ तो वस्त्र विन्यास, भाषा और संस्कृति का आदान-प्रदान भी नाटकों के माध्यम से होता रहा। ईरान के साथ व्यापार होने और वहां से व्यापारियों के साथ आने वाली नाट्य मंडलियों से यहां भारत में सांस्कृतिक प्रभाव पड़े तो भारत का भी ईरान पर प्रभाव पड़ा। 10वीं शताब्दी तक आते-आते दुनिया भर में रंगमंच पौराणिक आख्यानों, इतिहास और श्रृंगार से जुड़े हुए विषयों को लेकर अपने उत्कर्ष पर पहुंचा।

व्याख्यान संवाद की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के डीन डॉ आईं. एस. तोमर ने कहा कि यूजीसी के माध्यम से विद्यार्थियों को नवाचार से जोड़ने के लिए सतत प्रयास किया जा रहे हैं । आज रंगमंच की सांस्कृतिक परंपरा और सामाजिक अवदान विषय पर आयोजित व्याख्यान और परस्पर संवाद निश्चित ही छात्र-छात्राओं के लिए ज्ञानवर्धक साबित हुआ है । इस अवसर पर महाविद्यालय स्टाफ और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राये उपस्थित थे । व्याख्यान संवाद में डॉ खुर्शीद आलम खां नाहेप परियोजना के समन्वयक डॉ रूपेश चतुर्वेदी विशेष रूप से शामिल हुए ।

रतट : डॉ. घनश्याम बटवाल, मन्दसौर

मालवी बोली में भी अच्छी फिल्में बन सकती है - अभिनेता श्री त्रिपाठी

मंदसौर में कलाकारों के साथ हुआ संवाद

मंदसौर । भाषाई सिनेमा धीरे-धीरे नया दर्शक वर्ग तैयार करने में सफल हो रहा है । सोशल मीडिया के इस दौर में आंचलिक बोलियों भाषाओं पर छोटी-छोटी फिल्में असर कारक सिद्ध हो रही है । यह बात चरित्र फ़िल्म अभिनेता श्री सुभाष त्रिपाठी ने मंदसौर में कलाकारों से एक संवाद के दौरान कही । उन्होंने आगे कहा कि मालवा की बोली में मिठास और उसकी अपनी संस्कृति हर तरह से परिलक्षित होती है परंतु दूसरे आंचलिक बोलियों भाषाओं की तरह मालवा ने अभी तक अपनी सिनेमाई पहचान नहीं बनाई है । इसलिए इस दिशा में भरपूर संभावनाएं स्पष्ट नजर आ रही है । गुजराती कन्नड़ मराठी भोजपुरी तमिल आदि भाषाओं में फिल्मों डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट मूवी बनी हैं और सफ़ल रही हैं । श्री त्रिपाठी ने अपनी सुपुत्री रामायण की कौशल्या फेम आनंदी के बारे में बताया कि आरंभ में गुजराती मूवी में रोल मिला और अब हर भाषा के साथ हिन्दी कन्नड़ फिल्मों में मुख्य रोल प्ले कर रही है , टी वी सीरियल रामायण में कौशल्या के किरदार को सभी क्षेत्रों में सराहना मिल रही है । मंदसौर जैसे छोटे शहर के हमलोग संघर्ष करते हुए मुक़ाम हांसिल कर रहे हैं । मंदसौर में पूर्व एक्साइज अधिकारी रहे श्री त्रिपाठी ने बालीवुड मुंबई में कई फिल्मों में सहायक अभिनेता , चरित्र अभिनेता के किरदार निभाये

हैं आज 77 वर्ष की आयु में भी सक्रिय होकर जुटे हैं । आपने कहा निरंतर कार्य करना होगा समर्पण आवश्यक है फ़िल्मी दुनिया ही नहीं सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता अगर कोई सफलता मिल जाती है तो वह स्थायी नहीं रहती । आपने कहा कि मंदसौर के कलाकार पिछले कुछ वर्षों से छोटे-छोटे प्रोजेक्ट भी बना रहे हैं । भविष्य में इन्हीं प्रयासों से बड़े प्रोजेक्ट का रास्ता साफ होगा । आपने कहा कि मदद को वे उनके भ्राता गीतकार श्री दिलीप त्रिपाठी तैयार हैं ।

उल्लेखनिय है कि मुंबई से अभिनेता श्री सुभाष त्रिपाठीअपने एक दिवसीय दौरे पर मंदसौर के कलाकारों से संवाद करने पहुंचे थे । उनके साथ भ्राता लेखक गीतकार एवं स्टारमेकर सिंगर श्री दिलीप त्रिपाठी भी थे । श्री दिलीप त्रिपाठी ने मालवी भाषा में अपनी तैयार फ़िल्म स्क्रिप्ट दस्तावेज मंदसौर के इंजीनियर दिलीप जोशी को सौंपते हुए बताया कि इस डॉक्युमेंट्स में फ़िल्म निर्माण का सारा विवरण तैयार है बस निर्माता अभिनेताओं , मालवा के शूटिंग एरिया गीतकारों की आवश्यकता है और आपने विश्वास जताया कि मंदसौर नीमच रतलाम आदि क्षेत्रों में वातावरण बन रहा है प्रतिभायें भी उभर रही है अपने क्षेत्र मालवी में अच्छी संभावना भी है।

रतट : डॉ. घनश्याम बटवाल, मन्दसौर

ब्रज संगीत विद्यापीठ की छात्राओं ने की गोवर्धन लीला की भावपूर्ण प्रस्तुति

कारगिल योद्धा दीपचंद का हुआ सम्मान

मथुरा। 19 नवम्बर। ब्रज संगीत विद्यापीठ की छात्राओं द्वारा ब्रज कला केंद्र के 'ब्रजधाम' प्रेक्षागृह में गोवर्धन लीला की मनोरम प्रस्तुति देख सभागार में उपस्थित दर्शकगण भावविभोर हो उठे। कार्यक्रम का उद्घाटन नाशिक महाराष्ट्र से पधारे कारगिल युद्ध के प्रमुख योद्धा सार्जेंट दीपचंद और विद्यापीठ के कुलपति डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल सहित ब्रज कला केंद्र एवं विद्यापीठ के गणमान्य पदाधिकारियों और सदस्यों द्वारा श्री गिरिराज जी के चित्रपट के समक्ष दीप-प्रज्ज्वलन और पुष्पार्पण कर किया गया। विद्यापीठ के कुलपति और अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल ने संस्था का परिचय देते हुए आह्वान किया कि ब्रज के लोक संगीत गायन, वादन और मंदिर संगीत तथा रासलीला संगीत में परीक्षाएं आयोजित करने वाला यह इकलौता विद्यापीठ है। इससे आप अधिक से अधिक जुड़कर ब्रज-संस्कृति के प्रचार-प्रसार और संरक्षण-संवर्धन में सहयोग करें। कार्यक्रम के दौरान सम्मानित अतिथि, भारतीय तोपखाने के योद्धा नायक दीपचंद, जो हरियाणा के हिसार जिले के पावड़ा गांव के मूल निवासी हैं। ने बताया कि कारगिल युद्ध के दौरान उनके एक हाथ और दोनों पैर गवां देने के बावजूद भी उन्होंने अदम्य साहस और देशभक्ति की भावना को डिगने नहीं दिया। कारगिल विजय दिवस के अवसर पर दिवंगत सीडीएस जनरल बिपिन रावत से प्रेरणा लेने वाले दीपचंद को समारोह में पटुका ओढ़ाकर और स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने लंबे उद्बोधन से उपस्थित दर्शकों पर राष्ट्रभक्ति और साहस की अनूठी मिसाल छोड़ी।

रपट: डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

'कला समय' के उप संपादक सुन्दरलाल प्रजापति को तुलसी सम्मान

साहित्यिक संस्था तुलसी साहित्य अकादमी भोपाल द्वारा विगत दिनों भारतीय साहित्यकार सम्मेलन समारोह में कुल 24 साहित्यकारों का सम्मान किया गया। इस समारोह में कला समय के उप संपादक सुन्दरलाल प्रजापति को तुलसी सम्मान से सम्मानित किया गया।

एकात्म धाम ओंकारेश्वर में आदि शंकराचार्य की 108 फीट ऊँची प्रतिमा पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पुष्प अर्पित किये

'एकात्म धाम' ओंकारेश्वर में आदि शंकराचार्य की 108 फीट ऊँची प्रतिमा पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पुष्प अर्पित किये। तथा एकात्म धाम पुस्तक एवं युवा शिविर का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने 'एकात्म धाम' में चल रहें सभी कार्य समय पर पूर्ण होने के निर्देश दिए। इस अवसर पर कार्यक्रम में उपस्थित संतजनों ने शाल, श्रीफल एवं आदि शंकराचार्य की प्रतिमा भेंट कर मुख्यमंत्री डॉ. यादव जी का अभिनंदन किया गया।

■

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय

सेवा सुशासन और जनकल्याण का अडिग संकल्प

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

नागरिक सुविधा और राज्य की प्रशासनिक प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए तकनीकी सुधार डिजिटलाइजेशन, ई-रिकॉर्ड के माध्यम से आम-जन के कार्यों को आसान बनाना और हितधारकों को सीधा लाभ देने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।
सरकार ने सुशासन और नागरिक सेवा को प्राथमिकता देकर हर वर्ग का लाभ सुनिश्चित किया है।
इन अभूतपूर्व प्रयासों से मध्यप्रदेश अब उन्नति के नए युग में प्रवेश कर रहा है।

- नामांतरण, बंटवारा जैसे विभिन्न राजस्व प्रकरणों के ऑनलाइन निराकरण के लिए सभी 55 जिलों में साइबर तहसील परियोजना लागू। यह पहल करने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य।
- संपदा 2.0 रजिस्ट्री के लिए ई-पंजीयन एवं ई-स्टैम्पिंग की नवीन प्रणाली। दस्तावेजों के ऑनलाइन निष्पादन, डीड वेलिडेशन आदि कार्य होंगे आसान।
- मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में संभागीय समीक्षा बैठकों का आयोजन। कानून व्यवस्था के साथ बड़े पैमाने पर किए गए विकास कार्यों के भूमिपूजन एवं लोकार्पण।
- राजस्व महाअभियान के दोनों चरणों में 80 लाख राजस्व प्रकरणों का निराकरण।
- जिला, संभाग, तहसील आदि की सीमाओं के पुनर्निर्धारण के लिए पृथक प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग बनाने का निर्णय।
- मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री अब स्वयं भरेंगे अपना इनकम टैक्स।
- प्रदेश की अंतरराज्यीय सीमाओं पर 1 जुलाई, 2024 से परिवहन जांच चौकियों के स्थान पर रोड सेफ्टी एंड इन्फोर्समेंट चेकिंग पॉइंट की व्यवस्था शुरू।
- वॉरेंट और समन की तामील के लिए ई-तकनीक का उपयोग प्रारंभ। मध्यप्रदेश ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य है।
- प्रदेश के किसी भी जवान के शहीद होने पर दी जाने वाली सहायता राशि में से 50% शहीद की पत्नी और 50% माता-पिता को देने का निर्णय।
- 105 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों के लिए ऑनलाइन आवेदन कर डीम्ड अनुज्ञा प्राप्त करने और 300 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों पर त्वरित अनुज्ञा प्रदान करने की व्यवस्था लागू।
- बालाघाट के कमकोदादर में हुई मुठभेड़ में नक्सलियों को धूल चटाने वाले 24 शासकीय पुलिस सेवकों का आउट ऑफ टर्न प्रमोशन।
- प्रदेश में थानों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण का कार्य तेजी से जारी।
- शासकीय सेवाओं में महिलाओं को अब 35% आरक्षण।
- भूतपूर्व सैनिकों को शासकीय नौकरियों में आरक्षण।

D19203/24

महेश्वर में देव स्थान

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - भँवरलाल श्रीवास